राबिन्सन-क्रूसो

इंडियन प्रेस लिमिटेड

राबिन्सन क्रूसो

अनुवादक

पं० जनार्दन झा

प्रकाशक

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

१९२२

संशोधित संस्करण] [मूल्य १।)

PRINTED AT
THE BELVEDERE PRINTING WORKS
ALLAHABAD.

PUBLISHED BY
APURVA KRISHNA BOSE
AT
THE INDIAN PRESS, LTD.
ALLAHABAD.

निवेदन

अँगरेज़ी के शिशु-साहित्य में "राबिन्सन क्रूसो" का बहुत आदर है। इसके लेखक का नाम डैनियल, डी फ़ो है। लोगों का अनुमान है कि अलेकज़ेंडर सेलकार्क के वृत्तान्त को अवगत करके लेखक ने इसकी रचना की है। अलेकज़ेंडर सेलकार्क एक अँगरेज़ जहाज़ी था। जहाज़ डूब जाने से एक बियावान टापू में पहुँच कर उस ने अपने प्राण बचाये थे। वहाँ पर मुद्दत तक अकेले रहने के बाद, उद्धार होने पर, वह अपने देश में पहुँचा था।

"क्रूसो" की आख्यायिका एक ओर जैसी अद्भुत और कौतूहल-पूर्ण घटनाओं से युक्त है उसी तरह दूसरी ओर शिक्षाप्रद है। इसी कारण इँगलेण्ड में इस पुस्तक का इतना आदर है। वहाँ ऐसा विरला ही घर होगा जिस में इस पुस्तक के किसी न किसी संस्करण की एक आध प्रति न हो। और, ऐसे बच्चे भी खोजने से मिलें तो मिलें जिन्होंने इस पुस्तक को बड़ी चाव के साथ कई बार पढ़ा न हो।

बच्चों की कल्पना को जागृत करने के लिए ही इस पुस्तक का हिन्दी में पूरा पूरा अनुवाद किया गया है। अनुवाद में अनावश्यक विस्तार के सिवा और कोई भी अंश छोड़ा नहीं गया। सारी घटनाओं का वर्णन इसमें आ गया है। अनुवाद को सहजबोध्य और रोचक बनाने की चेष्टा की गई है।

जिन के लिए यह पुस्तक लिखी गई है उनका मनोरञ्जन हो तो श्रम सफल समझा जायगा।

सम्पादक

राबिन्सन क्रूसो

क्रूसो का गृहत्याग और तूफ़ान

१६३२ इसवी में इँगलेण्ड के अन्तर्गत यार्क नगर में मेरा जन्म हुआ। मैं अपने माँ-बाप का तृतीय पुत्र था। मेरे बड़े भाई सैन्य-विभाग में काम करते थे। युद्ध में उनकी मृत्यु हुई थी। छोटे भाई का हाल मैं कुछ भी नहीं जानता। बालकों में छोटा या बड़ा जो समझिए मैं ही था, इसलिए मैं घर भर के लोगों का अत्यन्त स्नेहभाजन था। मेरे पिता सुनार का काम करते थे, तथापि उन्होंने मेरे पढ़ाने लिखाने में कभी कोई त्रुटि नहीं की। जब मैं अपने घर और पाठशाला में कुछ विद्या पढ़ चुका तब पिता ने मुझको क़ानून पढ़ाने की इच्छा प्रकट की। किन्तु मेरे दिमाग़ में तो बाल्यकाल से ही देशभ्रमण का शौक़ घुसा था, इसकेलिए समुद्रयात्रा की ओर मेरा ध्यान लग रहा था। समुद्रयात्रा के अतिरिक्त मुझे और कुछ न सुहाता था, और न किसी दूसरे काम में मेरा जी लगता था। समुद्रयात्रा का उद्वेग ऐसा प्रबल हो उठा, समुद्रयात्रा की तरङ्ग मेरे मन में इस प्रकार लहराने लगी कि पिता की इच्छा और आदेश, माता की सान्त्वना और अनुनय, तथा आत्मीय बन्धुगणों की फटकार के विरुद्ध मेरा दृढ़ संकल्प हो गया। मानो मेरी चित्तवृत्ति स्वतन्त्र हो

कर मेरे जीवन के भविष्य अशुभ और आपत्ति की ही ओर प्रधावित होने लगी।

मेरे पिता ज्ञानी और गम्भीर प्रकृति के मनुष्य थे। उन्होंने मेरा कठिन उद्देश्य और अभिप्राय समझ कर एक दिन सवेरे मुझको अपनी बैठक में बुलाया। वे वातव्यथा से पीड़ित होकर खाट पर पड़े थे। वे मुझे अपने पास बैठा कर भाँति भाँति के सुन्दर और समीचीन उपदेश देने लगे। उन्होंने अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक मुझसे पूछा—एकमात्र भ्रमण-लालसा के अतिरिक्त क्या स्वदेश का सुख और पिता के आश्रय की सुविधा छोड़ कर तुम्हारे विदेश जाने का और भी कोई कारण है? अपने देश में तुम्हारा सुख-स्वच्छन्द से निर्वाह हो सकता है; तुम अपने देश में रह कर परिश्रम और अध्यवसाय के द्वारा मज़े में आर्थिक उन्नति भी कर सकोगे। किन्तु विदेश में तो किसी बात का कुछ निश्चय नहीं। सभी अनिश्चित है। वहाँ न किसी से जान पहचान, न सङ्कट के समय कोई सहायक होगा। जो लोग अपने देश में किसी तरह अपनी दशा की उन्नति नहीं कर सकते अथवा जिनकी उच्च आकांक्षा अपने देश में फलित नहीं होती वही लोग प्रायः विदेश जाते हैं। तुम्हारी अवस्था इन दोनों से भिन्न है; तो फिर तुम क्यों विदेश जाना चाहते हो? हम मध्यम श्रेणी के मनुष्य हैं। न हम दरिद्रता के दुःख से दुखी हैं, न धनाढ्य के भोग-विलास के दम्भ से चञ्चल हैं। यह जो दारिद्र्य और ऐश्वर्य्य की मध्यवर्तिनी अवस्था है, इस अचिन्त्य अवस्था की जो सुख-स्वच्छन्दता है, उसे देख राजा-महाराजों का भी जी ललचाता है। विद्वान् लोगों ने मुक्त-कण्ठ से इस अवस्था की प्रशंसा की है।

वे मुझे अपने पास बैठा कर भाँति भाँति के सुन्दर और समीचीन उपदेश देने लगे।—पृष्ठ २

इस जीवन-संग्राम में धनी और निर्धनों को सब प्रकार का दुःख सहना पड़ता है, किन्तु मध्यवित्त वालों को वैसा दुःख भोगने का अवसर नहीं आता। धनवान् लोग अनाचार; असंयम और विलास-परायणता में पड़ कर और दरिद्र लोग कदन्न-भक्षण या निराहार के द्वारा स्वास्थ्य भङ्ग करके जो अनेक कष्ट और अशान्ति भोगते हैं, उन यातनाओं से मध्यवित्त के मनुष्य बिलकुल बचे रहते हैं।

इसलिए वत्स! लड़कपन करके निश्चित सुख-शान्ति को लात मार कर, एकाएक विपत्ति के कूप में मत कूद पड़ो। मेरी बात पर ध्यान दो, नितान्त मूर्ख की भाँति काम करके बूढ़े माँ-बाप को कष्ट देना क्या ठीक है? मैं बार बार तुम्हें सावधान करता हूँ—पिता के वचन की अवहेला करने से भगवान् अप्रसन्न होंगे, उससे तुम्हारा अमङ्गल होगा।

यह कहते कहते उनका कण्ठ रुँध गया, फिर वे कुछ बोल न सके। उनकी आँखों से झर झर कर आँसू गिरने लगे।

यह देख कर मेरा जी व्याकुल हो उठा। मैंने निश्चय किया कि अब विदेश न जाऊँगा। पिता की इच्छा और आदेश के अनुसार देश में ही रह कर कोई रोज़गार करूँगा।

किन्तु हा खेद! कुछ ही दिनों में मेरी यह प्रतिज्ञा छूमन्तर होगई। मेरी बुद्धि फिर विदेशभ्रमण के लिए चञ्चल हो उठी। विदेश जाने के लिए फिर मेरी जीभ से लार टपकने लगी। पिता के अनुरोध से छुटकारा पाने के लिए मैंने कई सप्ताह के अनन्तर घर से भाग जाने ही का निश्चय किया।

किन्तु कल्पना के पहले उत्तेजना ने मुझे जितना पाबन्द कर रक्खा था, उतना शीघ्र मैं नहीं भागा। एक दिन मैंने

अपनी माँ को कुछ विशेष प्रसन्न देख कर कहा—माँ, मेरा मन विदेश देखने के लिए इतना व्यग्र हो रहा है कि मैं उसे किसी तरह शान्त नहीं कर सकता। मेरी उम्र अठारह वर्ष की हो चुकी। मैं इतनी उम्र में चाहता तो कोई व्यवसाय करता या कहीं अध्यापन-वृत्ति करता पर ये सब काम मुझसे न होंगे कारण यह कि उन कामों में मेरा जी ही नहीं लगता। मेरा मन यही चाहता है कि मैं काम-धन्धा छोड़ कर देश देशान्तर में घूमता फिरूँ, या एक दिन अपने मालिक का काम छोड़ कर समुद्र की ओर रवाना हो जाऊँ। मेरी उम्र अब विदेश जाने योग्य होगई। तुम लोग एक बार मुझे समुद्र की सैर कर आने दो। यदि समुद्र-यात्रा मेरे पसन्द न आवेगी तो मैं घर लौट आऊँगा और तुम लोगों का आज्ञाकारी हो कर रहूँगा ; तब तुम लोग जो कहोगी वही करूँगा। पिता जी से कह कर तुम उन से अनुमति दिला दो, नहीं तो तुम लोगों की अनुमति लिये बिना ही मैं चला जाऊँगा। क्या यही अच्छा होगा ?

मेरी बात सुन कर माँ क्रोध से एकदम जल-भुन उठी। वह बोली—मैं यह बात उनसे कभी न कह सकूँगी; तुम्हारे जी में जो आवे सो करो, आप ही दुःख भोगोगे। इसमें हम लोगों का क्या ? हम बूढ़ी हुईं, आज हैं, कल नहीं। हम तुम्हारी ही भलाई के लिए कहती सुनती हैं।

यद्यपि माँ ने यह बात पिता से न कहने ही के ऊपर ज़ोर दिया था तो भी थोड़ी ही देर के बाद मैंने सुना कि उन्होंने सब बातें पिता जी से जाकर कह सुनाईं। वे सब बातें ध्यानपूर्वक सुन कर लम्बी साँस लेकर बोले—लड़के को कुबुद्धि ने आ घेरा है। उसके भाग्य में कष्ट बदा है। अपने

मन से जाना चाहे तो चला जाय, मैं जाने की सलाह न दूँगा ।

इस प्रकार मेरे हठ और माता-पिता के निरोध की खींचातानी में एक वर्ष बीत गया। एक दिन संयोग पा कर मैं हल बन्दर की ओर घूमने गया। जाते समय मेरा भागने का इरादा बिलकुल ही न था। किन्तु वहाँ जाकर मैंने देखा, मेरा एक साथी अपने पिता के जहाज़ पर सवार होकर समुद्रपथ से लन्दन जा रहा है। वह अपने साथ मुझको ले जाने के लिए बार बार अनुरोध करने लगा और मुझ से कहने लगा कि जाने का तुम्हें कुछ ख़र्च न देना होगा। तब मैं माँ-बाप की अनुमति की अपेक्षा न कर के, उन लोगों को अपने जाने की कोई ख़बर दिये बिना ही जाने को प्रस्तुत हुआ। १६५१ ईसवी की पहली सितम्बर मेरे लिए एक अशुभ मुहूर्त था। उसी अशुभ मुहूर्त में शुभा-शुभ परिणाम की कुछ परवा न कर के, पिता-माता को बिना कुछ ख़बर दिये ही, ईश्वर से मङ्गल और माँ-बाप से आशीर्वाद की प्रार्थना किये बिना ही मैं उस लन्दन जानेवाले जहाज़ में जा बैठा।

यात्रा का आरम्भ होते न होते मेरी विपत्ति का आरम्भ होगया। जहाज़ खुल कर अभी बीच समुद्र में भी न गया था कि हवा ज़ोर से चलने लगी और समुद्र का जल ऊपर की ओर उछलने लगा। तरङ्ग पर तरङ्ग उठने लगी। देखते ही देखते समुद्र का आकार भयङ्कर हो उठा। मैंने इसके पूर्व कभी समुद्रयात्रा न की थी, इसलिए मेरा जी घूमने लगा। बारंबार वमन के वेग से शरीर, और डर से हृदय, काँपने लगा। मैं मन ही मन सोचने लगा—"दुष्ट महामूर्ख की भाँति,

कर्तव्य की अवहेला करके, पिता के पास से भागने का यह उचित दण्ड ईश्वर ने दिया।" उस समय माँ-बाप के अनुनय, अश्रुजल और उपदेश मुझे याद आने लगे। ईश्वर और पिता के प्रति मेरे कर्तव्य की त्रुटि के लिए मेरी धर्मबुद्धि मुझ को बार बार धिक्कारने लगी।

आँधी का वेग क्रमशः बढ़ने लगा और समुद्र का जल ताड़ के बराबर ऊपर बढ़ गया। दो-एक दिन पहले मैंने आँधी और समुद्र का जैसा कुछ भयङ्कर रूप देखा था उससे कहीं बढ़ कर आज की आँधी और समुद्र की अवस्था थी। मेरे प्राण सुखाने के लिए अभी यही यथेष्ट था। क्योंकि उस समय मेरी उम्र नई थी और समुद्र के साथ मेरा यही प्रथम परिचय था। समुद्र की भीषण मूर्ति देख कर मैं यही सोचने लगा कि हम लोगों की जीवनलीला आज ही समाप्त होगी। जब मैं एक से एक ऊँची तरङ्ग को आते देखता तब मेरे मन में यही होता था कि अब की बार इसी के भीतर हम लोगों की चिरसमाधि लगेगी। प्रत्येक बार जहाज़ तरङ्ग के ऊपर चढ़ कर मानो आकाश को चूमता था, और दो तरङ्गों के बीच के गढ़े में पड़ने पर ऐसा मालूम होता था मानो वह पाताल में जा रहा है, अब फिर कभी ऊपर न आवेगा। यह भयङ्कर दृश्य देख कर मेरे होश उड़ गये। हृदय की ऐसी अधीरता के समय मैं ईश्वर से बार बार क्षमा की प्रार्थना और मन ही मन प्रतिज्ञा करने लगा कि भगवान्! इस बार यदि मेरे प्राण बच गये यदि खुशीखुशी समुद्र-तीरवर्ती सूखी ज़मीन पर मैं पैर रख सका तो इस जीवन में फिर कभी जहाज़ पर न चढ़ूँगा और न कभी समुद्रयात्रा का नाम ही लूँगा। समुद्र के किनारे पाँव रखते

ही एकदम पिता जी के पास हाज़िर हो जाऊँगा। उनके उपदेश की उपेक्षा कर फिर कभी इस तरह विपत्पयोधि में न धँसूँगा। तूफ़ान जितना ही सख़ होने लगा उतना ही पिता के उपदेश का मीठापन मेरे हृदय को अनुतप्त करने लगा।

जब तक तूफ़ान का वेग प्रबल था तब तक और उसके पीछे भी कुछ देर तक, यह सुबुद्धि मेरे हृदय पर अधिकार जमाये रही। दूसरे दिन वायु का वेग कुछ कम हुआ। समुद्र ने भी पहले से कुछ शान्तमूर्ति धारण की। मैं भी समुद्रयात्रा में कुछ कुछ अभ्यस्त हो चला। फिर भी उस दिन मैं बराबर गम्भीर भाव धारण किये रहा। किन्तु तब भी मेरा जी कुछ कुछ घूम रहा था और रह रह कर मुँह में पानी भर आता था। साँझ होते होते आँधी एकदम रुक गई। सायंकाल का दृश्य अत्यन्त मनोहर देख पड़ा। सूर्य भगवान् समुद्र के ऊपर मानो सोना ढाल कर अस्त हुए। दूसरे दिन भी वैसी ही सुनहरी किरणों की शोभा विस्तीर्ण करके उदित हुए। यह देख कर मेरा चित्त फिर प्रफुल्ल हो उठा और जान पड़ा मानो इस जीवन में ऐसा सुन्दर दृश्य कभी न देखा था।

रात में मुझे अच्छी नींद आई, और वमन का उद्वेग भी शान्त होगया। मैं पूर्व दिन के उत्तुङ्ग-तरङ्ग-भीषण समुद्र को इस समय प्रशान्त और सुन्दर देखकर विस्मित हो रहा था। तब मेरा साथी, जिसके प्रलोभन से मैं आया था, मेरे पास आकर और मेरी पीठ को थपथपाकर कहने लगा—क्यों जी राबिन्सन! कल ज़रा हवा तेज़ हुई थी तब तो तुम खूब डरे थे? उसकी यह बात सुनकर मैं अवाक् हो गया। भला यह क्या कह रहा है? इतनी बड़ी आँधी इसके निकट एक तेज़ हवा मात्र है। तब न मालूम आँधी कैसी होगी? जो हो,

अपने साथी का उत्साहवाक्य सुनकर और समुद्र की मनोहरता देख कर मैं पूर्व दिन की सब प्रतिज्ञायें और संकल्प धीरे धीरे भूलने लगा। बीच बीच में सुबिद्धि का उदय होता भी था तो उसे मैं मानसिक दुर्बलता कह कर मन से दूर कर देने लगा। पाँच छः दिन में जब मैं समुद्र के स्वभाव से कुछ कुछ परिचित हो गया तब फिर उन सुविचारों का हृदय पर असर न होने दिया। किन्तु इस औद्धत्य के कारण विधाता ने मेरे भाग्य में अनेक तिरस्कार और लज्जनाओं की व्यवस्था पहले ही ठीक कर रक्खी थी।

क्रूसो के भाग्य में भयङ्कर तूफ़ान

समुद्र-यात्रा के छठे दिन हम लोगों का जहाज़ यारमाउथ बन्दर में आ लगा। आँधी आने के पीछे आज तक हवा प्रतिकूल और समुद्र स्थिर था, इसलिए हम लोग बहुत ही थोड़ी दूर आगे बढ़ सके। हम लोगों ने बाध्य होकर यहाँ लङ्गर डाला। सात आठ दिन तक वायु प्रतिकूल चलती रही, इस कारण हम लोग वहाँ से हिलडुल न सके। इसी बीच न्यूकैसिल से बहुत से जहाज़ इस बन्दर में आकर अनुकूल वायु की प्रतीक्षा करने लगे।

हम लोग इतने दिन इस बन्दर में बैठे न रहते, नदी के प्रवाह की विपरीत दिशा में चले जाते; किन्तु हवा का वेग बढ़ते बढ़ते चार पाँच दिन के बाद बहुत प्रबल हो उठा। परन्तु नदी के मुहाने को बन्दर की ही भाँति निरापद जान कर और हम लोगों के जहाज़ की रस्सी को बहुत मजबूत समझ कर माँझी लोग निश्चिन्त और निःशङ्कभाव से समुद्र

की आँधी के समय की भाँति बड़ी सावधानी और फुरती के साथ समय बिता रहे थे। आठवें दिन सवेरे वायु का वेग और भी प्रबल हो उठा। हम लोग जहाज़ सँभालने में जी जान से लग पड़े। मस्तूल का ऊपरी हिस्सा नीचे गिरा दिया। और ऐसी व्यवस्था करने लगे जिसमें जहाज़ सुरक्षित होकर हम लोगों को आराम दे। दो पहर होते होते समुद्र ने भयङ्कर रूप धारण किया। हम लोगों के जहाज़ का अग्रभाग और पीछे का हिस्सा जल में ऊब डूब करने लगा। समुद्र के प्रत्येक हिलकोरे में जहाज़ के भीतर जल आने लगा। कप्तान ने और कोई उपाय न देख एक बड़ा लंगर फेंक देने का आदेश दिया और लंगर की जितनी ज़ंज़ीरें थीं सब पानी में छोड़ दी गईं।

क्रमशः तूफ़ान भयानक हो उठा। उस समय मैंने नाविकों के चेहरे पर भी भय का चिह्न देखा। जहाज़ की रक्षा के प्रबन्ध में व्यग्र होकर कप्तान बार बार अपनी कोठरी में जाते थे, और बार बार बाहर आते थे। उनको मैंने आप ही आप यह कहते सुना था, "हे ईश्वर दया करो, हा सर्वनाश हुआ, हम लोगों की जान गई।" तूफ़ान की प्रथम अवस्था में मैं कुछ निश्चिन्त सा होकर चुपचाप अपनी कोठरी में पड़ा था, और अपने मन में सोच रहा था कि यदि बहुत बड़ा तूफ़ान होगा तो उस दिन का ऐसा होगा। किन्तु स्वयं कप्तान को भीत होते देखकर मैं बेहद डरा।

मैंने अपनी कोठरी से बाहर आकर जो भयङ्कर दृश्य देखा, उससे मेरे होश उड़ गये। पर्वत की तरह उच्च आकार धारण कर समुद्र तीन चार मिनट के भीतर ही हमारे जहाज़ को ले देकर रसातल में पहुँचा देगा। मैं जिस ओर देखता

था उधर विपत्ति ही विपत्ति नज़र आती थी। माल से भरे दो जहाज़ों के मस्तूल जड़ से काट कर इसलिए फेंक दिये गये कि वे कुछ हलके हो जायँ। एक भी जहाज़ ऐसा न था जिसका मस्तूल खड़ा हो; लंगर कट जाने से दो जहाज़ समुद्र की ओर प्रधावित होकर बाहर निकल गये। हमारे जहाज़ के नाविक गण कहने लगे—"यहाँ से एक मील पर एक जहाज़ डूब गया है।" केवल बोझ से ख़ाली जहाज़ कुछ निरापद और स्वच्छन्द थे, किन्तु उनमें भी दो जहाज़ हमारे जहाज़ के निकट चले आये थे।

सन्ध्या-समय हमारे जहाज़ के मेट और मल्लाहों ने मस्तूल काटकर जहाज़ हलका करने के लिए कप्तान की अनुमति चाही; किन्तु इसमें उनकी सम्मति न थी; पर मल्लाहों ने जब उनको अच्छी तरह समझा कर कहा कि मस्तूल न काटने से जहाज़ न बचेगा, तब लाचार होकर उन्होंने आज्ञा दे दी। आज्ञा होते ही मल्लाहों ने मस्तूल काट कर जितने डेक थे सबों को एक दम साफ़ कर दिया।

यह हाल देख-सुन कर मेरे चित्त की जो अवस्था हो रही थी वह अनिर्वचनीय है। क्रमशः तूफ़ान ने ऐसा भयानक रूप धारण किया जिससे मल्लाह भी कहने लगे कि "ऐसा तूफ़ान हम लोगों ने कभी न देखा था।" हम लोगों का जहाज़ बहुत मज़बूत और अच्छा था, किन्तु बोझा बहुत था, इससे वह ऐसा बेढब हिलने डुलने लगा कि मल्लाह लोग भी रह रह कर चिल्ला उठते थे कि "अब की बार जहाज़ गया, अब डूबा, इस बार अब न बचेगा।" मैंने अब तक कभी जहाज़ डूबते नहीं देखा था, इसीसे कुछ जीवित दशा में था, नहीं तो भय से ही मर गया होता।

मैंने देखा कि जहाज़ के कप्तान, माझी, मल्लाह और मेट आदि, जो सहज ही डरने वाले न थे वे लोग भी, लग्गी-पतवार छोड़ कर ईश्वर की प्रार्थना करने बैठ गये। सभी लोग पल पल में समुद्र की तलहटी में जाने की आशङ्का कर रहे थे।

इसी प्रकार उद्वेग और अशङ्का में समय कटने लगा। आधी रात के समय एक नाविक ने आकर ख़बर दी कि जहाज़ में छेद हो गया है। एक और व्यक्ति ने ख़बर दी कि जहाज़ के भीतरी पेंदे में चार फुट पानी भर गया है। तब सब लोग पानी उलीचने के लिए बुलाये गये। इतनी देर में मैं अकर्मण्य हो बैठा था, क्योंकि मैं नौका-सम्बन्धी विद्या में अपटु था। मैं न जानता था कि क्या करने से जहाज़ की रक्षा होगी। नौका-सञ्चालन की शिक्षा का प्रारम्भ ही किया था। किन्तु इस समय पम्प चलाने के लिए मेरी भी पुकार हुई। मैं भय से काँपता हुआ कोठरी से निकल चला।

हम लोग प्राणपण से पम्प चला कर जहाज़ में से पानी उलीच कर बाहर फेंक रहे थे। इतने में हमारे जहाज़ से विपत्ति के संकेत-स्वरूप तोप का शब्द हुआ। मैंने समझा, या तो जहाज़ टूट गया है या और ही कोई भयानक दुर्घटना हुई है। मैं ख़ौफ़ के मारे मूर्छित हो गिर पड़ा। उस समय सभी लोग अपने अपने प्राण बचाने की फ़िक्र में थे, किसी ने मेरी अवस्था पर ध्यान न दिया। एक व्यक्ति ने मुझे मुर्दा समझ कर लात से अलग हटा दिया और मेरी जगह आकर आप पम्प चलाने लगा। मैं बहुत देर बाद होश में आया और देह झाड़ कर उठ खड़ा हुआ।

हम लोग पम्प के द्वारा पानी फेंक रहे थे, किन्तु जहाज़ के निम्नप्रदेश में पानी क्रमशः बढ़ने ही लगा। तब सभी ने

निश्चय किया कि अब हम लोगों का जहाज़ डूब जायगा। यद्यपि तूफ़ान कुछ कम हुआ, तो भी किसी बन्दर तक जहाज़ का पहुँचना असम्भव जान कर जहाज़ का मालिक, सहायता के लिए, सङ्केत-स्वरूप तोप की आवाज़ करने लगा। एक जहाज़ी ने साहस कर के हम लोगों के सहायतार्थ एक नाव भेजी। अत्यन्त विपत्ति के बीच से होकर नाव हम लोगों के पास आई। किन्तु वह जहाज़ के पार्श्व में किसी तरह स्थिर नहीं रह सकती थी। इस कारण हम लोग भी उस नाव पर न जा सकते थे। आख़िर उस नाव के मल्लाह हम लोगों के प्राण बचाने के लिए अपने प्राणों की ममता छोड़ कर के बड़ी फुरती के साथ ख़ूब ज़ोर से पतवार चलाने लगे और हम लोगों के माँझी ने उस नाव पर झट एक रस्सी फेंक दी। नाव के खेने वाले बड़े कष्ट से उस रस्सी को पकड़ कर किसी किसी तरह अपनी नाव को जहाज़ के पास ले आये। फिर क्या था, हम लोग बड़ी फुरती के साथ उस पर चढ़ गये। नाव पर चढ़ कर फिर उस नाव भेजने वाले जहाज़ के पास उसे लौटा कर ले जाना हम लोगों के लिए असंभव था। इस लिए हम लोग नाव को समुद्र के प्रवाह में छोड़ कर धीरे धीरे सूखी ज़मीन की ओर ले जाने के लिए पतवार से काम लेने लगे। प्रवाह और पतवार के ज़ोर से नाव उत्तर ओर बह चली।

जहाज़ छोड़ने के पन्द्रह मिनट पीछे हम लोगों का जहाज़ डूबने का उपक्रम करने लगा। तब मैं अच्छी तरह समझ गया कि जहाज़ का डूबना कैसा भयङ्कर दृश्य है!

जब नाविक गण कहने लगे कि जहाज़ डूब रहा है तब मारे भय के मैं आँख उठा कर उस तरफ़ देख तक नहीं सकता

था। जब से जहाज़ वालों ने झट पट जहाज़ से उतार कर मुझे नाव पर बैठा दिया था तब से भय और भविष्य की चिन्ता से मेरा प्राण अब-तब में हो रहा था।

हम लोगों की नाव जब उच्च तरङ्ग के ऊपर आ पड़ती थी तब समुद्र का किनारा देख पड़ता था, और हम लोगों की नौका समुद्रतट के निकटवर्ती होने पर सहायता करने की इच्छा से कितने ही लोग समुद्र के किनारे इधर उधर दौड़ते हुए दिखाई दे रहे थे। किन्तु हम लोगों की नाव किनारे की ओर बहुत ही धीरे धीरे जा रही थी। नाव बहुत दूर तक बह कर एक खाड़ी में जा पड़ी इससे हवा कम लगने लगी। तब हम लोग बड़े परिश्रम से नाव को किनारे लगा कर सूखी ज़मीन पर उतर आये और स्थलमार्ग से यारमाउथ लौट गये। वहाँ के अधिवासी सौदागर और मजिस्ट्रेट प्रभृति सभी सज्जनों ने हम लोगों के दुर्भाग्य पर सहानुभूति प्रकट कर आश्रय और साहाय्य दिया और प्रत्येक को हल या लन्दन शहर जाने तक का राह-ख़र्च देने की भी कृपा की।

इस समय मैं यही सोचने लगा कि किधर का रास्ता पकड़ूँ। सुबुद्धि होने से अपने घर लौट जाना उचित था। किन्तु मेरी ज़िद मुझे विनाश-पथ की ही ओर बलात् खींच कर ले जाने लगी। घर जाकर माँ बाप और पड़ोसियों को मुख दिखलाने में लज्जा होने लगी। मैं, दिये के पतङ्ग की भाँति विवेकशून्य होकर आप ही अपने विनाश की ओर उद्यत हुआ।

कप्तान का बेटा मेरा साथी था। उसे मैंने अब की बार अत्यन्त क्रुद्ध और गम्भीर देखा। स्वयं कप्तान अपने पुत्र से

मेरा परिचय पाकर क्रोध से भयानक मूर्ति धारण कर बोला—अभागा कहीं का, तेरे ही कारण मेरा सर्वनाश हुआ। जा, तू अभी घर लौट जा। माँ-बाप की असम्मति से यात्रा करके तू खुद मरेगा और दूसरों को भी मारेगा। कोई मुझको लाख रुपया भी देगा तो भी जिस जहाज़ पर तू रहेगा उस पर मैं पैर न रक्खूँगा। बच्चा! समुद्रयात्रा का मज़ा तो तुम ने खूब ही चखा, अब घर जाकर अपने माँ बाप से जा मिलो।

उन्होंने इस प्रकार भला-बुरा कह कर मुझे कितना ही समझाया-बुझाया। किन्तु मैं तो मरने ही पर कमर कसे था, इसलिए उनके उपदेश पर ध्यान न देकर वहाँ से निकल चला। जेब में खर्च के लिए कुछ रुपया आ ही गया था; अतएव स्थल-मार्ग से मैं लन्दन को रवाना हुआ। किन्तु रास्ते में दो ओर मेरे चित्त का खिंचाव होने लगा। एक बार मैं सोचता था कि "मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? समुद्र-यात्रा में क्या लाभ है? घर लौट जाना ही अच्छा है।" फिर अकारण लज्जा और चित्त का एक विचित्र झुकाव मुझे रोक लेता था। विशेष कर मनुष्यों की कम उम्र का स्वभाव बड़ा ही विलक्षण होता है। पाप करने में उसे कुछ लज्जा नहीं होती, बल्कि अनुताप द्वारा प्रायश्चित्त करके पाप के संशोधन करने ही में लज्जा मालूम होती है। जिस काम के करने से वे मूर्ख कहलावेंगे वह काम निःसंकोच होकर करेंगे; किन्तु जिस काम के द्वारा उनके सद्ज्ञान का परिचय पाया जायगा वही करने में उनको शर्म लगती है।

मैंने फिर समुद्रयात्रा की ही बात स्थिर की।

क्रूसो का दासत्व

मैं लन्दन में पहुँचते ही दूर देश को जाने वाले जहाज़ की खोज करने लगा। मैं जिसके जहाज़ पर जाता था वही मेरे कपड़े-लत्ते, भद्रवेष और जेब में रुपया देखकर मेरी ख़ातिर करता था। भाग्यवशात् मैं लन्दन जाकर भद्र लोगों के ही साथ परिचित हुआ। अन्यान्य युवकों की भाँति मैं कुसंगति में न पड़ा। आफ़्रिका महादेश के अन्तर्गत गिनी देश को जाने वाले जहाज़ के अध्यक्ष से मेरी भेंट हुई। पहली बार वहाँ जाने से उन्हें लाभ हुआ था, इस कारण वे फिर वहीं जा रहे थे। वे मेरे देशाटन के शौक़ की बात सुनकर बोले—यदि तुम मेरे साथ चलना चाहो तो चल सकते हो। न तुम्हें कुछ भाड़ा देना होगा, और न खाने-पीने की कुछ फ़िक्र करनी पड़ेगी। तुम मेरे साथी बनकर चलना। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो कुछ तिजारती चीज़ें भी अपने साथ ले सकते हो। हो सकेगा तो उससे वहाँ तुम्हें दो पैसे का लाभ भी हो जायगा।

मैं तुरन्त उसके प्रस्ताव पर सम्मत हुआ और शीघ्र ही उसके साथ मेरी घनिष्ठता हो गई। किन्तु यह सुयोग मेरे लिए कुछ अच्छा न था। इसे मेरा अभाग्य ही कहना ठीक होगा। जब समुद्र-भ्रमण की मेरी दुर्दम्य स्पृहा थी तब क्यों न ऐसा हो। समुद्र-भ्रमण की उत्कट अभिलाषा रहने पर तो मुझे किसी जहाज़ पर नाविक होकर जहाज़ चलाने आदि की अभिज्ञता पहले प्राप्त कर लेनी चाहिए थी। इससे भविष्य में मेरा विशेष उपकार भी हो सकता था। किन्तु मेरे अच्छे कपड़े लत्ते और भद्रवेष मेरे नाविक होने में

विघ्न-स्वरूप होरहा था। मैं जहाँ जाता था वहीं सब लोग शिष्ट जान कर मेरा आदर करते थे।

कप्तान के उपदेशानुसार मैं कई रुपयों के अच्छे अच्छे खिलौने और अन्याय चटकीली भड़कीली कम दाम की चीज़ें लेकर गिनी शहर को गया। वहाँ अच्छा मुनाफ़ा हुआ। वहाँ से अन्दाज़न पौने तीन सेर सोने की गर्दा लाकर लन्दन में बेच कर मैंने कोई साढ़े चार हज़ार रुपये कमाये। यही सफलता मेरे वाणिज्य और विदेश-भ्रमण के प्रलोभन का विशेष कारण हुई।

मेरे जीवन में यही एकमात्र सामुद्रिक यात्रा कितने ही अंशों में निर्विघ्न हुई थी। किन्तु दुर्भाग्य तो मेरे साथ ही था। मैं आफ्रिका के दुःसह ग्रीष्म ताप से यद्यपि अस्वस्थ हो गया था तथापि यह यात्रा मेरे लिए लाभमूलक ही रही। धन कमाने के अतिरिक्त मैंने नौका-सञ्चालन के विषय में कितने ही तत्त्व भी स्थूलरूप से सीख लिये थे। यह सब मेरे मित्र कप्तान की दया का ही फल था। मुझ को कुछ सिखलाते समय वे बहुत प्रसन्न होते थे, और मैं भी सीखते समय विशेष आनन्द पाता था। सारांश यह कि इस दफ़े मैं नाविक और वणिक दोनों हो कर लौटा।

मैं गिनी देश का एक व्यवसायी हो गया, किन्तु मेरे दुर्भाग्यदोष से मेरे कप्तान मित्र की शीघ्र ही मृत्यु हो गई। तब उस जहाज़ का मेट कप्तान हुआ। मैं उसके साथ यत्किञ्चित मूल धन लेकर गिनी को रवाना हुआ। और रुपया अपने मित्र की स्त्री के पास बतौर धरोहर के रख गया।

इस बार मैं अत्यन्त अशुभ मुहूर्त में रवाना हुआ था। लगातार आपदाएँ मेरा पीछा करने लगीं।

हमारा जहाज़ जब अफ्रीका के उपसमीप कनारी द्वीप के मध्य से जा रहा था तब एक दिन प्रातःकाल के ईषत् प्रकाश में देखा कि मरक्को देश के शैली बन्दर का एक तुर्की लुटेरा जहाज़ पाल ताने बड़े वेग से हम लोगों को पकड़ने के लिए दौड़ा चला आ रहा है। यह देख कर हम लोग भी यथासम्भव पाल तान कर भाग चले। किन्तु वह जहाज़ हम लोगों के जहाज़ की अपेक्षा फुर्ती से चलकर क्रमशः हम लोगों के निकट आने लगा। तब हम लोग समझ गये कि कुछ घंटों में उस जहाज़वाले हम लोगों को पकड़ लेंगे। अगत्या हम लोग उनके साथ युद्ध करने की तैयारी करने लगे। हम लोगों के जहाज़ पर बारह और उन लुटेरों के पास अठारह तोपें थीं कोई तीन बजे दिन को वह लुटेरा जहाज़ एकदम हम लोगों के समीप आ पहुँचा। किन्तु भूल से उन लोगों ने हम लोगों के पीछे की ओर से आक्रमण न करके पार्श्वभाग से आक्रमण किया। हम लोगों ने उस तरफ़ आठ तोपें लगा कर उस जहाज़ पर लगातार गोला बरसाना शुरू किया। गोलों की मार खाकर वह जलदस्यु जहाज़ दूर हट गया, किन्तु हटते हटते भी वह एक साथ दो सौ बन्दूकें दाग़ करके हमारी तोपों का जवाब देता गया। ईश्वर की कृपा से बन्दूकों की गोलियाँ हमारे दल में किसी को भी नहीं लगीं। वह हत्यारा जहाज़ सँभल कर फिर हम लोगों के ऊपर आक्रमण करने आया। हम लोग भी आत्मरक्षा के लिए प्रस्तुत हुए।

उस जहाज़ के अध्यक्ष ने हमारे जहाज़ से भिड़कर साठ लुटेरों को हमारे जहाज़ पर चढ़ जाने की आज्ञा दी। हमारे जहाज़ पर आते ही वे लोग झटपट पाल की रस्सी काटने लगे। हम लोगों ने बन्दूक़ और बर्छा चला कर तथा ख़ाली बारूद की पुड़िया छोड़ कर दो-एक बार उन को भगा कर अपने डेक को बचाया, किन्तु अन्त में हम लोगों के तीन आदमी मारे गये, आठ घायल हुए और जहाज़ की गति भी मन्द हो गई। उसके कई कल-पुर्ज़े टूट जाने से वह लँगड़ा सा हो गया। तब हम लोग पकड़ लिये गये। हम लोगों को पकड़ कर वे शैली बन्दर में ले गये।

मैंने जैसी आशङ्का की थी वैसा कोई क्रूर व्यवहार वहाँ जाने पर देखने में न आया। डाकुओं के सर्दार ने हमारे साथी अन्यान्य बन्दियों को राज-दरबार में दास बनाकर भेज दिया और मुझको अपने पास रख लिया। मैं युवा और उत्साही था, इसलिए उसने मुझको अपने काम के उपयुक्त समझ कर ही शायद अपने यहाँ रख लिया।

मेरे इस अवस्था-परिवर्तन में—वणिक् से एकदम दास होकर रहने में—मेरा हृदय अत्यन्त व्यथित होने लगा। उस समय मुझे फिर पिता का उपदेश और दुर्भाग्य की बात स्मरण होने लगी। किन्तु मैं तब भी न समझ सका कि मेरे संकट का अभी अन्त नहीं हुआ है, अनेक संकट अब भी भोगने को पड़े हैं।

मेरे नये मालिक मुझको अपने घर ले गये। तब मेरे मन में कुछ कुछ यह नई आशा होने लगी कि वे जब जब समुद्र की यात्रा करेंगे तब तब मुझको ज़रूर साथ ले जायँगे। और, मेरे भाग्य से वे कभी न कभी स्पेनिश या

पोर्चुगीज़ों के सरकारी लड़ाकू जहाज़ से आक्रान्त होकर बन्दी होंगे तब मुझे फिर स्वाधीनता मिलेगी।

किन्तु मेरी यह आशा शीघ्र ही जाती रही। जब वह जहाज़ पर जाता था तब मुझे अपने गृहसम्बन्धी काम सँभालने के लिए घर ही पर छोड़ जाता था और जब घर लौट आता था तब मुझको जहाज़ की निगरानी के लिए जहाज़ पर सोने की आज्ञा देता था।

यहाँ रह कर भागने की चिन्ता के सिवा मेरे मन में और कोई चिन्ता न थी। चिन्ता करके भी मैं भागने का कोई उपाय स्थिर न कर सकता था। कितने ही उपाय सोचता था, किन्तु किसी में जी न भरता था, एक भी उपाय युक्तियुक्त न जान पड़ता था। वहाँ मेरे मेल का कोई ऐसा आदमी भी न था जिसके साथ कुछ सलाह करता। दो वर्ष प्रायः योंही बीत गये। भागने की आशा भी क्रमशः क्षीण होने लगी। किन्तु दो साल के बाद एक अनुकूल घटना के सुयोग से भागने की पुरानी चिन्ता फिर मेरे मन में उत्पन्न हुई। मेरे मालिक द्रव्य के अभाव से उस बार अधिक समय तक घर पर रह गये। उन दिनों, आकाश साफ़ रहने पर, प्रति सप्ताह में दो तीन दिन जहाज़ की उपसहायक छोटी डोंगियों पर चढ़कर वे मछली पकड़ने जाते थे। वे मुझको और मारइस्को नामक एक नवयुवक को पतवार चलाने के लिए साथ ले जाते थे। मैं नाव खेकर उन्हें खूब प्रसन्न कर देता था। दूसरे, मैं मछली पकड़ने में भी पूरा उस्ताद था। इसलिए वे कभी कभी अपने आदमी मुर और मारइस्को को मेरे साथ देकर मुझी को मछली पकड़ने के लिए भेज देते थे।

एक दिन बहुत सवेरे जब हम लोग मछली पकड़ने चले तब ऐसा गाढ़ा कुहरा पड़ा कि किनारे से आध मील दूर जाते जाते किनारा अदृश्य हो गया। हम लोग किस तरफ़ कहाँ जा रहे हैं, यह कुछ न समझ पड़ा। सारे दिन और सारी रात हम लोग बराबर नाव खेते रहे। जब प्रभात हुआ तब देखा कि हम लोग किनारे की ओर न जाकर किनारे से दो तीन मील दूर समुद्र की ही ओर चले गये हैं। निदान हम लोग बहुत परिश्रम और संकटों को झेलते हुए राम राम करके किनारे पर पहुँचे। किन्तु कठिन परिश्रम और दिन-रात के उपवास से हम लोग राक्षस की भाँति भूख से व्याकुल हो गये थे।

हमारे स्वामी ने इस यात्रा में शिक्षा पाकर भविष्य में विशेष रूप से सावधान होने का संकल्प किया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब कभी दिग्दर्शक कंपास और भोजन की सामग्री साथ लिये बिना मछली पकड़ने न जायँगे। वे हम लोगों के गिनी जानेवाले जहाज़ की एक लम्बी सी डोंगी पकड़ लाये थे। उन्होंने उस डोंगी के आगे पीछे मल्लाह के खेने की जगह छोड़ कर उसके बीच में एक छोटा सा घर बनाने के लिए अपने मिस्त्री को हुक्म दिया। उनका मिस्त्री भी एक बन्दी अँगरेज़ युवक था। उसने मालिक की आज्ञा पाते ही एक कमरा और उसके भीतर खाने पीने की वस्तुएँ तथा कपड़ा आदि रखने के लिए आलमारी इत्यादि बना कर एक अच्छा कमरा तैयार कर दिया।

हम लोग अक्सर उसी डोंगी को लेकर मछली पकड़ने जाते थे। मछली पकड़ने में मैं सिद्धहस्त था, इसलिए कभी ऐसा न होता कि मेरे स्वामी मुझको अपने साथ न ले जायँ।

एक दिन निश्चय हुआ कि उस देश के दो तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति मूर के साथ मछली का शिकार खेलने जायँगे। इस कारण पूर्वरात्रि में ही खाने-पीने की यथेष्ट सामग्री डोंगी में भरी गई। वे लोग मछलियों और चिड़ियों का शिकार करने वाले थे, इसलिए उन्होंने मुझको कुछ गोली-बारूद और बन्दूक भी साथ में ले जाने की आज्ञा दी थी।

दूसरे दिन बड़े तड़के मैंने, स्वामी की आज्ञा के अनुसार, सभी उपयुक्त वस्तुएँ ले जा कर कमरे में रख दीं। नाव को अच्छी तरह धो-धुला कर साफ़ करके मालिक और उनके साथिओं के आने की मैं प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर के बाद मालिक ने आ कर मुझसे कहा—"क्रूसो, हमारे आगन्तुक व्यक्तियों का आज शिकार के लिए आना न हुआ। वे किसी आवश्यक कार्यवश रुक गये। वे लोग आज कल रात को हमारे ही घर भोजन करेंगे, इसलिए हम भी आज मछली के शिकार में न जा सकेंगे। तुम्हीं लोग जाओ, जो कुछ थोड़ी घनी मिल जाय, लेकर शीघ्र घर लौट आना।" वे अपने विश्वासपात्र मूर और इकजूरी नामक एक लड़के को मेरे साथ जाने की आज्ञा दे कर चले गये।

उस समय भाग निकलने की धुन फिर मेरे हृदय में समाई।

क्रूसो का भागना।

एक बहुत बड़ी डोंगी मेरे अधीन हुई। उसे छोटा मोटा जहाज़ ही कहना चाहिए। मेरे लिए यह कुछ सामान्य सुयोग न था। जब मेरे मालिक चले गये तब मैं मछली पकड़ने का बहाना करके भागने का उद्योग करने लगा।

किन्तु भाग कर किस ओर कहाँ जाऊँगा इसका कुछ ठीक न था; केवल वहाँ से किसी तरह भाग निकलना ही मेरा उद्देश्य था।

मैंने जलयात्रा के लिए कुछ अधिक परिमाण में खाद्य सामग्री लेने के अभिप्राय से छल करके मूर से कहा—"मालिक के लिए जो खाने की चीज़ें लाकर रक्खी हैं, वे हम लोग खा लें, यह ठीक नहीं; हम लोग अपने लिए कुछ खाद्य अलग ले लें"। उसने भी मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर कहा, "हाँ, यह बात सही है।" फिर वह बड़ी फुरती से एक बहुत बड़े टोकरे में खाने की सामग्री और तीन घड़ों में मीठा जल भर कर ले आया। मूर जब खाद्य वस्तु लाने गया था। तब मौक़ा पा कर मैंने भी कुछ खाने-पीने की वस्तुएँ ला कर इस ढंग से वहाँ रख दीं कि जिसके देखने से मालूम हो कि वह पहले ही से मालिक के लिए लाकर रक्खी गई हैं। खाने-पीने की वस्तुओं के अतिरिक्त मैंने बीस-पच्चीस सेर मोम, थोड़ा सूत, एक कुल्हाड़ी, एक कुदाल और एक हथौड़ी चुपचाप छिपा कर नाव में रख ली थी। इन सब सामग्रियों से मेरा यथेष्ट उपकार हुआ था। विशेष करके मोमबत्ती बनाने से मुझे बड़ी सहायता मिली थी। मैंने मूर को एक बार और ठगा। उससे कहा, "मालिक की बन्दूक़ तो नाव में है ही, कुछ गोली-बारूद पास रहती तो हम लोग चिड़ियों का भी शिकार कर सकते।" यह सुन कर मूर ने उसी समय कुछ छर्रे, बारूद और गोली आदि ला कर मेरे हवाले किया। मैंने उन चीज़ों को अपने पहले के लाये हुए सामान के साथ रख दिया।

इस प्रकार भागने का सब सामान ठीक करके हम लोग रवाना हुए। बन्दर के सामने जो किला था, उसके पहरेदार हमारे परिचित थे। इसलिए उन लोगों ने मुझ पर विशेष लक्ष्य न किया। हम लोग बन्दर से डेढ़ दो मील पर जा कर, नाव का पाल गिरा कर, मछली पकड़ने लगे। उस समय हवा मेरी इच्छा के विरुद्ध बह रही थी। उत्तरीय वायु बहने से मैं स्पेन के उपकूल या केडिज उपसागर में जा पहुँचता। किन्तु हवा जैसी चाहे बहे, मैं इस कुत्सित स्थान को त्याग कर ज़रूर जाऊँगा—यह मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया था। पीछे जो भाग्य में बदा होगा, होगा। भविष्य की चिन्ता भविष्य में की जायगी, अभी जिस तरह हो यहाँ से रफूचक्कर होना ही ठीक है।

हम लोग बड़ी देर तक बनसी डाले बैठे रहे, पर एक भी मछली नहीं पकड़ सके; कारण यह कि मछली मेरी बनसी को निगल भी जाती थी तो भी मैं लग्गी को नहीं खींचता था। मैंने मूर से कहा—यहाँ मछली पकड़ने की सुविधा न होगी, ज़रा गहरे पानी में चलो। वह राज़ी होगया। वह नाव के अग्र भाग की ओर था; उसने पाल तान दिया। मेरे हाथ में नाव खेने का लग्गा था। मैं धीरे धीरे नाव को खेकर किनारे से एक डेढ़ मील दूर ले गया। तब मैंने मछली पकड़ने का बहाना करके नाव को ठहराया और उस बालक के हाथ में लग्गा देकर मैंने नौका के सम्मुख की ओर गया। वहाँ ज़ाकर, मानो मैं कोई चीज़ खोज रहा हूँ इस तरह का भाव दिखा कर, मैं मूर के पीछे गया और एकाएक उसकी कमर पकड़ कर खूब ज़ोर से उसे उठा कर पानी में फेंक दिया। वह समुद्र में गिर कर सूखी लकड़ी की तरह तैरने

लगा। वह नाव पर बिठा लेने के लिए विनती करके कहने लगा कि चाहे जितनी दूर चलो, मैं बिना कुछ उज्र किये तुम्हारे साथ चलूँगा। वह तैरने में अत्यन्त कुशल था। वह मेरी नाव के पीछे पीछे बड़े वेग से तैर कर आने लगा। उस समय हवा का उतना ज़ोर न था। इससे आशङ्का होने लगी कि वह नाव को शीघ्र ही पकड़ लेगा। तब मैं झट बजरे की कोठरी में से बन्दूक़ ले आया, और उस (मूर) की ओर लक्ष्य कर के कहा "देखो, मैं तुम पर प्रहार करना नहीं चाहता और यदि तुम गोलमाल न करोगे तो तुम पर अस्त्र प्रहार करूँगा भी नहीं; तुम तो तैरना खूब जानते हो, अभी समुद्र भी शान्त है। इसलिए तैर कर समुद्र के किनारे चले जाओ। यदि तुम मेरे पास आओगे तो समझ रक्खो, मैं इसी बन्दूक़ से तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा। जिस तरह भी हो, मैं स्वतन्त्र होने का संकल्प कर चुका हूँ।" यह सुन कर वह मुँह फिरा कर किनारे की ओर जाने लगा। वह जैसा तैराक़ था उससे वह निःसन्देह बिना किसी क्लेश के किनारे पहुँच गया होगा।

इकजूरी लड़के को डुबा कर मैं मूर को साथ ले लेता तो मुझे बहुत सुभीता होता; किन्तु उस पर विश्वास न था। मूर के चले जाने पर मैं उस छोकरे की ओर घूम कर बोला—"क्यों रे लड़के! तू मेरा विश्वासपात्र होकर रहेगा न? नहीं तो तुझे भी समुद्र में डाल दूँगा।" उसने मेरे मुँह की ओर ताक कर ऐसे सरलभाव से हँस कर शपथ की कि मैं उस पर अविश्वास न कर सका।

मूर जब तक तैरता हुआ दिखाई दिया था तब तक मैंने नाव की माँगी को समुद्र की ही ओर घुमा रक्खा था,

यदि तुम मेरे पास आओगे तो, समझ रक्खो, मैं इसी बन्दूक से तुम्हारी खोपड़ी उड़ा दूँगा।—पृ० २५

मानो मैं जिब्राल्टर मुहाने की ही ओर जा रहा हूँ। जिसके हृदय में किञ्चित् भी बुद्धि का लेश होता वह इसी तरह सोचता, क्योंकि कौन ऐसा होगा जो अपनी खुशी से असभ्य देश में रह कर नरशत्रु काफ़िर या हिंस्र जन्तु के मुँह में पड़ने की इच्छा करेगा?

मैं सायंकाल के अन्धकार में अन्तर्हित होने की इच्छा से नाव की गति को घुमा फिरा कर किनारे के आस पास से होकर दक्खिन और पूरब की ओर जाने लगा। उस समय हवा खूब ठिकाने से बह रही थी, समुद्र भी स्थिर था; मेरी नाव पाल के सहारे चल पड़ी। दूसरे दिन पिछले पहर जब मैंने समुद्र का तट देखा तब मैं शैली बन्दर से क़रीब डेढ़ सौ मील दक्खिन ओर जा पड़ा था। वहाँ एक भी मनुष्य मेरे दृग्गोचर न हुआ। इससे जान पड़ा कि मैं मरक्को के सुलतान या निकटवर्ती ऐसे ही किसी राजा के राज्य से बाहर निकल आया हूँ। मैं किस मुल्क में आ पहुँचा, इसका कुछ ठिकाना नहीं। मूर लोगों के हाथों फिर बन्दी हो जाने का भय मेरे हृदय में यहाँ तक प्रबल था कि कहीं पर रुकने या स्थल में ठहरने की मेरी हिम्मत न पड़ती थी। वायु का क्रम पाँच दिन तक बहुत अच्छा था। मैं भी पाँच दिन तक बराबर चलता ही रहा। नाव का पाल भी इस बीच में कहीं नहीं उतारा। पाँच दिन के बाद हवा प्रतिकूल होकर दखनही बहने लगी। तब मैंने निश्चय किया कि यदि कोई जहाज़ मेरे पकड़ने के लिए पीछे आता भी होगा तो प्रतिकूल वायु के कारण उसकी गति रुद्ध होगी वा उसे सन्तोष करके लौट जाना पड़ेगा। अतएव अब लंगर डालने में कोई क्षति नहीं। यह सोच कर मैंने एक छोटी नदी के मुहाने में

लंगर डाला। वह नदी कहाँ से निकल कर किस देश से होती हुई समुद्र में आ मिली है, या उसका नाम क्या है, इन बातों का कुछ भी ठीक पता न लगा; न वहाँ किसी आदमी को ही मैंने देखा। देखने की लालसा भी न थी। उस समय मेरे मन में यदि कुछ इच्छा थी तो केवल सुस्वादु जल की। मैं इस मुहाने में सन्ध्या समय पहुँचा; अन्धकार होते न होते हम लोगों ने जंगली जानवरों की इतनी अद्भुत भयङ्कर गुर्राहट और चीत्कार सुना जिससे भय के मारे हमारे प्राण सूख गये। वे कौन पशु थे और कैसे थे, यह हम लोग न जान सके। हम सारी रात भय विह्वल दशा में पड़े रहे, एक बार भी नींद न आई। बड़े बड़े वन्य पशु समुद्र के जल में प्रवेश कर रात भर स्नान, क्रीड़ा और भीषण चीत्कार करते रहे।

आख़िर हमने उन जन्तुओं में से एक को नाव की ओर तैर कर आते देखा। उसकी गुर्राहट और श्वास निश्वास के प्रवेग से जान पड़ा कि वह बहुत ही बड़ा हिंस्रजन्तु होगा। इकजूरी ने कहा—"वह सिंह है।" मैं सिंह के सम्बन्ध में जो कुछ जानता था उससे मैंने भी वही निश्चय किया। बिचारा इकजूरी भय से मृतप्राय होकर, लंगर उठाकर नाव खोल देने के लिए, मुझ से अनुरोध करने लगा। मैंने कहा—"नहीं, लंगर उठाने की कोई ज़रूरत नहीं; यदि ज़रूरत होगी तो लंगर की रस्सी को बढ़ा दूँगा। इससे नाव इतनी दूर चली जायगी कि फिर कोई जानवर पास न जा सकेगा।" इतने में देखा कि वह पशु नाव से क़रीब दो लग्गी के फ़ासले पर आ गया। मैंने अचम्भे में आकर झट कमरे के भीतर बन्दूक़ लाकर उस पर गोली चला दी। बन्दूक़ की आवाज़ सुनते ही वह तुरन्त तैरता हुआ किनारे की ओर लौट चला।

बन्दूक़ की आवाज़ होते ही समुद्र के तट पर और ऊपर स्थल भाग में ऐसा भयानक चीत्कार, हुङ्कार और कोलाहल होने लगा जिससे स्पष्ट मालूम हुआ कि उन जन्तुओं ने कभी बन्दूक़ की आवाज़ न सुनी थी। उनका भीषण नाद सुनकर मेरे मन में बड़ी चिन्ता हुई। अब कैसे किनारे उतरूँगा? बाघ, सिंह आदि हिंस्र पशु या तत्तुल्य असभ्य मनुष्य इन दोनों में जिस किसी के पंजे में पड़ेंगे, फल हम लोगों के लिए एक सा ही होगा।

जो हो, हम लोगों को पानी के लिए स्थल पर कहीं न कहीं उतरना ही होगा। क्योंकि हमारे पास कण्ठ भिगोने को भी थोड़ा सा जल न बच रहा था। इक्ज़ूरी ने कहा—यदि तुम मुझको किनारे उतार दो तो मैं पीने का पानी खोज कर ला सकता हूँ। मैंने कहा—तुम क्यों जाओगे? क्या मैं जाने लायक़ नहीं हूँ?

इक्ज़ूरी—"नहीं, नहीं, तुम मत जाओ; यदि कोई हिंस्र जंगली जानवर आवेगा तो मुझी को खायगा, तुम तो भाग कर प्राण बचा सकोगे।" उसने इस बात को ऐसे कोमल स्वर में कहा कि मैं मुग्ध होगया। मैंने कहा—"अच्छा, तो हम तुम दोनों साथ साथ चलेंगे। यदि हिंस्र जन्तु हम लोगों को खाने दौड़ेगा तो उसे मार डालेंगे।" निदान हम लोग जहाँ तक संभव था, नाव को किनारे की ओर ले गये और दो घड़े तथा बन्दूक़ लेकर कुछ दूर तक पानी में उतर कर सूखी ज़मीन पर आये।

नाव छोड़ कर मैं बहुत दूर तक जाने का साहस न कर सका। क्या जाने, जंगली लोग यदि जलपथ से आकर

हमारी नाव को ज़ब्त कर लें। इकज़ूरी क़रीब एक मील पर एक ढालू जगह देख कर उसी ओर गया। थोड़ी ही देर बाद देखा, वह दौड़ा हुआ आ रहा है। मैंने समझा, शायद किसी दुष्ट नरघाती मनुष्य ने उसका पीछा किया है, या किसी हिंस्र को देखकर वह डर से भागा आ रहा है। मैं उसकी ओर दौड़ कर गया। उसके समीप जाकर मैंने देखा, वह ख़रगोश के मानिन्द एक जानवर को मार कर पीठ पर लटकाये लिये आ रहा है, यह देख कर मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उसका मांस चख कर देखा, अच्छा, सुस्वादु था। विशेष आनन्द मुझे इस बात से हुआ कि इकज़ूरी को मीठा पानी मिल गया और किसी जंगली आदमी ने उस पर आक्रमण नहीं किया। इससे वह भी बहुत प्रसन्न था।

पानी के लिए हम लोगों को विशेष कष्ट न उठाना पड़ा। क्योंकि नदी का जल, भाटे के समय, मुहाने से कुछ ही दूर पर बहुत बढ़िया सुस्वादु था, ज़रा भी खारी न था। हम वहीं से अपनी कलसी भर लाये और ख़रगोश का मांस पका कर हम ने खाया-पिया। उस देश में कहीं आदमी का नाम निशान तक न देख कर हम फिर वहाँ से चलने को प्रस्तुत हुए।

इसके पूर्व एक बार हम इस देश में वाणिज्य करने आये थे। हम अटकल से इस बात का अनुभव कर रहे थे कि यहाँ से कनेरी और केपवार्ड द्वीप-समूह बहुत दूर न होगा। हमारे मन में इस बात की आशा होने लगी कि अँगरेज़ लोग जहाँ तिजारत करते हैं वहाँ पहुँचने से, संभव है, उन लोगों का कोई जहाज़ देख पड़े और वे लोग हमारा उद्धार करें

यह प्रदेश बिलकुल जनशून्य था। मूर जाति के भय से हबशी लोग इस देश को छोड़ कर दक्खिन ओर चले गये हैं। इस देश को ऊसर और हिंस्र जन्तुओं से भरा जान कर मूर लोग भी इस पर अपना अधिकार नहीं जमाते। इसलिए यह देश मनुष्यों से बिलकुल ख़ाली पड़ा था।

हम लोग यहाँ से बिदा होकर पानी लेने के लिए कई बार किनारे की सूखी भूमि में उतरे थे। एक दिन सवेरे एक जगह नाव लगा कर देखा, एक बहुत बड़ा सिंह एक पहाड़ की गुफा में पड़ा सो रहा है। हमारे साथ तीन बन्दूकें थीं। हमने तीनों में अच्छी तरह गोली बारूद भर दी। तदनन्तर सिंह के मस्तक को लक्ष्य करके गोली चलाई। सिंह अगले पाँव का पंजा मुँह पर रक्खे सोरहा था। इससे गोली उसके माथे में नहींपाँव में लगी। सिंह गरज कर जाग उठा और दौड़ कर ज्यों ही चलना चाहा त्यों ही लड़खड़ा कर गिर पड़ा। उसके घुटने की हड्डी टूट गई थी। वह तीन पाँवों के बल से फिर सँभल कर उठा। भयङ्कर गर्जन कर के उसने भागना चाहा। हमने दूसरी बन्दूक़ उठा कर उसके सिर को लक्ष्य कर फिर गोली चलाई। गोली की चोट खाते ही वह आर्तनाद कर के गिर पड़ा और चटपटाने लगा। यह देखकर मैं खुश हुआ। इक्जूरी साहस कर के, हाथ में बन्दूक़ लेकर, नाव से उतर गया। उसने सिंह के पास जाकर उसके माथे पर बन्दूक़ की नली रखकर गोली दाग दी। सिंह मर कर स्थिर हो गया।

यह एक भारी शिकार हाथ लगा, इस में सन्देह नहीं। किन्तु यह खाद्य न था। निष्प्रयोजन तीन आवाज़ों की गोली-बारूद ख़र्च करने से हमारा मन बहुत उदास हो गया। हम

लोगों ने दिन भर परिश्रम करके सिंह का चमड़ा उतार लिया और उसे नाव की छपरी पर सूखने को फैला दिया। वह दो दिन की धूप लगने से अच्छी तरह सूख गया। फिर हम उस पर सोने लगे।

इसके अनन्तर लगातार दस बारह दिन तक हम दक्षिण दिशा की ओर चले; पानी की आवश्यकता न होने पर हम किनारे की भूमि पर न उतरते थे। हम लोगों की खाद्य सामग्री समाप्त हो चली, इसलिए हम बहुत थोड़ा थोड़ा खाने लगे।

हम इस ताक में थे कि गैम्बिया या सेनिगल नदी के निकट जा पहुँचेंगे तो वहाँ गिनी, और ब्रेज़िल प्रभृति देश का वाणिज्य व्यवसायी कोई न कोई यूरोपीय जहाज़ मिल ही जायगा। यदि जहाज़ न मिलेगा तो हबशियों के हाथ में पड़कर मर मिटेंगे।

क्रूसो का विपद् से छुटकारा।

जय नहीं तो क्षय होगा ही, यह संकल्प करके हम दस दिन और चले; तब मनुष्यों की बस्ती का कुछ कुछ चिह्न दिखाई देने लगा। हमने नाव पर जाते समय दो तीन जगह देखा कि काले काले नंगे लोग कछार में खड़े होकर हम लोगों की ओर देख रहे हैं। उन लोगों को देख कर हम उनके पास जाना चाहते थे किन्तु इकजूरी ने हमें रोका। तब हम नाव को किनारे किनारे ले चले। यह देख कर वे लोग भी नाव के साथ साथ दौड़ चले। हमने ग़ौर करके देखा, उन लोगों में

किसी के पास कोई हथियार न था। सिर्फ़ एक आदमी के हाथ में एक लम्बी सी पतली लाठी थी। वे लोग लक्ष्य को स्थिर करके बहुत दूर से लाठी फेंक कर मार सकते थे। इस कारण हमने नाव को किनारे से कुछ दूर ही ठहरा कर इशारे से उन लोगों से कुछ खाने की चीज़ माँगी। उन लोगों ने भी सङ्केत द्वारा हमसे नाव ठहराने को कहा और कुछ खाद्य सामग्री लाना स्वीकार किया। हमने पाल गिरा कर नाव को ठहराया। उन दर्शकों में से दो मनुष्य ऊपर दौड़ कर गये और आध घंटे के भीतर कुछ सूखा मांस और अपने देश का थोड़ा सा अन्न ले आये। मालूम न था कि यह खाद्य किस तरह खाया जाता है, फिर भी उनको ग्रहण कर लेना हमारे लिए आवश्यक था। अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि इन सामग्रियों को किस युक्ति से लेना ठीक होगा। क्योंकि हमें भी उन लोगों के पास जाने का साहस नहीं होता था और वे लोग भी हमें भय की दृष्टि से देख रहे थे। आख़िर उन्हीं लोगों ने प्रश्न का समाधान कर दिया। वे लोग एक दम जल के स्रोत के समीप रख कर दूर जा खड़े हुए। हम लोग नाव से उतर कर खाने की वस्तुएँ लेकर फिर नाव पर आ चढ़े। वे लोग किनारे पर जा खड़े हुए।

हमने उन लोगों को इशारे से धन्यवाद दिया। कोरा धन्यवाद छोड़ उन लोगों को देने योग्य हमारे पास एक भी वस्तु न थी। किन्तु दैवयोग से उन लोगों को शीघ्र ही परम प्रसन्न कर देने का अच्छा एक सुयोग हाथ आया। जब हम किनारे के समीप ठहरे थे तब दो बलवान पशु परस्पर लड़ते हुए पहाड़ से उतर कर नदी की ओर आने लगे। वे खेल

रहे थे या परस्पर लड़ रहे थे यह ठीक समझ में न आया। उनको आते देख कर जितने लोग किनारे पर खड़े थे वे, विशेष कर स्त्रियाँ, भयभीत होकर भागने लगीं; किन्तु वे दोनों पशु काफिरों की ओर ध्यान न दे कर पानी में जा गिरे। कुछ देर वे पानी में उछल कूद कर तैरने लगे। आखिर उन दोनों में एक हमारी नौका के बहुत हीनिकट आया। यह देख हम बन्दूक में गोली भर कर तैयार हो गये और इकजूरी से ऊपर दोनों बन्दूकों में गोली भरने को कहा। वह जंगली जानवर जब हमारे लक्ष्य के भीतर आया तब हमने गोली मारी। गोली ठीक उसके सिर में लगी। वह उसी घड़ी डूब गया और कुछही देर में फिर उतरा आया। वह मृत्यु की यन्त्रणा से छटपटाता हुआ पानी में ऊबता डूबता किनारे की ओर फिर चला। किन्तु कछार के ऊपर जाने के पहले ही मर गया। दूसरा पशु, बन्दूक की आवाज़ से डर कर, पहाड़ की ओर जी छोड़ कर भागा।

बन्दूक की आवाज़ सुनकर और आग की झलक देखकर हबसियों के आश्चर्य और भय की सीमा न रही। कितने ही लोग तो भय से मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े। उस जानवर के मर जाने पर हमने उन लोगों को संकेत किया कि उस जन्तु को पानी से निकाल कर ऊपर ले जाओ। तब वे लोग साहस पूर्वक पानी में घुस कर उस को खोजने लगे। उसे खींच कर जब वे लोग ऊपर ले आये तब हमने उसे पहचाना वह बहुत बड़ा चीता था। उसका अङ्ग गोली और छर्रों से छिन्न भिन्न हो गया था। हबशियों ने प्रसन्न होकर हमारी प्रशंसा के हेतु

हाथ उठाये। कि इन्होंने उसे कैसे मार डाला। वे लोग विस्मित होकर सोचने लगे। फिर उन्होंने हमसे उस बाघ के खाने की अनुमति चाही। हम ने ऐसा संकेत किया मानो बड़ी प्रसन्नता से उसके लिए आज्ञा देते हैं। इससे वे लोग बहुत खुश हुए। वे झटपट उसे काटने लग गये। उन लोगों के पास यद्यपि छुरी न थी तथापि उन लोगों ने एक काठ के बने पैने औज़ार से इतनी आसानी और इतनी शीघ्रता से बाघ की खाल उतार डाली कि हम लोग छुरी से भी वैसा नहीं कर सकते। उन लोगों ने हमको भी कुछ मांस देना चाहा, किन्तु हमने अस्वीकार करके संकेत द्वारा सब मांस उन्हीं लोगों से ले लेने को कहा हमने सिर्फ़ बाघ का चमड़ा माँगा। सो उन लोगों ने बड़ी खुशी से वह हमारे हवाले किया और अपने देश का बना बनाया कुछ खाना भी ला दिया। यद्यपि हमें यह मालूम न था कि वह खाना किस क़िस्म का था तथापि ले लिया; और एक मिट्टी के बर्तन को उलटा कर दिखलाया कि हमारे पास पीने का पानी बिलकुल नहीं है, हमें थोड़ा जल चाहिए। तब हमारे इस संकेत को समझ कर उन लोगों ने किसी को पुकार कर कुछ कहा। थोड़ी देर में दो स्त्रियाँ मिट्टी के बड़े बर्तन में पानी ले आईं। वे बिलकुल नंगी थीं पहले की तरह वे लोग उस बर्तन को नीचे रख कर हट गये। हमने इकजूरी को भेज कर अपने तीनों ख़ाली घड़ों को भरवा मँगाया।

हमारे पास अन्न, फल-मूल और जल इत्यादि सभी वस्तुएँ खाने पीने की जुट गईं। हमने अपने हबशी मित्रों से बिदाई लेकर प्रस्थान किया। ग्यारह दिन बराबर अग्रसर होने के बाद सामने एक टापू दिखाई दिया। वह टापू जल के बीच नाक की तरह बाहर निकल आया था। उसे घूम कर

बाहर निकल आने पर आगे की ओर समुद्र में और भी टापू देख पड़े। तब हमने समझा कि कि हम वार्ड अन्तरीप और वार्ड द्वीप के मध्य में आ गये हैं। तो भी वे दोनों स्थान वहाँ से बहुत दूर थे। हमको किस तरफ़ जाना चाहिए, इसका हम निर्णय न कर सकते थे। यह आशङ्का भी हो रही थी कि हवा तेज़ हो जायगी तो दो स्थानों में कहीं भी न पहुँच सकेंगे।

इस तरह चिन्ता से व्याकुल होकर हम कमरे के भीतर जा बैठे। इकजूरी नाव खे रहा था। वह एकाएक ज़ोर से चिल्ला उठा —"महाशय, महाशय, एक पालवाला जहाज़!" उसके पुराने मालिक का कोई जहाज़ हम लोगों पर धावा करने आ रहा है, यह समझ कर वह अत्यन्त डर गया। किन्तु हमको डर न लगा, क्योंकि हम जानते थे कि उन लोगों की सीमा से अब हम बाहर निकल आये हैं। हम फुरती से कमरे के बाहर आये और देखते ही समझ गये कि वह पोर्तुगीज़ों का जहाज़ है। हमने अनुमान किया कि वह हबशियों को लाने के लिए गिनी-उपकूल में जा रहा है। किन्तु कुछ ही देर में हमारा यह अनुमान ग़लत निकला। जहाज़ किनारे की तरफ़ न आकर समुद्र की ही ओर जाने लगा। तब हमने उन लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की इच्छा से समुद्र की ओर नाव को छोड़ दिया।

जहाँ तक संभव था, पाल तान देने पर भी हम ने देखा कि उनकी दृष्टि का आकर्षण संकेत द्वारा करने के पहले ही वे लोग बहुत दूर चले जायँगे। हम हताश हो रहे थे। इसी समय देखा कि वे लोग पाल गिरा कर हमारे लिए अपेक्षा कर रहे हैं। वे कदाचित् दूर-वीक्षण यन्त्र लगा कर

हमें देख सकें, इस आशा से उत्साहित हो कर हम झंडी उड़ाने लगे। बन्दूक़ की आवाज़ कर के हमने अपनी विपत्ति की सूचना दी। यह देख कर वे लोग दया कर के जहाज़ को हमारी ओर घुमा कर लाने लगे। कोई एक पहर में हम उन लोगों के पास पहुँच गये।

उन लोगों ने क्रमशः पोर्तुगीज़, स्पेनिश और फ्रांस की भाषा में हम से परिचय पूछा, पर हम उनकी एक भी भाषा न समझ सके। उस जहाज़ पर एक स्काच नाविक था। उसने जब अँगरेज़ी में हमारा परिचय पूछा तब हमने उससे कहा—हम अँगरेज़ हैं, शैली से मूरों का दासत्व त्याग कर भाग निकले हैं। यह सुन कर उन लोगों ने हमें जहाज़ पर आने की आज्ञा दी और बड़ी दयालुता के साथ हम लोगों को तथा हमारी चीज़-वस्तुओं को अपने जहाज़ पर रख लिया।

उस दुःसह दुर्दशा और निराशा से उद्धार होने पर हमें जो आनन्द हुआ, उसका वर्णन नहीं हो सकता। इस उपकार की खुशी में हमारे पास जो कुछ था सब हमने जहाज़ के कप्तान को उपहार के तौर पर दे दिया। किन्तु उन्होंने उदारता का परिचय देकर कहा—महाशय, मैं आप का उद्धार करने के बदले आपसे कुछ न लूँगा। कौन जानता है, कभी मेरी भी अवस्था आप ही की सी हो जाय। यही सोच कर मैंने आपका उद्धार किया है। हम लोग ब्रेज़िल जा रहे हैं। आप भी अपने देश से बहुत दूर जा पहुँचेंगे। आपके पास से यदि मैं आपका सर्वस्व ले लूँ तो आप वहाँ जाकर क्या खाकर प्राण धारण करेंगे। तब, जिस प्राण की आज मैंने रक्षा की है उसी के विनाश का क्या मैं फिर कारण बनूँगा? मैं आपको यों ही ब्रेज़िल पहुँचा दूँगा और आपकी जितनी चीज़ें हैं, सब आपको

दे दूँगा। ये सब वस्तुएँ आपके भरण-पोषण और घर लौट जाने के समय राह-ख़र्च का काम देंगी।" यह कह कर उन्होंने नाविकों को रोक दिया कि वे हमारी किसी चीज़ को न छुएँ और हमारी सब चीज़ें अपने ज़िम्मे रख कर मुझे एक चिट्ठी लिख दिया। उस चिट्ठे में मिट्टी के घड़ों तक का उल्लेख था। उसका मतलब यही था कि ब्रेज़िल में जाकर हम उस चिट्ठी के ज़रिये अपनी सारी चीजें सहेज लें।

हमारी नाव बहुत बढ़िया थी। कप्तान ने उसे मोल लेने की इच्छा से दाम पूछा। हमने कहा—"आप के साथ मोल तोल क्या? आपकी दृष्टि में जो मूल्य जचे वही दे दीजिये।" इस पर उन्होंने हमको साढ़े छः सौ रुपया देना चाहा और कहा, ब्रेज़िल जाने पर यदि इसका दाम कोई अधिक लगावेगा तो हम भी अधिक देंगे। उन्होंने पाँच सौ रुपया देकर इकजूरी को ख़रीदना चाहा; किन्तु जिसने मुझे स्वाधीनता प्राप्ति में सहायता दी थी, उसकी स्वाधीनता बेचने का विचार मेरा न हुआ। इकजूरी के कप्तान के पास रहना स्वीकार करने पर मैंने उसे योंही दे दिया। कप्तान ने कहा—इकजूरी यदि क्रिस्तान हो जाय तो उसे हम दस वर्ष बाद दासत्व से मुक्त कर देंगे।

हम लोग बाईस दिन के बाद निर्विघ्न ब्रेज़िल के शान्त उपसागर में पहुँचे। बुरी दशा से तो उद्धार हुआ, किन्तु अब क्या करना होगा? यही एक भारी चिन्ता थी। कप्तान के सद् व्यवहार का सम्यक् वर्णन करने में हम अक्षम हैं। उन्होंने हमसे कुछ भी जहाज़ का भाड़ा न लिया। इसके अलावा हमने अपने पास की जिन चीज़ों को बेचना चाहा वे सब उन्होंने मोल ले लीं। बाघ और सिंह का चमड़ा

दो बन्दूकें और मोम वगैरह बेचने पर हमें कोई दो हज़ार रुपया मिले। यही पूँजी लेकर हम ब्रेज़िल के किनारे उतरे।

क्रूसो की खेती।

ब्रेज़िल में आने के कुछ ही दिन बाद कप्तान ने एक भलेमानस के यहाँ मेरी सिफ़ारिश कर दी। उनके ऊख की खेती और चीनी का कारख़ाना था। कुछ दिन उनके यहाँ रह कर मैंने ऊख की खेती और चीनी बनाने की रीति सीखी। देखा, किसान लोग खेती की बदौलत सहज ही और शीघ्र धनवान् हो जाते हैं। इससे मेरी इच्छा भी खेती करने की हुई। मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उसमें जितनी ज़मीन मिली, मैंने ले ली; और इँगलैन्ड में कप्तान की विधवा स्त्री के पास मेरा जो रुपया जमा था वह मँगा लेने का विचार किया।

मेरे खेत से सटा हुआ जिसका खेत था वह लिसबन शहर का एक पोर्तुगीज़ था। उसके माँ-बाप अँगरेज़ थे। नाम उसका वेल्स था। मेरी ही ऐसी उसकी भी कई बार दुर्दशा हो चुकी थी। हम दोनों, दो वर्ष तक, केवल पेट भरने को अन्न संग्रह करने के लिए ही खेती करते रहे, लाभ के लिए नहीं। हम लोग क्रम क्रम से खेती बढ़ाने लगे। तीसरे साल हम लोगों ने तम्बाकू की खेती की और उसके अग्रिम वर्ष में ऊख बोने की तैयारी करने लगे। किन्तु हम दोनों को खेत आबाद करने के लिए मज़दूरों की आवश्यकता होने लगी। तब मैंने समझा कि इकजूरी को छोड़ देना

अच्छा नहीं हुआ। किन्तु बीती हुई बात के लिए सोच करने से फल ही क्या? मैंने जब कभी अपनी भूल समझी तब बहुत विलम्ब से; दूसरी बात यह कि तब भूल-संशोधन करने का कोई उपाय भी न रहता था।

मेरे पिता ने जिस पेशे का अवलम्बन करके घर पर रहने की बात कही थी, अब वही पेशा करने को मैं बाध्य हुआ। उस समय मैंने पिताजी का आश्रय और सदुपदेश त्याग दिया था। इस काम को यदि तभी स्वीकार कर लेता तो अपने देश से पाँच हज़ार मील पर, अपरिचित और असभ्य लोगों के बीच अकेले रह कर, इस प्रकार निःशङ्क भाव से मुसीबतों का सामना न करना पड़ता। यहाँ मेरा कोई संगी साथी न था। मानो मैं किसी स्वजनशून्य देश में निर्वासित हुआ था। इस अवस्था में रहना मुझे विशेष कष्टकर जँचता था। जो हो, इस प्रकार अकेले रहने का अभ्यास हो जाने के पीछे इससे मुझे बहुत लाभ हुआ।

मैं इँगलेन्ड से अपना संचित रुपया मँगाने की बात सोच रहा था। मेरे उद्धारकर्त्ता कप्तान साहब ने उसे ला देना स्वीकार कर लिया। मैंने उनकी मारफ़त अपने पुराने मित्र की स्त्री को अपनी अवस्था के सविस्तर समाचार सहित एक पत्र लिख भेजा।

लिसबन जाकर कप्तान ने एक व्यापारी अँगरेज़ के मारफ़त मेरी चिट्ठी इँगलैन्ड भेज दी। उस समय चिट्ठी बाँटने के लिए हरेक देश में डाक का बन्दोबस्त न था। मेरी मित्र-भार्या ने चिट्ठी पाकर रुपया तो भेज ही दिया इसके सिवा उसने अपनी ओर से मेरे उद्धारकारी कप्तान को एक सुन्दर उपहार भी भेज दिया। कप्तान मेरे रुपये से मेरी

खेती-बारी के उपयुक्त अनेक वस्तु—यथा हल, फाल, कुदाल, खुरपी इत्यादि—ख़रीद कर अपने साथ लेते आये। मैंने ये चीज़ें लाने के लिए उनसे न कहा था। वे अपनी दूरदर्शिनी बुद्धि की प्रेरणा से ही लाये थे। उन चीज़ों से भविष्य में मेरा यथेष्ट उपकार और सुविधायें हुई थीं। अपने पास से रुपया देकर, छः वर्ष के करार पर, वे मेरे लिए एक नौकर मोल लेकर साथ लाये थे। इन अनेक अनुग्रहों के बदले, उनसे यह कह कर कि यह मेरे खेत की तम्बाकू है, मैंने कुछ तम्बाकू ले लेने के लिए उन्हें राज़ी किया।

उस समय मेरी दशा बहुत उत्तम हो चली थी, और खेती का कारबार भी बढ़ गया था। मैंने कप्तान के दिये नौकर के अलावा दो नौकर और ख़रीदे—एक हबशी और एक फिरंगी।

ब्रेज़िल में मेरे चार वर्ष गुज़र गये। खेती में मुझे ख़ासा लाभ हुआ। यदि मैं कुछ दिन और सन्तोषपूर्वक खेती का व्यवसाय करता रहता तो मेरे पिता ने मेरे लिए जैसा कुछ गृहस्थी का सुख सोच रक्खा था वैसा ही सुख पाकर मैं एक सम्पन्न गृहस्थ हो जाता। किन्तु चुपचाप बैठकर घर का सुस्वादु अन्न खाना मेरी तक़दीर में लिखा ही न था। मेरे सुख के पीछे पीछे सनीचर लगा फिरता था। मैंने आप ही अपना सर्वनाश करने को कमर बाँधी थी। यहाँ भी उसका व्यतिक्रम न हुआ।

मैंने यहाँ की सब प्रकार की भाषायें सीखी थीं और पड़ोस के कितने ही किसानों के साथ तथा सन्त सालवाडोर बन्दर के व्यापारियों के साथ मेरी जान पहचान हो गई थी। मैं प्रसङ्गवश उन लोगों से गिनी उपकूल में हबशियों के साथ

वाणिज्य व्यवहार करने के लाभ की बात कहा करता था। काँच के टुकड़े, आइना, छुरी, कैंची, खिलौना, माला आदि सामान्य वस्तुओं के बदले वहाँ स्वर्णरेणु, अनाज, हाथीदाँत आदि क़ीमती चीज़ें—यहाँ तक कि हबशी नौकर तक मिलते हैं। हबशी नौकर लाने से हम लोगों के खेती के कामों में बहुत कुछ मदद मिल सकती है, यह भी मैं उन लोगों को समझा देता था। वे लोग मेरी बातों को खूब जी लगाकर सुनते थे।

एक दिन सवेरे मेरे परिचितों में से तीन व्यक्तियों ने आकर यह प्रस्ताव किया—आप दो बार गिनी-उपकूल में जा चुके हैं। अतएव नौकर लाने के लिए आपही को जाना होगा। इसके लिए जहाज़ और खर्च का प्रबन्ध हम लोग कर देंगे। नौकर ले आने पर, आपके परिश्रम के बदले, हम लोग आपसे बिना कुछ लिए ही नौकर का बराबर हिस्सा आप को देंगे।

यह प्रस्ताव मुझे बहुत अच्छा जान पड़ा। दूसरा कोई आदमी होता तो इस प्रस्ताव में सम्मत न होता; किन्तु मैं तो चिरकाल से अपने सुख पर आप ही पानी फेर रहा था। मैं इस प्रलोभन को न रोक सका। तुरन्त स्वीकृत कर कहा—"यदि तुम लोग मेरे परोक्ष में मेरी खेती-बारी का काम सँभाले रहो और यदि मैं मर जाऊँ तो मेरे कथनानुसार मेरी सम्पत्ति की व्यवस्था करना स्वीकार करो तो मैं जा सकता हूँ।" उन लोगों ने मेरी शर्त पर राज़ी होकर एक स्वीकारपत्र लिख दिया। मैंने भी एक वसीयत-नामा (सम्पत्ति-विभागपत्र) लिखा। उसमें अपने उद्धारकर्त्ता कप्तान को ही मैंने अपना उत्तराधिकारी किया। मेरी मृत्यु के अनन्तर मेरी सारी सम्पत्ति का आधा अंश वे लेकर बाक़ी

आधी सम्पत्ति का मूल्य इँगलेण्ड में मेरे पिता के पास पहुँचा दें।

क्रूसो का जहाज़ डूबा।

मैंने अपनी सम्पत्ति-रक्षा के लिए जितनी सावधानी और भविष्य-चिन्ता की थी, उसकी आधी भी यदि मेरे निज के लिए स्वार्थ-बुद्धि होती तो मैं उत्तरोत्तर बढ़ती हुई निरापद आर्थिक अवस्था को छोड़ कर समुद्रयात्रा के प्रस्ताव पर कभी सम्मत न होता। एक तो समुद्रयात्रा स्वभावतः विघ्नों से युक्त होती है, उस पर मेरे ऐसे हतभाग्यों का तो का तो कुछ कहना ही नहीं। विपत्ति पर विपत्ति की आशङ्का बनी ही रहती थी। बुद्धि की अवहेला करके इच्छा के अधीन होजाना मेरा स्वभाव था। इच्छा मुझे ज्ञानान्ध बनाकर बलात् खींच ले चली।

जहाज़ जाने को प्रस्तुत हुआ। सीपों के हार, आइना, छुरी, कैंची, कुल्हाड़ी, और खिलौना आदि कम क़ीमती चीज़ें जहाज़ पर लादी गईं। मैं १६५९ ईसवी की पहली सितम्बर के अशुभ मुहूर्त में जहाज़ पर सवार हुआ। आठ वर्ष पूर्व इसी तारीख़ को मैंने, मूर्ख की तरह, माँ-बाप के आदेश का तिरस्कार करके पहले पहल समुद्रयात्रा की थी।

जहाज़ पर छः तोपें चौदह नाविक, एक कप्तान, उनका नौकर और मैं था। हम लोग जिस दिन जहाज़ पर चढ़े उसी दिन जहाज़ रवाना हुआ। समुद्र का जल स्थिर था, और वायु भी अनुकूल थी। हम लोग अफ्रीका जाने के विचार से उत्तर ओर चल पड़े। बारह दिन बाद, हम लोगों को ज्ञात होने के पहले ही, एकाएक भयङ्कर तूफ़ान उठा।

बारह दिन तक लगातार तूफ़ान बना रहा। हम लोगों ने कुछ आगा पीछा न सोच कर भाग्य के भरोसे जहाज़ को तूफ़ान के मुँह में छोड़ दिया। न छोड़ने तो करते ही क्या? सिवा इसके दूसरा उपाय ही क्या था? इन बारह दिनों में मिनट मिनट पर यही जी में होता था कि इस बार समुद्र हम लोगों को सदा के लिए अपने पेट में रख लेगा। वास्तव में किसी नाविक को जीवन की आशा न थी।

विपत्ति के ऊपर एक दुर्घटना और हुई। लू लग जाने से हमारा एक नाविक मर गया और एक दूसरे नाविक तथा कप्तान के नौकर को, जहाज़ के ऊपर से, समुद्र की तीक्ष्ण तरङ्ग बहा ले गई।

बारह दिन के अनन्तर तूफ़ान कुछ कम हुआ। कप्तान ने और मैंने देखा कि हम लोग ब्रेज़िल के उत्तरी भाग अमेज़ान नदी को छोड़ कर एक बड़ी नदी के पास गायना-उपकूल में आ गये हैं। कप्तान ने मुझ से पूछा किस रास्ते से जाना अच्छा होगा। उस समय जहाज़ के भीतर कुछ कुछ पानी आ रहा था। जहाज़ पूरे तौर से ढीला पड़ चुका था। कप्तान की इच्छा ब्रेज़िल लौट जाने की थी। मैंने उसमें बाधा डाली। अमेरिका के उपकूल का नक़्शा देख कर तय किया कि केरिबो द्वीप के सिवा समीप में कोई ऐसा स्थान नहीं जहाँ आश्रय लिया जाय। तब मैंने बारबौडस द्वीप की ओर जाने का निश्चय किया और अटकल लड़ाई कि पन्द्रह दिन और चलने से हम लोग किसी न किसी बृटिश द्वीप में जाकर अफ्रीका जा सकने योग्य साहाय्य पा सकेंगे। चाहे जो हो, यात्रा करके अब लौट जाना ठीक नहीं। मेरी बुद्धि क्यों मुझे आपत्तिविहीन स्थान में ले जाने को सम्मत होती?

मेरे भाग्य में तो अनेक दुःखों का भोगना लिखा था। फिर तूफ़ान उठा और हम लोगों के जहाज़ को पच्छिम की ओर उड़ा ले चला। इस समय समुद्र से बच जाने पर भी हम लोगों को, किनारे उतर कर, नृशंस लोगों के हाथ से छुटकारा पाने की आशा न थी। हम लोगों की अक़्ल कुछ काम न देती थी। स्थल भाग में उतरें तो राक्षस हम लोगों को खा ही डालेंगे। अब अपने देश की ओर भी लौट न सकेंगे।

ऐसी विपन्न अवस्था में एक दिन सवेरे एक नाविक चिल्ला कर बोला—ठहरो ज़मीन है, ठहरो ज़मीन है"। हम लोग पृथवी के किस अंश में आ गये हैं, यह देखने के लिए कमरे से बाहर आते न आते हम लोगों का जहाज़ बालू के टीले से रगड़ खाकर बैठ गया। जहाज़ की गति एकाएक रुक जाने से कुछ ही देर में समुद्र की लहर ऐसे प्रखर वेग से जहाज़ के ऊपर आ पड़ी कि हम लोगों ने समझा कि इसी दफ़े सब समाप्त हुआ। हम लोग पानी के छींटों और फेन से बचने के लिए झटपट कमरे के भीतर चले गये। जिन लोगों के ऊपर कभी ऐसा संकट नहीं पड़ा है, वे हमारी इस अवस्था या भय का कुछ भी अनुभव न कर सकेंगे। हम लोग कहाँ किस देश में जा पहुँचे हैं, यह मालूम न हुआ। वह स्थान कोई टापू था या कोई देश; वहाँ मनुष्यों की बस्ती थी या जनशून्य स्थान था, इसका भी कुछ निश्चय न हो सका। हवा तब भी जैसी तेज़ बह रही थी, उससे यह आशा न थी कि जहाज़ टूक टूक न होकर क्षण भर भी और बचा रहेगा। हम लोग एक दूसरे का मुँह देखते हुए निरुपाय होकर बैठ रहे और मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगे। सभी लोग परलोक-यात्रा के लिए कटिबद्ध हो कर ईश्वर का स्मरण करने लगे। इसके अतिरिक्त

हम लोग और करते ही क्या? वैसी दशा में हम लोगों को एक यही सान्त्वना मिली कि जितने शीघ्र जहाज़ के टूटने की संभावना थी उतने शीघ्र वह टूटा नहीं और वायु का वेग भी कुछ कम हो गया।

किन्तु जहाज़ के टुकड़े टुकड़े न होने और हवा का वेग घट जाने पर भी हम लोगों की विपत्ति कम न हुई। जहाज़ इतने ज़ोर से बालू में धँस गया था कि उसका उद्धार होना कठिन था। हम लोग ज्यों त्यों कर अपने अपने प्राण बचाने का उपाय सोचने लगे। जहाज़ के पीछे एक छोटी नाव बँधी थी किन्तु वह पहली ही झपेट में जहाज़ का धक्का लगने से टूट गई थी। फिर रस्सी से खुल कर वह समुद्र में बह चली। कौन जाने वह डूबी या बची? इसलिए उससे तो हम लोग सन्तोष ही कर बैठे थे। हमारे जहाज़ के ऊपर एक और नाव थी, परन्तु उसको रक्षा-पूर्वक पानी में उतार लाना विषम समस्या थी। किन्तु वह समय सोच-विचार करने या तर्क-वितर्क करने का न था, क्यों कि जहाज़ क्रमशः टूट फूट कर इधर उधर गिर रहा था। इस मुसीबत में जहाज़ का मेट अन्य मल्लाहों की सहायता से नाव को जहाज़ के ऊपर से धीरे धीरे पानी में उतार लाया। हम ग्यारह आदमी राम राम कर उस नाव पर चढ़े। उस उन्मत्त उत्तुङ्गतरङ्गवाले समुद्र के हाथ में आत्मसमर्पण कर भगवान् के भरोसे नाव को बहा दिया। हवा कम पड़ जाने पर भी समुद्र की लहरें तट पर दूर तक उछल पड़ती थीं।

इस समय हम लोगों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो उठी। समुद्र का जल बढ़ कर जिस प्रकार ऊपर की ओर बढ़ता जा रहा था, उससे हम लोगों ने स्पष्ट ही समझ लिया

कि नाव अब देर तक ठहरने की नहीं, अवश्य ही हम लोग डूब मरेंगे। हमारी नाव पर पाल न था, जो होता भी तो क्या कर सकते? हम लोग मृत्यु को सामने रख किनारे की ओर नाव ले जाने का प्रयत्न करने लगे। वध्यभूमि में जाते समय मारे जाने वाले लोगों की तरह हम लोगों का जीवन भाराक्रान्त हो रहा था। हम लोगों ने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया था कि तट के समीप पहुँचते ही एक ही हिलकोरे में हमारी नाव चूर चूर हो जायगी, तो भी हम लोगों को अन्य गति न थी। हवा हम लोगों को किनारे की ओर ठेलती थी और हम लोग स्वयं भी, अपने को मृत्युमुख में डालने के लिए, किनारे ही की तरफ़ नाव को लिये जा रहे थे।

वहाँ का तट कैसा था, वहाँ पहाड़ था या बालू का ढेर, यह हम लोग न जानते थे, तथापि कुछ आशा थी तो यही कि यदि किसी खाड़ी या नदी के मुहाने में पहुँच सकें तो शायद स्थिर जल मिल भी जाय, किन्तु वैसा कोई लक्षण देख न पड़ता था। हम लोग जितना ही तट के समीप जाने लगे उतना ही समुद्र की अपेक्षा तटस्थ भूमि भयङ्कर प्रतीत होने लगी।

क़रीब डेढ़ मील मार्ग तय करने के बाद, एक पहाड़ के बराबर ऊँची, समुद्र की लहर हम लोगों को पीछे आती दिखाई दी। मानो उसने खुलासा तौर से हम लोगों को मरने की सूचना दे दी। वह तरङ्ग इस प्रखर वेग से हम लोगों के ऊपर आ पड़ी कि नाव उसी घड़ी उलट गई। हम लोग भी परस्पर एक दूसरे से बिछुड़ गये। ईश्वर का नाम लेने के पहले ही हम लोग समुद्र में डूब गये।

जब मैं पानी के नीचे दूर तक चला गया तब मेरे मन की जो अवस्था थी वह वाणी द्वारा नहीं समझाई जा सकती। यद्यपि मैं तैरना अच्छा जानता था तथापि तरङ्गों की भरमार से मुझे एक बार भी दम लेने की फुरसत न मिलती थी। आख़िर समुद्र का हिलकोरा मुझे लिये दिये किनारे की ज़मीन पर पटक कर लौट चला। मेरी आँखें, नाक, कान, सब में पानी भर गया। पानी पीते पीते मैं बेदम हो गया था, पर तब भी मुझे इतना होश हवास और बल था कि मैं झट खड़ा हो गया और साहस करके स्थल-भाग की ओर इस भय से दौड़ चला, कि दूसरी बार का हिलकोरा फिर कहीं मुझे लौटा कर बीच समुद्र में न ले जाय। किन्तु मैंने देखा, उस तीव्रगामिनी तरङ्ग से बचना कठिन है। समुद्र की लहर फिर पहाड़ के बराबर दीर्घ आकार धारण किये, क्रुद्ध शत्रु की भाँति गरजती हुई, मेरे पीछे दौड़ी चली आ रही है। उसके आक्रमण से बचने की कोई शक्ति या सामग्री मेरे पास न थी। मैं सोचने लगा—तरङ्ग आने पर मैं अपने श्वास को रोक कर पानी पर उतराता हुआ स्थल की ओर चेष्टा करूँगा। बहुत दूर तक तो मुझे तरङ्ग ही पहुँचा देगी। किन्तु समुद्र की ओर लौटती बार तरङ्ग फिर कहीं मुझे समुद्र में न घसीट ले जाय, इसकी उस समय मेरे मन में बड़ी चिन्ता थी। समुद्र की लहर से बचने का एक भी उपाय न सूझता था।

देखते ही देखते समुद्र की उत्ताल तरङ्ग मेरे ऊपर आ पड़ी और मैं पन्द्रह बीस हाथ पानी के नीचे दब गया। मुझे कुछ कुछ मालूम हो रहा था कि मैं किसी बलिष्ठ शक्ति के द्वारा बड़े वेग से कछार के ऊपर हटाया जा रहा हूँ। मैं भी साँस रोक कर, यथाशक्ति पानी के भीतर ही भीतर तैरता

कर देखा, तरङ्ग फिर दौड़ी आ रही है, और वह अभी मेरे हुआ, आगे की ओर बढ़ने लगा। देर तक साँस रोकने से मेरा कलेजा फटा ही चाहता था। ऐसे समय एकाएक मैं पानी के ऊपर उतरा उठा। मेरा सिर और हाथ पानी के बाहर निकल आये। इससे मुझे बहुत आराम मिला। मैं ज़्यादा से ज़्यादा दो सेकेन्ड पानी के ऊपर रहा हूँगा, किन्तु इतने ही में मेरा बहुत कुछ उपकार हुआ। साँस लेने से मुझे फिर नया साहस मिला। मेरे शरीर में फिर नई शक्ति का कुछ संचार हुआ। किन्तु फिर मैं पानी के भीतर छिप गया। इस दफ़े बहुत देर तक भीतर नहीं रहना पड़ा। मैंने देखा कि तरङ्ग अब लौटी जा रही है। मैं हाथ पाँव के बल खूब ज़ोर से तरङ्ग के प्रतिकूल तैर कर ज्यों ही कुछ दूर आगे बढ़ा त्यों ही मेरे पैर ज़मीन से जा लगे। कुछ देर तक खड़े होकर मैंने साँस ली और फिर शरीर में जितना बल था उतने बल से मैं तुरन्त स्थल की ओर दौड़ चला किन्तु दौड़ने ही से मैंने समुद्र के हाथ से छुटकारा न पाया। अब भी मेरी जान की छुट्टी न हुई। फिर एक हिलकोरा मेरे पीछे बड़ी तीव्र गति से आ गया। मैं पूर्ववत् फिर पानी के भीतर आगे की ओर लुढ़कने लगा। समुद्र का तट चिपटा था, इससे मैं दो बार और तरङ्गों का धक्का खाकर थल पर आ लगा।

आख़िरी तरङ्ग ने मुझे एक प्रकार से समाप्त ही कर चुकी थी। उसने मुझको लिये दिये ऐसे ज़ोर से एक पत्थर के ऊपर उठा कर पटक दिया कि ऐसा जान पड़ा मानो दम निकल गया हो। छाती में सख़्त चोट लगने से मैं मूर्च्छित हो गया। यदि उसी समय फिर दूसरी लहर आती तो दम घुट कर वहीं मेरा काम तमाम हो जाता। मैंने कुछ सँभल

ऊपर आ पड़ेगी। तब मैंने खूब ज़ोर से अँकवार भर कर पत्थर को पकड़ा और साँस बन्द कर के लेट रहा। किनारे से वह जगह बहुत ऊँची थी, इसलिए तरङ्ग हलकी सी होकर वहाँ आई। मैं तरङ्ग के विरुद्ध पत्थर पकड़े पड़ा रहा। तरङ्ग हटते ही फिर मैंने एक दौड़ लगाई। इस के बाद फिर एक तरङ्ग यद्यपि मेरे ऊपर होकर गई तथापि वह मुझे अपनी ओर खींच न सकी। उस तरङ्ग के चले जाने पर मैं एक ही दौड़ में एक दम ऊपर चढ़ आया। इतनी देर में जाकर तरङ्ग से मेरा पिण्ड छूटा। मैं किनारे के पास के पहाड़ से हट कर घास पर जा बैठा। तरङ्ग की सीमा से बाहर रक्षित स्थान में पहुँचने पर मुझे अत्यन्त आराम मिला।

क्रूसो और समुद्र-तट

मैं स्थल में आकर, विपत्ति से उद्धार पा, अपनी जीवन-रक्षा के लिए ऊपर की ओर देख कर परमेश्वर को धन्यवाद देने लगा। कुछ ही देर पहले जिस जीवन की कुछ भी आशा न थी उसे मृत्यु के मुख से सुरक्षित देख, मन में जो असीम आनन्द और उल्लास हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता। उस समय इतना अधिक आनन्द हुआ कि उस आवेग से ही मर जाने की आशङ्का हुई। कारण यह कि एकाएक अत्यन्त हर्ष होने से भी, अति विषाद की ही भाँति, चित्त अचेतन हो जाता है।

मैं समुद्रतट पर, मारे खुशी के अकड़ता हुआ, हाथ उठाये अनेक प्रकार से अङ्ग-भङ्गी करता हुआ घूमने लगा। उस समय मेरे मन में सिर्फ़ यही चिन्ता थी कि मेरे सभी साथी डूब मरे; एक मैं ही समुद्र से जीता-जागता बच निकला, ईश्वर ने मृत्यु के मुख से मुझे बचा लिया। मैंने अपने साथियों में

मैंने खूब ज़ोर से अँकवार भर कर पत्थर को पकड़ा और साँस बन्द करके लेट रहा।—पृ० ४८

किसी को नहीं देखा और न किसी का कुछ पता पाया; सिर्फ़ उन लोगों की तीन टोपियाँ और दो जोड़े जूते समुद्र के किनारे इधर उधर पड़े दिखाई दिये।

समुद्र के गर्भ में स्थित बालुकामय भूभाग में अटके हुए जहाज़ की ओर मैंने ध्यान से देखा। किन्तु तब भी समुद्र में फेन से भरी हुई इतनी तरङ्गों पर तरङ्गें चल रही थी कि मैं अच्छी तरह जहाज़ को न देख सका। तब मैंने मन में कहा—भगवन, इस दुस्तर समुद्र से मुझे किस तरह किनारे निकाल लाये ?

इस अवस्था में यथासम्भव मन को सान्त्वना देकर मैं इधर उधर देखने लगा कि कहाँ कैसे स्थान में आ गया हूँ। मैं यह भी सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। शीघ्र ही मेरे मन की सान्त्वना जाती रही। मैं एका-एक अधीर हो उठा। मैंने देखा; मैं बच कर भी भयङ्कर अवस्था में आ पड़ा हूँ। मेरा तमाम बदन गीला था, पास में कोई दूसरा कपड़ा बदलने को न था, खाने-पीने की कोई चीज़ भी न थी और न वहाँ कोई ऐसा आदमी था जो मुझे कुछ आश्वासन देता। भूख-प्यास से या जंगली हिंस्र पशुओं के आक्रमण से सिवा मरने के जीने की आशा न थी। मेरे पास कोई हथियार भी न था। मेरे पास कुल पूँजी बच रही थी एक छुरी, तम्बाकू पीने का एक नल और कुछ तम्बाकू। इन बातों को सोचते सोचते मैं पागल की तरह उस निर्जन स्थान में इधर उधर दौड़ने लगा।

क्रमशः रात हुई। मैं चिन्तासागर में निमग्न हो कर सोचने लगा—अब तमाम हिंस्रजन्तु चरने के लिए निकलेंगे। संभव है, वे मुझे देखते ही चबा डालें। इसके लिए क्या करूँ ? मेरी

जितनी बुद्धि थी उससे यही निश्चय किया कि पेड़ पर चढ़कर मैं किसी तरह रात बिताऊँगा। आज किसी कँटीले वृक्ष पर बैठ कर ही सारी रात काटूँगा और सोचूँगा कि दूसरे दिन किस तरह मृत्यु होगी। क्योंकि प्राण-रक्षा की कोई सम्भावना ही न देख पड़ती थी। जिधर देखता था उधर ही मृत्यु मुँह फैलाये खड़ी दिखाई देती थी। मैं प्यास से व्याकुल था। मारे प्यास के मेरा कण्ठ सूख रहा था। मीठा जल कहीं है या नहीं, यह देखने के लिए मैं समुद्रतट से स्थल भाग की ओर गया। एकआध मील जाने पर अच्छा पानी मिला। मैंने बड़े उल्लास से अंजलि भर कर पानी पिया। प्यास शान्त होने पर कुछ भूख मालूम होने लगी; पर साथ में था क्या जो खाता। था सिर्फ़ तम्बाकू का पत्ता। उसी को तोड़ कर थोड़ा सा मुँह में रक्खा। नींद से आँखें घूमने लगीं। मैं झट एक पेड़ पर चढ़ कर जा बैठा। रात में नींद आने पर कहीं गिर न पड़ूँ, इसका प्रबन्ध पहले ही कर लिया। पेड़ की एक डाल काट कर उसी का सहारा बना लिया। दिन भर का थका-मादा था, बैठने के साथ ही गाढ़ी नींद ने आकर धर दबाया। खूब चैन से सोकर जब मैं जागा तब बदन में अच्छी फुरती मालूम होने लगी। मानो फिर नस नस में नया उत्साह भर गया।

जब मैं सोकर उठा तब देखा कि सवेरा हो गया है, आकाश बिलकुल साफ़ है, हवा रुक गई है; समुद्र की तरङ्गें भी अब उस प्रकार नहीं उछलतीं। रात में ज्वार के समय हमारा बालू में फँसा हुआ जहाज़ बह कर किनारे की ओर, जहाँ मैंने पहले पत्थर से टकरा कर चोट खाई थी वहाँ तक, चला आया है। वह जगह स्थल भाग से

कोई एक मील पर थी। जहाज़ तब भी सीधा खड़ा था। यह देख कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। मैंने वहाँ तक जाने का इस लिए विचार किया कि यदि जहाज़ पर कोई आवश्यक वस्तु मिल जायगी तो ले आऊँगा।

मैंने पेड़ पर से उतर कर देखा कि मेरे दहनी ओर, अन्दाज़न दो मील पर, सूखी ज़मीन पर हमारी नाव पड़ी है। मैं उसी ओर जाने लगा। समीप जाकर देखा, मेरे और नाव के बीच में आध मील चौड़ी एक खाड़ी है जिसमें पानी भरा है। तब नाव तक जाने की आशा छोड़कर मैंने पैदल ही जहाज़ देखने के लिए जाने का विचार किया। इसलिए वहाँ से लौट आया।

दोपहर के बाद समुद्र स्थिर हो गया। भाटे के कारण जल इतना कम हो गया कि मैं जहाज़ से पाव मील दूर तक सूखी ज़मीन पर होकर ही गया था। वहाँ पहुँचने पर फिर मेरे मन में नया दुःख हुआ। यह सोच कर मुझे अत्यन्त खेद हुआ कि हम लोगों ने जहाज़ को छोड़ कर नाव का सहारा क्यों लिया। हम लोग यदि जहाज़ ही पर रहते तो कोई भी डूब कर न मरता। मैं भी संगी-साथियों से बिछुड़ कर ऐसी दुर्दशा में न पड़ता, सब लोग बिना किसी विघ्न-बाधा के किनारे आ जाते। मारे सोच के मैं रो पड़ा। किन्तु उस समय रोना निष्फल जान कर मैं जहाज़ पर जाने की चेष्टा करने लगा। कोट-पतलून खोलकर मैंने धरती पर रख दिया फिर मैं पानी में घुस गया।

———

भग्न जहाज़ का दर्शन

मैं जहाज़ के निकट पहुँच गया, किन्तु उस पर चढ़ूँगा किस तरह? जहाज़ टीले पर आ जाने के कारण उसका कोना बहुत ऊँचा उठ गया था। ऐसा कुछ सहारे को भी न था जिसे पकड़ कर उस पर चढ़ता। मैंने जहाज़ के चारों तरफ़ दो बार घूम घाम कर देखा एक जगह ऊपर से एक रस्सी लटक रही थी। बड़े कष्ट से उसे पकड़ कर मैं जहाज़ पर सामने की ओर चढ़ गया। ऊपर जाकर देखा, जहाज़ के भीतरी पेंदे में खूब पानी भर गया है; बालू के ढेर में अटके रहने के कारण उसका पिछला हिस्सा ऊपर की ओर उठ गया है और आगे का हिस्सा नीचे की ओर झुक कर पानी में डूबने पर है। मैं जहाज़ पर चढ़ कर खोजने लगा कि कौन कौन वस्तु सूखी है। सब से प्रथम मेरी दृष्टि खाद्य-सामग्री के भण्डार की ओर गई। देखा कि उसमें अभी तक जल नहीं पहुँचा है। खाने की सामग्री ज्यों की त्यों रक्खी है। मैं भूखा तो था ही, झट मुट्ठी भर बिस्कुट ले कर खाने लगा और खाते ही खाते अन्यान्य वस्तुओं की भी खोज करने लगा। वह समय मेरा नष्ट करने का न था। मैंने जहाज़ में बहुत सी ऐसी चीज़ें देखीं जो मेरे काम की थीं। किन्तु उन चीज़ों को ले जाने के लिए पहले एक नाव चाहिए। वह अभी कहाँ मिलेगी? मैं चुपचाप बैठ कर सोचने लगा।

जो चीज़ मिलने की नहीं है उसके लिए माथे पर हाथ रक्खे मौन साध कर बैठ रहना वृथा है। नाव एक भी वहाँ न थी, तब उसके लिए चिन्ता कैसी? किन्तु किसी वस्तु का

मैंने औज़ारों से भरा हुआ सन्दूक़ जहाज़ से उतार कर बेड़े पर रख दिया।—पृ० ५३

अभाव ही नई वस्तु के आविष्कार का कारण होता है। मेरी समझ में एक बात आई। जहाज़ के मस्तूल के कितने ही टूटे फूटे छोटे छोटे टुकड़े थे। उनको एकत्र कर मैंने एक बेड़ा बनाया, उस पर दो-तीन तख़्ते बिछा दिये। और समय होता तो मैं इतना परिश्रम न कर सकता किन्तु प्राणों की विपत्ति के समय उस घोर परिश्रम से मैं कुछ भी क्लान्त न हुआ। जिन चीज़ों को मैं ले जाना चाहता था वे हिलकोरे के जल के छींटों से कहीं भीग न जायँ, इसलिए मैंने एक उपाय किया। तीन सन्दूकों के ताले तोड़ डाले और उन्हें ख़ाली करके रस्सी से लटका कर बेड़े पर रख दिया। पहले बक्स में चावल, पनीर सूखा मांस, बिस्कुट आदि खाने-पीने की चीज़ें भर लीं। जब मैं इन चीज़ों को ठिकाने के साथ रखने लगा तब देखा कि समुद्र में ज्वार आगया। किनारे की सूखी ज़मीन पर मैं अपने बदन के जो कपड़े लत्ते रख आया था उन्हें वह बहा लेगया। यह देख कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। फिर मैं धीरज धर कर जहाज़ में पोशाक ढूँढ़ने लगा। पोशाकें बहुत थीं, मैंने अपनी आवश्यकता भर के कपड़े ले लिये। विशेष कर मुझे उस समय पोशाक की अपेक्षा अस्त्र-शस्त्र अधिक प्रयोजनीय जान पड़े। कारण यह कि बिना उनके स्थल भाग में एक भी काम न चलता। इसलिए मैं हथियारों की खोज करने लगा। बहुत खोजने पर मुझे औज़ारों का बक्स मिल गया। उस समय वह एक जहाज़ भर सोने की अपेक्षा मुझे अधिक मूल्यवान् जान पड़ा। मैंने औज़ारों से भरा हुआ सन्दूक जहाज़ से उतार कर बेड़े पर रख दिया। इसके बाद मैंने दो पिस्तौल, कुछ गोली-बारूद और बहुत दिन की मोर्चा लगी हुई दो तलवारें खोल

निकालीं। मुझे मालूम था कि जहाज़ में तीन पीपे बरूद हैं। बहुत ढूँढ़ने पर तीनों पीपे बरूद मिली; एक में पानी पैठ चुका था, और दो बच गये थे। उन दोनों पीपों और हथियारों को भी उतार कर बेड़े पर रक्खा। बेड़े पर अब बोझा भरपूर हो गया, यह जान कर मैंने स्थल भाग की ओर लौट जाना चाहा। किन्तु बेड़े को किस तरह किनारे तक ले जाऊँगा, यह सोच कर मैं घबरा गया। मेरे पास खेने की कोई वस्तु न थी। ज़रा तेज़ी के साथ हवा बहने ही से बेड़ा उलट जाता और मेरी सारी आशा मिट्टी में मिल जाती।

मेरे बेड़े के पार होने की आशा के तीन कारण थे— एक तो समुद्र शान्त और स्थिर था; दूसरे, ज्वार आने से जल क्रमशः किनारे की ओर बढ़ रहा था; तीसरे जो कुछ कुछ हवा बह रही थी वह किनारे की ओर जाने ही में सहायता दे रही थी। मैंने दो तीन टूटी पतवारें, खनती (खनित्र), कुल्हाड़ी, हथौड़ी आदि उपयोगी वस्तुओं का संग्रह कर साथ में रख लिया। फिर कपार ठोक कर मैं रवाना हुआ। एक मील तक तो रास्ता मज़े में कटा। केवल जिस जगह मैं पहले उतरा था उस जगह से कुछ दूर हटकर बेड़ा बह चला। उससे मैंने समझा कि ज्वार का प्रवाह कहीं से प्रवेश का मार्ग पाकर उसी ओर बढ़ा जा रहा है। शायद मैं किसी खाड़ी या नदी के मुहाने में जा पहुँचूँगा, और वहाँ मेरे उतरने की सुविधा होगी।

जो मैंने सोचा था वही हुआ। मैंने सामने एक खाड़ी देखी। प्रवाह उसी के भीतर जा रहा है। प्रवाह के बीच में बेड़े को करके मैं खाड़ी के भीतर जाने की चेष्टा करने लगा।

यहाँ मेरा माल से भरा हुआ बेड़ा डूबने पर हुआ। ऐसा होता तो मैं मारे दुःख और शोच के छाती फाड़ कर मर जाता। वहाँ के किनारे की अवस्था से मैं बिलकुल अपरिचित था। किधर क्या है, यह कुछ भी मुझे मालूम न था। प्रवाह-क्रमसे आगे जाते-जाते बेड़ा ऐसी जगह पहुँच गया कि उसका एक हिस्सा बालू के टीले पर चढ़ गया और दूसरा पार्श्व नीचे अगाध जल पर गया। बेड़े के पिछले हिस्से पर अधिक दबाव पड़ जाने के कारण वह पानी में धँस गया। ज़रा और दबाव पड़ते ही इतने कष्ट से संग्रह किया हुआ मेरा सब सामान पानी में गिर जाता। मैं तुरन्त जी पर खेल कर सन्दूकों को पीठ से ठेल ठेल कर कुछ ऊपर की ओर खिसका लाया और बेड़े को बालू से हटाने की चेष्टा करने लगा। मेरे प्राणपण से ज़ोर लगाने पर भी बेड़ा अपनी जगह से ज़रा भी न हिला। मैंने पीठ के बल से सन्दूकों को ठेल ठेल कर रक्खा था, इससे मेरी पीठ की नसें जकड़ गई थीं। मैं अच्छी तरह हिल डोल भी नहीं सकता था। मैं सारे बदन का ज़ोर पीठ पर लगा कर सन्दूक से लग कर आध घंटे तक बैठा रहा। उतनी देर में ज्वार का जल क्रम क्रम से बढ़ कर बेड़े को विषम अवस्था से सम भाव में ले आया। बेड़ा सीधा होकर उस रेतीली भूमि से छूट कर उपलाने लगा। तब मैं लग्गी से ठेल कर उसे धीरे धीरे खेता हुआ आगे की ओर बढ़ा ले चला। खाड़ी के भीतर जा करके मैंने एक नदी का मुहाना देखा। ज्वार का जल अभी खूब वेग से ऊपर की ओर चढ़ रहा था। मैं साकांक्ष दृष्टि से मुहाने के आस पास बेड़ा लगाने की जगह देखने लगा। मैं स्थल भाग की ओर बहुत दूर तक जाना नहीं चाहता था। कारण

यह कि किनारे के आस पास रहने से कभी कोई जहाज़ मिल जाने की आशा थी।

आख़िर मुहाने के पास एक सुभीते की जगह देख कर मैंने बड़े बड़े कष्ट और परिश्रम से बेड़े को वहाँ लेजाकर तटस्थ भूमि में भिड़ाने की चेष्टा की। किन्तु किनारे की भूमि इतनी ऊँची ढलुवाँ थी कि फिर मेरा बेड़ा किनारे से लग कर उलटने पर हो गया। तब मैं कुछ देर तक ज्वार के और अधिक होने की प्रतीक्षा से ठहर गया। ज्वार के बढ़ने से पानी कछार के ऊपर तक पहुँच गया, तब मैंने बेड़े को किनारे लगा कर अपनी सब चीज़ों को उतार उतार कर सूखी ज़मीन पर ला रक्खा।

मैं अब अपने रहने के लिए एक रक्षित स्थान खोजने लगा। क्या मालूम मैं कहाँ हूँ, यह देश है या टापू? मनुष्यों की यहाँ बस्ती है या नहीं? हिंस्र जन्तु या नृशंस लोगों का यहाँ भय है या नहीं,—मैं यह कुछ न जानता था। वहाँ से कोई एक मील पर एक पहाड़ दिखाई दे रहा था। एक बन्दूक और गोली-बारूद ले कर मैं अपने रहने को जगह ठीक करने चला। बड़े बड़े कष्ट से पहाड़ की चोटी पर चढ़कर देखा कि मैं एक टापू में आ गया हूँ। चारों ओर पानी ही पानी नज़र आता था, कहीं स्थल का चिह्न भी दिखाई न देता था। पच्छिम ओर तीन-चार मील पर एक पहाड़ और दो छोटे छोटे टापू देख पड़ते थे। मैंने खूब ग़ौर करके देखा, वे दोनों द्वीप ग़ैर आबाद थे और मनुष्य तथा हिंस्र पशुओं से बिलकुल ख़ाली थे। वहाँ पक्षी असंख्य देखने में आये। वैसे पक्षी अब तक मैंने कभी न देखे थे। उन पक्षियों में कौन खाद्य थे और कौन अखाद्य, इसका भी मैं

निश्चय न कर सका। मैंने एक बाज़ पक्षी की क़िस्म की चिड़िया मारी।

जब से संसार की सृष्टि हुई है तब से, मालूम होता है, इस द्वीप में इसके पूर्व कभी बन्दूक़ की आवाज़ न हुई थी। बन्दूक़ की आवाज़ सुनकर चिड़ियाँ विचित्र कलरव करके आकाश में उड़ने लगीं। जिस पक्षी को मैंने मारा था उसका मांस बहुत ख़राब था, खाने के योग्य नहीं था।

यह देख सुन कर मैं अपनी वस्तुओं के निकट लौट आया और ऐसी आयोजना करने लगा जिससे निर्विघ्नपूर्वक रात कटे। मैंने चारों ओर बक्स रख कर उसके ऊपर तख़्ता रक्खा और झोपड़े के क़िस्म का छोटा सा कुटीर बना लिया।

अब मैंने फिर जहाज़ पर से कुछ वस्तुएँ ले आने का इरादा किया। मैं अपने मन में तर्क-वितर्क करने लगा कि बेड़े को ले जाने में सुविधा है या नहीं, पर कोई सुभीता न देख पड़ा। तब भाटे के समय पूर्ववत् नीचे की राह से जाने का ही मैंने निश्चय किया। इस दफ़े मैं अपने बदन के कपड़े उतार कर झोपड़े में रख गया।

मैंने पहले की तरह जहाज़ में जाकर फिर एक बेड़ा बनाया। पहली बार ठोकर लगने से मैं चेत गया। अब की बार मैंने बहुत बड़ा बेड़ा न बनाया और न उस पर ज़्यादा बोझ ही रक्खा। फिर भी मैं अनेक आवश्यक वस्तुएँ जहाज़ पर से ले आया। चन्द क़िस्म के हथियार, लोहे की छड़, बन्दूक, गोली-बारूद और सान चढ़ाने की कलें आदि अनेक वस्तुओं का संग्रह कर लिया। इनके अतिरिक्त पुरुषों के

पहनने की कुल पोशाकें, जहाज़ का पाल, बिछौना, और बिछौने की चादरें आदि ले आया। मैं जब जहाज़ पर से चीज़ें लाने गया था तब मेरे मन में इस बात का खटका था कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे खाने-पीने की चीज़ें उठा कर कोई ले न जाय। किन्तु लौट कर देखा तो मेरे घर में कोई न आया था, केवल एक वनबिड़ाल एक सन्दूक़ के ऊपर बैठा था। वह मुझे अपनी ओर आते देख दौड़ कर अलग जा बैठा। वह बड़े निश्चिन्त भाव से बैठ कर मेरे मुँह की ओर ताकने लगा, मानो वह मेरे साथ परिचय करना चाहता हो, मैंने उसकी ओर बन्दूक़ दिखलाई किन्तु बन्दूक़ की पहचान न रखने के कारण वह ज्यों का त्यों बैठा रहा—डरा नहीं। तब मैंने उसके आगे एक बिस्कुट फेंक दिया। वह अपनी जगह से उठा और उसे सूँघ कर खाने लगा। बिस्कुट खाकर वह कृतज्ञता की दृष्टि से प्रसन्नता-पूर्वक मेरी ओर देखने लगा मानो वह और लेना चाहता था। किन्तु मेरे पास खाने की फ़ालतू सामग्री न थी इसलिए उसको और न दे सका। तब वह वहाँ से चला गया।

दूसरी खेप की चीज़ें ले आने पर मैंने एक तम्बू बनाया। धरती में कई खूँटे गाड़ कर उसके ऊपर मैंने पाल फैला कर एक वस्त्रागार बना लिया।

इसके अनन्तर जो वस्तुएँ धूप में या पानी में बिगड़ने योग्य थीं उन्हें मैंने तम्बू के भीतर रक्खा और सन्दूकों को तम्बू के चारों ओर इस ढँग से रक्खा जिसमें कोई मनुष्य या हिंस्र पशु मुझ पर एकाएक आक्रमण न कर सके। फिर तम्बू के द्वार पर कई एक तख़्ते खड़े कर के एक ख़ाली बक्स सीधा खड़ा कर के टिका दिया। इस प्रकार चारों

ओर अच्छी तरह घेर घार कर के मैं जमीन में एक बिछौना बिछा कर सो रहा। मैंने अपने सिरहाने दो पिस्तौल और पास ही एक बन्दूक भर कर रख ली और निश्चिन्त होकर खूब सोया। बहुत दिनों पर बिछौने का शयन, पूर्वरात्रि का जागरण और दिन भर का परिश्रम, शीघ्र ही मेरी गाढ़ निद्रा के कारण हुए।

एक मनुष्य के लिए मेरे घर का प्रबन्ध काफ़ी हो चुका था, किन्तु मैंने उतने पर ही सन्तुष्ट न होकर जहाज़ पर से और और चीजें ले आने का संकल्प किया। प्रतिदिन भाटे के समय जाकर जहाज़ पर से पाल और कैम्बिस काट कर ले आता था; रस्सी, डोरी, भीगी हुई बारूद का पीपा, छुरी, कैंची, लोहे की छड़ें, लकड़ी और तख्ते आदि जो मिल जाता उसे उठा कर वहाँ से डेरे पर मैं रोज़ लाने लगा। तीसरी बार की खोज में फिर कुछ चपातियाँ, एक बर्तन भर मैदा, और चीनी मिली। इन चीजों को मैं बड़ी हिफ़ाज़त से ले आया। चौथी बार मैंने अपने बेड़े पर इतना बोझा रक्खा कि जो किनारे आते आते उलट गया। उस पर जितनी चीजें थीं उनके साथ साथ मैं भी पानी में गिर पड़ा। उससे मेरी विशेष हानि नहीं हुई। मेरी लाई हुई उन चीज़ों में बहुत सी ऐसी थीं जो पानी में डूब नहीं, उतराने लगीं। सिर्फ़ लोहे की वस्तुएँ डूब गईं। कितनी ही वस्तुओं को मैं तैर कर पानी में से खींच लाया और कितनी ही वस्तुओं को भाटे के समय ढूँढकर निकाल लाया।

इस तरह तेरह दिन बीते। इस बीच में ग्यारह बार जाकर जहाज़ पर से—अकेले जहाँ तक हो सका—आवश्यक

वस्तुएँ उठा लाया । मैं समूचे जहाज़ को टुकड़े टुकड़े करके धीरे धीरे ऊपर ले आता, किन्तु इतने में वायु का वेग प्रबल हो उठा । फिर भी भाटे के समय मैं बारहवीं बार गया । जहाज़ की एक दराज़ में अस्तुरा, कैंची, काँटा, छुरी और कुछ रुपये मिले । रुपयों को देख कर मैंने मन ही मन हँस कर कहा—"बेकार है ! तुम्हारी अपेक्षा मेरे निकट अभी एक छुरी का मूल्य कहीं बढ़ कर है ।" एक बार मैंने सोचा, रुपया लेकर क्या करूँगा ? किन्तु फिर भविष्य की बात सोच कर उन्हें भी रख लिया । देखा, आकाश में बादल उमड़ रहे हैं । मैं एक बेड़ा बनाने की बात सोच रहा था और कुछ कुछ उसकी आयोजना भी कर रहा था । पन्द्रह मिनट के भीतर ही पानी बरसने लगा और उलटी हवा बहने लगी, अर्थात् किनारे से समुद्र की ओर । वायु की प्रतिकूलता में किनारे तक बेड़ा ले जाना असंभव होगा और ज्वार आने के पहले स्थल भाग में न लौट जायँगे तो नीचे के रास्ते से लौट जाना भी असंभव है, यह सोचकर मैं पानी में उतर पड़ा । देखते ही देखते हवा ने ज़ोर पकड़ा, समुद्र में तरङ्ग पर तरङ्ग उछलने लगी । मेरी पीठ पर गठरी बँधी थी, इसलिए मैं बड़ी कठिनता से किसी तरह तैर कर ऊपर आया ।

मैंने अपने नव-निर्मित गृह में जाकर बेखटके रात बिताई । सवेरे उठकर देखा, जहाज़ का कहीं नाम-निशान तक नहीं । यह देख कर मैं अत्यन्त विस्मित हुआ । किन्तु मैं इतने दिनों में जहाज़ से सब चीज़ें ढो ढो कर ले आया था । और कोई चीज़ लाने को न रह गई थी । यह मेरे लिए विशेष सन्तोष का कारण हुआ ।

इस समय मैंने जहाज़ के अलक्षित होने की चिन्ता छोड़ कर दूसरे काम में मन लगाया।

क्रूसो का क़िला

मैंने अपने रहने के स्थान को निरापद करने पर पूरा ध्यान दिया। जंगली असभ्य मनुष्य या हिंस्र पशु मेरा कोई नुक़सान न कर सकें, इसके लिए कैसा घर बनाना चाहिए— मैं यही सोचने लगा। एक बार यह सोचता था कि ज़मीन में सुरङ्ग खोद कर उसी में रहूँगा, फिर जी में होता कि तम्बू के भीतर ही रहूँगा। आख़िर मैंने दोनों तरह से रहने का निश्चय किया।

मैं उस समय जहाँ था वह जगह रहने के लायक़ न थी। समुद्र के किनारे की भूमि सील होने के कारण स्वास्थ्यकर नहीं होती; दूसरे पीने का पानी भी वहाँ अच्छा न था। इसलिए मैं अपने रहने के लिए उपयुक्त स्थान ख़ोजने लगा।

मैंने सोच कर देखा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ इतनी बातें होनी चाहिएँ। प्रथम जगह स्वास्थ्यकर हो, दूसरे मीठा पानी हो, तीसरे धूप का बचाव हो, चौथे हिंस्र मनुष्य और पशुओं से आत्मरक्षा हो सके; पाँचवें समुद्र का दृश्य हो। यदि जहाज़ को जाते देखूँगा तो किसी तरह भगवान की कृपा से उद्धार हो सकेगा। कारण यह कि मैं तब भी उद्धार की आशा को एकदम छोड़ न बैठा था।

घूमते घूमते एक पहाड़ की तलहटी में मुझे समतल भूमि मिली। वहाँ हर तरह का सुभीता देख पड़ा। इस स्थान की बग़ल में पहाड़ इतना बड़ा था कि कोई प्राणी उस तरफ़ से उतर कर मुझ पर आक्रमण न कर सकता था।

पहाड़ में एक जगह गुफ़ा की तरह खुदा था, किन्तु वह असली गुफ़ा न थी। एक प्रकार का गड्ढा था।

मैंने उसी तृणसंकुल हरित-भूमि में पर्वतस्थित खोह के समीप तम्बू खड़ा करने का विचार किया।

खोह के सामने दस गज़ हट कर बीस गज़ व्यास में मैंने धनुषाकार एक अर्धवृत्त का चिह्न अङ्कित किया। इस अर्धवृत के ऊपर मैंने खूँटे गाड़ कर एक घेरा डाला; प्रथम पंक्ति के पीछे छः इञ्च दूरी पर फिर एक पंक्ति-बद्ध खूँटों का घेरा बनाया। खूँटों को मैंने खूब मज़बूती के साथ गाड़ा था, और खूँटों का सिरा अच्छी तरह बल्लम की तरह पैना कर एकसा कर दिया था। जङ्गल से खूँटों के उपयुक्त लकड़ी काट कर लाने और उसके सिरे छील कर गाड़ने में मेरा बहुत समय लगा और परिश्रम तो करना ही पड़ा। खूँटे गड़ जाने पर दो पंक्ति-बद्ध खूँटों के बीच की जगह को जहाज़ की रस्सी से उनकी ऊँचाई के बराबर भर दिया। उसके बाद भीतर से खूँटों की सहायता के लिए तिरछी मेखें गाड़ दीं। यह घेरा ऐसा सुदृढ़ हुआ कि किसी मनुष्य या हिंस्र पशु के मुझ पर आक्रमण करने की सम्भावना न रही।

इस घेरे के भीतर जाने-आने के लिए मैंने कोई दर्वाज़ा न रक्खा। एक छोटी सीढ़ी के द्वारा घेरे को लाँघ कर जाने-

आने की व्यवस्था की। इस प्रकार क़िले की रचना करके मैं खूब निश्चिन्त हो कर रात में सोने लगा। किन्तु बाद को मैंने समझा, इस टापू में मेरा कोई दुश्मन नहीं है। मेरी इतनी सावधानी निरर्थक हुई। इस क़िले के भीतर मैंने अपनी वस्तुओं को पहली जगह से बड़े परिश्रम के साथ ढो ढो कर ला रक्खा। उस प्रदेश में वर्षा बहुत होती थी, इस कारण मैंने दोहरा तम्बू अर्थात् एक के भीतर और एक तम्बू खड़ा किया और ऊपर के तम्बू को तिरपाल से ढँक दिया।

बहुत दिनों तक मैं बड़े परिश्रम से ये सब काम कर ही रहा था, कि एक दिन काली घटा घिर आई। सारा आकाश-मण्डल काले बादलों से भर गया और इसके साथ ही पानी बरसने लगा। बिजली कड़कने लगी। बिजली की चमक की तरह मेरे हृदय में धक से एक बात याद हो आई, मेरी बारूद! यदि उसमें आग लग जाय तब तो सर्वनाश हो जायगा। मेरी आत्मरक्षा और आहार-संग्रह करने का उपाय एक दम नष्ट हो जायगा। बारूद में आग लग जाने से अन्यान्य वस्तुओं के साथ मैं भी उड़ जा सकता था—यह चिन्ता पहले मेरे मन में न थी। क्योंकि बारूद से उड़ जाने पर मैं किस तरह, कब मर जाता, यह जानने का अवसर ही न मिलता तो फिर मृत्यु से डरता ही क्यों?

वृष्टि बन्द होने पर, बारूद रखने के लिए, मैं छोटी छोटी थैलियाँ और बक्स बनाने लगा। बारूद के बक्स अलग अलग रक्खे जायँगे तो एक लाभ होगा। वह यह कि यदि आग लगेगी भी तो सब एक साथ न जलेंगे। यह सोच कर मैं उसी की व्यवस्था करने लगा। मेरे पास प्रायः तीन मन

बारूद थी। मैंने उसे सौ हिस्सों में बाँट कर पहाड़ के नीचे गढ़ा खोद खोद कर पृथक् पृथक् गाड़ रक्खा और उन सब जगहों पर भली भाँति निशान भी कर दिया, जिस से खोद कर निकालते समय गड़बड़ न हो। मैंने पूरा प्रबन्ध कर दिया जिससे वे बक्स वर्षा के जल में भीग न जायँ। जिस पीपे में पानी घुस जाने से बारूद भीग गया था उसके लिए कोई चिन्ता न थी। उसे पहाड़ की खोह में रख दिया। यह सब करते करते मेरे पन्द्रह दिन कट गये।

क्रूसो की कर्मकारिता

जब मैं क़िला बना रहा था तब प्रति दिन एक बार काम से छुट्टी पा कर बन्दूक़ हाथ में ले कर यह देखने के लिए बाहर घूमने जाता था कि खाने के कोई उपयुक्त चीज़ मिलती है या नहीं इससे उस द्वीप का परिचय पाने का भी सुयोग मिलता था।

मैंने देखा कि इस द्वीप में बकरे बहुतायत से हैं; पर वे अत्यन्त डरपोक और बड़ी फुर्ती से भागते थे। उनके पास तक पहुँचना बड़ा कठिन था। उनको पाकर मुझे पहले जैसा आनन्द हुआ था वैसे ही उनका स्वभाव देख कर हताश होना पड़ा। किन्तु मैंने एकदम आशा नहीं छोड़ी मैं। बराबर उनके पीछे लगा ही रहा। मैंने शीघ्र ही इस बात का पता लगा लिया कि जब वे पहाड़ के ऊपर चरते हैं तब मुझको देखते ही डर के मारे दौड़ कर भाग जाते हैं; परन्तु जब वे पहाड़ की तराई में चरते हैं और मैं पहाड़ पर रहता हूँ तब वे मेरी ओर ताकते भी नहीं। इससे मैंने समझा कि इन बकरों की

आँखें इस खूबी के साथ बनी हैं कि उनकी दृष्टि विशेष कर नीचे ही की ओर पड़ती है। ऊपर की वस्तुओं को वे सहज ही नहीं देख सकते। यह समझ कर के मैं बकरे का शिकार करते समय पहले ही उनसे उच्च स्थान में चढ़ जाता था, और फिर आसानी से उनका शिकार कर सकता था।

पहले पहल मैंने एक बकरी का शिकार किया। उसके एक छोटा सा बच्चा था। वह उस समय दूध पी रहा था, यह देख कर मुझे बड़ा कष्ट हुआ। जब उस बच्चे की नवप्रसूता माँ धरती पर लोट गई तब बच्चा चुपचाप उसके पास खड़ा हो रहा। यह देखकर मैं दौड़ कर उसके पास गया और उसे गोद में उठा लिया। इसके बाद जब मैं उसे नीचे उतार कर बकरी को कन्धे पर उठाकर ले चला तब वह बच्चा मेरे पीछे पीछे मेरे क़िले तक आया। मैं उस बच्चे को गोद में उठाकर क़िले के अन्दर ले गया। मैंने उसे पोसना चाहा पर अभी तक उसे खाना न आता था। वह कुछ भी न खाता था। यह देख मैंने उसे भी मार कर अपने उदरानल की ज्वाला शान्त की। इन दोनों बकरों से बहुत दिनों तक मेरा खाना चला। मेरे पास रोटियाँ बहुत कम थीं, इसलिए मैं उन्हें बहुत बचा कर ख़र्च करता था। मांस मिल जाने से मैं बहुत निश्चिन्त हो गया।

३०वीं सितम्बर को दो-पहर के समय मैंने इस जनशून्य एकान्त स्थान में पहले पहल पैर रक्खा। यहाँ आये जब दस बारह दिन हुए तब मैंने सोचा कि मेरे पास पञ्चाङ्ग (यन्त्री) नहीं है। तिथि का निर्णय करना पीछे कठिन हो जायगा। इसलिए मैंने एक तख़्ते पर अपनी छुरी से बड़े बड़े अक्षरों में लिखा—

१६५९ ई० की ३० वीं सितम्बर को मैं यहाँ किनारे आ लगा।

इसके बाद उस तख़्ते को एक लम्बे से चौकोर खूँटे में लटकाकर मैंने वहाँ गाड़ दिया जहाँ पर मैं पहले किनारे पर आ लगा था।

उस चौकोर खूँटे में प्रतिदिन मैं छुरी से एक एक चिह्न करने लगा। प्रति सातवें दिन का दाग़ कुछ बड़ा कर देता था, और महीने की पहली तारीख़ का दाग़ उससे भी बड़ा कर देता था। इस प्रकार मैंने अपनी यन्त्री बना कर के तिथि, सप्ताह, महीना और वर्ष जानने का उपाय कर लिया।

मैं जहाज़ पर से कुछ कोरा कागज़, क़लम, रोशनाई, तीन चार कम्पास, नक़्शा, किताब, और बाइबिल की पुस्तकें ले आया था। हमारे जहाज़ पर दो बिल्लियाँ और एक कुत्ता था। मैं पहली ही बार जाकर जहाज़ पर से दोनों बिल्लियों को ले आया था। कुत्ता आप ही तैर कर मेरे पीछे पीछे चला आया। यही तीनों इस समय मेरे संगी-साथी थे। बिल्ली और कुत्ते ने बहुत दिनों तक मेरा बहुत कुछ उपकार किया था। मैं चाहता था कि वे मेरे साथ बातें करें, पर ऐसा होना कब संभव था! जो हो, मैं उनके साथ रहने से बहुत ख़ुश था।

जब तक मेरे पास रोशनाई रही तब तक मैं सब बातों का विवरण बहुत सफ़ाई से लिखता जाता था। पर जब स्याही चुक गई तब मैं किसी उपाय से भी स्याही न बना सका।

घर-द्वार बना लेने पर मुझे कई वस्तुओं की कमी का अनुभव होने लगा। खनती, कुदाल, खुरपी, आल-पीन,

सुई और डोरा तथा परिधेय वस्त्र के न रहने से मेरे गृहस्थी के कामों में बाधा पड़ने लगी। प्रत्येक कार्य का सम्पादन बहुत विलम्ब और कठिनता से होने लगा। इससे पहले तो जी में बड़ा रंज होता था, किन्तु फिर मैंने सोचा, कि कोई काम जल्दी होने ही से क्या लाभ। और काम ही क्या है, जिसके लिए समय बचाऊँगा ? जब तक जिस काम में लगा रहूँगा तब तक उसी को मैं अपना कर्तव्य समझूँगा।

इन परिश्रमसाध्य कामों में लगे रहने से भी कभी कभी मेरा मन उदास और हताश हो जाता था। मैं दैवयोग से जिस स्थान में आ पड़ा था वह सर्वथा जनशून्य और सभ्यसमाज तथा वाणिज्य-पथ से बहिर्भूत था। यहाँ मैं अकेला था। यहाँ से उद्धार की भी कोई आशा न थी। यहाँ अकेले ही रह कर जीवन का शेष भाग बिताना होगा। यह चिन्ता जब मेरे मन में आती थी तब मैं बालक की तरह फूट फूट कर रोता था। धीरे धीरे यह अवस्था भी बहुत कुछ सह्य हो चली। मैं बीच बीच में अपने भाग्य की समालोचना कर के मन को शान्ति देने की चेष्टा करता था और अपनी वर्तमान अवस्था के सुख-दुःख की गणना कर के मन को धैर्य देता था। इस प्रकार मैं अपने भाग्य को भला-बुरा कह कर मन को समझाता था।

अच्छा	बुरा
मैं जीता हूँ, अपने साथियों की तरह डूब कर नहीं मरा।	मैं निर्जन टापू में आ फँसा हूँ, यहाँ से मेरा उद्धार होने की अब आशा नहीं।

अच्छा

मैं अपने साथियों से अलग हो गया, इसीसे अब तक बचा हूँ। जिन्होंने मेरे प्राण बचाये हैं, वही किसी दिन मेरे उद्धार का भी उपाय कर देंगे।

मैं मरुभूमि के अन्न-जल-हीन देश में नहीं आ पड़ा हूँ। यहाँ खाद्य-सामग्री मिलती है। यह उष्ण-प्रधान देश है। ज़्यादा कपड़ों की भी आवश्य-कता न होगी।

यहाँ मुझे दुश्मनों का भी कोई डर नहीं। यदि मैं आफ्रिका के उपकूल में पहुँच जाता तो अवश्य प्राणों का भय था। ईश्वर ने विशेषकर मुझे काम में लगा रक्खा है और जहाज़ को स्थल भाग के समीप लाकर मेरे जीवन के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ दे दी हैं।

मतलब यह कि मेरी अवस्
होने पर भी ऐसा कुछ योग
सान्त्वना मिलती थी। जब

करता था तब अच्छे का ही अंश अधिक देखने में आता था। दयामय भगवान् की लीला ही ऐसी है। वे संसार में किसी को निरवच्छिन्न दुःख नहीं देते।

इस प्रकार अपने भावी सुख-दुःख की बातों से चित्त को स्थिर कर के मैंने घर बनाने की ओर ध्यान दिया। लकड़ी के घेरे से सटा कर मैंने मिट्टी की दीवार बनाई और पहाड़ से लेकर दीवार तक कड़ी-तख़्ते बिछा कर उस पर पत्तों की छावनी कर दी। क्योंकि इस प्रदेश में ख़ूब ज़ोरों की वर्षा होती थी।

मैंने अपनी सब वस्तुओं को घर में सिलसिलेवार रख दिया। अब जिन आवश्यक वस्तुओं का अभाव था और जिन के बिना कष्ट होता था उन्हें तैयार करने का इरादा किया टेबल और कुरसी के न रहने से मैं अपने जीवन का थोड़ा सा समय भी सुख से न बिता सकता था। न मैं कुछ लिख सकता था, न बैठ कर कुछ पढ़ सकता था। खाने में भी कठिनाई होती थी। मैंने टेबल-कुरसी बनाना आरम्भ किया। मैंने इसके पहले कभी मिस्त्री का काम न किया था, किन्तु परिश्रम और अध्यवसाय के द्वारा मैंने शीघ्र ही उस काम में सफलता प्राप्त की। मेरे पास सब प्रकार के औज़ार न थे, तथापि कुछ हथियारों के बिना ही मैंने बहुत सी चीज़ें बना लीं। किन्तु इन कामों में मेरा बहुत समय नष्ट होता था और परिश्रम भी अधिक करना पड़ता था। पर उस समय मेरे परिश्रम और समय का मूल्य ही क्या था? किसी न किसी तरह कुछ परिश्रम और व्यावहारिक कामों के लिए समय का विभाग करना ही पड़ता। जो औज़ार मेरे पास न था उसका काम मैं बुद्धि से लेता था। मान लो; मेरे

पास (लकड़ी चीरने का) आरा नहीं था और मुझे तख़्ते की आवश्यकता हुई, उस हालत में मैं कुल्हाड़ी से पेड़ काट गिराता था और उसके दोनों ओर की लकड़ी छील कर एक चपटा चौड़ा सा तख़्ता तैयार कर लेता था। उस तख़्ते पर रन्दा फेर कर चिकना कर लेता था। इस तरकीब से, बहुत परिश्रम करने पर, एक पेड़ से सिर्फ़ एक मोटा सा तख़्ता तैयार होता था, पर हो तो जाता था।

जहाज़ पर से मैं जो तख़्ता लाया था उससे पहले पहल मैंने एक टेबल और एक कुरसी बनाई। इसके बाद पेड़ से तख़्ता निकाल कर उसके द्वारा घर में ताक़ (रैक) बनाया और उस पर सब चीज़ें क़रीने से रख दीं जिसमें ज़रूरी चीज़ जब चाहें उस पर से निकाल लें।

यहाँ मैं अपना रोज़ रोज़ का काम, विचार और घटना आदि, दैनिक वृत्तान्त लिखकर डायरी तैयार करने लगा। इसमें मैंने अपनी चित्त-वृत्ति के अनुसार अनेक प्रकार की बातें लिखी थीं। निदान जब मेरी रोशनाई चुक गई तब मुझे लाचार होकर लिखने से हाथ खींचना पड़ा। मेरी डायरी में कितनी ही बातें बेसिर-पैर की थीं, जिनमें से चुन चुन कर मैंने विशेष विशेष दिन की प्रधान घटनायें यहाँ उद्धृत की हैं।

क्रूसो का रोज़नामचा

३० दिसम्बर सन् १६५९ ईसवी—मैं दीन मतिहीन अभागा राबिन्सन क्रूसो, जहाज़ डूब जाने पर, इस भयङ्कर जनशून्य टापू में आपड़ा था। इस टापू का नाम मैंने 'नैराश्य द्वीप'

रक्खा था। मेरे साथी सभी डूब कर मर गये। मैं ही अधमरा सा होकर किसी किसी तरह किनारे आ लगा।

भोजन, वस्त्र, आश्रय और अस्त्र से रहित होकर मैं अपने चारों ओर मृत्यु की भीषण मूर्ति देखने लगा। वन्य पशुओं के ग्रास से या असभ्य निर्दय मनुष्य के हाथ से या क्षुधा की ज्वाला से अपनी अनिवार्य मृत्यु की बात सोच कर मैं अपने जीवन से हताश होगया था। रात को मैं जंगली पशुओं के भय से पेड़ पर चढ़ कर सो रहा। उस अवस्था में भी सारी रात पानी बरसता ही रहा, तो भी मैं खूब गाढ़ी नींद में सोया।

पहिली अक्तूबर—मैंने सबेरे उठकर देखा, हम लोगों का भग्न जहाज़ ज्वार में उपलाता हुआ स्थल भाग के समीप आ लगा है। यह देखकर मेरे मन में हर्ष और विषाद दोनों हुए। हर्ष का कारण यह था कि हवा कुछ थम जाने पर मैं जहाज़ पर से अपनी आवश्यकता के अनुसार चीज़ें ले आ सकूँगा। विषाद का कारण यह था कि हम लोग नाव पर न चढ़ कर यदि जहाज़ ही पर रहते तो सब के सब बच जाते।

पहिली अक्तूबर से २५ वीं अक्तूबर तक—इन कई दिनों में मैं वर्षा के पानी में भीग भीग कर, ज्वार के समय, बेड़ा तैयार करके जहाज़ पर से बराबर चीज़ वस्तु ढोता रहा।

२० अक्तूबर को मेरा बेड़ा उलट जाने से सब चीज़ें पानी में गिर गईं और मैं भी गिर पड़ा। भाटे के समय मैं प्रायः वस्तुओं को निकाल लाया।

२५ अक्तूबर—जहाज़ टूट फूट कर ग़ायब हो गया। दिन रात पानी बरसता रहा।

२६ अक्तूबर से ३० अक्तूबर तक—रहने के लिए जगह की खोज, और पहाड़ की तलहटी में स्थान का निरूपण। क़िले का निर्म्माण।

३१ अक्तूबर—द्वीप देखने के लिए बाहर निकल कर मैंने बकरी का शिकार किया और मरी हुई बकरी और उसके जीवित बच्चे को घर ले आया।

३ नवम्बर—दिन के पिछले पहर से मैं मेज़ बनाने में लगा। तीन दिन में मेज़ बन कर तैयार हो गई।

५ नवम्बर—बन्दूक़ और कुत्ते को साथ ले जाकर मैंने एक वनविड़ाल मारा। उसका चमड़ा बहुत मुलायम था। मैं जिस जन्तु का शिकार करता था उसका चमड़ा निकाल कर रख लेता था। समुद्र के किनारे घूमते-फिरते मैंने भाँति भाँति के कितने ही अपरिचित पक्षी देखे। अजीब तरह के दो तीन जन्तु देख कर मैं चकित और भयभीत सा हो गया। ये जानवर कौन हैं? यह तजवीज़ करके मैं देख ही रहा था कि वे भाग गये। मैं उनका शिकार न कर सका।

७ नवम्बर से १२ तक—आकाश बिलकुल साफ़ हो गया था। इन कई दिनों में किसी तरह मैंने एक कुरसी बना ली। किन्तु उसकी गढ़न मेरे पसन्द की न हुई। मैंने उसको तोड़ ताड़ कर अपने पसन्द लायक़ बनाने की कई बार कोशिश की, पर मैं कृत-कार्य न हो सका।

१३ नवम्बर से १५ तक—फिर खूब ज़ोर शोर से वर्षा, वायु, बिजली और वज्राघात का भयङ्कर दृश्य दिखाई दिया। मैंने डर कर बारूद को थोड़ी थोड़ी करके अलग अलग रखने का विचार किया। छोटी छोटी थैलियाँ और बक्स

किसी तरह मैंने एक कुरसी बना ली।—पृ० ७२

बना करके उन में बारूद भर दी और पहाड़ के नीचे गढ़ा खोद कर उन्हें अलग अलग गाड़ रक्खा। गढ़ा खोदने का काम मैंने सिर्फ़ बाँस की टोकरी और गैंती से लिया। उस समय मुझे खनती और कुदाल के अभाव का अनुभव हुआ।

१८ नवम्बर—वन में घूमते फिरते मैंने एक प्रकार का पेड़ देखा। उसकी लकड़ी बहुत मज़बूत और भारी थी। इस कारण ब्रेज़िल में लोग उसे लौहकाष्ठ कहते थे। मैंने उस पेड़ की एक डाल को बड़े बड़े कष्ट से, अपनी कुल्हाड़ी को नष्टप्राय करके, काटा। वह डाल बहुत भारी थी, इससे उसे किसी तरह घसीट कर घर ले आया। रोज़ रोज़ उसे थोड़ा थोड़ा छील छाल कर ठीक कुदाल की तरह बनाया। कसर इतनी ही रही कि उसकी धार को कुदाल की तरह झुका न सका। वह बेंट के साथ सीधी ही रही। किन्तु एक टोकरी की कमी तब भी मुझे बनी ही रही। टोकरी बिनने के काम की सहज ही में जमने योग्य कोई चीज़ ढूँढ़ने से भी अब तक मुझे न मिली।

२३ वीं नवम्बर से ३१वीं दिसम्बर तक—मेरे तम्बू के पीछे जो एक खोह थी उसे खोद कर धीरे धीरे उसके द्वार को बढ़ाने तथा उसके बीच की जगह को मैं विस्तृत करने लगा। १० वीं दिसम्बर को खोह की छत एकाएक नीचे धँस गई। यदि मैं उस समय खोह के भीतर रहता तो जीता जागता ही क़ब्र में गड़ जाता। इस दुर्घटना से मैं बहुत ही डरा। फिर कहीं ऐसी ही घटना न हो जाय, इस कारण छत में नीचे से खम्भा लगा दिया। छत की मिट्टी जो धँस गई थी उसे काट कर बाहर फेंक दिया और छत के नीचे तख़्ता लगा कर खम्भे

पर साध दिया। इस तरह छत को सुरक्षित करके ताक़ (रैक) बनाया। जो चीज़ें ताक़ पर रखने योग्य थीं उन्हें ताक़ पर रक्खा और कितनी ही वस्तुएँ दीवाल में खूँटी गाड़ कर लटका दीं। इससे थोड़ी सी जगह में बहुत वस्तुओं के रखने का सुभीता हुआ।

२७ दिसम्बर को एक बकरी के बच्चे को गोली से मारा और एक के पाँव में छर्रा मार कर उसे लँगड़ा कर दिया। लँगड़ा हो जाने के सबब वह भाग नहीं सका। उसे पकड़ कर मैं घर ले आया और उसके टूटे हुए पाँव में पट्टी बाँध दी। मेरे यत्न से वह थोड़े ही दिनों में अच्छा हो गया। फिर छोड़ देने पर भी वह भागता न था। यह देख कर मेरा ध्यान पशुपालन की ओर गया। उससे लाभ यह था कि खाद्य-सामग्री समाप्त हो जाने और गोली-बारूद न रहने पर भी क्षुधा का निवारण हो सकेगा।

क्रूसो का नया साल

पहली जनवरी—गरमी बड़ी भयानक पड़ती है। मैं सबेरे और साँझ को बन्दूक़ लेकर घूमने जाता हूँ और दोपहर को सोता हूँ। आज मैंने घूमते समय एक जगह, पहाड़ की तराई में, बकरों का झुंड देखा। वे बड़े डरपोक थे। कुत्ते द्वारा मैंने शिकार खेलने का इरादा किया।

दूसरी जनवरी—मैं अपने कुत्ते को साथ लेकर बकरों का शिकार करने गया। बकरों के झुंड पर मैंने कुत्ते को छोड़ दिया। किन्तु सब बकरे कुत्ते की ओर घूम कर—आँखें फाड़

कर, सींग और कानों को सीधे करके—खड़े हो गये। डर के मारे कुत्ता उनके पास न जा सका।

तीसरी जनवरी से लेकर १९ वीं अप्रैल तक—मैंने अपने क़िले के घेरे पर चारों ओर घास जमा दी; इससे बाहर से देख कर कोई नहीं जान सकता था कि यहाँ कोई रहता है। ऐसा करने से पीछे मेरा बहुत उपकार हुआ।

इस समय मुझे कोई काम न था। वृष्टि बन्द होते ही मैं जंगल में घूमने चला जाता था। एक दिन मैंने जंगली कबूतरों का बसेरा ढूँढ़ निकाला। वे पहाड़ की दरार और कन्दराओं में रहा करते थे। मैंने उनके कई बच्चों को लाकर पालने की चेष्टा की; किन्तु कुछ बड़े होने पर वे उड़ गये। मालूम होता है, खाद्य का अभाव ही उनके उड़ जाने का कारण हुआ। असल में उनको खिलाने के लायक़ मेरे पास कोई चीज़ न थी। जो हो, मैं जब घूमने जाता था तब कबूतर के दो-चार बच्चे अक्सर ले आता था। इनका मांस बहुत स्वादिष्ट होता है।

अब मुझे अनेक वस्तुओं की कमी से कष्ट होने लगा। इस में भी दिये का न होना ख़ास तौर पर खटकता था। साँझ होते ही ऐसा अँधेरा हो जाता था कि बिछौने से अलग होना मेरे लिए कठिन सा हो जाता था। अफ़्रिका से भागते समय मैंने मोमबत्ती जला जला कर रोशनी की थी; किन्तु यहाँ तो मेरे पास वह भी न थी। मैंने बकरी की थोड़ी सी चरबी रख ली थी। अब मिट्टी का एक दिया बना कर उसे मैंने धूप में सुखा लिया। उसी में थोड़ी सी चरबी तथा कपड़े की बत्ती डाल कर दिया जलाने लगा। इस से प्रकाश

होता था सही, पर मोमबत्ती की तरह स्थिर और साफ़ रोशनी न होती थी।

जहाज़ पर से मैं बोरे भर अनाज ले आया था। एक दिन जाकर मैंने देखा कि समूचे बोरे का अन्न चूहों ने खा डाला, सिर्फ़ भूसी बच रही थी। तब मैंने बोरे का मुँह खोल कर भूसी को इधर उधर ज़मीन पर फेंक दिया।

क़रीब एक महीने के बाद बरसात का पानी पाकर हरे हरे अङ्कुर मिट्टी के नीचे से निकल आये। यह देख कर मैं बड़े ही अचम्भे में आ गया। मैं सोचने लगा, पर निश्चय न कर सका कि ये किस पेड़-पौदे के अङ्कुर हैं। कुछ दिन बाद जब उन में दस बारह पत्ते निकल आये तब मैंने उन्हें सहज ही पहचान लिया। वे जौ के पौदे थे।

यह देख कर मेरे मन में आश्चर्य का भाव उत्पन्न हुआ और भाँति भाँति की चिन्तायें उदित हुईं। उनका वर्णन करने में मैं सर्वथा अक्षम हूँ। अब तक मैं धर्म की सीमा से बाहर था। मैं नहीं मानता था कि धर्म भी कुछ है। मेरे भाग्यानुसार जब जो कुछ होजाता था उसे मैं एक घटना मात्र समझता था। ईश्वर के सम्बन्ध में भी मेरी बहुत हलकी सी कुछ कुछ धारणा थी; किन्तु इस समय इस जनशून्य टापू में, ऐसी विषम अवस्था में, मानो बिना ही बीज के अनाज के पौदे उत्पन्न होते देख मैंने परमेश्वर की दयालुता और संसार-भरण का पूरा परिचय पाया। मैंने समझा, ईश्वर ने मेरी ही रक्षा के लिए इस निर्जन टापू में अनाज उपजाया है। इस समय मेरे मन में दृढ़ विश्वास हुआ—

जाको राखे साँइयाँ मार सकै नहिं कोइ।
बाल न बाँका करि सकै जो जग बैरी होइ॥

ईश्वर की ऐसी उदारता देख मेरा सूखा हुआ प्राण फिर हरा हो गया; आँखों में प्रेमाश्रु भर आये। मेरे लिए मुझ से कुछ कहे सुने बिना ही भीतर ही भीतर विश्वम्भर का कैसा विराट् आयोजन हो रहा है, इसका अनुभव कर के मैं भगवान् को धन्यवाद देने लगा। यह देख कर मैं और भी विस्मित हुआ कि पहाड़ के आस पास भी अनाज के पौदे उगे हैं।

मैंने सोचा कि जब यहाँ अनाज के पौदे उत्पन्न हुए हैं तब इस द्वीप के अन्यान्य स्थलों में भी अनाज उपजते होंगे। इसी की जाँच के लिए मैं टापू की देख भाल करने गया। पर अनाज का एक भी पौदा कहीं दिखाई न दिया। तब मुझे स्मरण हो आया कि मैंने जो बोरे से निकाल कर भूसी फेंक दी थी उसीसे अनाज के ये अङ्कुर उगे हैं। भगवान् की पालन-व्यवस्था के प्रति जो विश्वास हुआ था वह, इस ओर ध्यान जाते ही, बहुत कम पड़ गया। मेरी पहले की धारणा फिर मेरे सामने आ खड़ी हुई। मैंने समझा कि यह तो मेरे ही द्वारा स्वाभाविक घटना के अनुसार हुआ है। किन्तु चिरकाल का अविश्वासी मैं यह न समझ सका कि यह घटना क्योंकर, किसकी प्रेरणा से, हुई। चूहों ने एक तरह सब अनाज खा ही डाला था। उनमें किसी किसी दाने को अविकृत रूप में किसने बचा रक्खा था? उन तुषों को पहाड़ की तराई में फेंकने के लिए किस ने मुझे प्रेरित किया था? उसे समुद्र में न फेंक कर मैंने ज़मीन में ही क्यों फेंका? पानी में फेंकने से वह सड़ जाता और दूसरी जगह फेंकने से सूर्य के प्रचण्ड ताप में पड़ कर सूख जाता, किन्तु यहाँ पहाड़ की छाया में पानी पड़ते ही वह अङ्कुरित हो उठा। यह सब भगवान् का सदय विधान नहीं तो क्या था?

जौ का पौधा पक जाने पर मैंने बड़ी हिफ़ाज़त से उसे रक्खा, और जब उसके बोने का समय आया तब मैंने उसे बो कर अपने खाद्य-संग्रह के उपाय की आशा की। किन्तु पहले साल मैं ठीक समय पर बीज न बो सका, इस कारण आशानुरूप फल न हुआ। इस प्रकार क्रमशः खेती करने की ओर उस देश के जल-वायु की अभिज्ञता प्राप्त करते तथा अपने ख़र्च लायक़ अनाज उपजाते चार वर्ष बीत गये। पर चौथे साल भी मैं साल भर के ख़र्च चलने योग्य अनाज न उपजा सका। इसका पूरा वृत्तान्त मैं फिर किसी जगह लिखूँगा।

भूकम्प

१७ वीं अपरैल से ३० वीं तक—मेरे घर का घेरा, क़िला और सीढ़ी आदि सब ठीक हो गया। इस समय घेरे को लाँघ कर आये बिना कोई मुझ पर आक्रमण न कर सकता था। इससे मैं निश्चिन्त हो कर रहने लगा।

किन्तु मेरा सब परिश्रम व्यर्थ और प्राणनाश होने की एक घटना अचानक हो गई। मैं अपने तम्बू के पिछवाड़े खोह के द्वार पर बैठ कर काम कर रहा था। उसी समय एकाएक खोह की छत, और मेरे सिर पर पहाड़ से मिट्टी झड़ कर गिरने लगी। गुफा के भीतर जो दो खम्भे छत को थामे खड़े थे वे ख़ूब ज़ोर से फट कर टूट पड़े। यह देख कर मैं बेहद डर गया। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। मैं तब भी ठीक कारण न समझ सका। मैंने समझा, जैसे पहले एक बार छत धँस गई थी वैसे ही इस दफ़े भी कुछ घटना हुई है। किन्तु कहीं मैं इसके नीचे दब न जाऊँ, इस भय से दौड़

कर मैं क़िले के पास गया; परन्तु वहाँ भी पहाड़ के ऊपर से माथे पर पत्थर गिरने की सम्भावना देख अपने घर की दीवार फाँद कर बाहर निकल गया।

धरती पर पाँव रखते ही मैंने समझ लिया कि भयङ्कर भूकम्प हो रहा है। आठ आठ मिनट के अन्तर से तीन बार ऐसे ज़ोर से भूडोल हुआ कि उसके धक्के से पृथ्वी पर के बड़े बड़े मज़बूत आलीशान मकान भी भूमिसात् हो जाते। मेरे घर से क़रीब आध मील पर, समुद्र के कछार में, एक पहाड़ था। उसका शिखर भयानक शब्द के साथ फट कर टूक टूक होकर नीचे गिर पड़ा। ऐसा भयानक शब्द मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी न सुना था। इससे समुद्र का जल भी भयानक रूप से ऊपर की ओर उछलने लगा। मुझे ऐसा जान पड़ा मानो स्थल की अपेक्षा भूकम्प का असर विशेष कर पानी पर ही पड़ता है।

ऐसी घटना मैंने आज तक न कभी देखी थी न सुनी। मैं यह भयानक दृश्य देख कर मृतवत् निश्चेष्ट हो रहा। समुद्र में जहाज़ डोलने से जैसा जी मचलाता है, वैसे ही भूकम्प से भी मेरा जी मचलाने लगा। किन्तु पहाड़ टूटने का शब्द सुनकर मेरा होश ठिकाने आगया। मेरे तम्बू के पीछे का पहाड़ टूटकर कहीं एक ही पल में मेरा सर्वनाश न कर दे, इस आशङ्का ने तो मुझे एकदम हतबुद्धि कर दिया।

तीसरी बार कम्प होने के पीछे जब कुछ देर कम्प न हुआ तब मेरे जी में कुछ साहस हो आया। किन्तु जीते ही कहीं दब न जाऊँ, इस डर से मैं दीवार कूद कर भीतर न जा सका। धैर्यच्युत और किंकर्तव्य-विमूढ़ होकर मैं ज़मीन पर ज्यों का त्यों बैठा रहा। इतनी देर तक मैं बराबर "हे ईश्वर, हे करुणा-

मय ! मेरी रक्षा करो" यही पुकार रहा था। इसके सिवा मेरे मन में किसी अन्य धर्म का समावेश न था। किन्तु मैं ऐसा अधार्मिक था कि प्राणनाश का भय दूर होते ही मेरे मन से ईश्वरस्मरण का वह पवित्र भाव शीघ्र ही विलीन होगया।

मैं अभी बैठा ही था, इतने में देखा कि काली घटा ने आकाश को चारों ओर से घेर लिया। अब शीघ्र ही पानी बरसेगा। मैं यह सोच ही रहा था कि वायु का वेग कुछ प्रबल हो उठा। आधे ही घंटे में वायु ने प्रचण्ड आँधी का स्वरूप धारण किया। समुद्र मथित सा होकर फेन उगलने लगा; तरङ्ग पर तरङ्ग दौड़ने लगी, भयङ्कर शब्द करता हुआ समुद्र का हिलकोरा किनारे से आकर टकराने लगा। कितने ही पेड़ जड़ से उखड़ कर गिर गये। तीन घण्टे तक यह उपद्रव जारी रहा। इसके बाद धीरे धीरे कम होते होते और दो घंटे में जाकर तूफ़ान निवृत्त हुआ। इधर आँधी का वेग कम हुआ उधर मूसलधार पानी बरसना शुरू हुआ। इतनी देर तक मैं जड़वत् बैठा ही था। वर्षा का पानी मुझे होश में लाया। तब मैंने समझा कि यह आँधी-पानी भूकम्प का ही फल है। अब भूकम्प न होगा। मैं अब अपने घर में घुसने का साहस कर सकता हूँ। यह सोच कर मैंने हिम्मत बाँधी और वृष्टि के जल से ताड़ित हो कर अपने तम्बू के भीतर जा बैठा। ऐसे वेग से पानी बरस रहा था कि मेरा तम्बू फटने पर हो गया। तब मैं गुफा के भीतर आश्रय लेने को बाध्य हुआ। किन्तु वह टूट कर कहीं माथे पर न गिर पड़े, इस भय से मैं वहाँ शङ्कित और असुखपूर्वक ही रहा। सारी रात और दूसरे दिन सवेरे से सायंकाल तक वृष्टि होती रही। मैंने दीवार की जड़ में एक छेद कर दिया, उसके द्वारा वर्षा का पानी बाहर निकल गया। यदि पानी बाहर न जाता तो गुफा में पानी ही पानी भर जाता।

मैं बुद्धि को ज़रा स्थिर करके सोचने लगा। इस द्वीप में यदि ऐसे भयङ्कर भूकम्प होते हों तो गुफा या पहाड़ के पास रहना ठीक न होगा। किसी खुले मैदान में चारों ओर दीवार से घेर घार कर घर बनाकर रहना ठीक होगा। जहाँ अभी हूँ यहाँ रहने से किसी न किसी दिन दब कर ज़िन्दगी से हाथ धोने पड़ेंगे।

रहने के लायक़ स्थान और गृह-निर्माण के लिए जिन चीज़ों की आवश्यकता है उनकी व्यवस्था करने ही में दो दिन बीत गये। दब जाने की आशङ्का से रात में तम्बू के भीतर निश्चिन्त होकर मैं सो न सकता था। किन्तु ऐसे परिश्रम से बनाया हुआ सुरक्षित और सुसज्जित घर छोड़ने को भी जी न चाहता था। घरके माल-असबाब को यहाँ से ढोकर लेजाने ही में फिर कितना समय लगाना और परिश्रम करना होगा। तब जितने दिन तक नया घर खूब मज़बूती के साथ बन कर तैयार न हो ले तब तक जी-जान अर्पण कर मैं ने यहीं रहने का विचार किया।

मैं नया घर बनाने का उपाय सोचने लगा। किन्तु मेरे पास कितने ही आवश्यक हथियार न थे। छोटी छोटी कुल्हाड़ियाँ तो मेरे पास बहुत थीं, पर बड़ी तीन ही थीं। आफ्रिका में छोटी कुल्हाड़ियों का ही विशेष प्रयोजन जान कर मैं उन्हीं को बहुतायत से साथ लाया था, किन्तु सख़्त लकड़ियाँ काटते काटते प्रायः सभी की धार बिगड़ गई थी। मेरे पास सान चढ़ाने की कल थी, पर वह इतनी बड़ी और भारी थी कि उसे एक हाथ से घुमा कर दूसरे हाथ से सान चढ़ाना मेरे सामर्थ्य से बाहर की बात थी। मैं सोचने लगा कि किस युक्ति से इसका प्रतीकार हो सकता है। यहाँ

मेरे जीवन-मरण की कठिन समस्या उपस्थित होगई। इस-लिए इस समय की गुरुतर चिन्ता का वर्णन करना वृथा होगा। बहुत देर तक सोचते सोचते मैंने एक युक्ति निकाली। सान के नीचे एक पहिया और एक रस्सी लगा कर मैंने पैर के बल से सान चलाने की व्यवस्था की। मेरे पास जितने हथियार थे, सब पर मैंने दो दिन में सान चढ़ा दी।

मैंने देखा कि मेरे खाने-पीने की चीज़ें बहुत कम रह गई हैं, तब मैं प्रतिदिन एक बिस्कुट खाकर ही दिन काटने लगा। इससे मन में बड़ी चिन्ता हुई।

भग्न जहाज़ का पुनर्दर्शन

पहली मई—सवेरे उठ कर मैंने ज्यों ही समुद्र की ओर देखा त्यों हीं भाटे में एक जगह पीपे के सदृश कोई वस्तु देख पड़ी। मैंने कुतूहलवश पास जाकर देखा तो एक बारूद का पीपा था और टूटे जहाज़ के दो तीन टुकड़े थे। बारूद में पानी पड़ने से वह पत्थर की तरह सख़्त होगई थी। तो भी मैं बारूद के पीपे को लुढ़का कर ज़मीन पर ले आया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक जहाज़ पानी से कुछ ऊपर उठ आया हो। मैं बालू पर होकर जहाज़ की ओर अग्रसर हुआ।

समीप में जाकर देखा तो जहाज़ का पिछला हिस्सा बालू को ठेल कर कुछ ऊपर चढ़ आया था। जहाज़ तक जाने में मुझे पाव मील रास्ता पानी में तय करना पड़ा। अभी भाटे का समय था, अतएव मैं नीचे ही की राह से जहाज़ तक गया। जहाज़ को देख कर मैं पहले बहुत अचम्भे में आगया। फिर

मैंने समझा कि यह भूकम्प का ही काम है। भूकम्प के कारण जहाज़ और भी टूट फाट गया था। इससे उसकी कितनी ही वस्तुएँ ज्वार के समय उपला उपला कर किनारे आने लगीं।

इस नूतन घटना ने मेरे रहने के लिए जगह चुनने का संकल्प एक रूप से भुला दिया। अब मैं इस फ़िक्र में लगा कि जहाज़ के भीतर किसी तरह घुस सकता हूँ या नहीं। जहाज़ के भीतर बालू भर गई थी, इससे भीतर घुसने की आशा एक तरह क्षीण सी होगई थी, किन्तु मैंने हताश न होकर एक युक्ति सोची। युक्ति यही कि यदि जहाज़ के भीतर न जा सकूँगा तो उसके टुकड़े टुकड़े करके ऊपर ले जाऊँगा। कारण यह कि मुझे जो कुछ भी मिल जाता था वही कभी न कभी मेरे किसी न किसी काम में आ जाता था।

मैंने कुल्हाड़ी से एक डेक की कड़ी को काट डाला और उस पर से, जहाँ तक हो सका, बालू को निकाल फेंका। किन्तु ज्वार आते देख मुझे इस काम से निवृत्त होना पड़ा।

४ मई—मैं मछली पकड़ने गया, किन्तु खाने योग्य एक भी मछली न पकड़ सका। जब मैं मछली का शिकार ख़तम कर चलने पर हुआ तब मैंने एक छोटी सी डौलफ़िन (एक प्रकार की सामुद्रिक मछली) पकड़ी। मैंने सूत की रस्सी से डोरा निकाल कर मछली पकड़ने की तग्गी बना ली थी, किन्तु मेरे पास बनसी न थी। तो भी मैं अपने खाने भर को यथेष्ट मछली पकड़ लेता था। मैं मछलियों को धूप में सुखा कर रख छोड़ता था और सूखी मछलियाँ ही खाता था।

पाँचवीं मई से पन्द्रहवीं जून तक—खाने और सोने आदि का आवश्यक समय छोड़ कर जो समय बचता था

उसे मैं भग्न जहाज़ के लूटने ही में लगाता था। लकड़ी का तख़्ता, लोहा, सीसा आदि जो कुछ पाता था ले आता था।

सोलहवीं जून—मुझे समुद्र के किनारे एक कछुआ मिला।

सत्तरहवीं जून—मैंने कछुए को पकाया; उसके पेट में ६० अंडे थे। जब से यहाँ आया तब से लगातार बकरों और चिड़ियों का मांस खाते खाते जी ऊब गया था। आज कछुए का मांस बड़ा स्वादिष्ठ जान पड़ा। मानो ऐसा स्वादिष्ठ पदार्थ आज तक मैंने जीवन भर में कभी न खाया था।

क्रूसो की बीमारी

अट्ठारहवीं जून से चौबीसवीं जून तक—दिन भर पानी बरसता रहा, इस कारण मैं घर से बाहर न निकल सका। कुछ कुछ जाड़ा भी मालूम होने लगा। धीरे धीरे सारा शरीर काँपने लगा। मैं रात भर बेचैन पड़ा रहा। सिरदर्द के साथ साथ बुख़ार चढ़ आया। क्रमशः बेचैनी बढ़ने लगी। इस मानवशून्य टापू में अकेला मैं, बीमारी के भय से ही, अधमरा सा हो गया। हल बन्दर के तूफ़ान के बाद आज मैंने फिर परमेश्वर से प्राणरक्षा के लिए प्रार्थना की। पर मैंने उन से क्या क्या कहा, यह मुझे स्मरण नहीं। उस समय मेरा मन ऐसी घबराहट में था कि मैं एकदम हतज्ञान सा हो रहा था। मेरी बुद्धि ठिकाने न थी। दो एक दिन कुछ अच्छी हालत रही, फिर दो एक दिन बहुत ख़राब मालूम होने लगी। सिर के दर्द से मैं और भी अधिक कष्ट पा रहा था।

पच्चीसवीं जून—आज बड़े वेग से ज्वर चढ़ आया। पहले खूब जाड़ा लगा, इसके बाद दाह हुआ, और अन्त में पसीना आया। सात घंटे तक ज्वर रहा।

छब्बीसवीं जून—आज तबीअत कुछ अच्छी थी, पर कमज़ोरी बहुत थी। घर में कुछ खाने को न था, क्या करता? बन्दूक़ लेकर बाहर निकला। एक बकरी को मार कर बड़े कष्ट से उसे उठा कर घर लाया। थोड़ा सा मांस भून कर खाया। इस समय यदि मांस का यूष बना कर पीता तो अच्छा होता; परन्तु मेरे पास शोरबा बनाने के लिए कोई बर्तन न था, कैसे राँधता?

२७ जून—आज फिर खूब ज़ोर से बुख़ार हो आया। दिन भर बिछौने पर भूखा पड़ा रहा। प्यास से छाती फटी जाती थी किन्तु उस समय इतनी शक्ति न थी कि उठ कर पीने के लिए पानी ले सकूँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करने लगा। मेरा दिमाग़ ख़ाली मालूम होता था। जब न भी ख़ाली जान पड़ता था तब भी मैं ठीक न कर सकता था कि क्या कह कर ईश्वर का भजन करूँ। मैं सिर्फ़ बार बार यही कहने लगा, "प्रभो, एक बार मेरी ओर देखो, मुझ पर दया करो। मेरी रक्षा करो।" दो तीन घंटे बाद ज्वर का वेग कुछ कम पड़ने पर मैं सो गया। रात ज़्यादा बीतने पर नींद टूटी।

नींद टूटने पर मैंने अपने को बहुत स्वस्थ पाया। किन्तु कमज़ोरी बहुत थी। प्यास के मारे कण्ठ सूख रहा था। घर में पानी न था। प्यास को रोक कर फिर सोने की चेष्टा करते करते कुछ देर में सो रहा। मैंने सपना देखा कि मैं अपने घेरे के बाहर भूकम्प के दिन जहाँ बैठा था वहीं बैठा

हूँ। इतने में देखा कि एक मनुष्य काले बादल के भीतर से निकल कर आग के रथ पर चढ़ा हुआ नीचे की ओर आ रहा है। उस मनुष्य का शरीर भी तेजो-मय था। ऐसा देदीप्यमान कि मैं उस ओर देख नहीं सकता था। उस व्यक्ति का मुँह और भौंहें बहुत टेढ़ी थीं। रूप अत्यन्त भयङ्कर था। उसके धरती पर पैर रखते ही खूब ज़ोर से भूकम्प होने लगा और आकाश से तारे टूट टूट कर गिरने लगे। वह भयानक रूप-धारी व्यक्ति धरती पर उतरते ही मेरी ओर अग्रसर होने लगा। उसके हाथ में एक अग्निमय जलता हुआ त्रिशूल था। वह मेरी ओर शूल उठा कर वज्रस्वर से बोला—"अरे पापिष्ठ! क्या इतने पर भी तेरे मन में अनुताप न हुआ। तो अब तू मर।" यह कह कर वह शूल लेकर मुझको मारने पर उद्यत हुआ।

उस समय मेरे मन में जैसा डर हुआ था उसे मैं इस समय किसी तरह कह कर समझाने मे अक्षम हूँ। निद्रित अवस्था में जो मुझे भय हुआ था वह तो हुआ ही था, जागने पर भी घंटों तक कलेजा धड़कता रहा। उसकी वह भयङ्कर मूर्ति और वह वज्रस्वर अब भी जी से नहीं भूलता।

मैं यथार्थ में अभागा हूँ। क्योंकि ईश्वर के सम्बन्ध में मेरा कोई ज्ञान न था। मैंने अपने पिता से जो कुछ शिक्षा पाई थी वह, इतने दिन कुसंगति में पड़े रहने से, एकदम लुप्त हो गई थी। सम्पत्ति में ईश्वर से डरना, विपत्ति के समय उन्हीं के ऊपर निर्भर होकर रहना, और विपदा से मुक्त होने पर हृदय से उनका कृतज्ञ होना मैंने नहीं सीखा। इतने दिन जो भाँति भाँति के क्लेश सह रहा हूँ, वह मेरे ही पाप का फल है या

ईश्वर का दिया दण्ड है—यह मैं कभी न समझता था। पिता की आज्ञा के विरुद्ध आचरण कर के मैं पशु की भाँति सब कष्टों को सहता गया। जब मैंने विपत्ति से छुटकारा पाया तब भी मेरे मन में कृतज्ञता का भाव उदित न हुआ।

बीच बीच में बिजली की चमक की तरह हृदय में एक अनिर्वचनीय आनन्द की झलक आ जाती थी, पर वह स्थिर न रहती थी। उस आनन्द को स्थायी करने की चेष्टा करने से कदाचित् प्रेमानन्द प्राप्त हो सकता। भयङ्कर विपत्ति में जब आशा का क्षीण प्रकाश उदित होता है तब उसे ईश्वर की करुणा समझ कर हृदय में धारणा करते नहीं बनता। इस तरह का विचार कभी मेरे मस्तिष्क में आता ही न था।

किन्तु इस समय मैं, असहाय अवस्था में, ज्वर से पीड़ित हो कर सामने मृत्यु की विभीषिका देखने लगा। ज्वर की पीड़ा से शरीर दुर्बल, निस्तेज और निःशक्त हो गया। तब इतने दिनों की निद्रित-प्राय धर्म्म-बुद्धि और विवेक कुछ कुछ जाग्रत होने लगा। ज्वर को यातना और विवेक की ताड़ना से मैं उसी अज्ञान दशा में ईश्वर की उपासना करने लगा। मैंने ईश्वर से क्या प्रार्थना की, उनसे क्या माँगा, यह स्मरण नहीं। याद केवल इतना ही है कि अश्रु से बिछौना और तकिया भीग गया था। इतनी देर में सुध आई कि पिता ने कहा था—"बाप की बात टालने से भगवान् अप्रसन्न होंगे और तुम्हारा अकल्याण होगा।" आज मैं इस वाक्य की सच्चाई का अनुभव करने लगा। मैंने खूब ज़ोर से चिल्ला कर कहा—"भगवन्! इस सङ्कट में तुम मेरी रक्षा करो।" ईश्वर से यही मेरी पहली प्रार्थना थी।

२८ जून—सोने से कुछ आराम पा कर मैं जाग उठा। ज्वर उतर चुका था। स्वप्न में जो भयङ्कर दृश्य देखा था वह जागने पर भी आँखों के सामने मानो नाच रहा था। यद्यपि स्वप्न का प्रभाव तब भी मेरे मन में पूर्ण-रूप से विद्यमान था तथापि यह जान कर कुछ धैर्य हुआ कि ज्वर आने की पारी कल होगी। आज जहाँ तक हो सके कल के लिए सब चीज़ों का बन्दोबस्त कर लेना चाहिए। सबसे पहले एक बड़ी चौपहलू बोतल में पानी भर कर सिरहाने के समीप टेबल पर रख दिया और पानी का विकार दूर करने के लिए उस बोतल में थोड़ी सी शराब डाल दी। इसके बाद बकरे का मांस पकाया, पर अरुचि के कारण कुछ खा न सका। मैं धीरे धीरे टहलने लगा। किन्तु शरीर अत्यन्त दुर्बल था और मन चिन्ता के बोझ से दबा हुआ था। कल फिर ज्वर को यातना भोगनी पड़ेगी, इस भावना से चित्त अत्यन्त दुखी था। रात में कछुए के तीन अंडों को पका कर खाया। मैंने अपने जीवन में आज ही पहले पहल भगवान् को निवेदन कर के भोजन किया।

मैंने ज़रा बाहर घूमने की चेष्टा की। परन्तु दौर्बल्य इतना था कि मैं बन्दूक़ न उठा सका। बिना बन्दूक़ लिये मैं कभी बाहर टहलने नहीं जाता। इससे निरस्त हो कर कुछ दूर आगे जा धरती पर बैठ रहा। देखा, सामने अनन्त उदार नीला समुद्र है, माथे के ऊपर अनन्त नील आकाश है, इन दोनों के बीच मैं एक क्षुद्रतम जीव हूँ। तब मेरे जी में यह भावना होने लगी कि यह जो विशाल समुद्र-मेखला पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है, ये जो कितने ही देश भिन्न भिन्न प्रकार के दिखाई देते हैं, ये सब क्या हैं? इन की उत्पत्ति कहाँ से कैसे

हुई? अथवा ये जो भाँति भाँति के स्थावर, जङ्गम, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि देख पड़ते हैं, यही क्या है? हम लोग पहले क्या थे? कहाँ से किस तरह आये? वह कौन सी गुप्तशक्ति है जो इन विचित्र पदार्थों की रचना कर के एक अद्भुत कला दिखला रही है? मैंने मन ही मन सोचते सोचते यह निश्चय किया कि वह शक्ति ही परमेश्वर है, वही संसार का कर्ता हर्ता सब कुछ है। उसीके इशारे पर, उसीके भृकुटि-विलास पर संसार के सभी काम हो रहे हैं।

यह विचार-परम्परा उत्तरोत्तर मेरे मन में अपना घर बनाने लगी। मैं चिन्ता से व्याकुल हो उठा और दीवार के सहारे धीरे धीरे अपने घर की ओर चला। घर के भीतर आ कर मैं बिछौने पर लेट रहा। तब भी मुझे नींद न आई। मैं कुरसी पर बैठ कर सोचने लगा, कल फिर बुख़ार चढ़ेगा। जी में अत्यन्त डर लगा। एकाएक मुझे यह बात याद हो आई कि ब्रेज़िल के लोग किसी औषध का सेवन नहीं करते। सभी रोगों में उनका एकमात्र औषध है तम्बाकू। मेरे साथ भी थोड़े से तम्बाकू के पत्ते थे।

मैं सचमुच ही भगवान् के द्वारा प्रेरित हो कर दराज़ के पास गया। दराज़ खोलने पर मुझे देह और मन का औषध एक ही साथ मिला। दराज़ से तम्बाकू और एक धर्मशास्त्र (बाइबिल) का ग्रन्थ ले कर मैं टेबल पर, जहाँ चिराग़ रक्खा था, आया। तम्बाकू से ज्वर की चिकित्सा किस तरह की जाती है, यह मैं न जानता था। और तम्बाकू की इस आसुरी चिकित्सा से मेरे ज्वर में फ़ायदा होगा या नुक़सान, इसका भी मैं कुछ निर्णय न कर सका। तो भी मैंने अनेक उपायों से तम्बाकू सेवन करने का संकल्प किया। कैसा ही

कोई औषध क्यों न हो वह बीमारी में कुछ न कुछ फ़ायदा कर सकता है। मैं पहले थोड़ी सी तम्बाकू लेकर चबाने लगा। तम्बाकू खाने की मुझे आदत न थी, इससे थोड़ी ही देर में सिर घूमने लगा। इसके बाद मैंने थोड़ी सी पत्ती को शराब में भिगो कर रक्खा। यह इसलिए कि उसे सोने के समय पीऊँगा। आख़िर मैंने एक मलसे (मिट्टी के बर्तन) में तम्बाकू रख कर आग पर रख दी। तम्बाकू जलने पर उसका धुआँ ऊपर की ओर उठने लगा। मैं उस धुएँ का गन्ध ग्रहण करने लगा। किन्तु मैं आग का उत्ताप और उस धुएँ का उत्कट गन्ध सहन न कर सका।

इसके बाद मैंने पढ़ने की इच्छा से बाइबिल हाथ में ली, परन्तु मेरा सिर इस क़दर घूम रहा था कि पढ़ न सका। पोथी खोलते ही जिस जगह दृष्टि पड़ी वहाँ लिखा हुआ था—संकट में मेरी शरण गहो, मैं तुमको संकट से उबारूँगा और तुम मेरी महिमा का कीर्तन करोगे।

यह बात मेरे जी में बहुत ठीक जँची। यह मेरे मन में एक तरह से अङ्कित होगई, किन्तु "उबारूँगा" शब्द का ठीक अर्थ उस समय मेरी समझ में न आया। अपना उद्धार होना मुझे इतना असंभव मालूम होता था कि मेरे अविश्वासी मन में यों प्रश्न उठने लगा—क्या ईश्वर यहाँ से मेरा उद्धार कर सकेंगे? यद्यपि बहुत दिनों से उद्धार होने की कोई संभावना देख नहीं पड़ती थी तथापि आज से मेरे मन में इस वाक्य पर कुछ कुछ भरोसा होने लगा।

तम्बाकू का नशा मेरे मस्तिष्क पर अपना पूर्ण अधिकार जमाने लगा। मेरी आँखें झपने लगीं। सोने के पहले मैंने

धरती में घुटने टेक कर भगवान् से प्रार्थना की। अपने जीवन में भक्ति-पूर्वक आज ही मैंने ईश्वर से क्षमा माँगी। ईश्वराराधन के बाद तम्बाकू से मिली हुई शराब को मुँह में डाला। वह ऐसी कड़वी और तेज़ थी कि घोटी नहीं जाती थी। किसी किसी तरह घोट कर सो रहा। पीछे रात में कहीं कोई आवश्यकता हो, इस कारण चिराग़ को न बुझाया। उसे जलता ही रहने दिया।

तम्बाकू का नशा धीरे धीरे मेरे सर्वाङ्ग में फैल गया। मैं शीघ्र ही गाढ़ी नींद में सो गया। जब मेरी नींद टूटी तब तीन बजने का समय था। मालूम होता है, दो दिन दो रात तक बराबर सोकर आज तीसरे दिन तीसरे पहर मेरी नींद खुली। कारण यह कि कई वर्ष बाद मैंने देखा कि तारीख़ की गणना में एक दिन न मालूम कैसे घट गया था। सोचते सोचते मैंने इस बात का पता लगाया कि तम्बाकू के नशे में सारी रात सोकर दूसरे दिन भी मैं दिन-रात सोता ही रहा और तीसरे दिन तीसरे पहर में मेरी आँख खुली। बेहोशी के कारण यह बात उस समय मेरी समझ में न आई। तीसरे दिन को मैं दूसरा दिन समझ बैठा। इसीसे तारीख़ में एक दिन की कमी होगई।

जो हो, जब मैं जाग उठा तब शरीर हलका मालूम होने लगा और मन भी बहुत प्रसन्न और फुरतीला था। मैं उठकर खड़ा हुआ तो देखा कि पूर्व दिन की अपेक्षा शरीर में कुछ ताक़त मालूम हुई और भूख भी। इसके दूसरे दिन भी ज्वर न हुआ बल्कि तबीअत बहुत अच्छी थी। आज २९ वीं तारीख़ है।

तीसवीं जून—आज बुख़ार के आने का दिन न था। मैं बन्दूक़ लेकर बाहर गया, पर बहुत दूर न जा सका। मैं हंस

की किस्म के दो जल-पक्षियों को मार कर घर लौट आया। किन्तु उनके खाने की इच्छा न हुई। कछुए का अण्डा खाया। खाने में बहुत अच्छा लगा। आज भी सोने के समय तम्बाकू मिली थोड़ी सी शराब पी ली। तो भी दूसरे दिन कुछ जाड़ा मालूम हुआ। पर ज्वर का वेग प्रबल न था। आज पहली जुलाई थी।

दूसरी जुलाई—आज तम्बाकू का त्रिविध प्रक्रिया से अर्थात् चूर्ण, धूम और काढ़ा बना कर सेवन किया।

ज्वर एकबारगी जाता रहा। किन्तु पूर्ववत् बल प्राप्त करने में कई सप्ताह लगे। मेरे मन में हमेशा ही इस बात का स्मरण बना रहने लगा, "मैं तुम्हारा उद्धार करूँगा।" मैं इस विपत्ति से उद्धार पाने की चिन्ता से ऐसा व्याकुल हो उठता था कि पहले की कई बार की विपदाओं से उद्धार पाने की बात एकदम भूल जाता था। किन्तु कुछ ही देर में चैतन्य होने पर मेरा चित्त कृतज्ञता से फूल उठता था। आज हाथ जोड़ कर और घुटने टेक कर भगवान् को, रोग मुक्ति के लिए, मैंने धन्यवाद दिया।

मैं अब सुबह और शाम दोनों वक्त बाइबिल पढ़ने लगा और अपने व्यतीत जीवन की अधार्मिकता पर अत्यन्त व्यथित और लज्जित होने लगा। मैं स्वप्न की बात स्मरण कर के भगवान् से क्षमा की भिक्षा माँगता, अपने पाप पर बार बार अनुताप करता और एकाग्र मन से ईश्वर का ध्यान करता था। मनुष्य-जीवन की सार्थकता के लिए यही मेरी प्रथम उपासना थी, भगवद्-वाक्य में यही मेरा प्रथम विश्वास था। भगवान् मेरी प्रार्थना सुनेंगे, इस आशा का आरम्भ इसी समय से मेरे मन में हुआ।

उद्धार का नवीन अर्थ आज मेरे हृदय में प्रतिभासित हुआ। पाप के पंजे से, मन के मोहरूपी कारागार से, स्वार्थ-परता के एकावलम्बन से उद्धार पाना ही यथार्थ उद्धार है। मैं समझ गया कि इस द्वीप से उद्धार होने की अपेक्षा अन्यान्य दैहिक और मानसिक अवस्थाओं से पहले मेरा उद्धार होना आवश्यक है। इस जनशून्य द्वीप से छुटकारा पाने का उद्वेग दूर हुआ। इसके लिए मैंने फिर ईश्वर से कभी प्रार्थना भी नहीं की।

इस समय मेरी जीवनयात्रा कष्टकर होने पर भी मेरा चित्त शान्त भाव से सन्तुष्ट था। मैंने जो हृदय में शान्ति पाई थी उसका पहले कभी अनुभव तक न हुआ था। मैं धीरे धीरे बलिष्ठ होकर फिर यथासाध्य घर का काम धन्धा करने लगा।

मैंने जिस उपचार के द्वारा ज्वर में चिकित्सा की थी उसीसे मेरा ज्वर जाता रहा या आप ही निवृत्त हुआ, यह मैं नहीं जानता। किन्तु इस प्रक्रिया से मेरा शरीर अत्यन्त दुर्बल हो गया था और बीच बीच में नाड़ी और अङ्ग प्रत्यङ्ग में पीड़ा हुआ करती थी। इस ज्वर से मुझे थोड़ा सा यही ज्ञान हुआ कि बरसात में मस्तिष्क की दशा अच्छी नहीं रहती और ज्वर विशेष अस्वास्थ्यकारी होता है। शरद ऋतु की वर्षा से ग्रीष्म की वर्षा विशेष हानिकारक होती है।

द्वीप का परिदर्शन

इस निरानन्दकारी द्वीप में आये मुझे दस महीने से ऊपर हुए। मालूम होता है, इस द्वीप की सृष्टि होने से लेकर अब तक मेरे सिवा, कोई मनुष्य आज तक यहाँ न आया था। इस

समय इस टापू को एक बार अच्छी तरह देखने की इच्छा हुई।

१५ जुलाई से मैंने इस द्वीप की देख भाल करना आरम्भ किया। मैं जिस जगह खाड़ी के भीतर बेड़े से उतरा था उस खाड़ी में कछार ही कछार जाकर देखा कि उसके किनारे कहीं कहीं हरित क्षेत्र हैं। एक जगह देखा कि तम्बाकू के बड़े बड़े पेड़ बहुतायत से उगे हैं। कई एक पेड़ जंगली ऊख के भी देख पड़े। आज यहीं तक देख कर लौट आया।

दूसरे दिन और आगे बढ़ कर एक जंगल से घिरी हुई जगह पहुँचा। वहाँ पेड़ों में भाँति भाँति के परिचित और अपरिचित फले हुए फलों को देख कर मैं अत्यन्त आह्लादित हुआ। परिचित फलों में देखा कि कितने ही पक्के तरबूज़ लगे हैं और रस से परिपूर्ण अङ्गूर के गुच्छे के गुच्छे पके हुए हैं। यह विचित्र मधुमय आविष्कार देख मैं अंगूर के गुच्छे तोड़ कर खाने लगा। मैं जानता था कि अधिक अंगूर खाने से कितने ही लोगों को ज्वर हो आता है और उससे उनकी मृत्यु हो जाती है। इस भय से मैंने अधिक नहीं खाये। मैंने इन फलों का संग्रह करना चाहा, और उन्हें सुखा कर किस-मिस की तरह रखना चाहा। इन्हें सुखा कर रखने से यह लाभ सोचा कि जब अंगूरों का समय न भी रहेगा तब भी मधुर और पुष्टिकारक खाद्य की कमी न होगी।

मैंने सारा दिन वहीं बिताया। रात को भी घर लौट कर नहीं आया। इस द्वीप में प्रथम दिन जैसे पेड़ पर चढ़ कर रात बिताई थी उसी तरह आज की रात भी बिताई। सवेरे उठ कर लगातार चार मील उत्तर ओर जाकर एक पहाड़ की तल-

हट्टी में पहुँचा। वह स्थान हरियालियों और भाँति भाँति के पेड़-पौधों से ऐसा सुशोभित मालूम होता था जैसा कोई सुन्दर उद्यान हो। नारियल, नारङ्गी, काग़ज़ी और बीजपूरक नींबू के पेड़ इस अधिकता से उपजे थे कि एक उपवन सा प्रतीत होता था। किन्तु ये सब जङ्गली थे और फल भी उनमें कम ही थे। मैंने कुछ नींबू तोड़ लिये। पानी में नींबू का रस डाल कर जो शरबत बनाया वह बड़ी अच्छी ठंडाई और बल-कारक जँचा। बरसात का मौसम क़रीब आ पहुँचा। इस-लिए अभी से बरसात के लिए खाद्य-सामग्री का सञ्चय करना आवश्यक जान जहाँ तक हो सका अंगूर, नींबू आदि फल तोड़ लिये। दूसरी बेर थैली लाकर और उन्हें उसमें भर कर घर ले आने का विचार किया। तीन दिन बाद मैं घर को लौट आया। अभी मैंने तम्बू को ही घर बना रक्खा था।

घर आते आते जो अंगूर खूब पके थे वे आप ही आप फट गये और उनका रस बह गया। नींबू ठीक थे। किन्तु बहुत तो ला नहीं सका था।

१६ वीं तारीख़ को दो छोटी थैलियाँ लेकर मैं फल बटोरने के लिए फिर बाहर हुआ। कल जिन पेड़ों में गुच्छे के गुच्छे फल लदे थे, आज उनमें अधिकांश कटे फटे और खाये हुए तथा नीचे गिरे पड़े थे। यह देख कर मैंने समझा कि किसी जङ्गली जानवर ने इन फलों की ऐसी दुर्दशा कर डाली है। किन्तु उस जन्तु का मैं ठीक ठीक पता न लगा सका। जो हो, जितने फल थे वेही मुझ अकेले के लिए काफ़ी थे। जितने मुझ से बने उतने नींबू ले लिये। किन्तु अंगूर मारे रस के फटे जा रहे थे। वे थैली में भर कर ले जाने योग्य न थे।

यह समझ कर मैंने अंगूर की डाल को झुका देना ही अच्छा समझा। इससे अंगूरों के दब जाने का भय न था और दूसरा फ़ायदा यह कि वे धूप में सूख भी जायँगे।

घर लौट कर मैं उस रमणीय स्थान के विचित्र फलों की बात सोचने लगा। मैं ही यहाँ का निष्कण्टक एकाधिप हूं, इस सम्पूर्ण द्वीप पर मेरा ही एकाधिपत्य है। अब मेरे मन में यह ख़याल पैदा हुआ कि मैंने जहाँ घर बनाया है वह जगह इस द्वीप में सब स्थानों की अपेक्षा निरानन्दकर है। उस प्राकृतिक उद्यान में यदि कहीं एक निरापद स्थान मिल जाय तो वहीं रहने लगूँगा। यह मैंने अपने मन में स्थिर किया।

उस प्राकृतिक उपवन में घर बनाने की लालसा बहुत दिनों तक मेरे मन में रही। किन्तु आगे-पीछे की बातें सोच कर उस लालसा को मन से हटा दिया। मैंने फिर यह बात सोची कि समुद्र के तट में हूँ। कदाचित् कोई सुयोग यहाँ से जाने का मिल भी सकता है। जो अभाग्य मुझ अकेले को खींच कर यहाँ ले आया वह किसी दिन मेरे सदृश किसी दूसरे हतभाग्य को भी ला कर मेरे पास पहुँचा सकता है। यहाँ रहने से यह घटना कदाचित् हो भी सकती है, किन्तु समुद्रतट से दूर पहाड़ में या जङ्गल में आश्रय लेने से उद्धार की आशा एकदम छोड़ ही देनी होगी। जिस किसी अभिप्राय से क्यों न हो, वह स्थान मुझे इतना पसन्द था कि जुलाई तक का मेरा समय वहीं कट गया। मैंने वहाँ एक कुञ्जभवन बना कर चारों ओर से उसे अच्छी तरह घेर दिया। ऊँचे ऊँचे खम्भों से घेरे को ख़ूब मज़बूत कर दिया। यहाँ भी उसी तरह सीढ़ी से हो कर जाने-आने की व्यवस्था की।

बिल्ली तीन बच्चों को साथ लेकर आगई। उसे देख कर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ — पृ० ९७।

यहाँ कभी कभी लगातार तीन चार रातें बड़े मज़े में कट जाती थीं। यह मेरे दिल बहलाने की जगह हुई और वह रहने की।

यह सब करते धरते अगस्त का महीना आ पहुँचा और पानी बरसना शुरू हुआ। यद्यपि तम्बू खड़ा कर के उसमें रहने का सब सामान ठीक कर लिया था, तथापि वहाँ झड़ी से बचने के लिए कोई पर्वत की ओट न थी। अगस्त से ले कर कुछ दिन अक्तूबर तक इस तरह वर्षा हुई कि घर से बाहर निकलना मेरे लिए कठिन हो गया। वर्षा आरम्भ होने के पहले अंगूर के कोई दो सौ गुच्छे सुखा कर मैंने रख लिये थे।

कुछ दिन से मेरी बिल्ली कहाँ चली गई थी। उसका कुछ पता न था। मैंने समझा, शायद वह मर गई। वर्षा आरम्भ होते ही देखा कि वह तीन बच्चों को साथ ले कर आ गई। उसे देख कर मुझे बड़ा अचम्भा हुआ। किन्तु उस दिन से मैं बिल्लियों के उपद्रव से हैरान हो गया। झुण्ड की झुण्ड बिल्लियाँ आने लगीं। तब मैं उनको भगाने की फ़िक्र में लगा। आख़िर जब मैं उन्हें यों न भगा सका तब गोली मारना शुरू किया।

बरसात के पानी में भींगने के भय से मैं बाहर न जाता था। इधर खाद्य-सामग्री भी समाप्त हो चली। मैं सुयोग पा कर दो दिन बाहर निकला। एक दिन एक बकरा और दूसरे दिन एक कछुआ शिकार में मिला। कछुआ खाने में बड़ा स्वादिष्ठ था। आज कल मेरे खाने का यह नियम था कि सवेरे सूखे अंगूरों का एक गुच्छा, दोपहर को बकरे या कछुए का भुना हुआ मांस और रात को कछुए के दो तीन

अंडे खाता था। मेरे पास ऐसा कोई बर्तन न था जिसमें मांस को पका कर शोरवा बनाता।

वर्षा बन्द होने पर मैं गुफा को खोद कर पार्श्व की ओर बढ़ाने लगा। उससे मेरे घेरे के बग़ल में जाने-आने का एक दर्वाज़ा सा बन गया। किन्तु यह द्वार ठीक नहीं जान पड़ा। मैं पहले घेरे के भीतर जैसा निश्चिन्त होकर रहता था वैसा अब न रह सकता था। यद्यपि इस द्वीप में सब से बड़ा जानवर जो देखने में आया वह बकरा ही था तो भी किसी के अतर्कित आक्रमण की आशङ्का बनी रहती थी।

कृषि-कर्म्म

आज ३० वीं सितम्बर है। आज इस द्वीप में आने का मेरा वार्षिक दिन है। लकड़ी के तख़्ते पर तारीख़ के चिह्नों को गिन कर देखा, यहाँ आये ३६५ दिन हो गये। आज के दिन मैंने उपवास किया। दिन भर भूखा रह कर मैंने बड़े विनीत भाव से केवल परमेश्वर का भजन किया। सूर्यास्त होने पर एक बिस्कुट और थोड़े से सूखे अंगूर खाकर पारण किया। इसके पहले, धर्म क्या चीज़ है इसे कुछ न समझ कर, मैं पर्व के दिन भी परमेश्वर का नाम न लेता था। इस समय मैंने अपनी काष्ठ-पञ्जी (पत्रा) की दिन-संख्या के चिह्न के सात सात विभाग करके रविवार का निर्णय करलिया। पीछे से मुझे मालूम हुआ कि गिनती में एक दिन किसी तरह कम हो गया है। मेरे पास स्याही बहुत कम रह गई थी, इसलिए जीवन की विशेष घटना को छोड़ और दैनिक समाचार नहीं लिख सकता था।

पहले लिखा जा चुका है कि मेरे घर के पास कुछ जौ और धान के पौधे उपजे थे। उनमें से मैंने तीस बालें धान की और बीस जौ की, बीज बोने के लिए, रख छोड़ी थीं। बरसात के बाद मैंने सोचा कि बीज बोने का यही उपयुक्त समय है। मैंने अपने काठ के कुदाल से ज़मीन खोद कर उसे दो हिस्सों में बाँटा। बीज बोते समय इस बात पर ध्यान गया कि "ज़मीन की पहचान और फ़सल बोने का समय मैं ठीक ठीक नहीं जानता, अतएव एक ही बार सब बीजों को बो देना बुद्धिमानी न होगी।" यह सोच कर मैंने एक एक मुट्ठी बीज दोनों में से रख कर बाक़ी बो दिया। मैंने यह बड़ी अक़्लमन्दी का काम किया, क्योंकि बरसात बीत जाने पर वृष्टि के अभाव से एक भी बीज अङ्कुरित न हुआ। किन्तु दूसरे साल वही बीज, वर्षा का पानी पाकर, सब के सब उग आये जैसे नया बीज बोया गया हो। परन्तु उस समय बीज को निष्फल होते देख मैं खेती के उपयुक्त ज़मीन ढूँढ़ने लगा। मेरे कुञ्जभवन के पास एक ज़मीन का टुकड़ा था। उसे मैंने खेत के लायक़ पसन्द कर के जोत गोड़ कर आबाद किया और फ़रवरी के अन्त में बीज बोया। मार्च और अपरैल की वर्षा का पानी पाकर बड़े सुन्दर पौदे निकले और फले भी खूब। किन्तु इस दफ़े भी मैं सब बीज बोने का साहस न कर सका। इसलिए पूरे तौर से मुझे फ़सल भी न मिली। जो हो, दो बार परीक्षा करने से मुझे अभिज्ञता हो गई कि खेती का ठीक समय कब होता है। साल में दो बार बीज बोने और फ़सल तैयार करने का समय आता है।

धान के पौदे क्रमशः बढ़ने लगे। नवम्बर में आकर वर्षा रुक गई। मैं फिर अपनी विनोदवाटिका में गया। यद्यपि कई

महीनों से वहाँ नहीं गया था तथापि वहाँ जिन वस्तुओं को जैसे रख आया था उन्हें उसी रूप में पाया। कुञ्जनभवन के चारों ओर जिन पेड़ों का घेरा दिया था, वे अब अच्छी तरह लग गये हैं और उनकी डालें तथा पत्ते चारों ओर फैल गये हैं। मैंने उनके नूतन डाल-पत्तों को छाँट कर एक सा कर दिया। तीन वर्ष में वे पेड़ से झंखाड़ होकर, पचीस फुट व्यास के एक वृत्ताकार स्थान को अपनी शाखाओं से ढक कर, शोभायमान होने लगे। उन्होंने एक ऐसा सुन्दर छायाशीतल कुञ्जवितान निर्माण किया कि उसकी शोभा बरनी नहीं जाती। यह देख कर मेरे मन में यह इच्छा हुई कि अपने निवास-स्थान के सामने अर्ध वृत्ताकार में इन पेड़ों का एक घेरा बनाऊँ। पहले के घेरे से आठ फुट के अन्तर पर इन पेड़ों को मैंने पंक्तिबद्ध रोप दिया। पेड़ शीघ्र ही लग गये और पल्लवित होकर प्रथम तो घर के आच्छादक और दूसरे रक्षा के कारण हो उठे।

यहाँ विलायत की तरह ठण्ड और गरमी नहीं पड़ती थी। यहाँ साल में दो मौसम, एक वर्षा और दूसरा वसन्त अर्थात् जाड़े और गरमी का मध्य समय होता था। वर्षा का दार-मदार हवा पर था। जब मौसमी हवा चलती थी तब बीच बीच में भी पानी बरस जाता था। वर्षा में भीग कर मैं एक बार बीमारी से बहुत कष्ट भोग चुका था, इस कारण अब की वर्षा में यथासंभव घर ही में रहता था। इस अवकाश के समय टोकरी बुनने के लिए मैंने बहुत चेष्टा की किन्तु इसके लिए उपयुक्त समग्री न मिलती थी। मैंने सोचा कि जिन पेड़ों से मैंने घर का घेरा बनाया है उनकी पतली डाल से टोकरी बन सकती है। इसलिए दूसरे दिन कुञ्जभवन में जाकर कुछ

पतली डालें काट कर कोशिश की तो मालूम हुआ कि टोकरी बढ़िया बन सकती है। उसके दूसरे दिन कुल्हाड़ी लेकर गया और एक बोझ डालें काट कर सूखने के लिए घेरे के भीतर रख दीं। जब वे डालें मुरझा कर काम लायक़ हो गईं तब उन्हें अपने घर पर ले गया। मैंने देश में अपने घर में टोकरी बनाने वालों को टोकरी बुनते देखा था और कुछ कुछ सीखा भी था। इस समय वह विद्या काम आ गई। मैंने छोटे बड़े कितने ही टोकरे बना डाले। यद्यपि वे खूबसूरत नहीं बने तथापि घर के काम चलाने लायक़ तो हो गये। अपनी फ़सल रखने के लिए कितने ही टोकरों को खूब गहरा बनाया। मैं गरमी के दिनों में बैठ कर अधिकतर टोकरी ही बुनता रहा।

अब भी दो तीन प्रधान वस्तुओं की कमी बनी रही। एक तो कुछ बोतलों के सिवा पतली चीज़ रखने को कोई बर्तन न था और न कोई रसोई बनाने ही का पात्र था। दूसरे तम्बाकू पीने का नल भी न था।

द्वीप का पुनर्दर्शन

मैं पहले कह आया हूँ कि समस्त द्वीप देखने की मेरी इच्छा थी। मेरे कुञ्जभवन के पास ही समुद्र था। मैं उसी ओर समुद्र के किनारे किनारे घूमने की इच्छा से बन्दूक़, कुल्हाड़ी, कुत्ते, यथेष्ट गोली-बारूद, दो डिब्बे बिस्कुट और एक बड़ी थैली में सूखे अंगूर लेकर रवाना हुआ। समुद्रतट पर जाकर पहले पश्चिम ओर की स्थल-भूमि देखी। किन्तु कुछ निश्चय नहीं कर सका कि वह किस द्वीप या महादेश

का किनारा है। अनुमान किया, वह किनारा पन्द्रह-बीस मील से दूर न होगा। मैंने यही मान लिया कि यह अमेरिका ही का कोई अंश होगा और वहाँ असभ्य लोग रहते होंगे। अहा! यदि मैं वहाँ किसी तरह पहुँच सकता तो विधाता का सदय विधान जान कर हृदय से कृतज्ञ होता।

फिर मैंने यह। सोचा कि यदि वह स्पेन का राज्य होगा तो एक न एक दिन कोई जहाज़ इस रास्ते से जाते आते ज़रूर दिखाई देगा। यदि ऐसा न होगा तो निश्चय कर लूँगा कि यह असभ्य लोगों का मुल्क है और वे असभ्य कुछ ऐसे वैसे न होंगे, वे ज़रूर नरखादक राक्षस होंगे।

इन बातों को सोचते-विचारते मैं धीरे धीरे आगे बढ़ा। मैंने जिस ओर अपने रहने के लिए घर बनाया था उस ओर से इस तरफ़ का समुद्रतट अधिक रमणीय मालूम होने लगा। खूब लम्बा-चौड़ा मैदान हरियाली, भाँति भाँति के फूल और तरु-लताओं से शोभायमान था। झुण्ड के झुण्ड हरे रँग के सुग्गे इधर से उधर आकाश को सब्ज़ करते हुए उड़े क्या जा रहे थे मानो आकाश में कोमल घास के खेत बहे जाते हों। यदि मैं एक सुग्गे को पकड़ सकता तो उसे पालता और पढ़ना सिखाता। बड़ी युक्ति से मैंने एक दिन एक तोते के बच्चे को लाठी की झपट मार कर नीचे गिराया। उसे पकड़ कर मैं घर पर लाया और यत्नपूर्वक पढ़ाने लगा। किन्तु बहुत दिनों बाद उसका कण्ठ खुला। आख़िर उसने बोलना सीखा। वह बड़ी कोमलता से मेरा नाम लेकर मुझे पुकारने लगा।

इस प्रकार भ्रमण करने से मेरा चित्त बहुत प्रसन्न हो गया था। निम्न भूमि में कहीं कहीं ख़रगोश और शृगाल के

सदृश जानवर नज़र आते थे। मैंने कई एक ख़रगोश मारे परन्तु वे ऐसे, विचित्र शकल के, थे कि उनको खाने की प्रवृत्ति न होती थी। मजबूरी हालत में पड़ कर ही लोग ऐसी वस्तु खाते हैं जो खाने के लायक़ नहीं। अब भी मुझे खाद्य पदार्थ का अभाव न था। बकरे, कबूतर और कछुए—जिन्हें मैं खूब पसन्द करता था—बहुतायत से पाये जाते थे; इसलिए अनाप शनाप चीज़ खाने की मुझे आवश्यकता न थी। मेरी अवस्था यद्यपि अत्यन्त शोचनीय थी तथापि खाद्य-वस्तुओं की कमी न थी, इस कारण मैं हृदय से ईश्वर का कृतज्ञ था।

मैं एक दिन में दो मील से अधिक रास्ता नहीं चलता था। किन्तु देश की दशा देखने के लिए मैं दिन भर इस प्रकार घूमता रहता था कि रात बिताने के अड्डे पर आते आते एकदम थक कर पड़ रहता था। पेड़ के ऊपर या ज़मीन में थोड़ी सी जगह घेर कर उसके भीतर रात बिताता था जिसमें कोई जन्तु मेरी निद्रित अवस्था में मुझ पर एकाएक आक्रमण न कर सके।

इस तरफ़ समुद्रतट पर आकर देखा, कछुए और पक्षी बहुत थे। पक्षी प्रायः सब मेरे पहचाने हुए थे। जो परिचित न भी थे उनका भी मांस बहुत स्वादिष्ठ था। तब मैंने समझा कि जिधर द्वीप का सब से ख़राब अंश था उधर ही मैंने घर बनाया है। वहाँ डेढ़ वर्ष के भीतर मुझे इने गिने तीन कछुए मिले थे।

मैं जितना चाहता उतना पक्षियों का शिकार कर सकता था। किन्तु बारूद-गोली शीघ्र चुक जाने की आशङ्का से

पक्षियों को यथेच्छ न मार सका। मैं चिड़ियों के शिकार की अपेक्षा बकरों के शिकार को ज़्यादा पसन्द करता था। कारण यह कि एक बकरे से कई दिनों का खाना मज़े में चल जाता था। मेरे घर की तरफ़ से द्वीप के इस हिस्से में बकरों की संख्या भी बहुत अधिक थी। किन्तु यह भाग द्वीप के और भागों की तरह ऊँचा नीचा न था। इधर की भूमि समतल थी। इसलिए वे मुझ को दूर से देखते ही बड़ी तेज़ी से भाग जाते थे। उनका पीछा मैं कहाँ तक कर सकता।

इधर का सामुद्रिक तट यद्यपि मुझे अधिक रमणीय जँचता था, तथापि मुझे अपने वासस्थल को उठाकर इस तरफ़ लाने की इच्छा न होती थी। ऐसे सर्वांशसम्पन्न घर को तोड़ कर नई जगह में आने को जी नहीं चाहता था। मैं इस तरफ़ सिर्फ़ घूमने ही आया था, जी मेरा अपने हाथ के बनाये हुए घर की ओर ही लगा था। समुद्र के किनारे किनारे मैंने अन्दाज़न बारह मील जाकर घर लौट आने की इच्छा की। अपने घूमने की सीमा को निर्दिष्ट रखने की इच्छा से मैंने समुद्रतट पर एक लम्बा सा खंभा गाड़ दिया। वही मेरे पश्चिम ओर के भ्रमण का अन्तिम चिह्न हुआ। मैंने निश्चय किया कि घर जाकर अब पूरब ओर की यात्रा करूँगा और उधर से घूमते घूमते जब चिह्नस्वरूप गड़े हुए खंभे तक आ जाऊँगा तब समझूँगा कि मेरी द्वीप-परिक्रमा पूरी हुई।

द्वीप का पूरा पूरा परिचय पाने के लिए मैं जिस राह से गया था उस राह से न लौटकर दूसरे रास्ते से लौटा। दो तीन मील आते न आते मैं पहाड़ की एक ऐसी तराई में पहुँचा कि जंगल से ढकी हुई राह में दिशा का निर्णय करना कठिन हो गया। मैं अपने दुर्भाग्य से तीन

चार दिन तक तराई के जंगल में मार्ग भूलकर घूमता रहा। उसकी वजह यह थी कि कई दिनों से आकाश कुहरे से बिलकुल ढका था, इसलिए सूर्य्य को देखकर दिशा के निर्णय करने का भी सुयोग न था। मैं अत्यन्त उद्विग्नतापूर्वक घूम फिर कर आख़िर फिर समुद्र-तट को ही लौट आया। यहाँ मैंने अपने चिह्न-स्वरूप खम्भे को ढूँढ़ निकाला। फिर जिस रास्ते से घूमने आया था उसी रास्ते से लौटा। तब आकाश बिलकुल साफ़ हो गया था। सूर्य्य का ताप असह्य हो उठा। बन्दूक़, कुल्हाड़ी और अन्यान्य भारी वस्तुएँ लिये रहने के कारण पसीने से तरबतर होता हुआ घर पहुँचा। मेरे अदृष्ट की बलिहारी है।

लौटते समय मेरे कुत्ते ने एक बकरी के बच्चे को पकड़ लिया। मैं झट दौड़कर गया और उसके ग्रास से उसे छुड़ा लिया। मैं दो-चार बकरों को पाल कर उनकी संख्या बढ़ाना चाहता था। यह इस लिए कि शायद गोली-बारूद घट भी गई तो मेरे खाने को कुछ टोटा न रहे। इस बकरी के बच्चे को घर ले जाकर पालूँगा, यह मैंने पहले ही सोच लिया था। अब एक गर्दानी (गले की रस्सी) बना करके उसके गले में बाँध दी और उसमें एक रस्सी बाँधकर उसे खींचते हुए किसी तरह अपने कुञ्जभवन में ले गया। मैं घर लौटने के लिए व्यग्र हो रहा था, क्योंकि घर छोड़े एक महीना हो गया था। बकरे को खींचकर घर ले जाने में विलम्ब होता, इसलिए उसे कुञ्जभवन में ही बाँध रक्खा।

बहुत दिनों के बाद घर लौट कर बिछौने पर सोने से जो आराम और सुख मिला उसका वर्णन नहीं हो सकता। चिरवियोग के बाद प्रिय-सम्मिलन का सुख और परदेशी

को स्वदेश लौटने का सुख भी इस सुख के आगे तुच्छ है। मैंने इस निरुद्देशयात्रा में जो कुछ सुख का अनुभव किया था उससे कहीं बढ़कर सुख घर आने पर मिला। इससे मैंने संकल्प किया कि अब से कभी अधिक दूर न जाऊँगा।

मैंने घर आकर एक सप्ताह विश्राम किया। इधर कई दिनों तक मैं तोते के लिए एक पींजरा बनाता रहा। एकाएक मुझे कुञ्जभवन में बँधे हुए बकरी के बच्चे की बात स्मरण हो आई। मैं उसे घर ले आने की इच्छा से रवाना हुआ। वहाँ जाकर देखा, वह मारे भूख-प्यास के अधमरा सा हो गया है। मैंने पेड़ से हरे हरे पत्ते तोड़कर उसे खिलाये। वह भूख से ऐसा व्याकुल था कि खाने के लोभ से पालतू कुत्ते की भाँति आपही मेरे पीछे पीछे आने लगा। मेरे हाथ से दाना-घास पाकर वह खूब हिल गया। मेरे साथ वह सखा का सा व्यवहार करने लगा। मैं भी उसे जी से प्यार करने लगा।

फ़सल

इस द्वीप में मेरा तीसरा साल आरम्भ हुआ। प्रथम वर्ष की तरह दूसरे साल का वृत्तान्त यद्यपि मैं सविस्तर वर्णन न[illegible] करता तो भी पाठकों ने समझ लिया होगा कि मैं [illegible]लसी बनकर बैठ न रहा था। शि[illegible]ार खेलना, घर बनाना, [illegible]-सामग्री तथा आश्रम के उपयुक्त वस्तुओं का संग्रह [illegible] [illegible] काम मुझी को करना पड़ता था। [illegible] इत्यादि सब [illegible] काम भी मेरे लिए परिश्रमसाध्य [illegible] न होने से सीधांगत था। दो आदमी जिस तने में से [illegible]मय-सापेक्ष हो जाता। तख्ते चीर कर निकाल सकते हैं [illegible] में कम से कम छः [illegible]

उसी में से मैंने बयालिस दिन में सिर्फ़ एक तख़्ता निकाला था। पाठकगण इसी से मेरे काम की शृंखला और दौर्भाग्य की बात समझ जायँगे।

मैं इस द्वीप में उतरने की तिथि ३० वीं सितम्बर को बराबर, पर्व दिन की भाँति पवित्र मानकर, उत्सव मनाता था। ईश्वर ने इस जनशून्य द्वीप में, मेरी इस असहाय अवस्था में, जो कुछ सुख की सामग्री दे रक्खी है वह इतने दिन तक कभी स्वजन-समाज में प्राप्त न हुई थी। इस कारण उनके चरण-कमलों में मेरा चित्त चिरकृतज्ञ बना रहता था। दूसरी बात यह कि मैं अब अकेला ही कैसे हूँ? ईश्वर अलक्षित रूप से मेरा साथ देकर मेरी निर्जनता को पूर्ण कर रहे हैं। इस समय मुझे उन पर भरोसा है। वे मेरे लिए शान्ति, सान्त्वना और उज्ज्वल आशा के रूप में प्रकाशमान हैं।

पहले जब दुःख के भार से मेरा मन व्याकुल हो उठता था तब मैं रो कर सान्त्वना की खोज करने लग जाता था, किन्तु अब और तरह की सान्त्वना को न खोज कर बाइबिल पढ़ता हूँ। एक दिन मेरा मन बड़ा ही उदास था। मैं सबेरे बाइबिल ले कर पढ़ने बैठा। पन्ना उलटाने के साथ पहले ही इस वाक्य पर दृष्टि पड़ी—ईश्वर का कथन है "मैं अपने भक्तों को कभी नहीं छोड़ता, किसी भी अवस्था में नहीं।" अहा, कैसा चमत्कृत वाक्य है, कैसी मधुमयी वाणी है! मानों स्वयं भगवान् मुझको सान्त्वना दे कर यह बात प्रत्यक्ष रूप से कह रहे हैं। तो अब भय क्या? मैं भी उसी जगत्पिता का एक पुत्र हूँ।

इसी प्रकार काम करते और सोचते विचारते हेमन्तकाल उपस्थित हुआ। इस समय मेरी धान और जौ की फ़सल के

पकने का समय आया। धान के पौदे खूब हरे भरे थे किन्तु मैंने देखा कि धान के विनाशक शत्रुओं से मेरा सर्वनाश होने की सम्भावना है। बकरे और वे जङ्गली जानवर—जिनको मैंने एक क़िस्म का ख़रगोश मान लिया था—धान के पेड़ों की मधुरता चख कर नित्य रात रात भर मेरे ही खेत में पड़े रहते थे और जहाँ पौदे ज़रा बढ़ने लगते तहाँ उन्हें नोच कर खा डालते थे। इस से उन पेड़ों को झाड़ बाँधने का अवकाश नहीं मिलता था।

इन दुष्ट जन्तुओं से सस्यरक्षा का एकमात्र उपाय बाड़ी लगाना था। बड़ी शीघ्रता से काम करने पर भी उस छोटे से खेत को घेरने में मुझको कोई तीन सप्ताह लगे। मैं दिन में ख़ुद उस खेत की निगरानी करता और सुविधा मिलने पर सस्य-खादक जन्तुओं को गोली से मार डालता था। रात के समय अपने कुत्ते को घेरे के भीतर जाने के मार्ग में पहरा देने के लिए बाँध देता था। उसकी बोली सुन कर कोई जानवर उसके पास से होकर खेत के भीतर जाने का साहस न कर सकता था। इस उपाय के द्वारा शीघ्र ही उन जन्तुओं से खेत की रक्षा हुई। फ़सल भी क्रमशः पकने लगी।

पशुओं के उपद्रव से तो छुटकारा मिला, पर अब पक्षियों ने उत्पात मचाना शुरू किया। धान में बाल निकलते ही भाँति भाँति के पक्षी मेरा सर्वनाश करने के लिए अवसर पाकर खेत में आने लगे। ज्योंही मैं खेत में पहुँचता था त्योंही वे सब के सब उड़ कर इधर उधर पेड़ों पर जा बैठते थे और मेरे वहाँ से चले जाने को प्रतीक्षा करते थे। खेत में जाकर मैंने देखा कि इन पक्षियों ने धान के कितने ही पौधों को नष्ट

कर डाला है। किन्तु अब भी कुछ समय था। क्योंकि सब धान पके नहीं थे। जिस तरह होगा बचे हुए धान की रक्षा करनी ही होगी, नहीं तो ये सस्य-घातक पक्षी अन्न को निःशेष कर के मुझे अन्न के बिना मार ही डालेंगे।

मैं खेत से कुछ ही दूर गया हूँगा कि वे सब पक्षी साकांक्ष दृष्टि से देखने लगे कि मैं गया कि नहीं। मेरे ज़रा आँख के ओट होते ही वे झुंड के झुंड पेड़ से उतर कर फिर खेत में गिरने लगे। मैं, सब के उतर आने तक ठहर न सका। मुझे अत्यन्त क्रोध चढ़ आया। बड़ी तेज़ी से घेरे के पास जाकर मैंने उन चिड़ियों पर गोली चला दी। उनमें तीन पक्षी मरे और कुछ घायल हुए। मैंने उन तीनों को डोरी में बाँध कर खेत के तीन तरफ़ लटका दिया। इससे आशातीत उपकार हुआ। उन पक्षियों ने खेत में आना तो छोड़ा ही, साथ ही इसके जितने दिन वे तीनों मृत पक्षी टँगे रहे उतने दिन उन्होंने उस तरफ़ आने का नाम तक नहीं लिया।

दिसम्बर के अख़ीर में फ़सल अच्छी तरह पक गई। काटने का समय आ पहुँचा। किन्तु उसे काटें कैसे? एक हँसुए की आवश्यकता थी। जहाज़ से जो ज़ंग लगी हुई तलवार लाया था, उसको हँसुए की तरह टेढ़ा कर लिया। मेरा खेत ही कितना था और काटने वाला भी मैं अकेला ही था। किसी तरह उसी निजरचित हँसुए से काम निकल गया। धान की बालें काट कर टोकरे में भरीं। पेड़ों को खेत में ही छोड़ दिया, लेकर क्या करता। धान की बालें घर पर ले आया और लाठी से पीट कर उनके दाने छुड़ा लिये।

मेरे आनन्द और उत्साह की सीमा न रही। ईश्वर की कृपा होगी तो समय पाकर अब मेरे आहार का अभाव मिट

ज़ायगा। किन्तु इतने पर भी मेरी असुविधा का अन्त न था। मैं न जानता था कि किस तरह जौ पीस कर उसका आटा निकाला जाता है, आटा निकलने पर किस तरह वह छाना जाता है, छान लेने पर किस तरह उसकी रोटी बनती है और किस तरह सेंकी जाती है। कैसे क्या होगा, इसकी चिन्ता छोड़ कर मैंने इस दफ़े की सारी फ़सल बीज के लिए रख छोड़ी और बीज बोने के समय से पहले मैं अपने खाने-पीने की सामग्री सञ्चय करने में जुट गया।

एक साधारण रोटी पकाने के लिए कितनी ही सामान्य सामान्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है, इस पर प्रायः बहुत लोग ध्यान नहीं देते। एक तो मेरे रहने का ठिकाना नहीं, दूसरे कोई संगी साथी भी नहीं। खेती करने का कोई सामान नहीं। मेरे पास न हल है न बैल। न कुदाल है न खनती काठ का कुदाल जो बनाया था वह ख़राब हो गया तो भी उससे किसी किसी तरह काम चलाया। दूसरी दिक़्क़त यह थी कि बीज बोने के बाद हिंगाने की ज़रूरत थी। उसके लिए हेंगा (लकड़ी का भारी लम्बा तख़्ता) चाहिए। मेरे पास वह नहीं था। मैं एक पेड़ की मोटी सी डाल काट कर ले आया और उसे घसीटता हुआ खेत में इधर उधर घूमा। उसे घसीट कर ले चलने से जो खेत में चिह्न पड़ गया उसी से काम चल गया। फ़सल उगने पर फिर उसकी हिफ़ाज़त के लिए बहुत कुछ करना पड़ा। बाड़ लगाना, पकने पर काटना, अनाज अलग करना आदि कितने ही काम करने पड़े। इसके बाद आटा पीसने के लिए जाँता, चालने के लिए चलनी आदि की आवश्यकता हुई। इसके बाद आटा माँड़

कर रोटी बनाने और सेंकने का नम्बर था। ये सब काम किसी तरह मुझको करने ही पड़ते थे।

इस दफ़े बीज बोने के लिए बहुत लम्बा चौड़ा खेत चाहिए। इसलिए कुछ ज़्यादा खेत ठीक करना होगा। यह सोच कर मैंने सात आठ दिन में एक और काठ का कुदाल बना लिया। पर यह भारी और कुछ भद्दा बना। इसके चलाने में मुझे बड़ी मेहनत पड़ती थी। मैंने अपने घर के बहुत ही नज़दीक दो क्यारी खेत-जोत गोड़ कर ठीक किया। इसके बाद उन पेड़ों की डाल से खेत को चारों ओर से अच्छी तरह घेर दिया जिनकी डाल रोपने से लग जाती है। इस समय बरसात शुरू हो गई थी, इसलिए जभी कुछ फ़ुरसत मिल जाती थी तभी बाड़ी लगा देता था। इसमें मुझे तीन महीने लगे। वृष्टि बन्द होने पर मैं घेरा बनाता था और वृष्टि होने के समय घर में बैठ कर तोते को पढ़ाता था। मैंने तोते का नाम रक्खा था "आत्माराम"। वह बड़े स्पष्ट स्वर में अपना नाम लेकर पुकारता था—"आत्माराम"। इस द्वीप में आकर मैंने अपनी बोली के सिवा यही पहले पहल दूसरे का कण्ठस्वर सुना। अहा! सुनने में क्या ही मधुर लगता था!

मिट्टी के बर्तन बनाना और रोटी पकाना

मैं इस समय केवल तोते के पढ़ाने ही में भूला न था; किन्तु यह भी सोच रहा था कि मिट्टी के बर्तन किस तरह बनाये जा सकेंगे। पहले मैंने सोचा कि बर्तन बनाने के लिए पहले चाक बहुत ज़रूरी है। यदि बर्तन बनाने के लायक़

मिट्टी मिल जाय तो उससे बर्तन बना कर धूप में सुखा लेने से सूखी चीज़ रखने का सुभीता होगा। पहले मैंने मैदा रखने के लिए खूब बड़ी बड़ी हँड़ियाँ बनाने का विचार किया।

पहले पहल अपने कार्य की विफलता, फिर बर्तन बनाने की अनभिज्ञता, और इसके बाद बेडौल बर्तन गढ़ने का वर्णन करने से पाठकगण अवश्य हँसेंगे। कोई टेढ़ा मेढ़ा, कोई बदशकल, और कोई विचित्र रूप का बर्तन बना। उस पर भी कोई फट जाता, कोई अपने भार से आप ही टूट जाता, और कोई हाथ लगते ही टूट जाता था। दो महीने तक मैं बराबर बर्तन बनाने के पीछे हैरान रहा। मैं बड़े कष्ट से मिट्टी खोद कर लाता था। उसे अच्छी तरह रौंद कर मैंने बार बार विफल-प्रयत्न होकर भी अन्त में विचित्र शकल के दो बर्तन (उसका नाम क्या बतलाऊँ, वह न हाँड़ी थी न घड़ा था न कराही थी; न मालूम वह विचित्र आकार का क्या था!) बनाये। इन दोनों अज्ञातनामा बर्तनों को धूप में सुखा कर एक टोकरे में रक्खा और उसके चारों ओर पयाल का बेठन दे दिया।

यद्यपि मैं बड़ा बर्तन गढ़ने में सफलता प्राप्त न कर सका तथापि छोटे छोटे कितने ही बर्तन मैंने एक तरह से उमदा तैयार कर लिये। मलसी, रकाबी, ढकनी, कलसी, इसी क़िस्म के और भी छोटे मोटे बर्तन जब जो मेरे हाथ से निकल गये उन्हें गढ़ कर तैयार किया और धूप में अच्छी तरह सुखा लिया।

किन्तु इससे मेरी कमी दूर नहीं हुई। मुझे तरल पदार्थ रखने और रसोई-पानी बनाने के उपयुक्त बर्तनों की आवश्यकता थी और ख़ास कर पके हुए बर्तनों की।

एक दिन मैंने मांस पकाने के लिए खूब तेज़ आग जलाई। मांस पका कर जब आग बुझा दी तब देखा कि मेरे गढ़े हुए बर्तन का एक टुकड़ा आग में पक कर खूब बढ़िया ईंट की तरह लाल और पत्थर की तरह सख्त हो गया है। तब मैंने मन में सोचा कि यदि फूटा हुआ पकता है तो साबित बर्तन क्यों न पकेगा? इस आशा से मेरा हृदय आनन्द से उमँग उठा।

मैंने कुम्हार का आवाँ कभी नहीं देखा था तो भी कुछ हाँड़ियाँ, मलसे, कलसियाँ और रकाबियाँ आदि छोटे बड़े बर्तनों को एक के ऊपर एक करके रक्खा; और उसके नीचे कोयले बिछा कर चारों ओर सूखी लकड़ियाँ लगाकर रख दीं। उसमें आग लगा कर धीरे धीरे उसके ऊपर और बग़ल में मोटी लकड़ियाँ रख दीं। कुछ देर बाद देखा कि बर्तन आग की ज्वाला से उत्तप्त होकर लाल हो गये हैं, पर उनमें एक भी फूटा नहीं है। मैंने उन बर्तनों को उसी तरह पाँच छः घंटे कड़ी आँच में रहने दिया। इसके बाद देखा कि बर्तन तो एक भी नहीं टूटा फूटा, किन्तु वे गले जा रहे हैं। जिस मिट्टी से मैंने हाँड़ी बनाई थी उसमें बालू मिली थी। वही बालू अधिक आँच लगने से गल कर काँच होगई। यदि मैं और आँच देता तो हाँड़ी गल कर काँच हो जाती। इससे मैं धीरे धीरे आँच कम करने लगा। ज्यों ज्यों आँच कम पड़ने लगी त्यों त्यों बर्तनों की लाली भी मन्द होने लगी। अन्त में ठंडे पड़ जाने पर बर्तन कहीं फूट न जायँ, इस आशङ्का से मैं सारी रात बैठा ही रहा और धीरे धीरे आग की आँच कम करता रहा। सबेरे आग बुझा कर देखा तो तीन प्यालियाँ और दो हाँड़ियाँ अच्छी तरह पक गईं थीं।

जो बर्तन गला जाता था वह ऐसा चिकना हो गया था जैसे उस पर आप ही पालिश होगई हो।

रसोई बनाने के उपयुक्त, आग सहने योग्य, पका बर्तन जब मुझे मिला तब जो आनन्द हुआ उस आनन्द की तुलना इस संसार में किसी वस्तु से नहीं हो सकती। ऐसी साधारण वस्तु से संसार में इस तरह कभी कोई खुश न हुआ होगा। बर्तनों को ठंडा तक न होने दिया। मैंने एक हाँड़ी में पानी ढाल कर मांस पकाने के लिए आग पर चढ़ा दिया। मेरा अभीष्ट सिद्ध हुआ। यद्यपि मेरे पास कोई मसाला न था तथापि मांस का मैंने बढ़िया शोरवा बनाया। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर मुझे बर्तनों की दिक़्क़त न रही। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उन बर्तनों का कोई निर्दिष्ट आकार न था और न वे देखने ही में सुन्दर थे; केवल काम चलाने योग्य थे।

इसके बाद मुझे यह चिन्ता हुई कि धान क्योंकर कूटा जायगा। न मेरे पास ओखली थी, न मूसल था, और न लोहे का ही ऐसा कोई पात्र था जिसमें कूट कर चावल निकाले जा सकें। इसके अलावा एक चक्की की भी बड़ी आवश्यकता थी। किन्तु दो हाथ मात्र उपकरण से जाँता तैयार करने की कल्पना भी पागलपन से ख़ाली नहीं कही जा सकती। मैं किस तरह अपने उद्देश्य को सिद्ध करूँगा, यह सोच कर बड़ा ही व्यग्र हुआ। एक भी युक्ति ध्यान में न आई। मैं न जानता था कि किस तरह पत्थर काटा जाता है। दूसरी बात यह कि पत्थर काटने के उपयुक्त कोई औज़ार भी मेरे पास न था। मैंने सोचा कि यदि एक मोटा सा पत्थर का टुकड़ा मिल जाय तो उसके बीच में गड्ढा सा खोद करके

ओखली बना लूँगा। किन्तु वैसा एक भी पत्थर कहीं गिरा पड़ा दिखाई नहीं दिया। पहाड़ पर उसकी कमी न थी, किन्तु पहाड़ पर से काट कर या खोद कर ले आना मेरे सामर्थ्य से बाहर की बात थी। एक बात यह भी थी कि सभी पत्थरों में बालू के कण मिले रहते हैं। ऐसे पत्थर की ओखली बनेगी भी तो वह मसूल का आघात सह न सकेगी। मान लो, यदि सह भी ले तो आटे या चावल में बालू के कण किच किच करें ही गे। यह सोच विचार कर मैंने पत्थर से काम निकालने की आशा छोड़ दी और सख़्त लकड़ी का एक ऐसा कुन्दा ढूँढ़ने लगा जिसको मैं अकेले लुढ़का कर घर पर ला सकूँ। ऐसा कुन्दा ढूँढ़ निकाला। उसको कुल्हाड़ी से काट कर पहले ढोलक की तरह दोनों ओर चिपटा और बीच में गोल बनाया। फिर उसके नीचे और ऊपर के हिस्से को मोटा रख कर बीच के हिस्से को चारा ार से छाँट कर कुछ पतला किया।

अब उसका आकार बहुत कुछ डमरू का सा हुआ। फिर उसे खड़ा करके ऊपर के भाग को कुल्हाड़ी से खोद कर और उसके मध्य भाग को आग से जला कर किसी तरह खोखला किया। मैंने जिस कठोर वृक्ष के कुन्दे की ओखली बनाई उसी पेड़ की एक सीधी डाल काट कर ले आया और उसे कुल्हाड़ी से काटकर खम्भे के आकार का लम्बा सा मूसल बना लिया। ओखली-मूसल तैयार हो जाने पर उन्हें आगामी फ़सल की उपयोगिता की आशा पर रख छोड़ा। अब चिन्ता इस बात की रही कि फ़सल उपजने पर मैदा बना करके रोटी कैसे बनाऊँगा।

इसके बाद मैदा चालने के लिए एक चलनी भी ज़रूर चाहिए। बिना इसके मैदे से भूसी निकालना कठिन है, और भूसी मिले हुए मैदे की रोटी खाने योग्य न होगी। चलनी का काम कैसे चलेगा? यह कठिन समस्या उपस्थित हुई। मेरे पास महीन कपड़ा भी न था। जो कपड़े थे, वे सब फट कर चिथड़े चिथड़े हो गये थे। मेरे पास बकरे की ऊन बहुतायत से थी, पर उससे कुछ बुनना या बनाना मैं न जानता था।

चलनी बनाने का उपाय सोचने में मेरे कई महीने बीत गये पर एक भी उपाय न सूझा। आख़िर मुझे यह बात याद हुई कि जहाज़ पर से जो नाविकों के कपड़े-लत्ते लाया हूँ उनमें कितने ही कपड़े जालीदार और मसलिन (मलमल) भी हैं। मैंने उन्हीं के द्वारा छोटी छोटी तीन चलनियाँ बनाईं। इन चलनियों से कई वर्ष तक मेरा काम निकला। इसके बाद मैंने क्या किया, यह आगे चलकर कहूँगा।

अब रोटी बनाने की चिन्ता हुई। मैदा तैयार होने पर किस तरह रोटी बनाऊँगा? आख़िर मैंने सोचा कि रोटी पकाने का काम भी मिट्टी के बर्तन से ही लेना चाहिए। फिर क्या था, मैंने मिट्टी का तवा बना कर उसे आग में अच्छी तरह पका लिया। इससे रोटी पकाने का काम मज़े में निकल गया। मैंने धीरे धीरे रोटी पकाने का सभी सामान दुरुस्त कर लिया। चूल्हा भी बना लिया। मुझे अपने हाथ से रोटी पका कर खाने का सौभाग्य पहले पहल प्राप्त हुआ। इससे मेरे आनन्द की सीमा न रही। रोटी के सिवा मैं अब कभी कभी चावल की पिट्टी के पुवे भी बनाने लगा।

इस द्वीप में निवास करते मेरा तीसरा साल इन्हीं सब कामों में कट गया। इसी बीच मैं अपनी फ़सल काट कर घर ले आया और उसे टोकरे में भर भर कर हिफ़ाज़त से घर के भीतर रख दिया।

अब मेरे पास अन्न की कमी न रही। मैं अब दिल खोल कर अन्न ख़र्च करने लगा। खूब रोटी पकाता और भर पेट खाता था। मुझे अब अन्न रखने के लिए बुखारी की ज़रूरत हुई। मैं अन्न की बदौलत इस समय एक अच्छा मातवर आदमी बन गया।

नौका-गठन

जब मैं इन झमेलों को लेकर व्यस्त था तब भी मेरा मन इस जनशून्य द्वीप से मुक्ति पाने के लिए चिन्तित रहा करता था। मैंने इस द्वीप के अन्य भाग से जबसे दूर से स्थलचिह्न देखा था तबसे मेरा जी वहाँ जाने के लिए आतुर हो रहा था। यदि मैं महादेश के किसी अंश में पहुँच जाऊँगा तो घूमते फिरते किसी न किसी दिन स्वदेश का मुँह देख सकूँगा, अथवा जनसमूह में पहुँच जाने से भी कोई न कोई उपाय होगा। मैं मन में यही मन के लड्डू खा रहा था। किन्तु उस समय यह चिन्ता मेरे मन में एक बार भी उदित न होती थी कि यदि कहीं असभ्य जंगली मनुष्यों या हिंस्र पशुओं के बीच पहुँच गया तो मेरी क्या दुर्दशा होगी—वे दुष्ट जन्तु मुझे किस निर्दयता के साथ मार कर खा जायँगे। मेरे चित्त को तो एक यही चिन्ता घेरे रहती थी कि इस द्वीप से कब अन्यत्र जाऊँगा।

इस समय उस एकजूरी लड़के की और आफ्रिका के उपकूल में जिसने बचाया था उस लम्बे जहाज़ की बात याद आने लगी। किन्तु वह तो अब मिलने का नहीं। मैं उस डोंगी की खोज में गया जो हम लोगों के जहाज़ के साथ आई थी; जिस पर सवार हो कर हम लोग डूबे थे और जो समुद्र की लहर से ऊपर आकर सूखे में उलट पड़ी थी। वह जहाँ की तहाँ पड़ी थी, किन्तु समुद्र की तरङ्ग और वायु के धक्के खाकर वह उलट गई थी। उसके आस पास चारों ओर बालू जम गई थी और पानी वहाँ से बहुत दूर हट गया था। नाव ज्यों की त्यों थी, कहीं टूटी फूटी न थी। यदि कोई सहायता करने वाला होता तो मैं ठेल पेल कर किसी तरह नाव को पानी में ले जाता। इससे मेरा बहुत काम चलता। मैं सहज ही ब्रेज़िल को जा सकता।

यद्यपि मैं जानता था कि नाव को सीधा करना मेरे सामर्थ्य से बाहर की बात है तथापि असाध्य साधन होता है या नहीं—यह देखने के लिए मैं जंगल से लकड़ी काट कर ले आया और उसको ठेक लगा कर नाव को उलटाने की चेष्टा करने लगा। मेरे शरीर में जितना बल था उसे लगा करके मैं थक गया, पर नाव को हिला तक न सका। इसके बाद नाव के नीचे की बालू खोद कर उसे उलटाने की चेष्टा करने लगा। तीन चार सप्ताह तक मैंने जान लड़ा कर परिश्रम किया, बड़ी बड़ी चेष्टायें कीं, पर सभी व्यर्थ हुईं। जब किसी तरह उसे उलटा न सका तब उस नाव की आशा छोड़ दी। किन्तु इससे कोई यह न समझे कि मैंने इसके साथ ही समुद्र पार होने की आशा भी छोड़ दी। नहीं, उपाय जितना ही

कठिन प्रतीत होने लगा मेरा आग्रह भी उतना ही बढ़ने लगा।

अब मैं यह सोचने लगा कि क्या मैं स्वयं एक नई डोंगी नहीं बना सकता? आफ्रिका के रहने वाले तो बिना विशेष अस्त्र शस्त्र के ही पेड़ के तने को खोखला करके अच्छी डोंगी बना लेते हैं; मेरे पास इतने हथियार होते हुए भी क्या मैं एक नाव न बना सकूँगा? यह भावना होते ही मेरे मन में पूर्ण उत्साह हुआ। किन्तु उस समय मुझे यह न सूझा कि हबशियों के औज़ार के अभाव की अपेक्षा भी मुझ में एक गुरुतर अभाव है। हबशियों को जनसमाज का बल रहता है पर मैं अकेला उस बल से रहित हूं। नाव बन जाने पर भी उसे ठेल कर पानी में कैसे ले जाऊँगा?

मैं इस असुविधा की ओर कुछ भी लक्ष्य न कर के बज्र-मूर्ख की तरह नाव बनाने पर उद्यत हुआ। यदि मन में कभी यह प्रश्न होता भी था तो यही कह कर टाल देता था कि पहले नाव बन ले फिर देखा जायगा।

मैंने एक पेड़ काट डाला। यह पेड़ खूब मोटा और लम्बा था। उसके नीचे का हिस्सा एकसा सीधा, बाईस फुट से भी कुछ ज़्यादा लम्बा, था। उसकी जड़ का व्यास पाँच फुट दस इञ्च और बाईस फुट के ऊपर का व्यास चार फुट ग्यारह इञ्च था। उसके ऊपर का हिस्सा कुछ पतला सा हो कर शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो गया था। पेड़ तो मैंने किसी तरह काट कर गिराया। इसकी जड़ काटने में बीस दिन लगे और चौदह दिन इसके ऊपर का हिस्सा काटने और डाल-पात छाँटने में लगे। इसके बाद उस तने को नाव

के आकार में गढ़ने में पूरा एक महीना लगा। तदनन्तर रुखानी और बसूले से छील छाल कर बड़े परिश्रम से एक सुन्दर डोंगी तैयार कर ली। यह इतनी बड़ी थी कि इसमें छब्बीस आदमी खुशी से बैठ कर समुद्र-यात्रा कर सकते थे। इसलिए यह नौका मुझ अकेले को और मेरे माल असबाब को ढोकर ले जाने के लिए बड़ी ही उपयुक्त हुई।

नाव बन गई, पर उसे जल में ले जाने का उपाय क्या है? मेरे सब परिश्रम व्यर्थ हुए। नौका पानी से क़रीब सौ गज़ के फ़ासले पर थी। मैंने नाव को लुढ़का कर ले जाने के लिए मिट्टी खोद कर ज़मीन को ढलुवा बनाया। यह युक्ति भी मेरी ख़ाली गई। अनेक चेष्टा करने पर भी नाव अपनी जगह से न हिली। तब मैंने संकल्प किया कि समुद्र से नाला खोद कर नाव के पास तक पानी ले आऊँगा, इससे नाव सहज ही पानी पर तैरने लगेगी। समुद्र से नाव तक नाले की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई का परिमाण ठीक कर के देखा कि उतना बड़ा नाला खोदने में मुझ अकेले को कम से कम दस-बारह वर्ष लगेंगे। तब एक दम हतोत्साह होकर मैंने इस संकल्प को त्याग दिया। इस नौका-संगठन से जो मेरे मन में पश्चात्ताप हुआ उसका वर्णन नहीं हो सकता। हाँ, इससे मैंने एक शिक्षा ज़रूर पाई—आगे पीछे की बिना विवेचना किये किसी काम में हाथ डालना ठीक नहीं।

इस समय मेरे एकान्त-वास का चौथा साल पूरा हुआ। यहाँ अपने आने की प्रथम तिथि को पूर्ववत् पर्व की भाँति मान कर उत्सव मनाया। ईश्वर की कृपा से इस समय मैं सांसारिक विषय सम्बन्ध से बहुत कुछ विरक्त हो गया था।

मानो मैं संसार के सम्पर्क से विमुक्त होकर सदेह परलोक-वास कर रहा हूँ। यहाँ मैं ही एक निष्कण्टक बादशाह था। अब मुझे किसी वस्तु की कमी के कारण कोई कष्ट न था। कोई व्यर्थ की वासना अब मन को पीड़ित नहीं करती थी। इसके सिवा इस एकाधिप-सम्पत्ति-सम्भोग में लेशमात्र अहङ्कार न था। यहाँ मैं ढेर का ढेर अन्न उपजा सकता था; पके अंगूरों से घर भर सकता था। अपनी इच्छा के अनुसार जितने चाहिएँ उतने कछुए, बकरे, भाँति भाँति के पक्षी और लड़कियाँ ले आ सकता था। किन्तु इतना लेकर मैं करता क्या? एक व्यक्ति के लिए जितना यथेष्ट हो सकता है उतना ही मैं लेता था। अधिक लेकर क्या करता? इस समय अपनी अवस्था की बात सोच कर मुझे यत्किञ्चित् यही ज्ञान हुआ कि वस्तुओं का मूल्य आवश्यकता के ही अनुसार होता है। उत्तम से उत्तम पदार्थ तभी तक मूल्यवान् गिना जाता है जब तक लोग उसे आवश्यक समझते हैं। आवश्यकता न रहने पर उसका कुछ मोल नहीं। संसार का सर्वप्रधान लोभी अथवा कृपण मेरी अवस्था में पड़ कर एक अच्छा दानी बन जाता, इसमें सन्देह नहीं। मेरे पास कुछ रुपया था, यह पहले ही पाठकों को मालूम हो चुका है। मैं इस समय मटर, सेम, मूली, शलगम प्रभृति तरकारियों के एक एक बीज के लिए या एक बोतल स्याही के लिए मुट्ठी भर रुपया देने को प्रस्तुत हूँ। जिस रुपये के लिए संसार के कितने ही लोग दिन रात लालायित रहते हैं वह रुपया मेरे नज़दीक इस समय कोई चीज़ नहीं। इन बातों को सोच विचार कर मेरा मन ईश्वर के प्रति दृढ़ भक्ति से आर्द्र हो उठा। मैंने विशुद्ध भाव से ईश्वर की उपासना की और उन्हें अनेकानेक धन्यवाद दिये। मैं इस

समय निश्चिन्त मन से अपनी अवस्था का सुविचार कर प्रसन्न था।

वस्त्रों की चिन्ता

मेरी स्याही क्रमशः घटने लगी और मैं थोड़ा थोड़ा पानी मिला कर उसे बढ़ाने लगा। आख़िर वह ऐसी फीकी हो गई कि काग़ज़ के ऊपर उसका कोई चिन्ह ही न देख पड़ता था। जब तक काम चलाने योग्य कुछ स्याही थी तब तक मैं अपने जीवन की विशेष विशेष घटनाएँ लिख लिया करता था।

एक दिन मैं अपनी डायरी की आलोचना करते करते घटनाओं की एकता देखकर अत्यन्त विस्मित हुआ। ३० वीं सितम्बर को मेरा जन्म हुआ था और इसी तारीख़ को मेरा यहाँ का एकान्तवास भी आरम्भ हुआ। जन्म और विजन वास का आरम्भ एक ही दिन! जिस तारीख़ को मैं अपना देश का घर छोड़ करके भागा, उसी तारीख़ को मैं दास रूप में बन्दी होकर शैली टापू में गया था। जिस तारीख़ को मैं यारमाउथ मुहाने में जहाज़ डूबने से बाल बाल बचा, उसी तारीख़ को मैं शैली से भागा था।

स्याही के साथ रोटी का भी अभाव हो गया। यद्यपि मैंने बहुत अन्दाज़ से ख़र्च किया तो भी जहाज़ पर से लाई हुई सब रोटियाँ ख़तम हो गईं। स्वयं अपने हाथ से रोटी बनाने के पहले प्रायः एक वर्ष तक मैंने रोटी नहीं खाई। किन्तु भगवान् की दया से वह कमी भी बड़े विचित्र ढंग से दूर होगई।

मेरे पहनने के कपड़े भी अब धीरे धीरे फटने लगे। एक भी सूती कुर्ता मेरे पास नया न था; सभी पुराने और फटे थे। नाविकों के सन्दूक में जो छींट के कई कुर्त्ते मिले थे उन्हीं को यत्नपूर्वक पूँजी की तरह सँभाल कर रक्खा था; कारण यह कि किसी किसी समय सूती कपड़े को छोड़ कर दूसरा कपड़ा पहना ही न जा सकता था। यद्यपि यह देश ग्रीष्मप्रधान है, किसी कपड़े की उतनी आवश्यकता नहीं, तथापि मैं नंगा रहना हर्गिज़ पसन्द न करता था। मैं यहाँ एकाकी था फिर भी अपने शरीर की मुझे आप ही लज्जा होती थी। इसके अतिरिक्त यहाँ धूप इतनी कड़ी पड़ती थी कि खुला बदन रहने से शरीर में फफोले पड़ जाते थे। कुर्त्ता पहने रहने से उतनी गरमी नहीं जान पड़ती थी बल्कि कुर्त्ते के भीतर हवा जाने से ठंढक मालूम होती थी। मुझे एक टोपी की भी ज़रूरत थी। खाली सिर धूप में फिरने से सिर में दर्द होने लगता था।

यह सब सोच-विचार कर मैंने एक तरकीब से काम लिया। अपने जिन पुराने कपड़ों को अकारथ समझ कर मैंने त्याग दिया था उन्हें जोड़जाड़ कर कुछ बना सकता हूँ या नहीं, इसकी जाँच कर लेना मैंने उचित समझा। मैं रफ़ू करने में तो अनाड़ी था ही, दर्ज़ी के काम में और भी अनाड़ी था। इसलिए उन कपड़ों से जो कुछ बनाया वह एक विचित्र ढँग की वस्तु हुई। फिर भी वह मेरे काम चलाने योग्य हो गई।

मैंने अब तक जितने पशुओं को मारा था उनके चमड़ों को फेंक न दिया था, बल्कि उन्हें धूप में अच्छी तरह सुखाकर

एक लकड़ी में लटकाकर रख दिया था। उनमें से कितने ही तो धूप में सूख कर ऐसे सख़्त हो गये थे कि उनसे कोई काम लेना कठिन था। पर उन में कई एक मुलायम भी थे। उसी चमड़े की पहले मैंने एक टोपी बनाई। चमड़े का चिकना हिस्सा नीचे रहने दिया और ऊन को ऊपर कर दिया। टोपी बनाने में सफलता प्राप्त करके मैंने उस चमड़े की कुछ पोशाकें भी बनानी चाहीं। कुछ दिन में खूब अच्छी ढीली ढाली कुछ पोशाकें तैयार कर लीं। उनकी काट छाँट बहुत भद्दी थी, यह मुझे स्वीकार करना ही पड़ेगा। जो हो, उनसे मेरा काम मज़े में चल जाता था। वृष्टि में भी वे न भीगती थीं। ऊन पर से होकर पानी तुरन्त नीचे गिर पड़ता था। वे मज़े में बरसाती कपड़ों का काम देती थीं।

इसके अनन्तर एक छतरी बनाने में मुझे बहुत श्रम करना और समय लगाना पड़ा। धूप इतनी कड़ी होती थी कि छतरी नितान्त आवश्यक थी। बड़ी कठिनाई और अनेक युक्तियों से मैंने जैसी तैसी एक काम चलाने योग्य छतरी तैयार की। वह खोली और मोड़ी भी जाती थी। इसके ऊपर भी ऊन ही थी। वह धूप और पानी दोनों का, विलक्षण रीति से, निवारण करती थी।

इस प्रकार मैं बड़े आराम से अपने को ईश्वर की कृपा के ऊपर निर्भर कर एकान्तवास करने लगा।

नौका को पानी में ले जाना

इस प्रकार एकान्तवास करते मुझे पाँच वर्ष बीत गये। खेती करना, अंगूर सुखाकर रखना, शिकार खेलना आदि नियमित कामों को छोड़कर मैं इस बीच में कोई विशेष काम न कर सका। यदि अपने नियमित नित्यकर्म में कुछ विशेषता थी तो यही कि मैं एक डोंगी बना रहा था। अज्ञानी की भाँति मैंने जहाँ पहली डोंगी बनाई थी वहाँ न मैं नाली खोद कर पानी ला सका और न डोंगी को ही लुढ़काकर पानी तक ले जा सका। वह जहाँ बनाई गई वहीं, मेरी अविवेचना की स्मारक होकर, पड़ी रही। इसके बाद मैं ऐसी जगह एक पेड़ की तलाश करने लगा, जहाँ सहज ही नाला खोदकर पानी ले जा सकूँ। इधर उधर खोजते खोजते समुद्र-तट से आध मील पर नीची जगह में नाव के उपयुक्त एक पेड़ मिल गया। उसे काटकर बड़े कष्ट से मैंने फिर एक डोंगी बनाई। अब रही नाला खोद कर लाने की बात। सो मैंने छः फुट चौड़ा और चार फुट गहरा नाला खोदना शुरू कर दिया। आधा मील नाला खोदकर पानी लाने में मुझे दो वर्ष लगे। किन्तु समुद्र में नाव को उतारकर ले जाने के उत्साह में इस कठिन परिश्रम को मैंने कुछ भी न समझा। आखिर मेरी डोंगी पानी में बह चली।

नौका पानी में तैरने लगी सही, किन्तु इससे मेरा मतलब सिद्ध न हुआ। यह मेरे मतलब के लायक़ न थी। चालीस मील समुद्र पार कर के इस डोंगी के सहारे मुझे दूसरे देश में जाने का साहस नहीं होता था इसलिए इस इरादे को एक प्रकार से त्याग दिया। अस्तु, अभी नाव मिल

गई है, एक बार इस द्वीप को चारों ओर-परिक्रमा कर के देखूँगा। मेरे राज्य में कहाँ क्या है, कहाँ तक उसकी सीमा है, इसे भी देखूँगा।

इसके लिए मैं नाव पर आवश्यक वस्तुओं का आयोजन करने लगा। पहले उस पर एक मस्तूल लगाया। जहाज़ के पाल के टुकड़े से एक पाल तैयार किया। नाव के अगले हिस्से में और अधःप्रदेश में खाने-पीने की चीज़ें रखने के लिए दो बक्स बनाये। नाव के ऊपर छपरी तो थी नहीं, इसलिए छतरी ही को तान कर छपरी की तरह खड़ा कर दिया।

इस प्रकार सब सामान दुरुस्त कर के मैं नाव को समुद्र के किनारे किनारे ले चला। समुद्र में दूर तक जाने का साहस न होता था। एक दिन अपने राज्य की सीमा देखने की इच्छा हुई। मैंने खाने-पीने की सब सामग्री नाव में रख ली। दो दर्जन जौ की रोटियाँ, एक हाँड़ी भर भूने चावल, (आजकल मैं इसी खाद्य को ज़्यादा पसन्द करता था,) एक घड़ा पानी, बन्दूक और बिछौने के लिए दो एक कपड़े ले लिये।

मैं अपने राजत्व या द्वीपान्तर-वास के छठे साल अपनी काष्ठ-अङ्कित तिथि-गणना के अनुसार छठी नवम्बर को द्वीप देखने के लिए नाव पर सवार हुआ। जितना रास्ता चलने की आशा की थी उससे कहीं अधिक मार्ग मुझको चलना पड़ा। द्वीप बहुत बड़ा न था। किन्तु द्वीप के पूरब ओर समुद्र के भीतर दो मील तक पहाड़ और पत्थर की बड़ी बड़ी चट्टानें थीं जिनमें कितनी ही पानी के ऊपर निकली थीं और कितनी ही डूबी थीं। उसके सामने समुद्र की ओर आध मील चौड़ा

बालू का मैदान था। इतनी दूर चक्कर लगा कर जाने में मुझे बहुत समय लगा।

पहले, मार्ग की यह अवस्था देख कर मैं आगे बढ़ना नहीं चाहता था—कौन जाने, कितनी दूर तक समुद्र की ओर जाना होगा। कहीं गया भी तो फिर लौटूँगा कैसे? तब मैं लङ्गर डाल कर सोचने लगा। (मैंने जहाज़ के टूटे फूटे लोहों से एक साधारण लङ्गर भी बना लिया था।) मैंने डोंगी से उतर कर सूखे रास्ते से पहाड़ के ऊपर चढ़ कर बालू के मैदान की दौड़ देखी। देख कर मुझे साहस हुआ। मैं फिर वहाँ से रवाना हुआ।

थोड़ी दूर जाते न जाते मेरी नौका एक प्रखर प्रवाह में जा पड़ी। यद्यपि मेरी नाव किनारे के बहुत ही समीप थी तथापि मैं ज़ोर करते करते थक गया पर उस को किनारे तक न ला सका। मैंने देखा कि मेरी बाईं ओर एक भँवर था, उसी का उलटा स्रोत मुझे ठेल कर समुद्र की ओर लिये जा रहा था। मैंने नाव खेने का लग्गा रख दिया। वह अपने मन से उस तीक्ष्ण धार में निकल चली। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो बैठ रहा। इस बार मैंने अपने को गया ही समझा। यदि डूबने से बच भी जाऊँगा तो भी महासमुद्र में पड़ कर बे दाना-पानी के मर मिटूँगा। साथ में जो कुछ खाने-पीने की चीज़ें हैं वे कै दिन चलेंगी? इन बातों को सोच कर मैं उसी निर्जन टापू के लिए व्याकुल हो उठा। नाभिकुण्ड से बार बार यह शब्द प्रतिध्वनित होने लगा, 'हाय! मैं कहाँ जा रहा हूँ? न मालूम किस किनारे पर मेरी यह छोटी सी नौका लगेगी?' किनारे से मैं बहुत दूर जा पड़ा। साथ में कम्पास (दिङ्निर्णायक यन्त्र) भी न था। यदि रात हो जाय या कुहरा

फैल जाय तो दिशा का भी ज्ञान न कर सकूँगा । भाग्यक्रम से दो-पहर पीछे प्रतिकूल वायु बहने लगी। मैंने पाल गिरा दिया। कुछ दूर जा कर देखा कि स्रोत भी उलटा बह रहा है—वह उसी भँवर का परवर्तित स्रोत था। मैंने बड़ी खुशी से उस सोते में नाव छोड़ दी। जिन लोगों ने फाँसी की तख्ती पर खड़े होकर मुक्ति-संवाद सुना होगा या जो बधिक के हाथ की चमचमाती हुई नंगी तलवार के वार से बच गये होंगे वही मेरे उस समय के आनन्द का अनुभव कर सकेंगे। वही समझेंगे कि उस समय मुझे कितना हर्ष हुआ होगा।

भँवर के वेग में पड़ कर मैं द्वीप के जिस ओर से रवाना हुआ था, फिरती बार उसकी दूसरी ओर जा पड़ा। अन्दाज़न पाँच बजे दिन को मैंने बड़े कष्ट से नाव को खे कर किनारे लगाया।

मैंने ज़मीन में पाँव रखते ही सब से पहले घुटने टेक कर अपने प्राणत्राण के निमित्त परमेश्वर को धन्यवाद दिया। मैंने अब निश्चय किया कि मुझको इसी टापू में रहना होगा, यही ईश्वर को मंजूर है; किन्तु मैं उसको न मान कर अन्यत्र जाने की चेष्टा करता हूँ तो भी वे मेरे इस विरुद्धाचरण को बार बार क्षमा करते हैं। इस कारण, उनसे बढ़ कर दयालु कौन होगा! मैं ऐसा थका था कि पेड़ के नीचे लेटते ही सो गया।

जब मैं जागा तब मन में यह भावना हुई कि किस रास्ते से घर लौट चलना चाहिए? जिस रास्ते से आया हूँ उसी रास्ते से? उस रास्ते से जाने का तो साहस नहीं होता। जिस राह से आया हूँ उसके विपरीत मार्ग से? कौन जाने, उस ओर

फिर मेरे लिए कोई विपद् प्रतीक्षा कर रही हो। आख़िर मैंने यही निश्चय किया कि कोई मुहाना मिल जाय तो नाव को वहाँ बाँध कर पैदल ही घर जाऊँगा।

दूसरे दिन सबेरे मैंने कोई तीन मील रास्ता किनारे किनारे चल कर एक छोटी नदी का मुहाना पाया। नाव को उसी मुहाने में ले जा कर बाँध दिया।

ऊपर आकर मैंने देखा कि एक बार पैदल घूमते घूमते मैं जिस ओर आया था उसी तरफ़ आ गया हूँ। इससे चित्त में बड़ा ही विश्राम मिला। मैं नाव पर से केवल अपनी छतरी और बन्दूक़ उतार कर ले आया और वहाँ से अपने घर की ओर रवाना हुआ। साँझ को मैं अपने कुञ्जभवन में जा पहुँचा।

छाग-पालन

मैं घेरे को लाँघ कर कुञ्जभवन के भीतर गया। वहाँ देखा, जो पदार्थ जैसे थे वैसे ही हैं। मैं पेड़ के नीचे लेटते ही गाढ़ी नींद में सो गया।

दिन भर के परिश्रम से बड़ी मीठी नींद आई। मैं उसी निद्रित अवस्था में सुनने लगा जैसे कोई मेरा नाम लेकर पुकारता हो। मैं घोर निद्रा में पड़ा था, इससे मन में समझा कि स्वप्न देख रहा हूँ। किन्तु बारंबार जब मेरा नाम ले ले कर पुकारने लगा तब मेरी गाढ़ी नींद क्रम क्रम से पतली होने लगी। आख़िर मैंने स्पष्ट सुना, कोई मुझे पुकार कर कह रहा है "राबिन, राबिन, राबिन क्रूसो! तू कहाँ गया था? अरे तू कहाँ था? अरे तू कहाँ आ पड़ा?" झट मेरी आँखें

खुल गईं। उस समय जो मेरे मन में भय हुआ वह कह कर कैसे समझाऊँ? इस मानव-शून्य द्वीप में मेरा नाम ले कर कौन पुकारता है? आँखें मल कर चारों ओर ध्यान से देखते ही मेरा भ्रम जाता रहा। मैंने देखा, घेरे के ऊपर मेरा पाला हुआ आत्माराम नामक सुग्गा बैठ कर मेरी ही सिखाई बोली बोल रहा है।

तब मेरा भय दूर हुआ सही, परन्तु मुझे यह सोच कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि आत्माराम पींजरे से क्योंकर निकल आया। यदि पींजरे से निकल ही आया तो ठीक उसी जगह आ कर क्यों बैठा? मैंने इस पर विशेष तर्क-वितर्क न कर के हाथ बढ़ा कर उसका नाम ले कर पुकारा। पुकारते ही वह फ़ौरन वहाँ से उड़ कर मेरे हाथ पर आ बैठा और बोलने लगा "राबिन, राबिन, राबिन क्रूसो, तू इतने दिन कहाँ था? फिर कहाँ आया?" मैं उसको ले कर अपने घर आया।

इस समय डोंगी के लिए मेरा मन ललचाने लगा। अहा, यदि उसे इस ओर ला सकता तो कैसा अच्छा होता! किन्तु लाता कैसे? पूरब ओर घूम कर? नहीं बाप रे! इस बात की भावना करते ही मेरे हृदय का उष्ण शोणित शीतल हो उठता है। अच्छा उस ओर से नहीं तो पच्छिम ओर से? कौन जाने उस ओर क्या है? इस प्रकार सोच विचार कर मैंने नाव की आशा छोड़ दी। यद्यपि उसके बनाने में बहुत परिश्रम हुआ था, और उसको पानी में उतार ले जाने में और भी अधिक कष्ट उठाना पड़ा था तथापि प्राण के आगे तो उसका कुछ मोल नहीं। प्राण से बढ़ कर तो वह प्रिय न थी।

इसके बाद एक वर्ष और बीता। एक साथी का अभाव छोड़ कर मेरे मन में और कुछ क्लेश न था। अब मैं एक प्रवीण रफूगर और कुम्हार बन गया। मैं चाक गढ़ कर मिट्टी का एक से एक सुडौल बर्तन बना सकता था, रफूगरी का काम भी मज़े में चला लेता था। सबसे अधिक आनन्द और कार्य-कौशल का गर्व मेरे मन में तब हुआ जब मैं मिट्टी का एक टेढ़ा मेढ़ा तम्बाकू पीने का नल तैयार कर सका। तम्बाकू पीने का मुझे ख़ूब अभ्यास था। जहाज़ में तम्बाकू पीने का नल था, किन्तु तम्बाकू न रहने के कारण मैं नल न लाया था। इसके बाद जब इस टापू में मैंने तम्बाकू देखी तब मेरे मन में बेहद अफ़सोस हुआ। टोकरी बुनने में भी मैंने ख़ूब उन्नति कर ली।

मैंने देखा कि बारूद की पूँजी मेरी घटती आ रही है। इस अभाव का पूरा करना मेरे सामर्थ्य से बाहर था। जब यह बिलकुल न रह जायगी तब क्या करूँगा? बन्दूक में क्या डाल कर बकरे का शिकार करूँगा, यह शोच कर मैं बहुत ही आकुल हुआ। अपने इस द्वीप-निवास के तीसरे साल मैंने एक बकरी के बच्चे को पोसा था, यह पहले लिख आया हूँ। उसकी एक जोड़ी मिल जाय तो उसे भी पाल लूँ, मैं इसकी खोज में था, पर उसकी जोड़ी मिलने का सुयोग न हुआ। आख़िर वह मेरा पालतू बकरा बूढ़ा हो कर मर गया। मैं मोह के मारे उसको मार कर न खा सका।

यह मेरे द्वीप-वास का ग्यारहवाँ साल है। जब बारूद घट गई तब मैं बकरों को पकड़ने के लिए फन्दा बना करके उसी से काम लेने लगा। फन्दे में बकरे फँसते थे ज़रूर

परन्तु फन्दे में उन्हें फँसाने के लिए मैं जो खाने की चीज़ें रख देता था उन्हें खाकर और फन्दे को तोड़ ताड़ कर वे निकल भागते थे। आख़िर बार बार धोखा खाकर मैंने खूब मज़बूत फन्दा बनाया। एक दिन मैंने एक साथ तीन फन्दे लगा दिये। एक में एक बूढ़ा बकरा आ फँसा, और दूसरे में तीन बच्चे, जिनमें दो बकरियाँ और एक बकरा था।

बूढ़े बकरे को पाकर मैं बड़ी दिक़्क़त में पड़ा। उसके पास जाते ही वह इस तरह बब बब करके भयानक रूप धारण कर सींग-पूँछ उठा कर मेरी ओर दौड़ता कि मैं उसके निकट जाने का साहस न कर सकता था, उसे पकड़ना तो दूर रहा। यदि मैं उसको जीता न पकड़ सका तो उसको मार कर ही क्या होगा—यह सोचकर मैंने उसे छोड़ देना ही अच्छा समझा। मैंने फन्दे का मुँह खोल दिया। खोलते ही वह प्राण लेकर खूब ज़ोर से भागा। उसको छोड़ देने पर मुझे अफ़सोस होने लगा। यदि उसे कुछ दिन भूखा रहने देता, और यत्न करता तो वह सुस्त पड़ जाता। भूख एक ऐसी चीज़ है जिससे लाचार हो कर सिंह भी वश में हो जाता है। कहावत है, "आग की ज्वाला सही जाती है पर पेट की ज्वाला नहीं सही जाती।" मैंने बकरे को छोड़ दिया और तीनों बच्चों को रस्सी से बाँध कर किसी तरह खींच खाँच कर ले गया।

कुछ दिन तक उन बच्चों ने कुछ न खाया। आख़िर अन्न आदि मधुर खाद्य के लोभ में पड़कर उन्होंने कुछ कुछ खाना आरम्भ किया। जब मैं इन बच्चों को पालना चाहता हूँ तब इनके चरने के लिए मुझे एक घेरेदार जगह का प्रबन्ध

करना होगा जिसमें बड़े होने पर ये जंगल में न भाग जायँ या मेरी बोई हुई फ़सल को उजाड़ न दें। एक मनुष्य के लिए एक चरागाह का घेरा लगाना कुछ सहज काम नहीं है। किन्तु मुझे जब यह काम करना ही होगा तब बहुत सोचने से क्या होगा? मैं ऐसी उपयुक्त जगह ढूँढ़ने लगा जहाँ अच्छी हरियाली, पीने योग्य जल और विश्राम लेने के लिए वृक्षों की छाया हो।

बहुत खोजने पर एक जगह मिल गई। उपयुक्त जगह मिल जाने से मैं बहुत खुश हुआ और दो मील के विस्तार को घेरना शुरू किया। बकरी के इने गिने तीन बच्चों के लिए दो मील चरागाह की बात सुन कर सभी लोग हँसेंगे। दो मील का घेरा देना उस समय मेरे लिए कोई बड़ी बात न थी, क्योंकि तब मेरा ऐसा ही स्वच्छन्द समय था कि मैं दस मील का घेरा भी मज़े में दे सकता था। किन्तु उस समय मेरे ध्यान में यह बात न आई कि इतनी लम्बी चौड़ी जगह में बकरों को छोड़ देने पर ज़रूरत के समय उनका पकड़ना कठिन होगा। वे जैसे वन में हैं वैसे ही यहाँ भी स्वतन्त्र हो जायँगे। अन्दाज़न पचास गज़ का घेरा दे चुकने पर मेरे ध्यान में यह बात आई। तब मैंने डेढ़ सौ गज़ लम्बा और सौ गज़ चौड़ा स्थान घेरने का विचार किया। पीछे ज़रूरत होगी तो घेरे को बढ़ा कर चरागाह का क्षेत्र-फल और भी बढ़ा दूँगा।

इस समय मैंने बड़ी बुद्धिमानी का काम किया। घेरा देने में तीन महीने लगे। जब चारों ओर से जगह घेरी जा चुकी तब मैंने बकरी के बच्चों को उसके भीतर छोड़ दिया। मेरे

हाथ से दाना खा खाकर वे ऐसे पालतू हो गये थे कि चरागाह के भीतर भी वे मिमियाते हुए मेरे पीछे पीछे चलते थे।

एक साल के भीतर छोटे बड़े सब मिला कर मेरे पास बारह बकरियाँ और बकरे हुए। तीसरे साल में तैंतालीस हो गये। तब मैंने चरागाह के पास ज़मीन के पाँच टुकड़ों को घेरा और एक से दूसरे में जाने का दर्वाज़ा बना दिया।

अब मुझे मांस की कमी तो रही ही नहीं, प्रत्युत यथेष्ट दूध भी मिलने लगा। दूध मिलने की संभावना पहले चित्त पर न चढ़ी थी, पीछे जब इसका ख़याल हुआ तब मन में जो आनन्द हुआ उसका क्या पूछना है। उन बकरियों से पाँच सात सेर दूध प्रतिदिन मिलने लगा। यद्यपि मैंने इसके पूर्व कभी दूध नहीं दुहा था और दूध से मक्खन कैसे निकाला जाता है यह भी नहीं देखा था, तथापि प्रकृति ही विशेष शिक्षा देती है और अभाव ही नवीन कल्पना का उत्पादक होता है। अनेक बार विफल-प्रयत्न होने के बाद मैंने दूध से मक्खन और समुद्र-जल से नमक निकालना सीखा। एक दिन मैंने एक पहाड़ के ऊपर नमक की खान देखी। तब मुझे नमक का भी कष्ट न रहा।

ईश्वर का विधान बड़ा करुणा-पूर्ण है। उन्हें क़ैदी भी धन्यवाद देते हैं। असह्य दुःख को भी वे मधुमय बना देते हैं। मुझ सदृश पापिष्ठ के लिए भी उन्होंने इस निर्जन द्वीप में भाँति भाँति के खाद्य पदार्थों का संग्रह कर रक्खा है।

इस समय मैं ही मानों इस द्वीप का राजाधिराज हूँ। मेरी प्रजा का जीवन-मरण मेरे ही हाथ में है। मैं अपनी प्रजा को मार भी सकता और रख भी सकता हूँ। मैं अब

राजा की भाँति भोजन करने बैठता था तब मेरे भृत्य मुझे घेर कर बैठते थे। उनमें आत्माराम मेरा विशेष सम्मानास्पद था। मेरे साथ बातें करने की आज्ञा एक उसी को थी। वही एक मेरा मुँह-लगा मुसाहब था। मेरा अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण कुत्ता सामने और दो बिल्लियाँ दोनों बगल में बैठ कर प्रसाद पाने की अपेक्षा करती थीं। इस समय एक प्रगल्भ-वक्ता साथी को छोड़ मुझे और किसी वस्तु का अभाव-जनित कष्ट न था। ये वे बिल्लियाँ नहीं हैं जिन्हें मैं जहाज़ पर से लाया था। ये उन्हीं में के एक के बच्चे हैं। वे दोनों तो मर गईं। उनके बहुत बच्चे हुए थे, जिनमें ये दोनों तो पल गये और सब बनैले हो गये। पीछे से वे बड़ा उत्पात करने लगे। छिप कर घर की चीज़ें खा जाते थे और कितनी ही वस्तुओं को नष्ट-भ्रष्ट कर डालते थे। तब मैं निरुपाय होकर उन पर गोली चलाने लगा। कई एक के मरते ही अवशिष्ट आप ही भाग गये। मैं इस समय बेखटके शान्त भाव से निवास कर रहा हूँ।

खेती

मैं अपनी नाव के लिए अधीर हो उठा था, परन्तु उसके लिए फिर मैं विपत्ति में पड़ना भी नहीं चाहता था। अपनी डोंगी को देखने के लिए दिन दिन मेरी उत्सुकता बढ़ने लगी। आखिर मैंने स्थल मार्ग से उस नदी के मुहाने तक जाने का विचार किया जहाँ वह नाव बँधी थी। मैं किनारे किनारे चला। जिस स्वरूप से मैं रवाना हुआ, उस शकल में यदि कोई मुझे देखता तो निःसन्देह वह बहुत डरता या हँसते हँसते लोट पोट हो जाता। मैं आप ही अपने को देख कर हँसी न रोक सका। मेरे चेहरे का नमूना इस तरह था,—

सिर में चमड़े की बेडौल टोपी थी, जिसके ऊपर लम्बे लम्बे बाल लटक रहे थे। इसी ढंग का कोट और ढीला पायजामा था। पैरों में भी ऐसा ही एक चमड़ा लिपटा था। न उसे मोजा कह सकते हैं और न जूता ही। कमर के दोनों ओर चमड़े की पेटी से लगकर एक बसूला और एक कुल्हाड़ी झूल रही थी। गले में झूलती हुई एक चमड़े का थैली में गोली-बारूद थी। पीठ पर टोकरी, और कन्धे पर बन्दूक थी। हाथ में वही चर्मनिर्मित छतरी थी। आध हाथ लम्बी डाढ़ी लटक रही थी और मुँह पर पकी हुई लम्बी मोछें फहरा रही थीं।

ऐसा भयङ्कर चेहरा लेकर मैंने यात्रा की। पाँच छः दिन के बाद मैं उस मोड़ के पास आ पहुँचा जहाँ मेरी डोंगी स्रोत में पड़ कर मेरे हाथ से निकल गई थी। इस समय वहाँ स्रोत का चिह्न न देख पड़ा। मैं क्षुब्ध होकर इसका कारण सोचने लगा। सोचते सोचते मेरे ध्यान में यह बात आई कि भाटे के समय किसी नदी के स्रोत का ऐसा भयङ्कर वेग होता होगा।

मेरा यह अनुमान ठीक निकला। यथार्थ ही में जब भाटा आया तब फिर वैसा ही प्रखर स्रोत बहने लगा। तब मैंने सोचा कि ज्वार के समय डोंगी को उधर से ले आना सहज होगा, किन्तु ऐसा करने का साहस न हुआ। प्राणों को संकट में डालने की अपेक्षा फिर एक नाव बना लेना ही मैंने अच्छा समझा। उसके बनाने में अधिक समय और श्रम लगेगा तो लगे, यह मुझे स्वीकार है; पर उस सर्वनाशी प्रखर प्रवाह में जाने का साहस नहीं कर सकता।

इस समय मेरे दो खलिहान थे; एक मेरी चहार दीवारी के पास, और दूसरा कुञ्जभवन के भीतर। इन्हीं के आस पास

मेरे पालतू पशुओं की चरागाह थी। इसके चारों ओर पेड़ की डालों के खूब घने खंभे बनाकर और उन्हें धरती में गाड़ कर घेरा दे दिया था। वे शाखाएँ लगकर बड़े बड़े वृक्ष बन गई थीं। यह घेरा इस समय दीवाल की अपेक्षा मज़बूती में बढ़ा चढ़ा था। इन बातों से समझना चाहिए कि मैं कभी आलसी होकर नहीं रहता था, बराबर अपने कामों में लगा रहता था।

मेरा कुञ्जभवन द्वीप के प्रायः मध्यभाग में था इसलिए मैं आजकल अधिक समय तक यहीं रहता था और बीच बीच में डोंगी पर चढ़ कर किनारे के आस पास समुद्र में इधर उधर घूमता था। मैं एक रस्सी से अधिक दूर जाने का साहस न करता था।

अपरिचित पद-चिह्न

एक दिन मैं दोपहर को अपनी नाव की ओर जा रहा था। तब समुद्र के किनारे बालू के ऊपर किसी आदमी के पैर का चिह्न देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ। पदचिह्न देखते ही मैं वज्राहत की तरह स्तब्ध हो कर खड़ा हो रहा। चारों ओर दृष्टि उठाकर देखा, कान लगा कर सुना, परन्तु न कहीं किसी को देखा और न किसी को कुछ बोलते सुना। तब ऊँची जगह चढ़कर देखा; समुद्र के किनारे किनारे इधर उधर घूमकर पता लगाया किन्तु सिवा उस एकमात्र पद-चिह्न के और कहीं कुछ देख न पड़ा। फिर मैंने सोचा, वह चिह्न मेरे मन का भ्रम तो नहीं है, इसलिए मैं उस चिह्न को फिर अच्छी तरह देखने गया। देखा, भ्रम नहीं, वह सचमुच

मनुष्य के पैर का चिह्न था। पैर की उँगलियाँ तलुवा और पँड़ी आदि प्रत्येक अंश का स्पष्ट चिह्न विद्यमान है। मैं किसी भी तरह निर्णय न कर सका कि यह पद-चिह्न यहाँ कैसे पड़ा। मैं हतबुद्धि हो चिन्ताकुल चित्त से अपने क़िले में भाग आया। मैं उतनी दूर कैसे आया, चल कर या उड़कर? उस समय इसका मुझे कुछ ज्ञान न था। दो तीन डग आगे चलता था, फिर पीछे की ओर घूम कर देखता था, कि कोई आ तो नहीं रहा है। प्रत्येक पेड़ पौधे के पास जाते ही मेरा कलेजा काँप उठता था। दूर से पेड़ के तने को देख कर मुझे मनुष्य का भ्रम होता था।

जब मैं अपने क़िले के भीतर पहुँचा तब मेरी बुद्धि ठिकाने आई। मैं किस रास्ते से गया था और किस रास्ते लौटकर क़िले के भीतर पहुँचा—यह कुछ मुझे याद न था। मैं भय से ऐसा घबरा गया था कि मुझे तन मन की भी कुछ सुध न रही।

उस रात को मुझे नींद नहीं आई। मैं रात भर भय का काल्पनिक चित्र देखता रहा। अद्भुत हास्यजनक चिन्ता तरह तरह से चित्त को मथित करने लगी। आख़िर मैं यह सोच कर निश्चिन्त हुआ कि किसी असभ्य जाति की डोंगी शायद तीक्ष्ण धार में पड़कर या हवा की झोंक से किनारे पर आ लगी होगी; उसके बाद वे लोग इस निर्जन द्वीप के स्थलमार्ग से चले गये होंगे।

इस भावना का मन में उदय होते ही मैंने भगवान् को धन्यवाद दिया कि कुशल हुआ, मैं उस समय वहाँ उपस्थित न था; और यह भी अच्छा ही हुआ कि उन

लोगों ने मेरी नौका नहीं देखी, देखते तो वे इस द्वीप में मनुष्य की बस्ती का अनुमान करके ज़रूर मुझे ढूँढ़ते। तब नौका ही मेरी दुर्भावना का कारण हो उठी। असभ्य लोग यदि नौका देख कर मेरा पता लगालें तो वे मुझे मार कर खाही डालेंगे। यदि उन्हें मेरा पता न भी लगेगा तो भी वे मेरी खेती-बारी को नष्ट करके और बकरों को भगाकर चले जाँयगे। तब मैं खाने के बिना ही मरूँगा।

अब मेरे मन में चैतन्य हुआ। अब तक मैं साल भर के खर्च लायक़ अनाज उपजा कर ही यथेष्ट समझता था। भविष्य के लिए कुछ भी संचय नहीं रखता था। मानों मेरी ज़िन्दगी में कभी दुर्भिक्ष का समय आवेहीगा नहीं। मैंने अपनी इस मूर्खता के लिए अपने को धिक्कार दिया और भविष्य में अब दो-तीन साल के लिए खाद्य-सामग्री संचय करने का संकल्प किया।

मनुष्य का जीवन भगवान् की विचित्र रचना का बड़ा अनोखा नमूना है! घटना के साथ साथ मनुष्य के मानसिक भाव का बहुत कुछ परिवर्तन होता है। जो आज अच्छा लगता है वही कल बुरा मालूम होता है। जिसको कल देखने के लिए आज जी तरसता है उसीको परसों देख कर डर लगता है। मनुष्य का साथ छुट जाने से इतने दिन तक मैं उद्विग्न था, आज मनुष्य के पैर का एक मात्र चिह्न देख कर भय से पागल हो उठा हूँ। मनुष्य का जीवन ऐसा ही विषम है। अब मैंने बखूबी समझ लिया कि इस निर्जन द्वीप में अकेले ही रह कर मुझे जीवन व्यतीत करना होगा—यही ईश्वर को मंजूर है। ईश्वर कब क्या करेंगे, यह जानने का सामर्थ्य मनुष्य में नहीं है। इतने दिन तक मैंने यही समझ रक्खा था

कि ईश्वर दयालु और मङ्गलमय हैं इसलिए मैंने उनके इस विधान को शुभ मान लिया। तब मुझे बाइबिल के उस मधुमय वाक्य का स्मरण हो आया–विपत्ति में मेरी शरण गहो, मैं विपत्ति से तुम्हें छुड़ाऊँगा और तुम मेरी महिमा का प्रचार करोगे।

["अपि चेत् सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवहितोऽपि सः॥
शीघ्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥"

अर्जुन के प्रति भगवान् श्रीकृष्ण का कहा हुआ यह वाक्य बाइबिल के उपर्युक्त वाक्य से कुछ मिला जुला सा प्रतीत होता है। अस्तु।]

ऐसा ही सोच विचार करते कई सप्ताह बीत गये। किसी तरह वह सुन्दर उपदेश चित्त से न हटता था। एक दिन एकाएक मेरे मन में यह भावना हुई कि वह पद-चिह्न मेरा ही तो न था? जब मैं नाव से उतरा था तब का तो चिह्न नहीं है? इस बात का खयाल होते ही मेरा मन प्रफुल्ल हो उठा। भय दूर हुआ। मैंने अकारण इतना क्लेश पाया। अपनी इस मूर्खता पर मुझे बड़ी हँसी आई। कितने ही गवाँर आदमी जैसे अपनी छाया को देख कर भूत के भय से अभिभूत होते हैं उसी तरह मैंने अपना पद-चिह्न देख कर भय से इतना क्लेश पाया। मारे हँसी के मैं लोट-पोट हो गया। कितने ही लोग भ्रम में पड़ कर ऐसे ही भाँति भाँति के क्लेश सहते हैं।

इस नई भावना से साहस पा कर तीन दिन बाद मैं फिर बाहर निकला। घर में कुछ खाने की वस्तु भी न थी,

और इस बात का स्मरण हुआ कि तीन दिन से बकरियों का दूध भी नहीं दुहा गया है। न मालूम उससे उन्हें कितना कष्ट होता होगा। सम्भव है, कितनी ही बकरियों का दूध एक दम सूख गया हो। सब सोच विचार कर मैं क़िले से बाहर निकला। बाहर तो निकला पर एकदम निर्भय नहीं हुआ। कुछ दूर आगे जाता और फिर पीछे की ओर ताकता था। किसी किसी दफ़े पीठ पर की टोकरी फेंक कर घर भाग जाने को जी चाहता था।

इस प्रकार डरता हुआ दो-तीन दिन तक घर से बाहर आयागया। डरने की जब कोई जगह न देखी तब मन में कुछ विशेष साहस हुआ और उस पदचिह्न को देखने के लिए फिर समुद्र-तट पर गया। जा कर देखा, जहाँ पैर का चिह्न था वहाँ ख़ाली पैरों मैं कभी नहीं गया था; दूसरे मेरा पैर भी उतना लम्बा न था। इससे मेरा हृदय फिर भय से काँप उठा। मैं अपने हृत्कम्प को किसी प्रकार न रोक सका। मेरा सम्पूर्ण शरीर थर थर काँपने लगा। तब मैंने अपने मन में यही समझा कि इस द्वीप में कोई बाहर का आदमी आया है या इसी द्वीप के किसी अंश में मनुष्य का निवास है। सम्भव है, किसी दिन एकाएक किसी मनुष्य से भेंट हो जाय। अब मैं अपनी रक्षा के लिए क्या उपाय करूँ–इसका कुछ निश्चय न कर सका।

डरने से लोगों की बुद्धि लोप हो जाती है। पहले मन में यही आया कि घेरे को तोड़ ताड़ कर बकरों को जङ्गल में भगा दूँ, खेत को खोद कर उजाड़ डालूँ और कुञ्जभवन आदि स्थान को नष्ट भ्रष्ट कर दूँ। इससे कोई मेरा पता न पावेगा। कुछ देर के बाद ख़ूब सोच कर देखा तो जान पड़ा कि ऐसा करने से उस विपत्ति की अपेक्षा लाख गुना अधिक विपत्ति का भय उठ खड़ा होगा। मैं वैसा कुछ न कर सका।

यह द्वीप महादेश से अधिक अन्तर पर नहीं है इसलिए यहाँ मनुष्य का आना भी असम्भव नहीं। तब जो इतने दिनों से किसी का दर्शन नहीं हुआ है यह मेरा परम सौभाग्य है। मैं इस द्वीप में पन्द्रह वर्ष से निवास कर रहा हूँ; इतने दिन बाद यह कौन सा उत्पात आ खड़ा हुआ। जो हो, यहाँ असभ्यों के आने पर छिप सकूँ, ऐसा कोई निरापद स्थान ढूँढ़ निकालना आवश्यक है।

नया आविष्कार

मैंने अपने क़िले के पीछे वाली गुफा को खोद कर बड़ा किया था, इससे मेरे क़िले के भीतर घुसने का एक छोटा सा दर्वाज़ा बन गया था। इस बेजा काम के लिए इस समय मुझे अनुताप होने लगा। उस छिद्र को बन्द कर देने के लिए मैंने फिर एक घेरा बनाने का संकल्प किया। पहले खम्भों का घेरा बनाया था, तदनन्तर दूसरा घेरा दरख़्तों का बनाया था। इसको बारह वर्ष हुए। उसके बाद इस समय फिर ख़ूब मज़बूती के साथ खम्भों का अर्ध-चन्द्राकार एक तीसरा घेरा बनाया। इस घेरे के भीतर हाथ जाने लायक़ सात छिद्र रहने दिये। घेरे के बीच की जगह को मिट्टी से भर दिया और उसके ऊपर चल फिर कर उसे अच्छी तरह पैरों से दबा दिया। इसके अनन्तर उन सातों छिद्रों में अपनी सातों बन्दूकें रख दीं। वे कहीं गिर न पड़ें इसलिए लकड़ी की एक एक टेक लगा कर उन्हें अच्छी तरह स्थिर कर दिया। यदि अब मेरे क़िले पर कोई आक्रमण करेगा तो मैं एक साथ दो मिनट के भीतर सात बन्दूकें छोड़ सकूँगा। कई महीनों के कठिन

श्रम से यह सब काम सम्पन्न हुआ। इसके बाद घेरे के बाहर बहुत दूर तक पेड़ की डालें काट कर गाड़ दीं। दो वर्ष में मेरे घेरे के सामने एक उपवन सा बन गया। पाँच छः वर्ष में वह उपवन बृहत् दुर्भेद्य वन के रूप में परिणत हुआ। अब उस घन जङ्गल को देख कर कोई यह न समझेगा कि इसके भीतर कोई रहता है। मैं इस समय दो सीढ़ियों के ऊपर से हो कर क़िले के भीतर जाता-आता था। एक सीढ़ी बाहर जाने की ओर एक भीतर आने की थी। दोनों सीढ़ियों को भीतर रख लेने से सहसा कोई मेरे घर में प्रवेश करेगा, इसकी सम्भावना न थी। इस प्रकार अपनी प्राणरक्षा का, जहाँ तक मेरी बुद्धि की दौड़ थी वहाँ तक, मैंने प्रयत्न किया।

मैं केवल अपने घर को ही सुरक्षित करके निश्चिन्त न हुआ। अब मुझे अपने पालतू बकरों की चिन्ता हुई। अब मुझे शिकार का क्लेश उठाना नहीं पड़ता और न गोली-बारूद ख़र्च करनी पड़ती है। उन बकरियों से सहज ही में मेरे खाद्य की सामग्री मिल जाती है। अतएव किसी तरह इन उपयोगी जन्तुओं की रक्षा करनी चाहिए।

इसके लिए मैंने दो उपाय सोच निकाले। एक तो यह कि कहीं गुफा बना कर उसके भीतर बकरों को बन्द करके, अथवा छोटे छोटे घेरे बना करके उनमें थोड़े थोड़े बकरों को कुछ दूर दूर के फ़ासले पर रक्खा जाय। दूसरा उपाय कुछ अच्छा जान पड़ा। यदि एक घेरे के बकरे किसी तरह खो भी जायँगे तो दूसरे घेरे के बकरे-बकरियों से उनके वंश की वृद्धि होती रहेगी।

इसके लिए मैं कई दिनों तक द्वीप के गुप्त स्थानों की खोज में घूमता रहा। एक बार पहले जिस स्थल-मार्ग से

आने के समय में रास्ता भूल कर भटकने लग गया था वहीं, एक घने बन के भीतर, एक स्थान मेरे मन के अनुकूल मिला। ऐसे घने जंगल में घेरा लगाने के निमित्त मुझे विशेष कष्ट न उठाना पड़ा। इस जगह को घेर कर मैंने दो बकरों और दस बकरियों को लाकर यहाँ रक्खा और पूर्व के घेरे को भी घेर कर ख़ूब मज़बूत कर दिया।

मैं एक और जगह की तलाश करने लगा। द्वीप के पच्छिम ओर समुद्र के किनारे जा कर मैंने बहुत दूर एक नाव की तरह कुछ देखा। उसको देखते देखते मेरी आँखें चौंधिया गईं तथापि वह इतनी दूर थी कि ठीक ठीक निश्चय न कर सका कि वह क्या है। जहाज़ में मुझे दो चार दूरबीनें मिली थीं, पर इस समय एक भी मेरे साथ न थी। पहाड़ के ऊपर चढ़ कर देखा तो भी उसका कुछ निश्चय न कर सका। तब मैंने पहाड़ से उतर कर संकल्प किया कि अब बिना दूरबीन साथ में लिये बाहर न निकलूँगा। आख़िर वहाँ से आगे बढ़ा। जाते जाते मैं ऐसी जगह पहुँचा जहाँ इसके पहले कभी न गया था। वहाँ जाकर मैंने जो कुछ देखा, उससे निश्चय किया कि यहाँ मनुष्य के पैरों का चिह्न देखना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस ओर जंगली लोग प्रायः आते हैं। उनके पैरों के बहुत चिह्न यहाँ देख पड़े। मैंने ईश्वर को इस कृपा के लिए धन्यवाद दिया कि मैं जिधर हूँ उधर ये लोग नहीं जाते हैं।

मैंने दक्खिन और पूरब की ओर समुद्र के किनारे जाकर देखा कि मनुष्य की खोपड़ी, हाथ, पाँव और हड्डियाँ बहुतेरी इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। यह देख कर मेरे आश्चर्य और भय की सीमा न रही। एक जगह मैंने एक अग्निकुण्ड भी

देखा। मालूम होता है, वे राक्षस उस अग्निकुण्ड के चारों ओर बैठ कर मनुष्य का मांस खाया करते हैं।

यह दृश्य देख कर मैं अपनी विपदा की बात भूल गया। इन नर-पिशाचों के राक्षसी व्यवहार की बात ने मेरे हृदय में घर कर लिया। मैंने उस भीषण दृश्य की ओर से अपनी दृष्टि फेर ली। मेरा जी घूमने लगा। मूर्च्छित होने की तरह एक प्रकार से मैं अचेत होगया।

आख़िर खूब वमन कर डालने पर मेरा शरीर कुछ हलका सा हुआ। वहाँ से झट पट मैंने बड़े बड़े क़दम बढ़ा कर अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

मार्ग में जब मुझे कुछ होश हुआ तब ईश्वर की दया के लिए मेरा हृदय कृतज्ञ हो उठा। उन्होंने इतने दिनों से मुझे इन राक्षसों के हाथ से बचाया है, इससे मैंने सजल नेत्रों से उनको धन्यवाद दिया।

इस प्रकार ईश्वर की उदारता को मन ही मन सोचता हुआ मैं घर पहुँचा। घर पहुँच कर मैं अपने को बहुत कुछ निरापद समझ स्वस्थ हुआ। तब मैंने सोचा कि वे असभ्य राक्षस इस द्वीप में किसी को खोजने या कुछ लेने की आशा से अक्सर नहीं आते। मैं अट्ठारह वर्ष से यहाँ हूँ, पर एक दिन भी किसी मनुष्य की सूरत नहीं देखी। शायद और भी अट्ठारह वर्ष यहाँ रहूँगा, तब भी किसी को न देखूँगा। अब मुझे इतना सावधान होकर रहना चाहिए जिसमें मैं स्वयं उन धूर्तों के चंगुल में न जा फँसूँ। इस भय से मैंने दो वर्ष तक अपने घर की सीमा के बाहर पैर न रक्खा। यहाँ तक कि मैंने अपनी डोंगी की भी कुछ ख़बर न ली। उसकी आशा मैंने

एक दम छोड़ दी। उसे लाने के लिए जाकर यदि मैं असभ्यों के सामने पहुँच जाऊँ तो मेरी जो दशा होगी वह मैं जानता हूँ या विधाता जानते हैं। इसलिए मैंने एक और नाव बनाने का संकल्प किया।

जब यों ही अधिक समय बीत गया तब राक्षसों का भय बहुत कुछ जाता रहा। मैं पहले ही की भाँति निश्चिन्त भाव से अपना काम-धन्धा करने लगा। हाँ, चौकन्ना ज़रूर बना रहता था। वे नरभक्षी असभ्य कहीं आवाज़ न सुन लें, इस भय से मुझे बन्दूक़ चलाने का भी साहस न होता था। अब मैंने समझा कि बकरों को पाल कर मैंने सचमुच बड़ी बुद्धिमानी का काम किया है। यद्यपि मैं बिना बन्दूक़ लिये कभी बाहर नहीं जाता था तथापि दो वर्ष के बीच मैंने एक बार भी बन्दूक़ की आवाज़ नहीं की। यदि बकरे की आवश्यकता होती तो जाल बिछा कर पकड़ लेता था।

अभी मेरी जीवन-यात्रा के लिए अभाव-जनित कोई कष्ट न था। केवल इन अभागे राक्षसों के भय से मेरी बुद्धि स्तब्ध हो गई थी; इसलिए कोई नवीन वस्तु बनाने की उत्पादिका शक्ति भी मन्द हो गई थी। यदि कुछ चिन्ता थी तो उन्हीं राक्षसों की। दिन रात उनकी चिन्ता मेरे चित्त को घेरे रहती थी। कभी कभी मैं यह सोचता था कि वे हतभागे जो महा-मांस खाते हैं, सो इस राक्षसी वृत्ति से किसी तरह उनका मैं उद्धार कर सकता हूँ या नहीं? उन नर-मांस-भक्षियों को इस दुराचार का कुछ दण्ड दे सकता हूँ या नहीं। ऐसे ही न मालूम कितनी अद्भुत और असम्भव बातों को मैं सोचता रहता था। राक्षसों को इस द्वीप में न आने

देने के लिए कितने ही उपाय सोचता था किन्तु यह सोची हुई बात एक भी काम में परिणत न होती थी। होती कैसे? असम्भव बातें सोचता रहता था, कारण यह कि संकल्पित काम करने के लिए मुझे उनका सामना करना पड़ेगा। मैं अकेला और वे बीस-बाईस से गिनती में कम न रहते होंगे। मैं उनका शासन क्या करूँगा; मुझी को वे खा डालेंगे।

कभी कभी जी चाहता था कि जहाँ वे लोग आग जलाते हैं वहाँ मैं दो-तीन सेर बारूद गाड़ दूँ तो उसमें आग का संयोग होते ही उनमें से कितने ही अपने आप उड़ जायँगे। किन्तु मेरे पास बारूद बहुत कम बच रही थी। अभी उसे इस तरह ख़र्च करने को मैं राज़ी नहीं हुआ। अतएव इस इरादे को भी छोड़ देना पड़ा।

गुफा का आविष्कार

पहले की सोची हुई एक भी बात जब चरितार्थ न हो सकी तब मैंने सोचा कि मैं किसी जगह अपनी बन्दूक़, पिस्तौल, और तलवार लेकर छिप रहूँगा और राक्षसों को देखते ही उन पर धड़ाधड़ गोलियाँ चलाऊँगा। प्रत्येक बार की गोली में दो तीन को मारूँगा, और दो एक को घायल भी करूँगा। इसके बाद उनके बीच में कूद पड़ूँगा और कितनों ही पर सफ़ाई से तलवार का हाथ जमाऊँगा। इससे जो वे बीस-बाईस भी होंगे तो भी मैं उन पर विजय प्राप्त कर सकूँगा।

यही उपाय सबसे अच्छा जान पड़ा। मैं जब तब इसी उपाय को सोचता था। इस बात की चिन्ता बराबर मेरे

चित्त में बनी रहती थी। मैं कभी कभी स्वप्न भी देखा करता था कि उन राक्षसों को मार रहा हूँ।

इस काम पर मैं यहाँ तक आरूढ़ हुआ कि अपने को अच्छी तरह छिपाने योग्य एक गुप्त स्थान की खोज में घूमने लगा। मैंने पहाड़ की तराई में एक ऐसी जगह ढूँढ़ निकाली जहाँ छिप कर मैं राक्षसों की नौका देख सकूँ और जङ्गल में कई एक ऐसी जगहें ठीक कर रक्खीं जहाँ पेड़ की आड़ में छिप कर उन पर एकाएक गोली बरसा सकूँ।

इस विचार को पक्का करके मैं रोज़ सबेरे दो तीन बन्दूकों में और पिस्तौल में गोली भर कर उस पहाड़ के ऊपर जाता और देखता कि उन राक्षसों की नौका आती है या नहीं। वह जगह मेरे क़िले से तीन मील पर थी। सिर्फ़ इतनी ही दूर मैं प्रतिदिन जाता-आता था। पर मैंने किसी दिन किसी को देखा नहीं। दूरबीन लगा कर भी सारे समुद्र में देखता भालता, पर कहीं कोई नाव का चिह्नमात्र भी दिखाई नहीं देता था।

जब तक उत्साह था तब तक मुझे अकारण बीस-बाईस मनुष्यों को मारने की इच्छा अत्यन्त प्रबल थी। किन्तु उन लोगों को कहीं न देख कर जब मेरा उत्साह घट गया—जब तमोगुण की मात्रा कुछ कम हुई—तब शान्त चित्त से सोच कर मैंने देखा कि उन बेचारों का दोष क्या था जो मैं इतने दिनों से उनको मारने पर उद्यत था। मनुष्य का मांस खाना उनके देश का रिवाज है। उन लोगों ने कभी अच्छी शिक्षा नहीं पाई है, केवल अपनी प्रकृति की उत्तेजना से जो उनके जी में आता है, करते हैं। उन लोगों के गुण-दोष की विवेचना करने का मुझे क्या अधिकार है? उन लोगों ने

अब तक मेरा क्या बिगाड़ा है? हम लोग भी तो जीवहिंसा-जनित क्लेश का कुछ विचार न कर के उदर-तृप्ति के लिए पशु को मार डालते हैं, युद्ध में पकड़े गये शत्रु-पक्ष के सैनिकों को बन्दी करके उनकी हत्या करते हैं। आत्म-समर्पण करने पर भी, क्रोध के वशीभूत होकर, शत्रु-सैन्य को मार डालते हैं। इस पर भी हम लोग अपनी सभ्यता की डींग हाँकते हैं। वे लोग भी वैसे ही अपने शत्रुओं को मार कर खाते हैं। इससे उन लोगों के मन में कोई विकार उत्पन्न नहीं होता और न उन लोगों का आत्मा दुखी होता है। वे लोग इस अत्याचार को अत्याचार नहीं समझते। उनकी समझ में नहीं आता कि यह महाजघन्य कर्म है। इस विषय में ईसाई लोग भी तो कम नहीं होते। उन लोगों ने अमेरिका और आफ्रिका के आदिम निवासियों को निर्दय भाव से मार कर गाँव के गाँव नष्ट कर दिये। क्या मैं भी उन्हीं की सी निष्ठुरता करके उनका अनुयायी बनूँगा?

इन बातों को भली भाँति सोचने से मेरा अयुक्त हत्या का उत्साह एकदम कम होगया। तब मुझे मालूम हुआ कि यह मैं सरासर अन्याय करने चला था। जब वे लोग मुझ पर आक्रमण करेंगे तब जो उचित होगा किया जायगा। इसके पूर्व उन लोगों को छेड़ना आप ही अपनी मृत्यु को बुलाना है। यदि मैं उन सबों को न मार सकूँगा तो मेरी क्या गति होगी।

इस सावधानी और सुबुद्धि का साथ धर्मभाव ने दिया। मैं जो रक्तपात के पाप से निवृत्त हुआ एतदर्थ मैंने परमेश्वर को बार बार धन्यवाद दिया। इसी तरह एक वर्ष और बीता।

मैं अपनी डोंगी को खींच कर द्वीप के पूरब ओर एक समुद्र-संलग्न बृहत् जलाशय में ले गया और नाव में जो कुछ चीज़ें थीं उनको उस पर से उतार लाया। अब मैं पहले की तरह बाहर घूमने न जाता था। कौन जाने, एक बार सिर्फ़ पैर का चिह्न देखा है, अब की बार यदि उन पद-चिह्न वालों का ही साक्षात् दर्शन हो। उनके सामने पड़ कर उनके हाथ से उद्धार पाना कठिन होगा। इस समय मेरे मन की वह तमोगुणप्रधान समुद्भाविनी शक्ति एकदम नष्ट हो गई थी। यहाँ तक कि एक लोहे की छड़ गाड़ने या लकड़ी काटने का भी साहस न होता था। बन्दूक़ की आवाज़ करना तो दूर की बात थी।

सब से अधिक डर लगता था मुझे आग जलाते, कारण यह कि धुँआँ बहुत दूर से देख पड़ता है। यदि उसे कोई देख ले? इसलिए अब से मैं आग का काम अपने कुञ्जभवन में करने लगा।

आग का जलाना कठिन हो गया, परन्तु बिना आग के काम भी तो नहीं चलता था। इसलिए कुछ कोयले बना कर रखना उचित समझा। मैंने अपने देश में देखा था कि लकड़ी में आग लगा कर ऊपर से मिट्टी और घास से दबा देते थे, तब कुछ देर में लकड़ी जल कर कोयला हो जाती थी। मैं भी इस प्रकार कोयला बनाने के लिए एक दिन अपने कुञ्ज-भवन में लकड़ियाँ काट रहा था। लकड़ी काटते काटते मैंने एक झुरमुट के पास, पहाड़ के नीचे, एक गढ़ा देखा। मैं पेड़ से उतरा और कुतूहलाक्रान्त होकर उसे देखने गया। बड़े कष्ट से झुरमुट के पत्तों को हटा कर मैंने गढ़े के मुँह के सामने जाकर देखा, जगह मेरे पसन्द लायक़ थी। उसके भीतर मैं

खड़ा हो सकता था तथा दो आदमी और भी मेरे पास ही पास खड़े हो सकते थे। यह गुफा देख कर मेरे आनन्द की सीमा न रही। मैंने इसी के भीतर अपना गुप्तस्थान बनाने का निश्चय किया। यदि कोई असभ्य इस कन्दरा के मुँह के पास तक आवेगा तो भी वह सहसा इसके भीतर प्रवेश करने का साहस न करेगा। मुझको छोड़ दूसरा कोई इसके भीतर घुसने का साहस करता या नहीं, इसमें सन्देह है।

मैंने गुफा के भीतर प्रवेश किया। भीतर भयानक अन्धकार था। अच्छी तरह देखने के लिए आँखें फाड़ कर देखा कि किसी के दो नेत्र उस अन्धकार में तारों की तरह चमक रहे हैं। वह मनुष्य था या शैतान? कौन जाने क्या था? मैंने उसके शरीर का और आकार तो देखा नहीं, देखा सिर्फ़ वही एक अद्भुत ज्योतिर्मय पदार्थ। तब मैं एक ही छलाँग में कूद कर गुफा के बाहर निकल आया।

कुछ देर के बाद सँभल कर फिर मैंने साहस किया। एक धधकती हुई लकड़ी लेकर मैं गुफा के भीतर घुसा। तीन चार डग जाते न जाते एक कष्ट-जनक दीर्घश्वास और कराहने का शब्द सुन कर मैं फिर पूर्ववत् डर गया। मेरा शरीर पसीने से तर बतर हो गया। बार बार रोमाञ्च होने लगा। कुछ देर बाद फिर साहस किया और यह सोचा कि भगवान् सर्वत्र रक्षक हैं—"जाको राखे साँइयाँ मारि सकै नहिं कोय।" मैं फिर गुफा में गया और उस प्रज्वलित लकड़ी को ऊपर उठा कर देखा कि एक बहुत बूढ़ा बकरा मरणासन्न पड़ा है। मैंने उसे हाथ से ज़रा ढकेला, तो उसने उठने की चेष्टा की, पर वह उठ न सका। तब मैंने कहा कि अच्छा,

इसे यहीं पड़ा रहने दो। यदि कोई साहस कर के भीतर आवेगा तो मेरी ही भाँति भयभीत होगा।

मैंने अब स्थिर होकर अच्छी तरह देखा। गुफा बहुत बड़ी न थी, ज़्यादा से ज़्यादा भीतर का विस्तार बारह फुट होगा। वह न गोल थी न चौकोर, उसका कोई निर्दिष्ट आकार न था। गुफा के एक तरफ़ एक पतली सुरङ्ग थी। कौन जाने, वह कहाँ कितनी दूर तक गई है। आज मेरे पास बत्ती न थी, इससे आज उसके भीतर न गया। कल बत्ती और चकमक साथ में लेकर इसमें प्रवेश करूँगा। इसके भीतर घुटनों के बल जाना होगा।

दूसरे दिन अपने हाथ से बकरे की चर्बी की बड़ी बड़ी छः बत्तियाँ बनाईं। उन्हें साथ ले कर मैं गुफा के भीतर गया और घुटनों के बल सुरङ्ग में घुसा। लगभग दस गज़ भीतर घुस कर मैंने सोचा, कौन जाने मैं कहाँ जा रहा हूँ। कुछ और आगे बढ़ने पर सुरङ्ग की छत ऊँची देख पड़ी। मैंने खड़े होकर देखा, कि एक छोटी सी कोठरी है, ऊँचाई अन्दाज़न बीस फुट होगी। मैंने वहाँ जो विलक्षण दृश्य देखा, वैसा कभी कहीं न देखा था। इस गुफा की दीवार और छत से मेरी बत्ती के प्रकाश का लाख गुना प्रत्यालोक मेरे चारों ओर प्रतिफलित होने लगा। वह बड़ा उज्ज्वल और विचित्र था। बड़ा अद्भुत चमत्कार था। दीवारों में हीरे जड़े थे या सोने के पत्तर मढ़े थे—कुछ मालूम न हुआ। यह कोठरी बड़े आराम की थी। नीचे की ज़मीन खूब सूखी और साफ़ थी। बीच में पत्थर के टुकड़े बिछे थे। कहीं एक भी कीड़ा-मकोड़ा न था। यहाँ मेरे लिए एक मात्र प्रवेश

की असुविधा थी; किन्तु इस संकीर्ण पथ से सुरङ्ग और भी सुरक्षित है, यह जान कर मैंने इसे सुभीता ही समझा।

इस गुफा के आविष्कार से मेरे हर्ष की सीमा न रही। जिन वस्तुओं की मुझे विशेष चिन्ता थी, उन्हें अब शीघ्र ही लाकर यहाँ रख देना चाहा। गोली, बारूद और फ़ालतू तीन बन्दूकों को पहले यहाँ लाकर रक्खा। जिस बारूद के पीपे में पानी घुस गया था उसे तोड़ कर देखा, तीन चार इञ्च बारूद चारों ओर पानी पड़ने से जम कर बैठ गई थी, उसके भीतर पानी न पहुँचा था। इसलिए पीपे के बीच की बारूद बहुत अच्छी थी। यह विस्मय मेरे लिए विशेष आनन्दवर्द्धक हुआ। इस पीपे से मैंने तीस सेर बढ़िया बारूद निकाली।

वह बूढ़ा बकरा दूसरे दिन मर गया। उसको खींच कर बाहर फेंकने की अपेक्षा मैंने उसे वहीं गाड़ देना अच्छा समझा। मैंने गढ़ा खोद कर उसे वहीं गाड़ दिया।

मैं अब बिलकुल निर्भय होगया। पाँच सौ असभ्य आवेंगे तब भी मेरा पता न पावेंगे।

द्वीप में असभ्य

देखते ही देखते इस द्वीप में मेरे तेईस वर्ष कट गये। मैं इस निर्जन प्रवास-वास में ऐसा अभ्यस्त होगया था कि असभ्यों का भय न रहता तो मैं बूढ़े बकरे की भाँति शान्ति-पूर्वक यहीं वृद्ध होकर अपना जीवन बिता देता। मैंने यहाँ अपना जी बहलाने का भी प्रबन्ध कर लिया था।

मेरा तोता मेरे साथ आत्मीय-भाव से मीठी मीठी बातें करता था। पक्षी के मुँह से ऐसी स्पष्ट बातें मैंने और कभी नहीं सुनी थीं। वह छब्बीस वर्ष मेरे पास रहा। मेरा कुत्ता भी, बन्धु की भाँति सोलह वर्ष मेरे साथ रह कर, वृद्ध होकर मर गया। मेरी पालतू दो तीन बिल्लियाँ भी मेरे आत्मीयजनों के अन्तर्गत थीं। और भी कितने ही पालतू बकरे, दो एक सुग्गे, तथा कितने ही जलचर पक्षी मेरे साथी बन गये थे। उन चिड़ियों के मैंने डैने कतर दिये थे। इससे वे मेरे घेरे के पेड़ों पर रहा करती थीं। उन्हें देख कर मैं अत्यन्त आनन्द पाता था। किन्तु मनुष्य-जीवन का सुख सदा निरवच्छिन्न नहीं रहता। जिसे दूर करने की इच्छा होती है वही आगे आ खड़ा होता है। जिसे दुःख समझते हैं उसी के भीतर सुख का नूतन बीज छिपा रहता है।

दिसम्बर का महीना है। खेती का समय है। मैं खूब तड़के बिछौने से उठ कर बाहर मैदान में गया। समुद्र के किनारे अन्दाज़न दो मील पर आग जलते देख कर मैं अचम्भे में आ गया। यह आग द्वीप के अपर भाग में न थी, मेरे दुर्भाग्य से मेरे ही घर की ओर थी।

मैं भय और आश्चर्य से स्तब्ध होकर अपने कुञ्जभवन के भीतर छिप रहा। कदाचित् अलक्षित भाव से वे असभ्यगण मुझ पर आक्रमण करें, इस भय से मैं आगे बढ़ने का साहस न कर सका। वहाँ भी देर तक ठहरना उचित नहीं समझा। क्या जानें, यदि मेरे खेत या मेरे हाथ का कोई काम देखने से उन्हें यहाँ मनुष्य-वास का गन्ध मिले तब तो वे लोग मेरा पता लगाये विना न छोड़ेंगे। यह सोच कर मैं अपने क़िले के पास दौड़ आया और बाहर जो कुछ चीज़ें

थीं उन्हें क़िले के भीतर रख दिया, जिसमें किसी को यह न मालूम हो कि यहाँ कोई आदमी रहता है । फिर भीतर जाकर बाहर की सीढ़ी खींच ली ।

अब मैं कुछ स्थिर होकर आत्म-रक्षा का प्रबन्ध करने लगा । बन्दूकों को भरा और क़िले की दीवार से सटा कर रख दिया । अब मैं ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करने लगा । मैं क़िले के भीतर दो घंटे किसी तरह बैठा, फिर बाहर की ख़बर लेने के लिए व्यग्र हो उठा । मेरे पास चर तो था नहीं जिसे जासूसी के लिए भेजता । कुछ देर और अपेक्षा करके सीढ़ी लगा कर पहाड़ के ऊपर ठहराव की जगह उतर आया । फिर सीढ़ी को पहाड़ से लगा कर उसकी चोटी पर चढ़ गया । वहाँ लेट कर स्थिर दृष्टि से देखा, आग के चारों ओर नौ असभ्य बैठे हैं, जो सब के सब नंगे हैं । ऐसा जान पड़ा जैसे ये लोग राक्षसीवृत्ति को चरितार्थ करने के लिए मनुष्य का मांस पका रहे हों ।

उन लोगों के साथ दो डोंगियाँ थीं । दोनों को खींच कर उन्होंने बालू के ऊपर ला रक्खा है । अभी भाटा था, शायद ज्वार आने पर नाव को बहा कर ले जाने की अपेक्षा से वे लोग बैठे हैं । पीछे उन लोगों को अपने घर की ओर और इतने सन्निकट आते देख कर मैं तो भय से सूख कर काठ हो गया । किन्तु इतना मैं समझ गया कि वे लोग भाटा पड़ने के समय आते हैं और ज्वार आते ही चल देते हैं । इसलिए ज्वार के समय मैं ख़ूब निश्चिन्त होकर खेती-बारी का काम कर सकूँगा । यह सोच कर मैं ख़ुश हुआ ।

ज्वार आने के एक आध घंटा पहले ही से वे लोग आग की परिक्रमा कर के नाना प्रकार के अङ्ग विक्षेप के साथ

नाचने लगे। मैं दूरबीन के द्वारा उन लोगों का अङ्ग विक्षेप स्पष्ट रूप से देख रहा था। वे बिलकुल नङ्ग धड़ङ्ग थे। एक भी वस्त्र उनके शरीर पर न था। वे लोग पुरुष थे या स्त्री, अथवा उनमें कितने पुरुष और कितनी स्त्रियाँ थीं, यह इतनी दूर से मैं नहीं जान सका।

ज्वार आते ही उन लोगों ने नाव खोल दी और लग्गा ले कर नाव खेने लगे। उन लोगों को जाते देख कर मैं झटपट दोनों कन्धों पर दो बन्दूकें, कमरबन्द में दो पिस्तौल और हाथ में नङ्गी तलवार ले कर जिधर उन नृशंसों को देखा था उधर खूब ज़ोर से दौड़ कर गया। इतना बड़ा बोझ ले कर वहाँ पहुँचते प्रायः दो घंटे लग गये। वहाँ जा कर देखा कि छोटी बड़ी सब मिला कर पाँच डोंगियाँ आई थीं। वे सब की सब एक साथ समुद्र के अपर तट में जा रही हैं। कैसा भयङ्कर दृश्य है! उस समय भी वहाँ आग के चारों ओर उन लोगों के प्रचण्ड आनन्द का कारण दग्ध नर-मांस और नर-कपाल जहाँ तहाँ बिखरे पड़े थे। यह हृदय-विदारक दृश्य देख कर उन नर-मांस-खादकों को मारने की प्रवृत्ति और भी प्रबल हो उठी।

वे लोग कभी कभी यहाँ आते थे। इसके बाद पन्द्रह महीने तक उन लोगों के आने का कोई चिह्न दिखाई नहीं दिया तो भी मैं बराबर भयभीत बना रहता था। सदा विपत्ति के भय से दबा रहना बड़ी विडम्बना है। इसकी अपेक्षा विपत्ति का आ जाना कहीं अच्छा है। मैं भी नर-खादकों के भय से मन ही मन पक्का नरघाती बन गया। इस दफ़े उन लोगों के आने पर किस उपाय से उन्हें मार डालना होगा, इसी की चिन्ता सदा मन में लगी रहती थी। रात में

खूब अच्छी नींद नहीं आती थी। मैं भयङ्कर स्वप्न देख कर चौंक उठता था। योंही महीने पर महीना बीतने लगा।

द्वीप के पास जहाज़ का डूबना

क्रम क्रम से मई महीना आया। उस दिन सोलहवीं तारीख़ थी। मेरी काठ की यंत्री की गणना से यही ठीक था। दिन भर आँधी के साथ साथ पानी बरसता रहा। रात में भी हवा का वेग कम न हुआ। वज्र-विद्युत् का प्रभाव भी ज्यों का त्यों बना रहा। मैं बैठ कर बाइबिल पढ़ रहा था। एकाएक समुद्र में तोप का धड़ाका सुन कर मैं चकित हुआ। मैं आश्चर्यान्वित हो कर झट अपने आसन से उठ बैठा। सीढ़ी के सहारे पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर मैंने देखा, जिस तरफ़ स्रोत के प्रखर वेग में पड़ कर मेरी नाव बह चली थी उसी ओर आग की झलक दिखाई दी। मैंने निश्चय किया कि वहीं से तोप की आवाज़ आई है। यथार्थ में थी भी यही बात। आध मिनट के बाद फिर तोप का शब्द सुन पड़ा। कोई जहाज़ तूफ़ान में पड़ कर साहाय्य का संकेत कर रहा है। मेरी समझ में झट एक बात आगई। मेरे आस पास वहाँ जितनी सूखी लकड़ियाँ थीं सब को मैंने इकट्ठा किया और चकमक से आग बना कर उसमें बत्ती लगा दी। आग लगते ही बल उठी। ऐसा करने का मेरा यह अभिप्राय न था कि मैं उस जहाज़ की कुछ सहायता कर सकूँगा। मेरा इरादा तो यह था कि वही शायद मेरी कुछ सहायता कर सके। मेरे द्वारा प्रज्वलित आग का प्रकाश जहाज़ के लोगों ने देख लिया। मेरी आग की ज्वाला ऊपर की ओर उठते ही पहले

तोप की आग की झलक देख पड़ी फिर पीछे शब्द सुन पड़ा। उसके बाद धड़ाधड़ तोप की आवाज़ होने लगी। मैंने सारी रात बैठ कर आग जलाई। सुबह होने पर बहुत दूर समुद्र में कुछ दिखाई दिया, किन्तु दूरबीन लगा कर भी मैं ठीक न कर सका कि वह क्या था।

मैं दिन भर बार बार उसी ओर देखने लगा किन्तु उससे कुछ फल न हुआ। मैंने सोचा कि कोई जहाज़ लंगर डाले ठहरा है। मैं बन्दूक लेकर झट पहाड़ से उतरा और द्वीप के दक्षिण ओर दौड़ा गया। वहाँ पहाड़ पर चढ़ कर नैराश्य भाव से देखा, वह एक टूटा हुआ जहाज़ था। उसी भँवर के पास वह पहाड़ से टकरा कर टूट जाने के कारण जल-मग्न हो गया है। उसके नाविक और यात्री क्या हुए, कहाँ गये, इसका कुछ पता नहीं। उस भग्न जहाज़ को देख कर मैं बहुतेरा अनुमान करने लगा। मैं जिस अवस्था में था उसमें उन लोगों की विपत्ति में समवेदना प्रकट करने के अतिरिक्त और साहाय्य कर ही क्या सकता था! शायद दूसरे जहाज़ ने उन लोगों का इस विपदा से उद्धार किया हो; किन्तु उसका कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया। तो क्या इतने जीव सब के सब एक साथ डूब मरे? हाय! यदि उनमें से एक भी आदमी बच कर मेरे पास आता, तो मैं संगी पाकर कितना खुश होता! उसके साथ बात चीत कर के जी का बोझ हलका करता। उन नौकारोहियों में कोई बचा या नहीं, यह मुझे मालूम न हुआ। किन्तु कई दिनों के बाद एक जलमग्न लड़के का मृत कलेवर उतराता हुआ समुद्र के किनारे आ लगा था। उसकी पोशाक नाविक की थी। वह किस देश या किस जाति का था यह, उसे देख कर

मैं न जान सका। उसके पाकेट में दो अठन्नियाँ और एक तम्बाकू पीने का नल था। तम्बाकू के नल को मैंने रुपये से कहीं बढ़ कर मूल्यवान् समझा।

तूफ़ान रुक गया था। मैं अपनी डोंगी पर चढ़कर उस भग्न जहाज़ को देखने के लिए अत्यन्त उत्कण्ठित होने लगा। संभव है, उसमें मेरे लिए आवश्यक अनेक पदार्थ मिल जायँ। इसकी अपेक्षा मुझे यह भावना और भी उत्साहित करने लगी कि उसमें यदि कोई प्राणी असहाय अवस्था में होगा तो उसके प्राण बचा सकूँगा। यह संभावना मेरे मन को क्षण क्षण में इस प्रकार उत्तेजित करने लगी जैसे इस काम के लिए ईश्वर मुझे प्रेरणा कर रहे हों। उन्हीं के प्रेरणा-विधान पर अपने को निर्भर कर मैं जहाज़ देखने के लिए जाने की आयोजना करने लगा। मैं अपने क़िले के भीतर आकर एक बड़ा पानी, कुछ रोटियाँ, थैली भर सूखे अंगूर और एक दिग्दर्शकयन्त्र लेकर नाव में रख आया। इसके बाद फिर लौट कर क़िले के अन्दर से एक थैली में खाना, अपनी छतरी, एक घड़ा और पानी, दो दर्जन चपातियाँ, कुछ पूवे, बोतल भर दूध, और कुछ खोया साथ लेकर पसीने से तरबतर होता हुआ बड़े कष्ट और कठिनाई से अपनी डोंगी तक पहुँचा। सब चीज़ों को डोंगी पर लाद कर और भगवान् का नाम लेकर मैं डोंगी में सवार हो रवाना हुआ और धीरे धीरे उस भीषण स्रोत के पास पहुँचा। उसका वह तीव्र वेग देख कर मेरा जी सूखने लगा। आख़िर मैंने ज्वार आने पर जाने का निश्चय किया।

वह रात मैंने नाव ही पर बिताई। सबेरे ज्वार आते ही मैंने डोंगी खोल दी। दो ही घंटे में प्रखर-प्रवाह के सहारे उस टूटे हुए जहाज़ के पास जा पहुँचा। जहाज़ की दुर्दशा देख

कर मेरी छाती फट गई। वह दो पहाड़ों के बीच में पड़कर चूर चूर हो गया है। उसका अगला और पिछला हिस्सा समुद्र की तरङ्ग-ताड़ना से भग्न हो गया है। जहाज़ की गढ़न देख कर मैंने समझ लिया कि वह स्पेन देश का था।

जहाज़ के पास डोंगी के पहुँचते ही जहाज़ पर एक कुत्ता मेरी ओर झुक झुक कर भूँकने लगा। मेरे बुलाते ही वह समुद्र में कूद पड़ा। मैंने उसे अपनी डोंगी पर चढ़ा लिया। वह बेचारा मारे भूख-प्यास के अधमरा सा हो गया था। मैंने ज्योंही उसके आगे एक रोटी फेंकी त्योंही वह उसे एक ही बार में निगल गया। तब उसे पीने को थोड़ा सा पानी दिया। यदि मैं उसे पानी पीने से न रोकता तो शायद वह इतना पानी पी लेता कि पेट फटने से मर जाता। इसके बाद मैं जहाज़ के ऊपर गया। देखा, रसोईघर में दो आदमी एक दूसरे से चिपके हुए मरे पड़े हैं। इस कुत्ते के सिवा जहाज़ पर एक भी प्राणी जीता न मिला। दो सन्दूक मिले। उनमें क्या है, यह देखे बिना ही उन्हें उठा कर मैं अपनी डोंगी पर ले आया। कमरे के भीतर कई बन्दूकें और बारूद की थैलियाँ थीं। बन्दूकों की आवश्यकता न थी। केवल बारूद उठाकर ले आया। कितने ही काठ के बर्तन, जंज़ीर, चिमटा और कोयला खोदने के कुदाल मिले। ये चीज़ें बड़ी आवश्यक थीं। इन चीज़ों और कुत्ते को लेकर मैं लौट चला, कारण यह कि भाटा शुरू हो गया था।

मारे परिश्रम के थक कर मैं साँझ को अपने द्वीप में लौट आया। इतना थका था कि नाव से उतरने का साहस न हुआ। उस रात को नाव में ही सो रहा। जहाज़ से लाई हुई नई चीज़ों को घर न ले जाकर नवीन गुफा के भीतर रखने का निश्चय किया। सबेरे उठकर सब चीज़ों को

किनारे उतर कर ले गया और देखने लगा कि कौन कौन चीज़ें हैं।

सन्दूक खोला। उसमें बहुत सी ज़रूरी चीज़ें मिलीं। सन्दूक में मुख्य चीज़ें थीं आटा, बोतल में भरी कुछ मिठाई, अच्छी अच्छी कमीज़ें, डेढ़ दर्जन रूमाल और छींट का गुलूबन्द। इस उष्ण-प्रधान देश में हाथ मुँह पोंछने के लिए रूमाल की बड़ी आवश्यकता थी। दूसरे सन्दूक में रुपये, सोने का पत्र और बारूद थी।

यद्यपि ये चीज़ें प्रयोजनीय थीं परन्तु ऐसी न थीं जिससे मेरा विशेष उपकार होता। रुपया बहुत मिला ही तो किस काम का, वह तो अभी मेरे पैर की धूल के बराबर है। उसकी न यहाँ कुछ उपयोगिता है और न कुछ मोल है। दो तीन जोड़े जूतों के बदले में ये सब रुपये ख़ुशी से दे सकता था। बहुत दिनों से जूते न होने से कष्ट हो रहा था। जहाज़ के रसोईघर में जो दो आदमी लिपटे हुए मरे पड़े थे, उनके पैरों से मैं दो जोड़े जूते खोल कर लाया था और दो जोड़े सन्दूक में मिल गये। किन्तु ये पहनने में उतने सुखप्रद न थे।

इस जहाज़ में बहुत धन-रत्न थे। किन्तु जिस भाग में वे सब थे वह जल में डूब गया था; नहीं तो मैं कई नाव सोने चाँदी और रुपयों से अपनी गुफा को भर देता। इस अवस्था में भी मेरे पास धन की कमी न थी। यथेष्ट धन था, तथापि उस धन से मैं धनवान् थोड़े ही था।

मैं उन चीज़ों को ढोकर ले आया और यथास्थान रख दिया। फिर नाव को अड्डे में ले जाकर बाँध आया। इसके बाद मैं घर गया। वहाँ सब चीज़ें ज्यों की त्यों रक्खी थीं।

अब मैं विश्राम करने की इच्छा से निश्चिन्त हो घर में रहने लगा। प्रायः बाहर न जाता था। यदि कभी जाता भी था तो पूरब ओर। क्योंकि उस ओर असभ्यों के आने की संभावना कम थी, इससे उस तरफ़ जाने में बन्दूक-बारूद आदि का भार ढोना न पड़ता था। इस तरह और दो साल गुज़र गये। किन्तु मैं अपने लिए आप ही शनिग्रह था। मैं अपने को कहीं स्थिर न रहने देता था। कभी जी में आता था कि एक बार फिर उस भग्न जहाज़ में जाऊँ; कभी मन में यह तरङ्ग उठती थी कि किसी तरह महासमुद्र के पार हो जाऊँ। यदि आफ्रिका का वह जहाज़ मेरे पास रहता तो जैसे होता मैं समुद्र में धँस पड़ता। जो लोग अपनी अवस्था में सन्तुष्ट नहीं रहते उन लोगों में मेरा नम्बर सब से ऊपर है। उन लोगों के लिए मैं ही शिक्षा का स्थल और ज्वलन्त उदाहरण हूँ। मैं अपने बाप के घर से असन्तुष्ट होकर, न मालूम कितनी दुर्दशा भोगकर, ब्रेज़िल में एक प्रकार से कुछ स्थिति पा गया था, किन्तु वहाँ भी सुख से रहना नसीब न हुआ। फिर मेरे सिर पर भूत सवार हुआ। मैं फिर शनिग्रह के फेर में पड़ा। कितने ही कष्ट सहे। अब भी, मैं सुख से हूँ तथापि मुझे अपनी अवस्था पर सन्तोष नहीं। इसके बाद न मालूम और कितना दुःख कपार में लिखा है। किसी ने सच कहा है—सन्तोषेण बिना पराभवपदं प्राप्नोति मूढ़ो जनः।

भृत्य-प्राप्ति

अपने इस द्वीपनिवास के चौबीसवें साल के मार्च महीने की एक बदली की रात में मैं बिछौने पर लेटा था। शरीर में कसी प्रकार की अस्वस्थता न थी, और न मन में ही किसी प्रकार की ग्लानि या शोच था। फिर भी न मालूम नींद क्यों न आती थी। मैं पड़ा ही पड़ा अपने जीवन की घटनावली को सोच रहा था। पल पल में मेरे मन का भाव बदलने लगा। अपनी हालत की बात सोच सोच कर भगवान् की असीम करुणा के लिए मेरा हृदय कृतज्ञता से परिपूर्ण होने लगा। धीरे धीरे असभ्यों की चिन्ता ने और उनके घृणित आचार, निर्दय व्यवहार आदि ने फिर मेरे मन पर अधिकार जमाया। यदि उन लोगों के चंगुल में पड़ जाऊँ तो क्या करूँगा, उन लोगों से किसी तरह कुछ सहायता पाकर इस निर्जन टापू से मेरा उद्धार हो सकता है या नहीं, इत्यादि अनेक विषयों को सोचते सोचते मेरा मस्तिष्क गरम हो उठा मानो ज्वर चढ़ आया हो। अन्त में मेरी आँखें लग गईं और मैं सो गया।

सोकर मैंने सपना देखा,—मानो ग्यारह असभ्य दो डोंगियों पर सवार हो कर इस टापू में आये हैं और एक सहायहीन मनुष्य को मार कर खाने का उद्योग कर रहे हैं। वह ज़रा मोहलत पाकर भाग निकला और मेरे क़िले के सामने उपवन में छिप रहा। मैं उसे इस अवस्था में देख कर एकाएक उसके सामने गया और प्रसन्नता से उसे आश्वासन देने लगा। उसने बड़े विनीत भाव से मुझ से सहायता की प्रार्थना की। मैं उसको सीढ़ी के सहारे क़िले के भीतर ले आया। तब से वह मेरा सेवक होगया।

जब मैं जाग कर उठा तब स्वप्न की बात सोच कर मेरी तबीयत बहुत ख़राब हो गई। जो हो, इस प्रकार एक भृत्य मिल जाने की चिन्ता ने मेरे मन में घर कर लिया। मैंने सोचा, यदि एक असभ्य भृत्य-रूप में मिल जाय तो उसकी सहायता से मैं महादेश को जा सकता हूँ और उन राक्षसों के साथ सद्भाव रखने से मेरा उद्धार भी हो सकता है।

इस स्वप्न ने मेरे मन पर ऐसा प्रभाव डाला कि मैं प्रति दिन समुद्र की ओर देख देख कर डोंगी आने की प्रतीक्षा करने लगा। मैं व्यर्थ की प्रतीक्षा में एक तरह थक सा गया। इसी तरह डेढ़ वर्ष बीत गया।

डेढ़ वर्ष बाद एक दिन मैं सबेरे घर के बाहर आकर अवाक् हो गया। द्वीप के जिस भाग में मेरा घर था उसी ओर देखा कि समुद्र के किनारे पाँच डोंगियाँ बँधी हैं। उस पर एक भी सवार नहीं, सभी उतर कर कहीं चले गये हैं। अरे बाप! एक दम पाँच पाँच डोंगियाँ! न मालूम, इस पर कितने लोग आये होंगे? मुझे बाहर ठहरने का साहस न हुआ। मैं क़िले के भीतर आकर उनका हाल जानने के लिए छटपटाने लगा। उन लोगों के ऊपर आक्रमण करने का सभी सामान ठीक कर मैं अवसर की अपेक्षा करने लगा। अपेक्षा करते करते मैं अकुला उठा। तब बन्दूक़ों को ज़मीन में रख, कर सीढ़ी लगा पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया मैंने दूरबीन लगा कर देखा, कि उन लोगों ने अग्निकुण्ड प्रज्वलित किया है और उसके चारों ओर घूम घूम कर वे विचित्र अङ्ग-भङ्गी के साथ नाच रहे हैं।

मैं यह देख ही रहा था कि इतने में वे लोग नाव के पास से दो हतभागों को खींच कर ले गये। उन दोनों को मार कर

मैंने दूरबीन लगा कर देखा कि उन लोगों ने अग्निकुण्ड प्रज्वलित किया और उसके चारों ओर घूम घूम कर वे विचित्र अङ्ग-भङ्गी के साथ नाच रहे हैं।—पृ० १६४

वे राक्षस अभी खा डालेंगे। एक को लाठी मार कर उसी समय गिरा दिया और उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गो को काट कर टुकड़े टुकड़े कर डाले। दूसरा आदमी, अपनी मृत्यु की अपेक्षा कर के, आँखों के सामने अपने साथी की दुर्दशा देखने लगा। हा! कैसा हृदयविदारक भीषण दृश्य था!

सब अपने अपने काम में लगे थे, यह सुयोग पा कर वह, अपने को बन्धन-रहति देख कर, तीर की तरह मेरे घर की ओर वहाँ से निकल भागा। उसको अपने घर की ओर आते देख मैं बहुत ही डरा। शायद उसको पकड़ने के लिए उसके पीछे वे लोग भी दौड़े आवें। मैं हृदय को मज़बूत करके, साहस-पूर्वक देखने लगा कि क्या होता है, देखा, सिर्फ़ तीन आदमी उसके पीछे पीछे दौड़े आ रहे हैं। वह भागने वाला इस तरह बेतहाशा दौड़ा आ रहा है कि उसका पीछा करने वाले बहुत पीछे पड़ गये हैं।

मेरे क़िले की ओर आने में, उन लोगों के मार्ग में, समुद्र की वही खाड़ी पड़ती थी। समय ज्वार का था। किन्तु वह भागने वाला वहाँ आ कर ज़रा भी न रुका। उसने उस अगाध खाड़ी की कुछ परवा न की। वह एकाएक उसमें धँस पड़ा और तीस बत्तीस बार हाथ चलाने में ही तैर कर पार हो गया। स्थल में आकर उसने फिर दौड़ लगाई। उसका पीछा करनेवाले भी खाड़ी के पास आये। दो आदमी पानी में घुस कर के तैरने लगे। किन्तु तीसरा आदमी शायद तैरना नहीं जानता था। वह कुछ देर वहीं खड़ा हो कर देखता रहा, इसके बाद लौट कर चला गया। उसने लौट कर मेरे और अपने हक़ में भी अच्छा ही किया। उसके आने से मेरे दुश्मनों की संख्या में एक की और वृद्धि होती। यह मेरे लिए

हानिकारक होती, और वह आता तो मेरे हाथ से ज़रूर मारा जाता, सो यह उसके लिए भी कभी अच्छा न होता। मैंने देखा कि भागने वाले की अपेक्षा पीछा करने वालों को उस खाड़ी के पार करने में दुगुना समय लगा।

मैं झटपट पहाड़ से उतर पड़ा और दो बन्दूकें लेकर फिर पहाड़ पर चढ़ गया। पहाड़ पर से धीरे धीरे समुद्र की ओर उतर कर शीघ्र ही उन दोनों—भागने और पीछा करने वालों—के बीच जा पहुँचा। तब मैंने भागने वाले को पुकारा। वह पीछे मुड़ कर और मुझे देख कर और भी भय-भीत हुआ। मैं उसको हाथ का इशारा देकर और अपनी ओर आने का संकेत कर के धीरे धीरे पीछा करने वालों की ओर अग्रसर होने लगा। उन दोनों में जो आगे था उस पर एका-एक आक्रमण करके मैंने बन्दूक़ के कुन्दे के धक्के से उसे धरती पर गिरा दिया। मैं बन्दूक़ की आवाज़ न करना चाहता था, क्योंकि आवाज़ होने से उसके और साथी सुन लेते। उसको गिरते देख उसका साथी ठिठक कर खड़ा हो रहा। मैं उसकी ओर झपटा। देखा तो उसके पास धनुष बाण है और वह धनुष पर तीर चढ़ा रहा है। तब मैं उसे गोली मारने को बाध्य हुआ। मैंने एक ही गोली में उसका काम तमाम कर दिया।

दोनों दुश्मनों को गिरते देख भागने वाला साहस पाकर ठहर गया। किन्तु मेरी बन्दूक़ की आवाज़ से वह एक दम स्तम्भित और चकित हो गया। उससे न अब भागते ही बनता था और न मेरी ओर आते ही। वह कुछ देर जड़वत् खड़ा रह कर फिर भागने का मौक़ा देखने लगा। मैंने फिर उसे पुकारा। वह कुछ आगे की ओर बढ़ा। इसके बाद

धरती छूकर बड़े विनीत भाव से प्रणाम किया और मेरा पैर
कर अपने सिर पर रक्खा।—पृ० १६७

वह दो एक डग मेरी ओर आता और फिर खड़ा हो रहता। योंही रुक रुक कर वह आता था और भय से थरथर काँपता था। शायद वह मन ही मन सोच रहा था कि जो दशा मेरा पीछा करनेवालों की हुई है वही अब की बार मेरी होगी। मैंने उसको इशारे से यथासंभव आश्वासन देकर फिर पुकारा। तब वह साहस कर के दस बारह क़दम मेरी ओर आता और झुक झुक कर प्रणाम करता था। मैंने फिर मुसकुरा कर इशारे के द्वारा उसको अपनी ओर बुलाया। आख़िर डरते डरते वह मेरे पास आया। उसने धरती छूकर बड़े विनीतभाव से प्रणाम किया और मेरा पैर उठा कर अपने सिर पर रक्खा। मैंने धरती से उठा कर इशारे से, जहाँ तक संभव था, उसे आश्वासन दिया। जिसको मैंने धक्का मार कर गिरा दिया था वह मरा नहीं था, सिर्फ़ मूर्च्छित हो गया था। अब वह धीरे धीरे सचेत हो कर उठ रहा था। यह देख कर उस विद्रावित ने मुझ से क्या कहा, उसका एक अक्षर भी मेरी समझ में न आया। फिर भी उसने मेरे कानों में मानो अमृत बरसाया। कारण यह कि पच्चीस छब्बीस वर्ष बाद आज ही पहले पहल मनुष्य का कण्ठस्वर सुन पड़ा। वह गिरा हुआ आदमी होश होने पर उठ बैठा। तब मेरा वह आनन्द जाता रहा। मैंने झट उसकी ओर बन्दूक़ उठाई। यह देख कर उस पलायित व्यक्ति ने मुझ से तलवार माँगी। मेरी कमर में नङ्गी तलवार लटक रही थी। मैंने उसको तलवार दे दी। तलवार लेकर वह एक ही दौड़ में अपने शत्रु के पास गया और एक ही वार में उसका सिर धड़ से उड़ा डाला। वे लोग काठ की तलवार का इस्तैमाल कर के ही ऐसे सिद्ध-हस्त होते हैं। उनकी तलवार काठ की होती है सही, किन्तु

वह ऐसी पैनी होती है कि एक ही हाथ में बेखटके गला काट सकती है।

दुश्मन का सिर काट कर वह मारे ख़ुशी के उछलने लगा। विचित्र ढंग से अङ्ग विक्षेप करते, नाचते हुए उसने तलवार और कटे सिर को मेरे सामने लाकर रख दिया। फिर उसने उस निहत मनुष्य के पास जाने की अनुमति चाही। मैंने कह दिया, जाओ। वह उसके पास जाकर चुपचाप खड़ा हो रहा, तदनन्तर उसे उलटा पलटा कर देखने लगा। उसके हृदय के पास जहाँ गोली लगी थी उस जगह को उसने बड़े ध्यान से देखा। किन्तु मैंने उसे किस तरह मारा, यह कुछ भी उसकी समझ में न आया। तब वह उसका धनुष-बाण उठा कर मेरे पास ले आया। अब मैंने उसको अपने साथ चलने का इशारा किया; और उसको समझा दिया कि इन दोनों की तलाश में और लोग भी आ सकते हैं। तब उसने भी संकेत के द्वारा अपने मन का भाव व्यञ्जित किया कि इन मुर्दों को बालू में गाड़ देना अच्छा होगा इससे कोई देख न सकेगा। मैंने गाड़ने की अनुमति दी। उसने तुरन्त हाथ से बालू हटा कर पन्द्रह मिनट के भीतर दोनों मुर्दों को बालू के नीचे छिपा दिया। तब उसको मैं अपनी नई गुफा में ले गया। वहाँ जाकर मैंने उसको रोटी, किसमिस और पानी पीने को दिया। उसको बड़ी भूख और प्यास लगी थी। दौड़ने से थक भी गया था। मैंने एक जगह धान का पयाल बिछा कर बिछौना बना लिया था, वही दिखा कर उसको लेटने के लिए कहा। वहाँ जाकर वह लेट रहा और सो गया।

वह अच्छा हट्टा कट्टा तन्दुरुस्त और लम्बा था। उसकी उम्र पच्चीस छब्बीस वर्ष के लगभग होगी। चेहरे पर कोमलता का चिह्न झलकता था, स्वरूप कुछ भयानक न था। पुरुषोचित सौन्दर्य के साथ साथ स्निग्धता का मेल उसकी शारीरिक शोभा को बढ़ा रहा था, जो देखने में बड़ा ही अच्छा मालूम होता था। ख़ास कर उसका हँसना बड़ा ही सरल और मीठा था। उसके सिर के बाल काले और लम्बे थे। आफ्रिका-वासियों की भाँति टेढ़े और रूक्ष न थे। ललाट चौड़ा था, बड़े बड़े नेत्र आनन्द और उत्साह से भरे हुए थे। शरीर का रङ्ग बिलकुल काला न था। साँवला सा था, जो देखने में बुरा नहीं बल्कि दृष्टिरोचक था। मुँह गोल था, नाक छोटी सी पर चिपटी न थी। गला पतला और दाँत हाथी-दाँत की तरह ख़ूब सफ़ेद थे। सारांश यह कि वह देखने में कुरूप न था।

फ़ाइडे की शिक्षा

आध घंटे तक उस पलायित व्यक्ति की आँखें झपी रहीं। इसके बाद वह जाग उठा और गुफा से निकल कर मेरे पास आया। मैं बाहर बकरी दुह रहा था। वह मुझको देखते ही दौड़कर मेरे पास आया और मेरे प्रति दासत्व और कृतज्ञता का भाव प्रकट करने लगा। वह मेरे पैर को अपने माथे पर रखकर अपनी इच्छा से दासत्व स्वीकार करने लगा। मैं उसके संकेत से उसका मानसिक भाव अच्छी तरह समझ जाता था। मैंने भी उसको अच्छी तरह समझा दिया कि मैं तुम्हारे आचरण से सन्तुष्ट हूँ। थोड़ेही दिनों में मैं उसके साथ बात चीत करने लगा। मैंने उसे बोलना सिखला दिया।

पहले मैंने उसे यह समझा दिया कि तुम्हारा नाम मैंने फ्राइडे (शुक्रवार) रक्खा है, क्योंकि शुक्रवार को ही वह मुझे मिला था। यह भी सिखला दिया कि तुम मुझको प्रभु कहा करो। उसको हाँ, नहीं, आदि अँगरेज़ी के छोटे छोटे शब्द भी सिखला दिये।

एक मिट्टी के बर्तन में मैंने उसको थोड़ा सा दूध और रोटी खाने को दी और स्वयं दूध में रोटी मिला कर खाकर दिखला दिया कि दूध-रोटी इस तरह खाई जाती है। उसने खाकर इशारे से बतलाया कि दूध-रोटी खाने में बहुत बढ़िया है। उसी के साथ मैंने गुफा के भीतर रात बिताई।

सवेरे उठ कर मैंने उससे कहा—"चलो तुमको कुछ कपड़े दूँ।" यह सुनकर वह बहुत खुश हुआ और मेरे साथ चला। अभी तक वह एक प्रकार से नंगा ही था।

गुफा से चलकर हम दोनों वहाँ आये जहाँ फ्राइडे ने दोनों असभ्यों की लाश को बालू में गाड़ रक्खा था। फ्राइडे ने ठीक जगह दिखला कर इशारा किया "आओ, हम लोग इन्हें उखाड़ कर खा लें।" इससे मैंने अत्यन्त क्रोध प्रकट करके अपनी घृणा सूचित की। मैंने इशारे से दिखाया कि ऐसी बात कहने से मुझे उबकाई आती है। ऐसी बात फिर कभी मुँह से न निकालना। मैंने उसको वहाँ से चले आने का इशारा किया। उसने बड़े बिनीत भाव से मेरी आज्ञा का पालन किया।

इसके बाद मैं उसको साथ लेकर पहाड़ पर चढ़ा। दूर-बीन लगा कर देखा तो अग्निकुण्ड के पास एक भी असभ्य न था। उन लोगों की डोंगियाँ भी न थीं। वे अपने साथियों की

कोई खोज खबर न लेकर उधर के उधर ही चले गये। तब मैंने वहाँ जा कर देखना चाहा कि वे लोग वहाँ क्या कर रहे थे। मैंने दो बन्दूकें आप लीं और फ़ाइडे तीर-कमान को कन्धे पर लटका कर एक हाथ में मेरी तलवार और दूसरे हाथ में मेरी बन्दूक़ ले कर मेरे साथ साथ चला। फ़ाइडे तीर चलाने में बड़ा ही दक्ष था। वहाँ पहुँच कर मैं हक्काबक्का सा हो रहा। मेरा जी भिन्ना उठा, किन्तु फ़ाइडे के मन में ज़रा भी घृणा उत्पन्न न हुई, वह निर्विकार था। वहाँ के भीषण-दृश्य का वर्णन करते मेरा हृदय काँपता है। मैंने देखा कि चारों ओर मुर्दों की ठठरी पड़ी है, इधर उधर अध-जला, आधा खाया हुआ नर-मांस बिखरा पड़ा है; कहीं हड्डियाँ लहू मास से भरी पड़ी हैं, कहीं सूखी हड्डियों का ढेर लगा है। मनुष्य के रक्त से भूमि लाल हो गई है। तीन मुण्ड और पाँच हाथ कटे पड़े हैं। फ़ाइडे ने संकेत द्वारा मुझ से कहा—वे लोग चार क़ैदियों को लाये थे। जिनमें तीन आदमियों को मार कर खा गये, चौथा मैं ही था। दोनों दलों में खूब युद्ध हुआ था। युद्ध में जो बन्दी होते हैं उनकी प्रायः यही दशा होती है।

मैंने फ़ाइडे से कहा कि उन ठठरियों और अधजले मांस-हड्डियों को एकत्र कर के उनमें आग लगा दे। वह नर-मांस खाने के लिए फ़ाइडे की लार टपक रही थी। उसकी राक्षसी-प्रकृति जाग उठी थी। उसको खाने के लिए उद्यत देख कर मैं उस पर बहुत बिगड़ा। मेरी अत्यन्त घृणा और चिढ़ने का भाव देख कर वह रुक गया। मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया कि अब यदि तू कभी नरमांस खायगा तो मैं तुझे भी मार डालूँगा।

उन नर-कङ्कालों को अच्छी तरह जला कर मैं अपने घर लौट आया। फ़ाइडे को एक जोड़ी सूती पाजामा दिया और चमड़े का कुरता और टोपी सी कर दी। फ़ाइडे अपने प्रभु की ऐसी पोशाक पहनने को पा कर बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु पहले पहल कपड़ा पहनने में उसे बड़ा ही कष्ट होता था। उसे ऐसा जान पड़ता था जैसे पोशाक पहनने का उसे अभ्यास हो गया।

अब मुझे इस बात की फ़िक्र हुई कि इसको रहने के लिए कहाँ जगह देनी चाहिए। इसको ऐसी जगह रखना चाहिए जहाँ यह आराम से रह सके और मैं भी निर्भय हो कर रहूँ। कारण यह कि राक्षसी प्रकृति के मनुष्य का विश्वास ही क्या? क्या मालूम किस दिन उसकी चित्त-वृत्ति कैसी हो। उसका राक्षसी स्वभाव जिस घड़ी प्रबल हो उठेगा उस घड़ी सर्वनाश होना ही सम्भव है।

मैंने सोच-विचार कर निश्चय किया कि बाहर और भीतर के घेरों के बीच की जगह में उसके लिए एक तम्बू खड़ा कर देना चाहिए। मैंने एक छोटा सा तम्बू खड़ा कर दिया। यहाँ से गुफा के पास वाले दर्वाज़े से मेरे तम्बू में जाने का एक रास्ता था। उसमें मैंने एक फाटक लगा दिया। उसका द्वार अपने तम्बू की ओर रहने दिया और उसमें जञ्जीर भी लगा दी। जञ्जीर लगा देने और बाहर से सीढ़ी खींच कर भीतर रख देने पर सोने की अवस्था में भय की कोई सम्भावना न थी। फ़ाइडे अब सहज ही मेरे घेरे के भीतर आ कर मुझ पर आक्रमण न कर सकेगा। यदि किसी दिन घेरे को लाँघ कर मुझ पर आक्रमण करने का संकल्प करेगा भी

तो वह बिना खड़खड़ाहट के न आ सकेगा, कारण यह कि मैंने खम्भों पर एक छप्पर खड़ा कर के उसे पेड़ के डाल-पातों से छा कर उस पर धान का पयाल बिछा दिया था। उस छप्पर के नीचे मेरा तम्बू था। जहाँ सीढ़ी लगा कर मैं बाहर निकलता था वहाँ की जगह ख़ाली थी। उसमें भी मैंने किवाड़ लगा दिये। रात को मैं सब अस्त्र-शस्त्र अपने पास रख कर सोता था।

किन्तु इतना सावधान हो कर रहने की कोई ज़रूरत न थी। क्योंकि फ़ाइडे की अपेक्षा विशेष विश्वासपात्र, विनीत और निश्छल भृत्य हो सकता है, यह मैं नहीं जानता। न वह कभी क्रोध करता था, न उसके चेहरे पर कभी विरक्ति का भाव झलकता था। वह सदा प्रसन्न और सभी कामों में अग्रसर रहता था। वह मुझको अपने बाप के बराबर मानने लग गया था। प्रयोजन होने पर वह मेरे लिए प्राण तक दे सकता था।

यह देख कर मैंने समझा कि विधाता ने मानव जाति को सर्वत्र एक ही प्रकार के गुणों से भूषित किया है। मैं फ़ाइडे के आचरण से अत्यन्त प्रसन्न हो कर उसको अपना कामधन्धा और भाषा सिखलाने लगा। वह अच्छा ध्यानी शिष्य था। कोई बात जब मैं उसे समझाता था या वह समझता तो वह ऐसा ख़ुश होता था कि उसको शिक्षा देने में बड़ा ही आनन्द मिलता था। अभी मेरे दिन बड़ी ख़ुशी से कटते थे।

दो तीन दिन बाद मैंने सोचा कि फ़ाइडे को नरमांस खाने का स्वाद भुलाने के लिए अन्य जन्तुओं का मांस खिलाना आवश्यक है। एक दिन सवेरे उसको साथ ले कर मैं

जङ्गल की ओर चला। मैं अपना पालतू बकरा काटने को जा रहा था, किन्तु मार्ग में मैंने देखा कि एक वृक्ष की छाया में एक बकरी सोरही है और उसके पास दो बच्चे बैठे हैं। मैंने फ्राइडे को पकड़ कर चुपचाप खड़ा रहने का इशारा किया। इसके बाद गोली चलाई जिससे एक बच्चा मर गया।

कई दिन हुए, फ्राइडे ने इसी तरह दूर से अपने शत्रु को मारते देखा था। वह मारे डर के थर थर काँपने लगा। ऐसा जान पड़ा कि अब वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगा। वह कुर्ता उतार कर अपने शरीर को चकित-दृष्टि से देखने लगा कि कहीं आहत तो नहीं हुआ है। मैंने उसको धमकाया कि अब की बार मैं तुम्हें मारूँगा। तब वह दौड़ कर मेरे पास आया और मेरे पैरों से लिपट कर न मालूम क्या क्या विनय करने लगा। उसकी बातें तो मेरी समझ में आईं नहीं, हाँ इतना मैंने ज़रूर समझा कि वह मुझसे प्राण-भिक्षा चाहता है।

मैंने उसे अच्छी तरह समझा दिया कि मैं तुझे न मारूँगा। उसको मैंने बकरी का मरा हुआ बच्चा दिखला दिया। वह अवाक् होकर बड़े गौर के साथ उसको देखने लगा। मैंने फ्राइडे की आँख बचा कर उसी समय फिर बन्दूक़ में गोली भर ली। मैंने देखा कि एक पेड़ पर एक सुग्गा बैठा है। फ्राइडे को वह पक्षी और अपनी बन्दूक़ दिखा कर समझा दिया कि इस दफ़े मैं उस पक्षी को मारूँगा और इसके बाद इशारे से पेड़ के नीचे की जगह बतला कर यह भी कह दिया कि वह मर कर यहीं गिरेगा। मैंने बन्दूक़ की आवाज़ की। सुग्गा मर कर पेड़ के नीचे गिर पड़ा। फ्राइडे फिर मेरी ओर देख कर चुप हो रहा। उसने मुझको

बन्दूक़ भरते नहीं देखा था। उसने अपने मन में समझा कि बन्दूक़ के भीतर मृत्यु विचित्र ढङ्ग से ढेर की ढेर घुसी है। उसका विस्मय और भय दूर होने में बहुत दिन लगे। यदि मैं उसे न रोकता तो वह शायद मेरा और बन्दूक़ का पूजन करता। वह बहुत दिनों तक साहस कर के भी बन्दूक़ को छूता न था। जब वह अकेला रहता था तब चुपचाप बन्दूक़ के पास जाकर अपनी दीनता दिखलाता था। और हाथ जोड़ कर बन्दूक से विनती कर के कहता था—हे देव! मेरे प्राण बचाओ।

मैं बकरी के मरे बच्चे को उठा कर अपने घर ले आया और उसका बहुत बढ़िया झोल बनाया। मांस के साथ मुझको नमक खाते देख कर फ़ाइडे को बड़ा आश्चर्य हुआ। इशारे के द्वारा उसने मुझ से कहा—"छिः, नमक खाते हो? उसका कैसा बुरा स्वाद होता है!" उसने मेरी देखादेखी थोड़ा सा नमक मुँह में डाल कर थूक दिया और कुल्ला करके फिर भोजन करने बैठा। मैंने भी उसको दिखला कर बे नमक का मांस मुँह में रखकर उसी की तरह थूक दिया। किन्तु इससे कोई फल न हुआ। वह किसी तरह नमक खाने को राज़ी न हुआ।

दूसरे दिन मैंने उसको कबाब खिलया। उसके आनन्द का क्या पूछना है! उसने बार बार उमँग कर मुझे समझाया कि यह बड़ा ही अच्छा है, खाने में खूब स्वादिष्ट है। उसने कहा, "अब मैं कभी नर-मांस न खाऊँगा"। यह सुन कर मैं प्रसन्न हुआ।

तब मैंने उसको धान कूटना और आटा पीसना आदि सिखलाया। उसने बात की बात में ये सब काम सीख लिये।

इसके बाद मैंने उसको रोटी बनाना सिखलाया। थोड़े ही दिनों में वह मेरे ही ऐसा घर के काम-धन्धों में प्रवीण हो गया।

अब मुझे दो व्यक्तियों के आहार की चिन्ता हुई। मैंने खेती का कारबार बढ़ाया। ज़्यादा ज़मीन तैयार की। फ्राइडे बड़ी खुशी के साथ अपने मन से खेती में परिश्रम करने लगा। वह मेरी आज्ञा पालने के लिए सदा तत्पर रहता था।

क्रूसो और फ्राइडे

जितने दिनों से मैं इस द्वीप में हूँ उनमें यही साल मेरे बड़े सुख का था। फ्राइडे अब मेरी सब मोटी मोटी बातें समझ लेता था। अब वह मेरे साथ खूब बात-चीत करता था। इन बातों से भी बढ़ कर फ्राइडे की निश्छल भक्ति और विश्वास ने मुझे मुग्ध कर रक्खा था।

फ्राइडे मुझको बहुत चाहता है सही, किन्तु मैंने जानना चाहा कि उसे अब अपने देशको लौट जाने की इच्छा है कि नहीं। एक दिन मैंने उससे पूछा—अच्छा फ्राइडे, बतलाओ तो, तुम्हारे दल के लोग भी युद्ध में कभी विजयी हुए हैं?

फ्राइडे—कभी कभी हो जाते हैं!

मैं—युद्ध में विजयी होकर बन्दियों को क्या करते हैं?

फ्राइडे—करेंगे क्या? उन्हें मार कर खा डालते हैं।

मैं—तुम इसके पहले कभी इस द्वीप में आये थे?

फ्राइडे—हाँ, कई बार।

मैं—यहाँ से महासमुद्र का उपकूल कितनी दूर होगा? इतनी दूर आने-जाने में डोंगी डूबती नहीं है?

फ़ाइडे—नहीं, डोंगी कभी मारी नहीं जाती। प्रातःकाल समुद्र में हवा और जल का स्रोत एक ओर बहता है; साँझ को विपरीत दिशा में—यह समझ लेने से समुद्रयात्रा में विपत्ति की आशङ्का नहीं रहती।

फ़ाइडे की इस बात से मैं समझ गया कि वह ज्वार-भाटे की बात कह रहा है। आखिर मैंने फ़ाइडे के कथन से समझा कि मेरा यह द्वीप अरुणक नदी के मुहाने पर है। उसी नदी के स्रोत की बात फ़ाइडे कह रहा है। आग्नेय (पूरब और दक्खिन) कोण में जो द्वीप देख पड़ता है वह त्रिनिडाद टापू है। मैंने फ़ाइडे से उसके देश के सम्बन्ध में हज़ारों प्रश्न किये। उसे जहाँ तक मालूम था, सब का उत्तर दिया। उसकी जाति का नाम कारिब था। इससे मुझे मालूम हुआ कि नक़्शे में जो क्यारिबी द्वीप है वहीं के अधिवासी ये लोग हैं। फ़ाइडे ने कहा—मेरे देश में जहाँ चन्द्रमा डूबते हैं उसके आगे अर्थात् पश्चिम दिशा में बहुत दूर आपके ऐसे गोरे लोग हैं। वे लोग भी मनुष्य-हत्या करने में नहीं चूकते।" इससे मैंने समझा कि वे लोग स्पेनवाले हैं। उन्हीं के बारे में यह कह रहा है। उन की अकारण निष्ठुर हत्या का प्रवाद प्रायः देश-देशान्तर में फैला हुआ था।

मैंने पूछा—फ़ाइडे, तुम ऐसा कोई उपाय बता सकते हो जिससे मैं उन गोरे लोगों के पास तक पहुँच सकूँ।

फ़ाइडे—क्यों नहीं, ज़रूर पहुँच सकते हैं। दो डोंगियों पर जाना होगा।

दो डोंगियों पर जाना होगा, इसका मतलब मेरी समझ में न आया। बहुत पूछने पर मैंने समझा, कि दो डोंगियों

से उसका मतलब दो डोंगियों के बराबर एक बड़ी नाव से है। अब से मैं अपने उद्धार की कुछ कुछ आशा करने लगा। मेरे जी में इस बात की आशा ने जड़ बाँधी कि इस असभ्य की सहायता से मेरा छुटकारा होना असम्भव नहीं है। मैं जब तब फ़ाइडे के साथ इस बात की आलोचना करके बहुत सुख पाता था।

जब फ़ाइडे मेरी भाषा अच्छी तरह सीख गया तब मैंने उसको कुछ धर्म्म की शिक्षा देना उचित समझा। कारण यह कि धर्म-हीन जीवन भार मात्र है। धर्म-ज्ञान के बिना जीना वृथा है। मैंने एक दिन उससे पूछा—अच्छा, कहो तो फ़ाइडे, तुमको किसने सिरजा है?

यह अद्भुत प्रश्न सुन कर फ़ाइडे कुछ चकित सा होकर बोला,—"क्यों, मेरे पिता ने।" मैंने फिर हँस कर पूछा—अच्छा, ये सब समुद्र, धरती, पहाड़ और जङ्गल किसने बनाये हैं?

फ़ाइडे—"वीणामुख ने! वे सबसे रहित हैं। वे भूमि, समुद्र, चन्द्र, सूर्य और तारागणों की अपेक्षा भी पुरातन हैं। वही सम्पूर्ण संसार के सृष्टिकर्ता हैं। उन्हें सब लोग जगत्पिता कहते हैं। मृत्यु होने के अनन्तर सभी प्राणी उन्हीं वीणामुख के साथ जा मिलते हैं।" ईश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान देख कर मैं पुलकित हो उठा। मैं फ़ाइडे के इस अस्फुट भगवद्‌ज्ञान को और विशद करने के लिए उसको सर्वशक्तिमान् विधाता के सम्बन्ध में अनेक बातें सुनाने लगा। यद्यपि मैं स्वयं खूब ज्ञानी या धार्मिक न था तथापि मैं भगवान् से ज्ञान की

प्रार्थना करता था और फ़्राइडे को शिक्षा देता था। थोड़े ही दिनों में वह मुझसे भी विशेष धार्मिक हो गया। उसकी संगति से मेरा दिन बड़े ही आनन्द के साथ कटने लगा। यहाँ हम लोगों का आपस में मत-विरोध नहीं, संस्कार की संकीर्णता नहीं, और शास्त्र की भी दुहाई नहीं। हम दोनों व्यक्ति साक्षात् ईश्वर से ज्ञान प्राप्त करके उनको पहचानने की चेष्टा कर रहे हैं।

मैंने फ़्राइडे को अपना सारा जीवन-वृत्त सुनाया और उसको एक छुरी और एक कुल्हाड़ी पुरस्कार में दी। बेहद खुश हुआ। फिर उसको मैंने बन्दूक़ का सारा तत्त्व सिखला दिया।

मैंने उसको यूरप का, विशेष करके इँगलैन्ड का, वर्णन करके सुनाया। अपने जातीय इतिहास, समाज, धर्म, वाणिज्य, शिक्षा आदि के विषय में बहुत सी बातें कहीं। एक दिन बात ही बात में मेरे जहाज़ डूबने की बात निकल आई। मैंने उसको अपने साथ ले जाकर टूटा हुआ जहाज़ दिखलाया। उसे देख कर फ़्राइडे ने कहा—"ऐसा ही एक जहाज़ मेरे देश में भी एक बार आया था। उस पर सत्रह गौराङ्ग थे। हम लोगों ने उन्हें डूबने से बचाया था।" मैंने पूछा—फिर उन लोगों का क्या हुआ? तुम लोगों ने मार कर उनका कलेवा तो नहीं कर लिया?

फ़्राइडे—"नहीं, वे लोग अभी तक मेरे ही देश में हैं।" मैंने पूछा—यह क्यों? क्या तुम्हारे देशवासियों को मन्दाग्नि का रोग हो गया है? तुम लोगों की नरमांस-भक्षण में ऐसी अरुचि क्यों हो गई?

फ़्राइडे—हम लोग मनुष्य मात्र को नहीं खाते। केवल बन्दी-गणों को ही खाते हैं।

इसके कुछ दिन बाद एक दिन द्वीप के पूरब ओर पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर फ़्राइडे एकाएक मारे ख़ुशी के नाचने लगा। मैंने पूछा—क्यों फ़्राइडे, क्या है? कुछ कहो भी तो।

फ़्राइडे—"अहा, बड़ा आनन्द है, बड़ा महोत्सव है! प्रभो देखिए, देखिए, यहाँ से मेरा देश देख पड़ता है।" उसका चेहरा हर्ष से प्रफुल्लित था, दोनों आँखों में प्रेमाश्रु भरे थे, सर्वाङ्ग पुलकित था। धन्य मातृ-भूमि! एक असभ्य सन्तान के हृदय में भी तुमने कैसा पवित्र प्रीति का संचार कर रक्खा है! किन्तु उसका यह आनन्द मुझे अच्छा न लगा। मेरे मन में यह खटका हुआ कि यदि फ़्राइडे किसी तरह अपने देश को चला गया तो संभव है वह धर्म की शिक्षा और कृतज्ञता भूल कर फिर अपनी पूर्व वृत्ति में प्रवृत्त हो जाय। इसके सिवा यदि वह अपने देश में जाकर मेरी चर्चा चलावे तो आश्चर्य नहीं कि दो तीन सौ आदमी यहाँ आकर भोज में मुझी को स्वाहा कर डालें। मैं उस बेचारे निर्दोषी को दोषी मान कर अविश्वास और उदासीनता की दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा। हा, स्वार्थ ऐसा निन्द्य है। स्वदेश के प्रति प्रीति प्रकट करना स्वाभाविक है। अपने देश को दूर से देख कर उसका प्रसन्न होना अयुक्त न था, किन्तु उससे कहीं मेरे स्वार्थ में आघात न लगे, इस आशङ्का से मैं उसको विषभरी दृष्टि से देखने लगा। उसकी यह स्वदेश-प्रीति मेरी आँखों में काँटे की तरह गड़ने लगी। उसका स्वदेशाभिलाष मेरी दृष्टि में घोर अन्याय जँचने लगा। मैंने अब उसके साथ पहले की तरह बातचीत करना छोड़ दिया। मैं पहले उसे जिस दृष्टि से देखता

था उस दृष्टि से अब नहीं देखता । उसके साथ अब मैं उस तरह मिलता-जुलता भी न था । इसके अलावा उसका असली मतलब जानने के लिए मैं रोज़ रोज़ उससे अनेक प्रकार की जिरह करने लगा। मेरे प्रश्न का उत्तर वह ऐसा सरल और प्रेमपूर्ण देता था जिससे मेरे मन का भ्रम शीघ्र ही दूर हो जाता था। एक दिन मैं उससे यों प्रश्न करने लगाः—

मैं—फ्राइडे, क्या तुमको अपने देश जाने की बड़ी अभिलाषा होती है?

फ्राइडे—हाँ, होती क्यों नहीं, अपने देश जाने की इच्छा किसे नहीं होती?

मैं—तुम वहाँ जाकर फिर उसी तरह नंगे, नरमांसभोजी, और अधार्मिक बनोगे?

फ्राइडे—नहीं, नहीं, यह क्यों? मैं अपने देश के लोगों को प्रेम और धर्म की शिक्षा दूँगा और नर-हत्या करने से उन्हें रोकूँगा।

मैं—तब तो वे लोग तुम्हें मार ही डालेंगे?

फ्राइडे—नहीं, वे लोग धर्म-कर्म की बात सीखना बहुत पसन्द करते हैं। उन बृहत्-नौकारोही गौराङ्ग लोगों से वे लोग कितने ही विषय सीख चुके हैं, और भी सीखते होंगे।

मैं—तो क्या तुम देश लौट जाओगे?

फ्राइडे हँस कर बोला—जाऊँगा कैसे? इतनी दूर तैर कर कोई कैसे जा सकता है?

मैं—जाने के लिए तुमको एक नाव तैयार कर दूँगा।

फ्राइडे—यदि आप चलें तो मैं भी आपके साथ साथ जाऊँगा।

मैं—अरे! मैं चलूँ? ऐसा होने से तो वे लोग मिल कर मुझे खा ही डालेंगे।

फ्राइडे—नहीं, नहीं, आप ऐसा न समझें। मैं उन लोगों से आप की दया और अपने ऊपर उपकार की बात कहूँगा। उन लोगों को श्रद्धा-भक्ति करना सिखलाऊँगा। मेरे देश में जो अभी सत्रह गौराङ्ग विद्यमान हैं उनसे तो कोई किसी तरह की छेड़-छाड़ नहीं करता।

अब मेरे मन में यह धुन समाई कि समुद्रपार होकर उन सत्रह यूरोपवासियों के साथ किसी तरह भेंट करनी चाहिए। उन लोगों के साथ सम्मिलित होने की वासना प्रबल हो उठी। मैंने फ्राइडे को ले जाकर अपनी डोंगी दिखलाई। हम दोनों उस पर सवार हुए। देखा, फ्राइडे नाव खेने में पूरा उस्ताद है। मैंने कहा है—"फ्राइडे, चलो तुम्हारे देश को चलूँ।" फ्राइडे गम्भीर भाव धारण कर चुप हो रहा। उसका अर्थ मैंने यही समझा कि इतनी छोटी डोंगी से समुद्रयात्रा करने का उसे साहस नहीं होता। मैंने कहा,—"मेरे पास एक और बड़ी नाव है।" दूसरे दिन उसको वह नाव दिखाने के लिए ले गया। देख कर उसने कहा—हाँ, यह नाव बेशक बड़ी है। किन्तु बाईस-तेईस वर्ष से बे हिफ़ाज़त यों ही पड़ी रहने से सड़ गल गई है।

तब मैंने एक और बड़ी डोंगी बनाने का संकल्प किया। मैंने कहा, "आओ, फ्राइडे, मैं तुम्हारे देश जाने का प्रबन्ध कर दूँ।" फ्राइडे बड़ी अप्रसन्नता और अनुत्साह के साथ बोला—

मैंने आपका क्या अपराध किया है? आप इस दास पर क्यों इतने नाराज़ हैं?

मैं—असन्तुष्ट क्यों हूँगा? तुम देश जाना चाहते हो, उसी का प्रबन्ध करता हूँ।

फ़्राइडे—मैं आपको छोड़ कर अकेला जाना नहीं चाहता।

मैं—वहाँ जाकर मैं क्या करूँगा?

फ़्राइडे—आप क्या नहीं करेंगे? आप मेरे देश का बहुत कुछ उपकार कर सकेंगे। धर्म कर्म और ज्ञान का उपदेश दे कर मेरे देश के मनुष्यों को वास्तविक मनुष्य कहलाने योग्य बनावेंगे।

मैं—हाँ! तुम नहीं जानते कि मैं कितना बड़ा नीच, अयोग्य और अधार्मिक हूँ। मैं न जाऊँगा, तुम अकेले जाओ।

फ़्राइडे ने झट एक कुल्हाड़ी उठा कर मेरे हाथ में दी और कहा—"लो साहब, मुझे निर्वासित करने के बदले एकदम मार ही डालो। इसमें तुम्हारी बड़ी दया होगी।" आँसू भरी आँखों से मेरी ओर देख कर ऐसे दीनभाव से उसने कोमल वचन कहे कि मैं मुग्ध हो गया।

द्वीप में डोंगियों की तो कुछ बात ही नहीं, बड़े बड़े जहाज़ बनने के उपयुक्त बहुत से दरख़्त थे, किन्तु हमें तो डोंगी के योग्य एक ऐसा पेड़ चाहिए जो पानी के समीप हो।

इतना सुभीता मिलना कठिन था। फ़्राइडे ने बहुत खोज कर एक ऐसा पेड़ ढूँढ़ लिया। उसने पेड़ की जड़ को आग से जला कर खोखली करने का प्रस्ताव किया तो मैंने उसको लोहे के हथियार की उपयोगिता दिखला दी। उसने शीघ्र

ही वह काम सीख लिया और बसूला तथा रुखानी के द्वारा एक ही महीने में डोंगी तैयार कर ली। इसके बाद छोटी छोटी चिकनी डालों को बिछा कर उनके ऊपर से थोड़ा थोड़ा लुढ़का कर नाव को पानी पर ले जाने में और पन्द्रह दिन लगे। इस नाव में बीस आदमी मज़े में बैठ सकते थे।

यद्यपि नाव इतनी बड़ी थी तो भी फ्राइडे का इस तेज़ी से खेना देख कर मैं विस्मित हुआ। वह अब नाव खे कर मुझको समुद्र पार कर देने को राज़ी है। किन्तु नाव का कुछ और काम करना बाक़ी रह गया था; मस्तूल और पाल लगाना था। मस्तूल की कमी न थी, फ्राइडे को एक सीधा सा पेड़ दिखला कर मस्तूल बनाने की रीति बता दी। अब पाल का प्रबन्ध करना बाक़ी रहा। मेरे पास पुराने पाल के बहुत टुकड़े थे, किन्तु इतने दिनों से वे यों ही पड़े थे। उन्हें उलट पलट कर देखा तो उनमें दो टुकड़े अच्छे निकले। उन्हीं दोनों टुकड़ों को जोड़ कर पाल बनाया। यह सब करते धरते दो महीने लगे। इसके बाद पतवार बनाई। पतवार बनाने में मुझे उतना ही परिश्रम करना पड़ा जितना एक छोटी सी नाव बनाने में करना पड़ता।

अब फ्राइडे को नौका-परिचालन की शिक्षा देने का अवसर आया। फ्राइडे नाव चलाना जानता था, किन्तु वह पतवार और पाल आदि के विषय में कुछ न जानता था। कब, कैसे, इनसे काम लेना चाहिए यह फ्राइडे को बता देना ज़रूरी था। मैं स्वयं नाव खे कर फ्राइडे को सिखलाने लगा। पतवार को जिधर घुमाओ उधर ही नाव घूमेगी। लग्गी से नाव न खेने पर भी पाल के ज़ोर से नाव मज़े में चलती है—यह देख सुन कर फ्राइडे चकित हो मेरे मुँह की ओर

देखने लगा। आखिर थोड़े ही दिनों में वह खासा नाविक हो गया। किन्तु मैं कम्पास का रहस्य उसे किसी तरह भी न समझा सका।

क्रूसो के घर में नवीन अभ्यागत

मेरे इस द्वीपान्तर-निवास का सत्ताइसवाँ साल शुरू हुआ। मैंने यथाशक्ति परमेश्वर की अर्चा पूजा कर के इस स्मरणीय दिन का उत्सव किया। इतने दिनों से जो उनकी अप्रमेय दया का परिचय पाया है तदर्थ उनके चरण-कमलों में अपनी हार्दिक कृतज्ञता निवेदन की। मेरे मन में न मालूम क्यों एक ऐसी धारणा जम गई थी कि मेरे उद्धार का दिन सन्निकट है। अब मुझे एक वर्ष भी बन्दी की अवस्था में रहना न होगा।

छुटकारे की आशा होने पर भी मैं पहले ही की तरह खेती और गृहकार्य में समय व्यतीत करता था। वर्षा ऋतु आई। अब बाहर जाने आने का अधिक सुयोग नहीं मिलता। मैंने अपनी नाव को समुद्र के किनारे रख दिया था। ज्वार आने पर हम दोनों नाव को खींच कर बहुत ऊपर ले गये और उसके नीचे एक बहुत बड़ा गढ़ा खोदा। ज्वार घट जाने पर गढ़े के मुँह को बाँध से बन्द कर दिया। इससे नाव गढ़े के भीतर ही पानी पर तैरती रही। अब समुद्र में उसके बह जाने का भय न रहा। वृष्टि का पानी रोकने के लिए उसके ऊपर डाल-पत्तों का एक छप्पर बना कर के रख दिया। यात्रा के लिए उपयोगी सब सामान ठीक ठाक कर के

निर्दिष्ट यात्रा के लिए नवम्बर दिसम्बर मास की अपेक्षा करने लगा।

"वर्षा विगत शरद ऋतु आई", वर्षा बीत चली। अब आकाश में कहीं बादल दिखाई नहीं देते। बिजली की वह चमक दमक अब कहीं देखने में नहीं आती। बादल ही के साथ वह भी अन्तर्हित हो गई। इन्द्रधनुष का कहीं नाम निशान नहीं रहा। सारा आकाशमण्डल निर्मल हो गया। रात में पूर्ण चन्द्र की छटा लोगों के हृदय को आकृष्ट करने लगी। पथिकगण स्वच्छन्दतापूर्वक स्वदेश-यात्रा करने लगे। हम भी यात्रा के लिए धीरे धीरे आयोजना करने लगे। एक दिन मैंने फ्राइडे को एक कछुवा पकड़ लाने का आदेश किया। फ्राइडे जाने के बाद तुरन्त ही दौड़ता हुआ आया और घेरा लाँघ कर मेरे पास पहुँचा। उसने हाँफते हाँफते कहा—प्रभो, प्रभो, सर्वनाश हुआ! बड़ी विपत्ति है।

मैंने विस्मित हो कर पूछा—"क्या हुआ? कुछ कहो भी तो। क्या मामला है?" फ्राइडे ने आँखें फाड़ कर के कहा—"अरे बाबा! एक! दो!! तीन! मैंने अपनी आँखों देखा है एक-दो-तीन!" यह सुन कर मैं अवाक् हो रहा! एक, दो, तीन क्या? बहुत सोचने पर समझा कि असभ्यों की तीन नावें किनारे आ लगी हैं। मैं फ्राइडे को धैर्य्य बँधाने की चेष्टा करने लगा। भाँति भाँति से उसे ढाढ़स देने लगा। वह भय से काँप रहा था। उसकी यह धारणा थी कि वे लोग उसीको खोजने आये हैं और उसको पकड़ते ही मार कर खा जायँगे। मैंने उसको ढाढ़स दे कर कहा—घबराओ मत, देखो जो विपत्ति तुम पर है वही मुझ पर भी है। तब तुम

इतना डरते क्यों हो ? मैं उन सबों के साथ युद्ध करूँगा। क्या तुम मेरा साथ न दे सकोगे ?

फ़ाइडे—हाँ, मैं बराबर साथ दूँगा और उन लोगों के साथ युद्ध करूँगा। परन्तु वे लोग गिनती में अधिक हैं।

मैं—इससे क्या ? जो न भी मरेगा वह भय से अधमरा हो जायगा। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा, तुम मेरी रक्षा करोगे न ?

फ़ाइडे—आपके लिए मैं अपने प्राण तक देने को तैयार हूँ। केवल आपकी आज्ञा चाहिए।

तब मैंने उससे बन्दूक़ और पिस्तौल लाने को कहा। उनमें जो जो शस्त्र अच्छे थे उनमें गोली और छर्रे भरे। अपनी कमर में नङ्गी तलवार बाँधी और फ़ाइडे की कमर में ख़ञ्जर लटका दिया। जब हम दोनों हरबे-हथियार से लैस हो कर युद्ध करने को तैयार हुए तब मैंने पहाड़ के ऊपर चढ़ कर दूरबीन के द्वारा देखा कि वे लोग गिनती में इक्कीस थे, तीन आदमी बन्दी थे और तीन ही डोंगियाँ थीं। वे लोग क़ैदियों को खाने के आनन्द में मग्न हैं। हा ! कैसा जघन्य आनन्द है ! कैसी राक्षसी वृत्ति है ! इस दफ़े वे लोग खाड़ी के पास एक दम जङ्गल के नज़दीक उतरे हैं।

मैं पहाड़ से उतर आया। कुछ अस्त्रशस्त्र फ़ाइडे को दिये, और कुछ मैंने अपने साथ ले लिये। मैं जैसा कहूँ वैसाही करना—यह उपदेश फ़ाइडे को देकर उससे चुपचाप साथ आने को कहा। इस वीरवेष में जाते जाते मेरे मन में फिर पुराना धर्मभाव जाग्रत हो उठा। मेरे हृदय में यह विवेक-वाणी बार बार गूँजने लगी कि उन लोगों ने मेरा क्या बिगाड़ा है ! हम लोगों की आँखों में जो बड़ा ही नीच

समझा जाता है वही उन लोगों के समाज का अगुवा होगा। तब उन लोगों के गुण-दोष का विचारक मैं कौन हूँ? मैंने इन बातों को सोच विचार कर तय किया कि जाऊँगा तो ज़रूर, तब शर्त यह है कि जैसा देखूँगा वैसा करूँगा।

चुपचाप वन के भीतर घुस करके हम दोनों आदमी उन असभ्य लोगों के पीछे एक पेड़ की आड़ में जा पहुँचे। फ्राइडे ने झाँक कर देखा और मुझसे कहा,—"वे लोग एक बन्दी को मार कर खा रहे हैं। अब फिर दूसरे को मारेंगे। दूसरा व्यक्ति वही जलमग्न सत्रह गौराङ्गों में का एक है।" अपने देशवासी की ऐसी दुर्दशा की बात सुनकर मेरा अन्तः-करण एकदम विद्रोह से भर उठा। मैंने दूरबीन लगाकर देखा। बन्दी की पोशाक आदि से अनुमान किया कि वह यूरोप देशवासी है। एक मज़बूत लता से उसके हाथ-पैर बँधे हैं। वह किनारे पर एक तरफ़ बालू पर पड़ा है। यह देख कर मैं बीस पच्चीस डग और आगे बढ़ एक झुरमुट की ओट में छिप रहा। तब मेरे और उन असभ्यों के बीच क़रीब अस्सी गज़ का फ़ासला रहा होगा।

मैंने देखा, उन्नीस आदमी एक जगह बैठे हैं और दो आदमी उस यूरोपियन को मारने गये हैं। वे दोनों निहुर कर उसका बन्धन खोल रहे हैं। अब विलम्ब करना ठीक नहीं, यह सोच कर मैंने फ्राइडे से कहा—"देखो मैं जैसा जैसा करता हूँ तुम भी वैसा ही करो।" यह कह कर मैंने एक बन्दूक़ पास रख ली और दूसरी उठाकर निशाना ठीक किया। फ्राइडे ने भी वैसा ही किया। मैंने कहा—"फ़ायर!" दोनों बन्दूकें एक साथ गरज उठीं।

मेरी अपेक्षा फ़ाइडे का लक्ष्य अच्छा हुआ था। उसकी गोली से दो हत और तीन घायल हुए। मेरी गोली से एक हत और दो आहत हुए थे, बाकी सब भयभीत होकर चौंक उठे। किन्तु यह अलक्षित मृत्यु किस तरफ़ से आती है इसका कुछ निश्चय न कर वे लोग खड़े हो चकित दृष्टि से चारों ओर ताकने लगे। किस ओर भागने से बचेंगे, इसका भी कुछ अन्दाज़ उन्हें नहीं था। हम दोनों ने फिर बन्दूकें मारीं। इन बन्दूकों में छर्रे भरे थे। इस कारण अब की बार दो ही मरे। किन्तु छर्रे लगने से इतने अधिक लोग घायल हुए कि वे लोहू लुहान होकर, पागलों की भाँति चीत्कार करते हुए, इधर उधर दौड़ने लगे। थोड़ी ही देर के बाद उन घायलों में तीन मनुष्य धरती पर मूर्च्छित हो कर गिर पड़े।

इसके बाद हम दोनों भरी हुई एक एक बन्दूक लेकर झुर-मुट की ओट से निकल कर बाहर आये। उन लोगों ने ज्यों ही हमारी ओर देखा त्यों ही हम खूब ज़ोर से गरज उठे। हम भारी भारी बन्दूकों को कन्धे पर रक्खे फुर्ती से दौड़ नहीं सकते थे, तथापि जहाँ तक हो सका तेज़ी से जाकर बन्दियों के पास पहुँचे। जो बन्दियों को लाने गये थे वे दोनों आदमी तथा तीन व्यक्ति और डर कर नाव की शरण लेने जाते थे। मैंने फ़ाइडे से कहा—"मारो उन लोगों को।" फ़ाइडे पूर्ण साहस कर के उन लोगों की ओर कुछ दूर तक और दौड़ गया; तब तक असभ्यगण नाव पर सवार हो चुके थे और भागने का उद्योग कर रहे थे। इसी बीच फ़ाइडे ने दो ही गोलियों में उन लोगों का काम तमाम कर दिया।

इस अरसे में मैंने अपनी छुरी निकाल कर बन्दी के हाथों-पैरों का बन्धन काट डाला और पोर्चुगीज़ भाषा में पूछा,—

"आप कौन हैं ?" उन्होंने लैटिन भाषा में उत्तर दिया,—"मैं किरिस्तान हूँ ।" उत्तर तो उन्होंने दे दिया पर भूख-प्यास से वे ऐसे व्याकुल थे कि भली भाँति बोल नहीं सकते थे। मैंने झट अपनी जेब से दूध-रोटी निकाल कर उनको खाने के लिए दी। तब फिर मैंने पूछा—"आप किस देश के रहने वाले हैं ?" उन्होंने कहा—"स्पेन के।" फिर उन्होंने अपने आकार इङ्गित और चेष्टा से मुझे कृतज्ञता सहित अनेक धन्यवाद दिये। मैंने टूटी-फूटी स्पेनिश भाषा में कहा,—"महाशय, परिचय पीछे होगा, अभी युद्ध जारी है। यदि आपसे हो सके तो यह पिस्तौल और तलवार लीजिए, तथा शत्रुओं का विनाश कीजिए।' हथियार पाते ही मानो उन्हें नवजीवन मिल गया। उनका उत्साह और साहस सौगुना बढ़ गया। उन्होंने बड़े वेग से जाकर दो दुश्मनों को तलवार से दो टुकड़े कर डाला। असभ्यगण अतर्कित भाव से आक्रान्त होकर भय और आश्चर्य से किंकर्तव्य-विमूढ़ हो रहे थे। कितने ही मर कर गिरने लगे और कितने ही भय से मूर्च्छित होकर गिरने लगे।

मैंने अपनी तलवार और पिस्तौल स्पेनियर्ड को दी थी। इससे मैंने अपनी भरी हुई बन्दूक को विशेष आवश्यकता के लिए रख छोड़ा था। मैंने फ्राइडे को पुकार कर कहा—झुरमुट की आड़ से और दो बन्दूकें ले आओ। वह वायु-वेग से दौड़ कर ले आया। मैं उसको अपनी बन्दूक देकर दूसरी भरने लगा। फ्राइडे से कह दिया कि बन्दूक खाली हो जाने पर मुझको दे देना और भरी हुई ले लेना। मैं बन्दूक भर ही रहा था कि एक असभ्य वीर ने हाथ में काठ की तलवार लेकर स्पेनियर्ड पर आक्रमण किया। स्पेनियर्ड दुर्बल होने पर भी खूब साहसी

था। वह उसके साथ बड़ी बहादुरी से युद्ध करने लगा और दो बार उस असभ्य के सिर पर अस्त्र प्रहार किया। असभ्य दीर्घकाय और बलिष्ठ था। उसने उन आघातों की कुछ परवा न कर के स्पेनियर्ड को धक्का मार कर गिरा दिया और उनके हाथ से तलवार छीनने लगा। तब स्पेनियर्ड ने तलवार को दूर फेंक कर पिस्तौल ली। मैं उनको धरती पर गिरा देख सहायता के लिए दौड़ा जा रहा था कि मेरे पहुँचने के पहले ही उन्होंने पिस्तौल की एक ही गोली से उस नीच को मार डाला।

फ्राइडे ने अपना ख़ंजर हाथ में लेकर पराजित शत्रुओं का पीछा किया और जिनको पकड़ पाया उन्हें मार डाला। स्पेनियर्ड ने मेरे पास आकर एक बन्दूक़ मुझसे माँग ली और उससे दो असभ्यों को घायल किया। इक्कीस मनुष्यों में केवल चार आहत और अनाहत व्यक्ति डोंगी पर सवार होकर भाग चले। फ्राइडे ने उन पर लक्ष्य कर के दो गोलियाँ मारीं, पर ऐसा जान न पड़ा कि किसी को लगी हो।

फ्राइडे उन लोगों का पीछा करने को प्रस्तुत हुआ। उन का भागना मुझे भी पसन्द न था। कारण यह कि वे लोग अपने देश जाकर शायद अपनी मण्डली को ख़बर दें और वहाँ से दो तीन सौ आदमी आकर हम लोगों को मार कर खा डालें। इस लिए फ्राइडे के प्रस्ताव पर स्वीकृत होकर मैं झट कूद कर नाव पर सवार हुआ। वहाँ देखा कि एक आदमी, जिसके हाथ-पाँव बँधे हैं, डोंगी के भीतर पड़ा है और मारे डर के अधमरा सा हो रहा है। उसने सिर्फ़ शोर-गुल सुना है, देखने तो कुछ पाया ही नहीं। अतएव उसका भयभीत होना स्वाभाविक ही

था। मैंने तुरन्त उसका बन्धन काट दिया। फिर उसको उठाने की चेष्टा की। किन्तु वह उठे बिना ही गोंगाँ करने लगा। शायद उसने यह समझा हो कि मैं उसको मारने के लिए उठा रहा हूँ। तब मैंने फ़ाइडे से कहा कि इसको समझा दो कि यह डरे नहीं, और इसे कुछ खाने को भी दो। फ़ाइडे के समझाने पर वह उठ बैठा। फ़ाइडे ने जैसे ही उस व्यक्ति का मुँह देखा वैसे ही उसको अपने गले से लगा कर बड़ा ही स्नेह जनाया। वह हँसकर, रोकर और नाच-गाकर ख़ुशी से पागल हो उठा। बड़ी कठिनाई से मैंने समझा कि वह फ़ाइडे का बाप था। उसका पितृस्नेह देख कर मेरी आँखों में आनन्दाश्रु उमड़ आये।

फ़ाइडे कभी बाप का मस्तक अपनी छाती में लगाता, कभी अपना मस्तक उसकी छाती में छिपाता था; कभी नाचता, कभी हर्ष से चीत्कार कर के नाव से नीचे उछल पड़ता था। उस बूढ़े के हाथ-पैर बन्धन से जकड़ गये थे। फ़ाइडे ने बैठ कर धीरे धीरे उसके हाथ-पैर दबा दिये। उसने बाप को पा कर जितना आह्लाद प्रकट किया, वह समझाने में मैं सर्वथा असमर्थ हूँ।

इस अघटित-घटना से हम उन असभ्य भगोड़ों का पीछा न कर सके। कुछ देर के बाद जब मैंने समझा कि अब फ़ाइडे का आनन्दोच्छ्वास कुछ कम हो चला है तब मैंने उसको पुकारा। वह छलाँग मार कर हँसी-भरे मुख से मेरे सामने आ गया। मैंने पूछा, क्यों रे! तू ने अपने बूढ़े बाप को कुछ खाने को दिया है या केवल आदर ही कर रहा है? फ़ाइडे ने कहा—"नहीं, खाने को तो कुछ भी नहीं दिया। मेरे पेट में आप ही आग लगी थी। मेरे पास जो कुछ था उसे

मैंने ही खा डाला।" तब मैंने अपने बैग से रोटी और मुट्ठी भर किसमिस निकाल कर उसे दी। कुछ तो उसके बाप के लिए और कुछ ख़ास कर उसके लिए। किन्तु उसने सब ले जाकर बाप को दे दिया। इसके बाद वह पलक मारते ही वहाँ से ग़ायब हो गया। मैंने उसे कितना ही पुकारा, पर उसने मेरी एक न सुनी। थोड़ी ही देर में वह घड़े भर जल और दो रोटियाँ लेकर हाज़िर हो गया। तब मैंने समझा कि वह सीधा घर जाकर यह चीज़ें ले आया है। दोनों रोटियाँ मुझको दीं और जल अपने बाप को दिया। वह पानी पीकर स्वस्थ हो गया। मुझे भी बड़ी प्यास लगी थी। मैंने भी थोड़ा सा जलपान किया।

मैंने थोड़ा सा जल स्पेनियर्ड को भी देने के लिए कहा। वह बेचारा एक पेड़ के नीचे घास पर लेटा हुआ विश्राम कर रहा था। वह बहुत थका-माँदा था। उसके हाथ-पैर सख़्ती से बाँधे जाने के कारण सूज गये थे। फ़्राइडे ने रोटी और पानी लेकर उसको दिया। वह उठ कर बैठा और खाने लगा। मैंने भी उसे, पास जाकर, एक मुट्ठी किसमिस दी। उसने मेरे मुँह की ओर जिस दृष्टि से देखा, वह दृष्टि कृतज्ञता के भाव से भरी थी। यद्यपि युद्ध के समय उसने ख़ूब बहादुरी दिखाई थी किन्तु इस समय वह एक दम बेसुध हो गया था। दो तीन बार उठने की चेष्टा की पर उठ न सका। उसके सूजे हुए दोनों पैरों में बड़ी पीड़ा हो रही थी। मैंने फ़्राइडे से उसके पैर दाब देने तथा शराब की मालिश कर देने को कहा।

फ़्राइडे जब तक वहाँ था तब तक मिनट मिनट पर दृष्टि फेर कर अपने पिता को देख लेता था। एक बार उसने पीछे

की ओर घूमकर देखा, उसको पिता देख न पड़े। वह फ़ौरन उठकर खड़ा हुआ और किसी से कुछ कहे बिना ही एक ही दौड़ में बूढ़े के पास जा पहुँचा। वह ऐसे ज़ोर से दौड़ कर गया था कि उसके पैर मानो धरती पर पड़ते ही न थे। उसने जाकर देखा, उसके वृद्ध पिता आराम करने की इच्छा से सो रहे हैं। तब फिर वह हमारे पास लौट आया। मैंने उससे कहा—"स्पेनियर्ड को उठा कर नाव पर रख आओ। इसको घर ले जाना होगा।" फ्राइडे खूब बलिष्ठ था, वह स्पेनियर्ड को पीठ पर लादकर नाव पर रख आया। इसके बाद वह ऐसी शीघ्रता से नाव को खेकर ले चला कि मैं किनारे किनारे उसके साथ बराबर नहीं जा सकता था। उसने बिना किसी विघ्न-बाधा के नाव को खाड़ी में ले जाकर झट उस पर से उतर कर फिर वायुवेग से दौड़ लगाई। वह मेरे पास से दौड़ा हुआ जा रहा था। मैंने पूछा—"कहाँ जा रहे हो?" उसने कहा—"दूसरी डोंगी भी लाता हूँ।" प्रश्न-उत्तर समाप्त होते न होते वह दृष्टि-पथ से निकल गया। ऐसा विचित्र दौड़ना मनुष्यों की तो कुछ बात ही नहीं, मैंने घोड़ों में भी प्रायः कम देखा होगा। मैं पैदल चल कर अभी खाड़ी तक पहुँचा भी नहीं कि उसने दूसरी डोंगी भी लाकर हाज़िर कर दी। उसने मुझे पार उतार कर उन दोनों अभ्यागतों को भी पार उतारा। वे दोनों अतिथि चलने में असमर्थ थे। मैं इन दोनों को घर तक ले चलने का उपाय सोचने लगा। झटपट एक खटोली सी तैयार करके उस पर उन दोनों को लिटा कर फ्राइडे और मैं उठा कर घर ले आया।

अतिथि-सेवा

स्पेनियर्ड और फ़्राइडे के पिता को उठा कर हम लोग अपने पहले घेरे के भीतर तो ले आये। अब देखा कि दूसरे घेरे को लाँघ कर उनको भीतर ले जाना कठिन है। घेरा काट डालने को भी जी नहीं चाहता था। तब मैंने फ़्राइडे की सहायता से शीघ्र ही एक झोंपड़ा तैयार किया। उसके ऊपर डाल-पात का छप्पर कर दिया। भीतर पयाल पर कम्बल बिछा कर दो बिछौने कर दिये।

फिर आसन्न मृत्यु के मुख से रक्षा-प्राप्त इन दोनों दुर्बल व्यक्तियों के आश्रय और आराम की व्यवस्था कर के मैं उनके खान-पान का प्रबन्ध करने लगा। फ़्राइडे को एक बकरा काटने की आज्ञा दी। आज्ञा पाते ही उसने बकरे को काट-बना कर उसका माँस पका दिया। फ़्राइडे के हाथ का बना खाना बहुत साफ़ सुथरा और स्वादिष्ठ होता था। मैंने नये तम्बू में टेबल पर खाने की सामग्री को भली भाँति सजा कर सब के साथ बैठ कर भोजन किया और भोजन करते करते उन दोनों अतिथियों को आश्वासन दिया। फ़्राइडे दुभाषिया बन कर मेरी बातें अपने बाप तथा स्पेनियर्ड को समझा देता था। स्पेनियर्ड उस असभ्य भाषा में भली भाँति बातें कर सकता था।

खाने-पीने के बाद मैंने फ़्राइडे से कहा कि युद्ध-क्षेत्र में मेरी बन्दूकें आदि जो चीज़ें पड़ी हों उन्हें तुम एक नाव ले जाकर उठा लाओ।" उसके दूसरे दिन उसी के द्वारा कुल मुर्दों को मिट्टी में गड़वा दिया। कारण यह कि बाहर उन्हें यों हीं छोड़ देने से इस द्वीप में रहना कठिन हो जाता। उसने

सब काम अच्छी तरह कर दिया। युद्ध का या असभ्यों का एक भी चिह्न न रहने दिया।

अब मेरे टापू में प्रजा की संख्या तीन हुई। पहले था मैं राजा, अब मानों हुआ सम्राट्! यह भावना मेरे मन में बड़ा ही हर्ष उपजाती थी। मैं ही समग्र द्वीप का अधीश्वर हूँ। मेरी प्रजा का जीवन-मरण मेरे ही हाथ में है। मैंने उनके जीवन की रक्षा की है, वे मेरी आज्ञा से प्राण देने को प्रस्तुत हैं। किन्तु प्रजा के तीनों आदमियोंका धर्म और मत तीन तरह का था। फ़ाइडे प्रोटेस्टेन्ट (protostant) किरिस्तान था, उसका पिता नास्तिक था, और स्पेनियर्ड कैथलिक किरिस्तान था। किन्तु मैं इससे क्षुण्ण न था। मेरे राज्य में मज़हब की स्वाधीनता है। इसमें मैं अपना गौरव समझता था।

मैं फ़ाइडे को मध्यस्थ कर के अपने नवीन अतिथियों के साथ वार्तालाप करने में प्रवृत्त हुआ। मैंने फ़ाइडे के बाप से पूछा—"तुम क्या सोचते हो, इन चार भगोड़ों के मुंह से ख़बर पाकर क्या असभ्य गण दल बाँध कर यहाँ आवेंगे और मुझ पर आक्रमण करेंगे?" उसने कहा, "मेरा ख़याल तो ऐसा नहीं है। जैसी तेज़ हवा बह रही थी उससे यही मालूम होता है कि नाव डूब जाने से वे लोग मर गये होंगे या दूसरे देश में पहुँच गये होंगे। दूसरे देश के लोग उन्हें जीते जी कब जाने देंगे। कदाचित् वे बच कर अपने देश को लौट भी गये होंगे तो भी अब इस देश में न आवेंगे क्योंकि वे आपस में कह रहे थे कि 'दो स्वर्गीय देवों ने आकर वज्राघात से उन सब को मार डाला है,।' उन असभ्यों ने मुझको और फ़ाइडे को देव समझ रक्खा और बन्दूक की आवाज़ को वज्रनाद मान लिया था। वे असभ्य लोग आवें

चाहे न आवें पर हम लोग सर्वदा चौकन्ने रहने लगे। अब हम लोग चार आदमी हुए। सौ आदमियों का सामना कर सकेंगे —ऐसा जी में भरोसा हुआ।

अब फिर छुटकारे की चिन्ता होने लगी। फ्राइडे के पिता ने भी मुझको भरोसा दिया कि उनके देश में जाने पर सब लोग मेरे साथ सद्व्यवहार करेंगे। स्पेनियर्ड ने भी कहा कि उस देश में जो और पोर्चुगीज़ और स्पेनियर्ड लोग हैं उन लोगों के साथ कोई बुरे तौर से पेश नहीं आता। सभी लोग उनका सम्मान करते हैं। वहाँ जाने पर वे लोग भी मेरा सम्मान करेंगे। मैंने कहा, "यदि मैं वहाँ न जाऊँ और उन यूरोपियनों को यहीं बुला लूँ तो हम लोग मिल कर एक बहुत बड़ा जहाज़ बना सकेंगे। किन्तु सच तो यह है कि मनुष्य एक विचित्र जीव होता है। जब तक उन लोगों को अपना मतलब निकालना होगा तब तक तो वे मेरा उपकार मानेंगे पीछे से चाहे मेरा ही सर्वनाश करेंगे। जानते तो हो, स्पेन और इँगलैन्ड की चिरशत्रुता है"। स्पेनियर्ड ने इस बात का प्रतिवाद कर के कहा—यह बात अब नहीं है, उसका आप भय न करें। वे लोग वहाँ बेकार पड़े हैं, इससे किसी तरह का साहाय्य पाने ही से वे कृतार्थ होंगे। आप कहें तो मैं वहाँ जाकर और उन लोगों का अभिप्राय जान कर फिर यहाँ आ सकता हूँ। उन लोगों के पास अस्त्र-शस्त्र, कपड़े-लत्ते आदि कुछ नहीं हैं। असभ्यों की दया के भरोसे बैठे हैं। वे लोग आपसे सहायता पाने पर आपकी आज्ञा के अनुसार चलेंगे, क्योंकि वे सभी भद्र और सहृदय हैं। आपको स्वामी समझ कर चिरकाल तक आपकी सेवा करेंगे और आपही की आज्ञा पर अपने जीवन-मरण को निर्भर करेंगे।

स्पेनियर्ड की बात सुन कर मैं उन लोगों की सहायता करने को राज़ी हुआ और उसे वहाँ भेजने का प्रबन्ध भी करने लगा। किन्तु उसने एक आपत्ति की। उस आपत्ति में दीर्घ-दर्शिता और सत्यता दोनों का परिचय मिला। स्पेनियर्ड मेरे पास एक महीने से है। मेरा जीवन-निर्वाह किस तरह होता है, इसे वह अच्छी तरह समझ गया है। सब अपनी आँखों देख चुका है। मेरे पास जो संचित अनाज था वह एक आदमी के लिए यथेष्ट था किन्तु अभी तो वह चार मुँह में जाता है। उस पर यदि और यूरोपियन भाई आ जायँ तो उतने अनाज से कै दिन गुज़र होगी। इसलिए एक फ़सल अन्न ख़ूब अधिकता से उपजा कर तब उन लोगों को बुलाना ठीक होगा। नहीं तो वे लोग एक विपत्ति से निकल दूसरी विपत्ति में आकर अप्रसन्न हो सकते हैं।

उसकी इस सलाह से प्रसन्न हो कर हम चारों आदमी खेती के काम में प्रवृत्त हुए। एक महीने बाद ज़मीन को अच्छी तरह जोत गोड़ कर बीज बो दिया।

साथी मिल जाने से मैं अब निर्भय होकर टापू में जहाँ जी चाहता, जाता था। मैं चुन चुन कर पेड़ दिखलाने लगा और फ्राइडे तथा उसका बाप दोनों उन्हें काटने लगे। स्पेनियर्ड को मैंने उनकी देखभाल पर नियुक्त किया। मैंने जिस तरह एक एक पेड़ से एक एक तख़्ता निकाला था उसी तरह निकालना उन्हें भी बता दिया। क्रमशः उन्होंने एक दर्जन बड़े बड़े तख़्ते तैयार किये। भावुक व्यक्ति सोच कर स्वयं समझ सकते हैं कि उस तरह तख़्ता निकालना कैसे कठिन परिश्रम का फल है।

इसके बाद पारी बाँध कर हम और फ़ाइडे एक दिन और स्पेनियर्ड और फ़ाइडे का पिता दूसरे दिन बकरे पकड़ने के लिए जाने लगे। थोड़े ही दिनों में हम लोगों ने बीस पचीस बकरे और बढ़ा लिये। इसके अनन्तर हम लोगों ने पचास-साठ मन सूखे अंगूर इकट्ठे कर लिये। फ़सल तैयार होने पर धान और जौ भी बहुत हुए। अनाज रखने के लिए और कितनी ही टोकरियाँ बुननी पड़ीं। स्पेनियर्ड इस काम में बड़ा दक्ष निकला। खाद्य-सामग्री पूर्णरूप से सञ्चित हो जाने पर मैंने स्पेनियर्ड से उनके साथियों को बुला लाने को कहा। उससे मैंने अच्छी तरह समझा कर कह दिया कि "जो व्यक्ति शपथ-पूर्वक मेरा अनुगत होना स्वीकार न करें उन्हें न लाना। जो लोग मेरी अधीनता स्वीकार करें उन को स्वीकृति-पत्र पर मेरी अनुगामिता के विषय में हस्ताक्षर करना होगा।" उस समय मुझे इसका खयाल न रहा कि उन लोगों के पास स्याही, क़लम और काग़ज़ भी तो कुछ न होगा। जो हो, स्पेनियर्ड और फ़ाइडे के पिता डोंगी पर सवार हो कर चले गये। मैंने उनके साथ दो बन्दूकें, कुछ गोली-बारूद और आठ दिन का भोजन रख दिया।

आज सत्ताइस वर्ष के अनन्तर अपने उद्धार की इस प्रकृत आयोजना से मेरा हृदय आनन्द से आप्लावित हो रहा था। कुँवार की पूर्णिमा की रात में अनुकूल वायु देख कर वे दोनों रवाना हुए।

क्रूसो के उद्धार की पूर्व सूचना

स्पेनियर्ड और फ़्राइडे के पिता को रवाना करके हम नित्य ही उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। देखते देखते आठ रोज़ बीत गये तो भी उनके दर्शन न हुए। एक दिन सबेरा हो जाने पर भी मैं बिछौने पर पड़ा रहा। फ़्राइडे दौड़ कर आया और बोला—"वे आ रहे हैं।" मैं बिछौने से उछल कर उठ खड़ा हुआ और झट कपड़े पहन कर दौड़ता हुआ बाहर आया। हड़बड़ी में बन्दूक़ लेना भूल गया। बाहर आकर देखा कि एक नाव द्वीप के दक्षिण ओर समुद्र के किनारे लगने का उपक्रम कर रही है। उस तरफ़ से स्पेनियर्ड के आने की संभावना न थी। मैंने फ़्राइडे को पुकार कर कहा—"अभी सावधानी से छिपे रहो। ये लोग वे नहीं हैं। ये शत्रु हैं या मित्र, यह पहले जान लेना चाहिए।" मैंने दूरबीन लेकर सीढ़ी के सहारे पहाड़ की चोटी पर चढ़ कर देखा। यहाँ से क़रीब ढाई मील पर दक्खिन-पूरब के कोने में एक जहाज़ है जो किनारे से डेढ़ मील के भीतर ही होगा। दूरबीन से साफ़ दिखाई दिया। वह अँगरेज़ी जहाज़ था। उसके साथ जो नाव थी वह अँगरेज़ी ढँग की थी।

जहाज़ तो मेरे देश का मालूम होता है। संभव है उस पर देशवासी हों, और वह बन्धु के द्वारा परिचालित हो। यह सोच कर मेरा मन आनन्द और आश्चर्य से डावाँडोल होने लगा। तो भी पूरा विश्वास न होता था। मैंने फिर सोचा, अँगरेज़ी जहाज़ को मार्ग छोड़ कर इधर आने की क्या ज़रूरत थी? इसलिए चोर-डकैतों के हाथ में पड़ने की अपेक्षा छिप रहना अच्छा है। हम लोगों के अन्तःकरण से

जो इस प्रकार बीच बीच में सावधानी का संकेत होता है, उसे अग्राह्य न करना चाहिए। यह एक अदृश्य शक्ति की सावधान वाणी है जो हम लोगों के भले के लिए उद्भूत होती है। उस अदृश्य वाणी का पालन करने से ही मेरी रक्षा हुई है, नहीं तो न मालूम मुझे कैसे कैसे सङ्कट झेलने पड़ते। नौका धीरे धीरे आकर ठहरने के लिए घाट खोज रही है। नाविकगण खाड़ी तक जहाज़ को नहीं लाये, उन्होंने समुद्र के किनारे ही जहाज़ लगाया। खाड़ी की ओर न आकर उन लोगों ने हमारे हक़ में अच्छा ही किया। नहीं तो हमारा पता पाकर वे लोग हमारा सर्वस्व लूट ले जाते। जब वे नाव से उतर कर किनारे आये तब स्पष्ट देख पड़ा कि वे अँगरेज़ हैं। कुल ग्यारह आदमी थे। उनमें तीन मनुष्य अस्त्र-रहित थे। ऐसा मालूम हुआ, जैसे वे बन्दी हों। उन तीनों में एक व्यक्ति को अनेक प्रकार से विनय की मुद्रा करते देखा; अन्य दो व्यक्ति भी विनती करते थे, किन्तु वे दोनों प्रथम व्यक्ति की भाँति अधीर न थे। इन लोगों को देख कर मैं कुछ निश्चय न कर सका। फ़ाइडे ने कहा—"साहब, देखिए देखिए, अँगरेज़ लोग भी असभ्यों की भाँति नर-मांस खाते हैं।" मैंने कहा—नहीं फ़ाइडे, तुम कभी ऐसा ख़याल न करो।

फ़ाइडे—"नहीं, वे उन क़ैदियों को ज़रूर खायँगे।" मैं—नहीं, नहीं, तुम क्या समझो। यह हो सकता है कि वे इन तीनों को मार डालें पर खायँगे नहीं, यह सच जानो।

असल मामले को समझ न सकने पर भी किसी क्षण में उन तीनों की मृत्यु देखने के भय से मेरा दिल धड़क रहा था। एक बार एक व्यक्ति को ऊपर की ओर तलवार उठाते

देख मेरा लोहू सर्द हो गया। मैं सोचने लगा कि इस समय यदि स्पेनियर्ड और फ्राइडे के बाप यहाँ रहते तो अच्छा होता। फिर देखा कि वे लोग तीनों बन्दियों को छोड़ कर टापू देखने के लिए भिन्न भिन्न दिशा में चले गये। तीनों बन्दी हताश हो कर वहीं बैठ गये। इन लोगों की दशा देख कर मुझे इस द्वीप में आने के प्रथम दिन की अवस्था का स्मरण हो गया। जैसे मैं नहीं जानता था कि मुझ पर बिना कुछ प्रकट किये विधाता मेरे लिए कैसा क्या इन्तज़ाम करते हैं वैसे ही दुख के मारे ये बेचारे भी नहीं जानते कि उन लोगों के लिए अचिन्तित भाव से ईश्वर मेरे द्वारा रक्षा का उपाय कर रहे हैं। हम लोग इसी तरह भविष्य के अन्धकार-मय पथ में बिना देखे-सुने विधाता के मङ्गल-विधान में सन्देह करते हैं और अविश्वास के कारण हताश बने रहते हैं।

ठीक ज्वार आने पर वे लोग किनारे आये और बेख़बर हो कर टापू देखने की इच्छा से इधर उधर घूमने लगे। अभी घूम ही रहे थे कि इतने में पानी घट जाने से उनकी किश्ती सूखे में पड़ी रह गई। उसमें दो आदमी थे किन्तु वे दोनों सो गये थे। एक आदमी एकाएक जाग उठा और नाव को सूखे में देख भौंचक सा हो रहा। फिर सँभल कर उसने भ्रमण-कारियों को ख़ूब ज़ोर से चिल्ला कर पुकारा। थोड़ी ही देर में सभी लौट पड़े। किन्तु वहाँ दल-दल थी और किश्ती ख़ूब भारी थी इससे वे लोग उसे ठेल कर पानी में न ले जा सके। तब हार कर वे लोग फिर घूमने चले गये। मैंने समझा कि अब दस घंटे के पहिले यह किश्ती हिल डोल न सकेगी। तब तक अँधेरा हो आवेगा। इतना समय पाकर मैं युद्ध का सामान ठीक करने लगा।

दोपहर के समय सभी धूप से घबरा कर वृक्ष की छाया में लेट कर ऊँघने लगे। केवल वे तीनों बन्दी पेड़ की छाँह में जागते हुए बैठे थे। मैं उनके साथ भेंट करने का निश्चय कर के हरबे-हथियारों से लैस हो और फ्राइडे को साथ ले क़िले से निकला। विचित्र पोशाक के कारण हम लोगों का चेहरा देखने में बिलकुल भूत का सा था। हम लोगों ने पैरों की आहट बचा कर धीरे धीरे, छिपे तौर से, उनके पास जा कर स्पेनिश भाषा में पूछा—"महाशय, आप लोग कौन हैं?" यह सुन कर वे लोग चकित हुए और चुपचाप हमारे मुँह की ओर देखने लगे। मैंने देखा कि वे भागने का उपक्रम कर रहे हैं, तब मैंने अँगरेज़ी में कहा—"महाशय, मुझको देख कर आप लोग डरें नहीं, बल्कि आप लोग यह समझें कि एक अप्रार्थित मित्र आप के निकट आया है।" उनमें से एक व्यक्ति सम्मान दिखाने के लिए टोपी उतार कर बोला—"ज़रूर ही आप ईश्वर-प्रेरित हैं, क्योंकि हम लोगों का साहाय्य करना मनुष्य के सामर्थ्य से बाहर की बात है।" मैंने कहा—"आपका कहना ठीक है, सभी मङ्गल कार्य ईश्वर की प्रेरणा से होते हैं। अभी आप यह तो बतावें कि मामला क्या है।" यह सुन कर उसकी आँखों से झरझर आँसू गिरने लगे। वह भय से काँपता हुआ बोला—मैं नहीं जानता कि मैं देवता, गन्धर्व या मनुष्य किसके साथ बातें कर रहा हूँ।

मैं—आप भय न करें। भगवान् देवता या गन्धर्व किसी को भेजते तो उनका लिबास और रूप-रङ्ग हम से कहीं अच्छा दिखाई देता। मैं आदमी हूँ, अँगरेज़ हूँ और आप लोगों की सहायता करने की इच्छा से आया हूँ। कहिए, क्या समाचार है?

वह—हम लोगों का मुख़्तसर हाल यही है कि मैं जहाज़ का कप्तान हूँ। नाविक-गण विद्रोही होकर मुझको मारने पर उद्यत हुए थे। बहुत कहने-सुनने और विनती करने पर उन लोगों ने इस निर्जन द्वीप में हम लोगों को छोड़ कर चले जाने का विचार किया है। इनमें एक मेरा मेट है और एक नौकारोही है।

मैं—उन अत्याचारियों के पास बन्दूकें हैं?

कप्तान—हाँ, दो बन्दूकें हैं। वे जहाज़ में रक्खी हैं।

मैं—तो आप लोग निश्चिन्त रहिए। मैं अभी उनका नाश करूँगा या हो सकेगा तो उन्हें बन्दी करूँगा।

कप्तान—"उनमें दो मनुष्य उस मण्डली के मुखिया हैं, उन को पकड़ लेने से और लोग आप ही वशीभूत होंगे।" वे लोग कहीं हम को देख न लें, इसलिए कप्तान आदि तीनों को साथ ले मैं अपने क़िले के सामने वाले उपवन में जा छिपा। तब मैंने फिर कप्तान से कहा—देखिए महाशय, यदि आप लोग दो शर्तें मंज़ूर करें तो मैं आप लोगों के बचाने का उपाय कर सकता हूँ।

कप्तान ने मेरा मतलब समझ कर कहा—यदि आप जहाज़ पर क़ब्ज़ा करलें तो वह आप अपना ही समझिए। यदि यह नहीं तो हम लोगों को आप अपनी आज्ञा के वशवर्ती समझें। अन्य दो व्यक्तियों ने भी कप्तान की इस बात पर ज़ोर दिया।

मैंने कहा—मेरी दो शर्तें यही हैं कि जब तक आप लोग मेरे इस टापू में रहें, मेरे अधीन होकर रहें और मेरी आज्ञा के अनुसार चलें। कभी विरुद्धाचरण न करें। कोई काम आ पड़ने पर मैं अस्त्र दूँ तो काम हो जाने पर फिर वह

मुझे लौटा दें और जहाज़ अधिकार में आ जाने पर मुझको तथा मेरे भृत्य को बिना कुछ भाड़ा लिये इँगलैंड पहुँचा दें।

कप्तान बोला—मैं जितने दिन जीवित रहूँगा आपकी आज्ञा के अधीन रहूँगा।

तब मैंने कहा—"अच्छा, यह लीजिए तीन बन्दूकें और गोली-बारूद। अच्छा यह बतलाइए कि अब क्या करना होगा?" उन्होंने कृतज्ञता प्रकट कर मेरे ही ऊपर सम्पूर्ण भार सौंपा। मैंने कहा, वे लोग सोये हैं, चलो अभी गोली से उन को महानिद्रा के अधिकारी बना दें। किन्तु कप्तान ने इसमें अपना उत्साह नहीं दिखाया। बिना मारे ही यदि काम निकल जाय तो वैसा ही करना ठीक होगा। यही उनकी राय थी। तब मैंने उन्हीं को आगे जाने की आज्ञा दी और उनसे कह दिया कि जो आप अच्छा समझें, करें।

इस तरह की बात-चीत होही रही थी कि इतने में उन सबों में कई मनुष्य जाग उठे और हम लोगों ने दूर से देखा कि दो आदमी उठ खड़े हुए। मैंने कप्तान से पूछा, "उनमें विद्रोहियों का सर्दार है कि नहीं।" उसने कहा—नहीं।

मैं—"अच्छा, तो उन्हें जाने दो। ईश्वर ने उन्हें बचाने के लिए पहले ही जगा दिया है। किन्तु असल अपराधी बच जाय तो यह तुम्हारा दोष है।" इस बात से उत्तेजित हो कर वे तीनों मनुष्य बन्दूक़, तलवार और पिस्तौल ले कर बाहर निकले। कप्तान के दोनों साथी आगे बढ़ कर चिल्लाने लगे। नाविकों में एक व्यक्ति जागता था, वह पीछे की ओर देख कर साथियों को चिल्ला कर पुकारने लगा। किन्तु जिस घड़ी उसने पुकारा उसी घड़ी कप्तान के दोनों साथियों ने बन्दूकें दाग दीं। एक तो तत्काल मर गया, और दूसरा अत्यन्त

आहत हो गया। वह खूब ज़ोर से चिल्ला कर साथियों को पुकारने लगा। कप्तान ने आगे बढ़ कर कहा, "अब साथियों को न पुकार कर भगवान् को पुकार जिससे तेरा कल्याण हो। अब तुझे समय नहीं है।" यह कह कर उन्होंने बन्दूक़ के कुन्दे से उसे ऐसा मारा कि वह गिर पड़ा और कुछ न बोला। वहाँ तीन आदमी और थे, उनमें एक आदमी कुछ घायल हो गया था। मेरे वहाँ पहुँच जाने पर वे लोग अपने को निरुपाय देख दयाभिक्षा माँगने लगे। कप्तान ने कहा—यदि तुम लोग मेरे विश्वासी और अनुगत होकर रहने की प्रतिज्ञा करो तो मैं तुम लोगों का अपराध क्षमा कर सकता हूँ। उन लोगों ने अपने किये अनुचित कर्म के लिए अनुताप कर के भविष्य में भलमनसाहत के साथ रहने की शपथ की। तब हम लोगों ने उनकी जान बख़्श दी। पर अभी उन के हाथ-पैर बाँध रखने का मैंने आदेश किया।

हम लोग जब इधर ये काम कर रहे थे तब फ़ाइडे और कप्तान का मेट जा कर डोंगी का पाल, पतवार आदि सभी वस्तुएँ उठा कर ले आये। प्रतिपक्षियों के तीन मनुष्य बन्दूकों की आवाज़ सुन कर धीरे धीरे हम लोगों के पास आये। यहाँ कप्तान को जयी देख कर उन लोगों ने आप ही बन्दी होना स्वीकार किया।

अब मुझ से कप्तान का परिचय होने लगा। पहले मैंने अपने जीवन का समस्त इतिहास सुनाया। उसने विस्मित हो कर आदि से अन्त तक मनोयोगपूर्वक सुना और मेरा इतिहास उत्तरोत्तर अद्भुत घटना से भरा हुआ जान कर उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसकी आँखों से आँसू बह चले। वह कुछ बोल न सका। तब मैं उन सबों को अपने घर

ले आया और जो कुछ मेरे पास था उससे उन लोगों का आतिथ्य-सत्कार किया। फिर अपना घर-द्वार खेती-बारी आदि उन्हें दिखलाया।

कप्तान मेरे क़िले और क़िले के सामने की कृत्रिम उपवाटिका की प्रशंसा करने लगा। मैंने उससे कहा, मेरा एक और विनोद-अस्थान है जो पीछे दिखलाऊँगा। अभी जहाज़ के दख़ल करने का उपाय ठीक करना चाहिए। कप्तान ने इसे स्वीकार किया। परन्तु उपाय क्या है? जहाज़ पर अब भी छब्बीस विद्रोही हैं। इँगलैंड के क़ानून के अनुसार विद्रोहियों के लिए प्राणदण्ड निर्धारित था। वे विद्रोही हैं, एक तो इसलिये दूसरे प्राणों के भय से वे लोग प्राणपण से युद्ध करेंगे। कारण यह कि हम लोगों की विजय होने पर अवश्य ही उनकी मृत्यु होगी। हम लोग थोड़े से आदमी उन लोगों के साथ युद्ध कर के कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं?

कप्तान की यह बात सुन कर मैंने यह उपाय सोचा कि किसी तरह जहाज़ के लोगों को भुला कर टापू में ले आवें और उन्हें गिरफ़ार करें। शायद वे लोग अपने साथियों के आने में विलम्ब देख कर उन्हें ढूँढ़ने आवेंगे, पर अब वे अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर ही आवेंगे। जो हो, इस समय सूखे में जो नाव पड़ी है उसे बेकार कर देना चाहिए। यह स्थिर करके हम लोगों ने नाव में अस्त्र शस्त्र, गोली-बारूद आदि जो कुछ पाया निकाल लिया और उस के पेंदे में छेद कर दिये। आशा न थी कि हम लोग जहाज़ पर दख़ल कर सकेंगे किन्तु उन लोगों के जहाज़ ले कर चले जाने पर हम लोग इस बोट की मरम्मत करके स्पेनियर्ड लोगों से जाकर मिल तो सकेंगे। यही बहुत है।

हम लोग जब सारी बातें सोच रहे थे तब जहाज़ के लोग बन्दूक़ की आवाज़ करके और पताका हिला कर नाव को बुलाने लगे। बार बार बन्दूक़ की आवाज़ करने पर भी जब उन्होंने देखा कि नाव नहीं हिली तब जहाज़ से एक और डोंगी उतार कर उस पर कई एक नाविक सवार हो किनारे की ओर आने लगे। मैंने दूरबीन लगा कर देखा, दस ग्यारह आदमी बन्दूकें लिये चले आ रहे हैं।

कप्तान कहने लगा कि इतने आदमियों के साथ हम लोग कैसे भिड़ सकेंगे। मैंने हँस कर कहा—"हम लोगों के सदृश अवस्थापन्न लोगों को फिर भय क्या? जीना-मरना दोनों बराबर। युद्ध का भार मुझे सौंप कर तुम निश्चिन्त रहो, वे लोग अभी तो मेरे बन्दी हुए ही जा रहे हैं।" मेरे इस उत्साह-वाक्य से कप्तान प्रसन्न और साहसी हो उठा।

नाव को समुद्र-तट के समीप आते देख मैंने बन्दियों को अपनी गुफा में भेज दिया। फ़्राइडे ने उन लोगों को खाद्य और रोशनी देकर समझा दिया कि यदि तुम लोग भागने की चेष्टा न करके चुपचाप रहोगे तो दो-तीन दिन के बाद छोड़ दिये जाओगे; नहीं तो प्राणदण्ड होगा। इस आशातीत सदय व्यवहार से वे लोग सन्तुष्ट होगये। किन्तु उन लोगों ने यह न जाना कि गुफा के द्वार पर फ़्राइडे निगरानी के लिए नहीं रहा।

कप्तान की सिफ़ारिश और उनकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके दो बन्दियों को स्वाधीनता देकर हम लोगों ने अपने दल में ले लिया। अब हम सात आदमी हथियारबन्द हुए (मैं, फ़्राइडे, तीन आदमियों सहित कप्तान, और दो बन्धन-मुक्त बन्दी)। इससे पूरा भरोसा हुआ कि हम लोग अब दस आदमियों का सामना कर सकते हैं। यदि कप्तान का यह कहना ठीक हुआ

कि उन दस नाविकों में तीन चार बिलकुल निर्बल हैं तब तो कोई बात ही नहीं।

नाव किनारे लगते ही वे लोग नाव को ऊपर खींच लाये। यह देख कर मैं खुश हुआ। वे लोग उतरते ही दौड़ कर पहली नाव के पास गये। नाव की समस्त वस्तुओं को अपसारित और उसके पेंदे में एक बड़ा सा छेद देख कर वे अवाक् हो रहे। कुछ देर खड़े हो कर उन लोगों ने बहुत कुछ तर्क वितर्क किया। इसके बाद उन लोगों ने दो-तीन बार खूब उच्चस्वर से अपने साथियों को पुकारा। किन्तु उससे कुछ फल न हुआ। तब उन लोगों ने एक साथ बन्दूकों की आवाज़ की जिनके शब्द से सारा वन प्रतिध्वनित हो उठा। पर इससे भी किसी का कुछ पता न लगा। तब उन लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। सभी ने निश्चय किया कि साथी मारे गये। तब उन लोगों ने जहाज़ पर लौट जाने का उपक्रम किया। नाव को पानी में ले जाकर सभी सवार हुए। यह देख कर हम लोग हताश हो गये। मैंने सोचा कि इस दफ़े ये लोग जहाज़ पर जाते ही जहाज़ खोल कर चल देंगे। किन्तु वे लोग थोड़ी दूर जाकर न मालूम फिर क्या सोच कर लौट आये। इस दफ़े सात आदमी नाव से उतर कर ऊपर आये और तीन आदमी नाव की हिफ़ाज़त के लिए नाव में रहे। यह देख कर भी हम लोग निराश हुए। क्योंकि नाव को अधिकार में न कर सकने पर सभी प्रयत्न व्यर्थ होगा। वे लोग जहाज़ पर जाकर ख़बर देंगे और ख़बर पाते ही जहाज़ चल देगा। तो भी हम लोग सुयोग की अपेक्षा करते रहे। सात आदमियों को किनारे पर उतार कर नाव के माँझियों ने पानी में नाव ले जाकर लंगर डाल दिया। हम लोग एकाएक नाव पर आक्र-

भण करें इसकी भी अब संभावना न रही। जो लोग किनारे उतरे थे वे एक साथ आगे-पीछे होकर आने लगे। क्रमशः वे लोग उसी पहाड़ पर चढ़ने लगे जिसके नीचे मेरा घर था। वे हम लोगों को नहीं देखते थे किन्तु हम लोग उन्हें अच्छी तरह देख रहे थे। वे लोग ज़रा और हमारे नज़दीक आ जाते तो बड़ा अच्छा होता। हम लोग उन पर गोली चला सकते या दूर जाते तो भी अच्छा होता। हम लोग वहाँ से बाहर निकल जाते।

धीरे धीरे वे लोग पर्वत की चोटी पर चढ़ गये। वहाँ से वन और उपत्यका बहुत दूर तक देख पड़ती थी। वे लोग उच्चस्वर से पुकारते पुकारते थक कर चुप हो रहे, पर किसी तरफ़ से कुछ उत्तर न आया। वे लोग और ऊपर जाने का साहस न करके एक दरख़्त के नीचे बैठ कर आपस में सलाह करने लगे। वे लोग यदि सो रहते तो हम, उनके संगियों की भाँति, उन्हें भी सहज ही में वश में कर लेते। किन्तु वे लोग विपत्ति के भय से जागते ही रहे। क्या करना चाहिए? कुछ स्थिर न करके हम लोग चुपचाप देखने लगे।

आख़िर वे लोग एकाएक उठ खड़े हुए और नाव की ओर चले। उन लोगों ने साथियों का अन्वेषण छोड़कर अब जहाज़ पर जाना ही स्थिर किया। यह देखकर मेरा जी सूख गया। हठात् उन लोगों को लौटाने का एक उपाय सूझा। खाड़ी के पास जाकर ख़ूब ज़ोर से चिल्लाने के लिए मैंने फ़्राइडे और मेट को कहा। इसके बाद नाविकगण यदि उस शब्द की टोह में इस तरफ़ आवें तो उसी तरह चिल्लाते हुए दूर निकल जायँगे और उन लोगों को चक्कर में डालकर फिर मेरे पास लौट आवेंगे।

नाविक लोग नाव पर चढ़ने जा रहे हैं, ऐसे समय फ़ाइडे और मेट ने चिल्ला कर उन लोगों को पुकारा। उन लोगों ने सुन कर उत्तर दिया और शब्द की ओर लक्ष्य करके दौड़े; कुछ देर में खाड़ी के पास पहुँचे। पानी में तैर कर पार होने का साहस न कर के उन लोगों ने पार उतार देने के लिए माँझियों को पुकार कर नाव मँगाई। माँझियों ने खाड़ी में नाव लाकर उन लोगों को पार उतार दिया और नाव को एक पेड़ के तने से बाँध रक्खा। इस दफ़े नाव में सिर्फ़ दो आदमी रहे। मैं तो ऐसा चाहता ही था। मैंने कप्तान आदि सब को साथ ले चुपके से जा कर नाव के दोनों मनुष्यों को गिरफ़्तार कर लिया। ये उन्हीं जाहिलों के दल के थे। इन्होंने सहज ही में मेरी अधीनता स्वीकार की और हम लोगों के साथ मिल गये।

इधर फ़ाइडे और मेट नाविकों को पुकार कर एक वन से दूसरे वन में घुमा-फिराकर ले जाने लगे। आख़िर उन लोगों को हैरान कर के ऐसे घने जंगल में ले जा कर छोड़ दिया कि सन्ध्या होने के पहले नाव पर उन लोगों के लौट आने की संभावना न रही।

अब हम लोग उन के आने की प्रतीक्षा करने लगे। फ़ाइडे लौट कर हम लोगों के साथ आ मिला। कई घंटों के बाद वे नाविक भी थके-माँदे परस्पर बक-झक करते शोर-गुल मचाते नाव के पास लौट आये। जब उन्हों ने देखा कि नाव सूखे में लगी है और नाव के दोनों रक्षक ग़ायब हैं तब तो उन के भय और विस्मय की सीमा न रही। वे परस्पर तर्क वितर्क करने लगे—हम लोग न मालूम कैसे मायामय जादू-गर के द्वीप में आ गये हैं? क्या हम लोग भी एक एक कर

भूत-प्रेतों के हाथ में पड़ कर मारे जायँगे ? इस प्रकार विलाप कर सभी आर्तनाद करने लगे। फिर उन्होंने नौकारक्षक दोनों साथियों का नाम ले ले कर बार बार पुकारा, किन्तु कहीं से कुछ उत्तर न मिला। तब वे लोग पागल की तरह कभी दौड़ने, कभी बैठने और कभी हाथ मलने लगे; कभी क्रोध से अपने सिर के बाल नोचने लगे। मेरे अनुयायी इसी समय उन लोगों पर आक्रमण करने के लिए व्यग्र हो उठे किन्तु मैं इसकी अपेक्षा भी विशेष सुविधा खोज रहा था। मैं चाहता था जिसमें मेरे दल का कोई न मरे और उन के तरफ़ भी कम आदमी मरें। हम लोग सर्वाङ्ग ढक कर धीरे धीरे कुछ दूर और आगे बढ़े, किन्तु फ्राइडे और कप्तान घुटनों के बल से एक दम उनके पास चले गये।

जहाज़ के जो कर्मचारी मुसाफ़िरों को जहाज़ पर चढ़ाते और पार उतारते हैं वे सब से बढ़ कर बदमाश और सब फ़सादों की जड़ होते हैं तथा अपने को जहाज़ का मालिक समझ बैठते हैं। किन्तु इस समय सब की अपेक्षा वही अधिक कातर और भयभीत हो गये थे। उनके कुछ कहते ही कप्तान उन पर गोली चलाने के लिए व्यग्र होने लगा। वे लोग ज्योंही कुछ समीप आये त्योंही कप्तान और फ्राइडे कूद कर आगे जा खड़े हुए और उन पर गोली चला दी। गोली लगते ही जहाज़ का नायब कप्तान धरती पर लोट गया। दूसरा भी गिरा, पर तत्काल मरा नहीं। प्रायः दो घंटे तक जीता रहा। तीसरा आदमी भाग गया। तब मैं अपने दल-बल के साथ आगे बढ़ा। मैं सेनापति, फ्राइडे मेरा सहकारी सेनाध्यक्ष और कप्तान आदि मेरे सैनिक थे। हम लोगों ने अँधेरे में नाव के पास जाकर उन लोगों से

आत्मसमर्पण करने को कहा। उन लोगों ने भी झट अस्त्र त्याग कर के प्राण-भिक्षा चाही। कप्तान ने कहा—"तुम लोगों का प्राण लेना या न लेना हमारे सेनापति की इच्छा के अधीन है।" हम लोगों ने उनके हाथ-पैर बाँध कर अपने कब्ज़े में कर लिया।

अब हम लोगों को नाव की मरम्मत करके जहाज़ पर आक्रमण करना बाक़ी रहा। मेरे मन में आशा होने लगी कि अब मेरे उद्धार का समय समीप है। मैंने दूर से कप्तान को पुकारा। एक आदमी ने जाकर कहा, "कप्तान साहब, सर्कार आप को बुलाते हैं।" कप्तान ने झट उत्तर दिया, "तुम हुज़ूर से जा कर कह दो कि वह अभी हाज़िर होता है।" यह सुन-कर सभी नाविक चुप हो रहे; किसी को ज़ोर से बोलने का साहस नहीं हुआ। उन लोगों ने समझा कि इस द्वीप के स्वामी अपना दल-बल लेकर समीप ही कहीं ठहरे हैं। कप्तान को मेरे पास आने का उपक्रम करते देख कर उन लोगों ने कहा—"हम लोगों से बड़ी ग़लती हुई, अब ऐसा काम कभी न करेंगे। आप अपने सेनापति से हम लोगों पर दया करने को कहिये।" कप्तान ने कहा—"मेरे सेनापति बड़े दयालु हैं, इसी से उन्होंने अब तक तुम लोगों को पेड़ से लटका कर फाँसी नहीं दी। वे तुम लोगों को किसी प्रकार का क्लेश न देंगे। तुम लोगों को इँगलैंड ले जायँगे, वहाँ क़ानून के अनुसार जो उचित दण्ड होगा दिया जायगा।" वे लोग जानते थे कि आईन के अनुसार इस अपराध का दण्ड फाँसी है। इसलिए उन लोगों ने बिनती कर के कहा—"तो हम लोगों को इसी द्वीप में छोड़ दीजिए, इँगलैंड न ले जाइए।" कप्तान ने कहा—ये बातें सेनापति की इच्छा पर निर्भर हैं।

उन लोगों से इस प्रकार बात-चीत कर के कप्तान मेरे पास आया। मैंने उससे जहाज़ दख़ल करने की बात कही। बन्दियों को दो भागों में बाँट कर जो बदमाश थे उन्हें गुफा के भीतर और जो अल्प-अपराधी थे उन्हें कुञ्जभवन में बन्द कर दिया।

इस विचित्र स्थान में सारी रात क़ैद रह कर उन लोगों ने यथेष्ट शिक्षा पाई। सबेरे जब कप्तान उन लोगों के पास गया तब वे धरती में गिर कर क्षमा प्रार्थना करने लगे और सेनापति से सिफ़ारिश करने के लिए हाथ जोड़ने लगे। कप्तान ने कहा, "यदि तुम लोग जहाज़ पर दख़ल करने में मदद दोगे तो सेनापति तुम्हारा अपराध क्षमा कर सकते हैं"। इस प्रस्ताव पर वे लोग बड़े आग्रह के साथ सम्मत हुए। तब उनमें जो पाँच व्यक्ति अच्छे थे वे चुन लिये गये और अवशिष्ट व्यक्ति उन लोगों के ज़ामिन-स्वरूप क़ैदी बना कर रख लिये गये। यदि वे लोग जहाज़ पर दख़ल होने में सहायता देंगे तो क़ैदी छोड़ दिये जायँगे, नहीं तो फाँसी दी जायगी। तब उन लोगों ने समझा कि सेनापति कोई साधारण व्यक्ति नहीं है; वे लोग डरते डरते इस प्रस्ताव पर राज़ी हो गये।

मैंने कप्तान से कहा, "हम और फ़्राइडे जहाज़ पर दख़ल करने न जायँगे; हम लोग क़ैदियों के पहरे पर रहेंगे। क्या तुम और सब लोगों को साथ ले जहाज़ पर आक्रमण करने का साहस कर सकते हो?" कप्तान राज़ी हो कर युद्धयात्रा की तैयारी करने लगा। फूटी हुई नाव की मरम्मत कर के दो नावें जाने के लिए ठीक की गईं। एक में जहाज़ के यात्री और चार मनुष्य, दूसरी नाव में कप्तान, मेट और पाँच नाविक सवार हुए। वे लोग आधी रात के समय जहाज़ पर जा

पहुँचे। जहाज़ के लोगों ने अन्धकार में समझा कि उनके पक्ष के आदमी लौट आये हैं। कप्तान और मेट ने जहाज़ पर चढ़ते ही बन्दूक़ के कुन्दे से दूसरे मेट और मिस्त्री को मार कर अपने क़ाबू में कर लिया। इधर कप्तान के साथी नाविकों ने जहाज़ के डेक के लोगों को बाँध लिया। जो लोग कोठरी में थे वे वहीं बन्दी कर लिये गये। कोठरी के द्वार में बाहर से ज़ंजीर लगा दी गई। इसके बाद वे लोग नीचे उतर गये। नीचे के कमरे में विद्रोही दल का नया कप्तान था। वह शोर-गुल सुन कर जाग उठा था और सावधान हो कर दो-तीन आदमियों को साथ ले बन्दूक़ द्वारा युद्ध करने को तैयार था। मेट को सामने पाते ही गोली मारी। इससे मेट का हाथ टूट गया, और भी दो आदमी घायल हुए, पर कोई मरा नहीं। और लोगों को पुकार कर मेट एकदम नये कप्तान के ऊपर टूट पड़ा और उसके सिर में पिस्तौल दाग़ दिया। पिस्तौल की गोली उसकी कनपटी छेद कर बाहर निकल गई। वह फिर हिला तक नहीं। तब जहाज़ के और लोगों ने आप ही वश्यता स्वीकार की। बिना ज़्यादा ख़ून-ख़राबी के जहाज़ पर दख़ल हो गया।

क्रूसो का द्वीप से उद्धार

मैं समुद्र-तट पर दो बजे रात तक बैठा रहा। आशा और सन्देह के हिंडोले पर चढ़ कर मन कभी ऊपर और कभी नीचे का झोंका खा रहा था। कभी आनन्द से रोमाञ्च हो उठता और कभी भय से हृदय काँप उठता था। ऐसे समय

जहाज़ पर सात बार तोप की आवाज़ हुई । सुन कर कहीं से जी में जी आया । फक से निश्वास त्याग कर सँभल बैठा, और यह जान कर आनन्द की सीमा न रही कि कप्तान ने जहाज़ को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया । तब मैं निश्चिन्त हो कर घर आया और सो रहा । मैं दिन भर के कठिन परिश्रम और घोर उद्वेग से इतना क्लान्त था कि लेटते ही गहरी नींद आगई ।

अचानक तोप का शब्द सुन कर मेरी नींद टूट गई । सुना, कोई मुझको पुकार रहा है "सेनापति, सेनापति" । अच्छी तरह नींद टूट जाने पर पहचाना कि यह कप्तान का कण्ठ-स्वर है । मैं सीढ़ी लगा कर पहाड़ पर चढ़ा । कप्तान वहीं आ कर मुझे पुकार रहा था । मैं उस के पास ज्योंही गया त्योंहीं वह मेरे गले से लिपट गया और उँगली उठा कर जहाज़ की ओर दिखलाया । कुछ देर आनन्द के आवेग में पड़ कर वह कुछ बोल न सका । फिर आनन्दोच्छ्वास को रोक कर गद्गद कण्ठ से बोला—आप मेरे प्राणदाता हैं, हितैषी हैं ! यह आप ही का जहाज़ है । हम लोग भी आप ही के हैं ! हम लोगों के जीवन, धन सभी आपके हैं ।

मैंने जहाज़ की ओर तजवीज़ कर के देखा, वह तट से आध मील पर था । तब मैंने जाना कि जहाज़ दख़ल हो जाने पर कप्तान उसे आगे बढ़ा लाया है ।

मैं आनन्द से एकदम विदेह हो गया । कप्तान मुझको छाती से लगाये खड़ा था नहीं तो मैं ज़मीन पर गिर पड़ता । वह भी मेरे ही ऐसा आनन्द-विमुग्ध था, तथापि वह मुझको प्रकृतिस्थ करने के लिए कितनी ही मीठी मीठी बातें कहने

लगा। आनन्द और उल्लास ने मेरे सभी भावों को उथल पुथल कर दिया था जिससे मैं कुछ बोल न सकता था। जब हृदय में आनन्द को रहने की जगह न मिली तो वह उमड़ कर आँसुओं के रूप में आँखों की राह बाहर निकल आया। आनन्द का कुछ अंश बाहर निकल जाने से मुझे कुछ बोलने का अवसर मिला। मैंने भी कप्तान को दृढ़-आलिङ्गन करके उसे अपना बन्धु और उद्धार-कर्ता कह कर अभिनन्दन किया। सारी घटना एक से एक बढ़ कर विस्मय बढ़ा रही थी। यह सब ईश्वर की अतर्क्य महिमा और अपार दया के विधान का निदर्शन है। मैंने हृदय से ईश्वर को धन्यवाद दिया।

कुछ देर योंही वार्तालाप होने के बाद कप्तान ने कहा कि "मैं आपके लिए जहाज़ में से कुछ खाने-पीने की चीज़ें लाया हूँ।" उसने नाव के माँझियों को पुकार कर वे खाद्य वस्तुएँ लाने को कहा। वे लोग तुरन्त सब चीज़ें ले आये। कई तरह की वस्तुएँ थीं। बिस्कुट, मांस, तरकारी, चीनी, नीबू, शरबत, तम्बाकू और भी कितनी ही चीज़ें थीं। इन सब वस्तुओं के अतिरिक्त आधे दर्जन धुले पैजामे, गुलूबन्द, दस्ताने, जूता, टोपी, मोज़े और एक सेट ख़ूब बढ़िया पोशाक थी। यह कहना वृथा है कि उपहार की ये सामग्रियाँ मेरे लिए अत्यन्त दुर्लभ और आदरणीय थीं। मेरे सर्वाङ्ग को पोशाक से सजने के लिए कप्तान यह सामान जहाज़ से उठा लाया था। अतएव इससे सुन्दर और चमत्कारी उपहार मेरे लिए और क्या हो सकता था। किन्तु मेरे लिए यह असुख-दायी पदार्थ था। बहुत दिनों से पोशाक पहनने की आदत छुट जाने से आज पोशाक पहनते अत्यन्त कष्ट होता था।

यह सब कार्य होने के बाद हम लोग सोचने लगे कि अब बन्दियों का क्या करना चाहिए। जो लोग शातिर बदमाश हैं उन को साथ रखना हम लोगों के हक़ में हानिकारक है या नहीं, यह विचारने का विषय है। कप्तान ने कहा, "उन बन्दियों में दो व्यक्ति पहले नम्बर के बदमाश हैं। वे लोग किसी तरह क़ाबू में नहीं आ सकते। यदि उन लोगों को संग ले चलना हो तो उनको हथकड़ी-बेड़ी डाल कर ले चलिए। वहाँ जाकर उन्हें पुलिस के सिपुर्द करने के सिवा और कोई उपाय नहीं।" तब मैंने कहा—अच्छा, यदि उन्हें इसी टापू में रहने को राज़ी कर सकूँ तो ?

कप्तान—तब तो बड़ा ही अच्छा हो। मैं इसे हृदय से पसन्द कर सकता हूँ।

मैं—अच्छा, उन लोगों को बुला कर तुम्हारे सामने उनसे यह प्रस्ताव करता हूँ।

फ्राइडे और दो बन्धन-मुक्त नाविकों को कुञ्ज-भवन से पाँचों क़ैदियों को बुला लाने के लिए भेजा। उन बन्दियों के आने पर मैं नई पोशाक पहन कर सेनापति के वेष में उनके पास गया। मैंने अपराधियों से कहा—तुम लोगों के विरुद्ध आचरण करने की बात मैंने सुनी है। यह ईश्वर की कृपा ही समझनी चाहिए कि तुम लोग अधिक पाप करने के पहले ही मेरे हाथ बन्दी हुए हो। जहाज़ भी मैंने अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। तुम लोग अपने नये कप्तान की मृत्यु भी अपनी ही आँखों देखोगे। अच्छा, अब तुम लोगों को क्यों न प्राण-दण्ड दिया जाय ?

उन में एक व्यक्ति सब का अगुआ होकर बोला—"इस सम्बन्ध में हम लोगों को कुछ कहने की गुञ्जाइश नहीं। किन्तु

जब हम लोग गिरफ़्तार किये गये थे तब कप्तान ने कहा था कि तुम लोगों को प्राणभय न होगा। इस समय हम लोग उसी का स्मरण दिलाते हैं।" मैंने कहा—"मैं तुम लोगों के साथ कौन सा दया का व्यवहार करूँ, मेरी समझ में नहीं आता। मैंने इस टापू को छोड़ कर कप्तान के जहाज़ पर सवार हो इँगलैंड जाने का निश्चय किया है। तुम लोगों को इँगलैंड ले जाता हूँ तो वहाँ विद्रोह के अपराध में तुम लोगों का प्राणवध अनिवार्य होगा। इस लिए इस टापू में रहने के सिवा तुम लोगों की प्राण-रक्षा का अन्य उपाय नहीं। यदि तुम लोग पसन्द करो तो मैं तुम लोगों को इस टापू में छोड़ सकता हूँ।" मेरी इतनी बड़ी दया देख वे लोग कृतज्ञतापूर्वक मेरे प्रस्ताव पर सम्मत हुए। तब मैंने उन लोगों को बन्धन-मुक्त कर दिया।

मैंने कप्तान को यह कह कर जहाज़ पर भेज दिया कि जाओ, जहाज़ पर सब इन्तज़ाम ठीक करो। इधर मैं अपने साथ जहाज़ पर ले जाने योग्य वस्तुओं की व्यवस्था करने लगा। कल सबेरे जहाज़ पर सवार हो कर रवाना हूँगा।

कप्तान के चले जाने पर मैंने बन्दियों से कहा,—"तुम लोगों ने जो यहाँ रहना पसन्द किया यह बड़ा अच्छा किया। इँगलैंड जाने से तुम लोगों को ज़रूर फाँसी होती। यहाँ जीते-जागते तो रहोगे। विशेषतः पाँच आदमी एक साथ मिल कर बड़े सुख-चैन से रह सकोगे। मैं तो अकेला ही यहाँ इतने दिन बना रहा।" यह कह कर मैंने अपना सब इतिहास उनको कह सुनाया। द्वीप का और जीवन-निर्वाह का तत्व उन लोगों को समझा दिया। मैंने उन लोगों को अपना क़िला, घर-द्वार, खेत-खलिहान, और बकरों का गिरोह आदि सभी

स्थान दिखा दिये । जिस तरह मैं रोटी बनाता, और किस-मिस तैयार करता था यह भी सिखा दिया । उन लोगों को मैंने बन्दूक, तलवार, और गोली-बारूद भी दी । मैं बकरों का शिकार कैसे करता था, कैसे उन्हें पकड़ता था, किस तरह बकरी को दुहता था और कैसे दूध से मक्खन निकालता था यह भी सिखा दिया । कप्तान के यहाँ से मँगा कर उन लोगों को और थोड़ी बारूद, तरकारी के बीज तथा स्याही दी । स्याही के बिना मुझे बड़ा कष्ट हुआ था । किन्तु इस समय कप्तान की बात से मुझे पछतावा हुआ कि मैंने अपनी बुद्धि से कितनी ही प्रयोजनीय वस्तुओं का आविष्कार तो कर लिया था किन्तु कोयले से स्याही बनाने की बात मेरे ख़याल में न आई । बड़ी विचित्रता है ! उन निर्वासित व्यक्तियों को घर द्वार सौंप कर मैंने कह दिया कि यहाँ सत्रह स्पेनियर्ड व्यक्तियोंके आने की संभावना है । तुम लोग उनके साथ बन्धु-भाव का व्यवहार करना । इन लोगों से मैंने इस बात की शपथ करा ली । स्पेनिअर्ड के नाम से मैं एक चिट्ठी भी लिख-कर इन्हें दे गया ।

सब प्रबन्ध करके मैं दूसरे दिन जहाज़ पर सवार हुआ । उस रात को यात्रा न हो सकी । दूसरे दिन सबेरे उन निर्वासित पाँच व्यक्तियों में से दो आदमी तैर कर जहाज़ के पास आ गये । वे अपने साथियों के दुःस्वभाव की निन्दा करके घिघिया कर कहने लगे—"दुहाई कप्तान साहब, हमको जहाज़ पर चढ़ा लीजिये फिर चाहे हमें फाँसी दे दीजिएगा, यह भी हमें मंज़ूर है पर हम इन लोगों के साथ टापू में न रहेंगे । वे हमारा बुरी तरह से ख़ून कर डालेंगे ।" उनकी इस प्रार्थना को बारंबार अस्वीकार कर

१६८६ ईसवी की १९वीं दिसम्बर को मैंने द्वीप छोड़ा। —पृ० २२१

अन्त में उनके शपथ करने पर कप्तान ने उन दोनों को जहाज़ पर चढ़ा लिया। जहाज़ पर चढ़ा कर उन्हें अच्छी तरह डाँटडपट बता दी। तब से ये दोनों बड़ी भलमनसाहत के साथ रहने लगे।

मैं अपनी चमड़े की टोपी, छत्ता, और तोता अपने साथ जहाज़ में लाया था। मेरे पास जो कुछ रुपये थे उनका लाना भी मैं न भूला। इतने दिन यों ही बेकार पड़े रहने के कारण रुपयों में मोर्चा लग गया था। देखने से कोई यह न कहता कि यह चाँदी का रुपया है। मैंने उनको अच्छी तरह मल कर झलका लिया।

इस प्रकार अनेक सुख-दुःख भोग कर १६८६ ईसवी की १६ वीं दिसम्बर को मैंने द्वीप छोड़ा। ठीक इसी तारीख़ को मैं शैली के मूर का दासत्व छोड़ कर बजरे के सहारे भागा था। इस द्वीप में अट्ठाईस वर्ष दो महीने उन्नीस दिन एकान्त-वास करने पर आज मेरा उद्धार हुआ। आज मैं अपने देश को जा रहा हूँ; आज मेरे आनन्द का वारापार नहीं। धन्य जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा से आज इस आशातीत सुख का भागी बना हूँ।

क्रूसो का स्वदेश-प्रत्यागमन और धनलाभ

मुद्दत के बाद १६८७ ईसवी की ग्यारहवीं जून को मैं इँगलैंड लौट आया। आज पैंतीस वर्ष के बाद मुझे स्वदेशदर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

देश लौट कर देखा, मैं यहाँ सम्पूर्ण रूप से अपरिचित हो गया हूँ। मेरे उपकारी मित्र कप्तान की स्त्री, जिसके पास मेरा

कुछ रुपया जमा था वह, अब तक जीती थी, किन्तु विधवा हो जाने के कारण वह बड़ी दरिद्रा हो गई थी। मैंने अपना धन उससे नहीं माँगा बल्कि उस समय मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उसमें से भी उसे कुछ देकर उसकी सहायता की। मैं कप्तान का उपकार और सदय व्यवहार न कभी भूला और न कभी भूलूँगा। मैं लन्दन से यार्क शहर को गया। वहाँ जाकर क्या देखा—मेरे पिता, माता, और भाई सब मर गये, केवल मेरी दो बहनें और दो भतीजे बच रहे थे। घरवालों ने समझ लिया कि मैं विदेश में जाकर मर गया, इस से मेरे पिता मुझको पैतृक धन का कुछ भी अंश न दे गये। पैतृक धन से हाथ धोकर मुझे अब स्वावलम्बन से जीवन-निर्वाह करना होगा। परन्तु मेरे पास जो कुछ पूँजी थी उससे आश्रम का ख़र्च चलना कठिन था।

जहाँ से कुछ मिलने की आशा न थी वहीं से मुझे कुछ साहाय्य मिला। विद्रोही नाविकगण जिस कप्तान को मारने के लिए मेरे टापू में ले गये थे उसने देश में आकर मेरी बात लोगों से कही, और मैंने जिस युक्ति से विद्रोहियों के हाथ से जहाज़ ले लिया था वह हाल भी उसने जहाज़ के मालिक से कहा। मैंने जिन महाजनों के जहाज़ और माल की रक्षा की थी उन्होंने मिलकर मुझे लगभग तीन हज़ार रुपया पुरस्कार दिया। यह रुपया भी मुझे निश्चिन्त होकर बैठने और अन्य कोई व्यवसाय न करके जीवन-निर्वाह के लिए यथेष्ट न था। इसलिए मैंने सोचा कि लिसबन जाकर ब्रेज़िल में जो मेरी खेती आदि होती थी उसकी हालत का पता लगाऊँ। मैं अगले साल के एप्रिल महीने में जहाज़ पर सवार होकर लिसबन जा

पहुँचा। मेरा परम भक्त फ़ाइडे बराबर मेरे साथ रहा। लिसबन पहुँच कर मैंने, बहुत ढूँढ़ने पर, अपने कप्तान का पता पाया। इन्होंने मुझको आफ़्रिका के उपकूल में जहाज़ पर चढ़ाकर ब्रेज़िल पहुँचा दिया था। वे अब बूढ़े हो गये थे। उनका सयाना बेटा ब्रेज़िल जाने-आने वाले जहाज़ का कप्तान था। वृद्ध मुझको पहचान न सके। मैं भी पहले उनका परिचय न मिलने से उन्हें पहचान न सका। मैंने अपना परिचय देकर उन्हें मुद्दत की बात का स्मरण करा दिया।

प्रथम मिलन के प्रणय-सूचक कुशल-प्रश्न होने के बाद मैंने उनसे अपनी खेती-बारी का हाल पूछा। उन्होंने कहा—"नौ वर्ष से हम ब्रेज़िल नहीं गये। जब गये थे तब तुम्हारे कारपरदाज़ को जीवित देख आये थे। किन्तु जिन दो व्यक्तियों को तुम अपनी सम्पत्ति सौंप आये थे वे मर गये हैं।" मेरा धन इस समय क़रीब क़रीब गवर्नमेन्ट ने अपने हाथ में कर लिया है। मैं या मेरा कोई वारिस यदि उस धन का दावेदार खड़ा न होगा तो कितना ही अंश सरकार ज़ब्त कर लेगी और कुछ धर्मकार्य में ख़र्च कर देगी। अभी मैं या मेरी ओर से और कोई वहाँ जाय तो मुझे अपनी सारी सम्पत्ति मिल जायगी। इस समय मेरे अंश की सालाना आय तीन-चार हज़ार रुपये हो सकती है। मैंने वसीयतनामे में इन्हीं कप्तान को अपनी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नियत किया था। किन्तु मेरे मरने की सच्ची ख़बर न पाने के कारण कप्तान को अब तक मेरी सम्पत्ति नहीं मिली। केवल उन्हें पिछले कई सालों का मुनाफ़ा मिला है। उन्होंने मुझको सब हिसाब दिखला दिया और यह भी कहा कि तुम्हारे रुपयों से हमने जहाज़ का अंश ख़रीद लिया है। इस समय उनकी अवस्था ऐसी न थी कि

वे मेरा वह रुपया लौटा सकें। इसलिए उन्होंने अपना उस जहाज़ का अंश मेरे नाम लिख-पढ़ दिया और एक तोड़ा रुपया दिया। मैं अपने इस परम उपकारी मित्र की ऐसी शिष्टता, निश्छलता और उदारता देख कर मुग्ध हो गया। मेरी आँखों में आँसू भर आये। मैंने उनसे पूछा, इस समय मुझको इतना रुपया वापस देने से आपको कोई कष्ट या असुविधा तो न होगी? उन्होंने कहा, "असुविधा न होगी यह कैसे कहूँ; तथापि यह रुपया आपका है, यह मुझको देना ही होगा।" यह सुन कर मैंने उस तोड़े में से सिर्फ़ पाँच सौ रुपये लेकर बाक़ी उनको लौटा दिये और रुपया पाने की रसीद लिख दी। फिर यह रुपया भी उन्हें दे दिया और जहाज़ का अंश भी उनके पुत्र से न लिया। वे मुझे मेरा अंश देने को तैयार हैं, यही सन्तोष मुझे सब अभावों का निवारक हुआ। मैं उनसे एक पैसा भी लेना न चाहता था। जिन्होंने विपत्ति के समय दया करके मेरी रक्षा की थी, जो मुझे स्वाधीनता दिलाने में सहायक हुए थे, उनको कष्ट देकर मैं सुख भोगूँ—ऐसा नृशंस मैं न था। मैंने वृद्ध की दी हुई एक भी वस्तु न ली। यह देख कर उन्होंने मेरी खेती का अंश मुझको दिला देने का प्रस्ताव किया। मैंने कहा कि मैं स्वयं ब्रेज़िल जाकर अपना अंश ले लूँगा। उन्होंने कहा, "तुम्हारी इच्छा हो तो तुम जा सकते हो, किन्तु तुम वहाँ न जाओ तो भी मैं यहीं से वहाँ का सब प्रबन्ध कर दे सकता हूँ।" मैं इसी में राज़ी हो गया। उन्होंने अदालत में जाकर शपथ-पूर्वक निवेदन किया कि "राबिन्सन अभी तक जीवित हैं। इन्हें अपने कृषि कारख़ाने का अंश मिलना चाहिए।" उन्होंने अदालत से मेरा दावा मंज़ूर कराकर एक परवाना

जारी करा दिया और वह एक ब्रेज़िल-गामी परिचित महाजन के हाथ वहाँ को भेज दिया।

सात महीने के भीतर ही मैंने ब्रेज़िल से अपने कार-पर-दाज़ का प्रेम-सूचक पत्र और अपनी सम्पत्ति का हिसाब पाया। मैं अब तक जीता हूँ, यह सुन कर सभी ने खूब आनन्द प्रकट करके चिट्ठी लिखी थी। मेरी सम्पत्ति का मोटा हिसाब यही था कि मेरे अंश का कुल पचहत्तर हज़ार रुपया जमा है। उन लोगों ने बड़े आदर से एक बार मुझे ब्रेज़िल आने को लिखा था। उन लोगों ने बाघ का चमड़ा पाँच अदद, एक सन्दूक़ भर मिठाई और एक सौ अशर्फ़ियाँ उपहार में भेजी थीं। एक हज़ार दो सौ बक्स चीनी, आठ सौ बोझे तम्बाकू और बाक़ी नक़द रुपया भेज कर उन्होंने मेरा हिसाब चुकता कर दिया।

एक साथ जब मुझे इतना धन मिला तब मेरा हृदय आनन्द के आवेग से हाथों उछलने लगा। मैं इस आशातीत आनन्दोच्छ्वास से विह्वल हो गया। यदि मेरे परमबन्धु वृद्ध कप्तान मेरी हिफ़ाज़त न करते तो आनन्द से मेरा हृदय फट जाता। तब भी मैं बहुत दिनों तक अस्वस्थ रहा; यहाँ तक कि मुझको देखने के लिए डाक्टर बुलाये गये थे।

एकाएक मैं पचहत्तर हज़ार रुपये का मालिक बन बैठा। इसके अलावा ब्रेज़िल में सालाना पन्द्रह हज़ार रुपये मुनाफ़े की ज़मींदारी! मैं इतना रुपया लेकर क्या करूँगा, इसका कुछ निर्णय नहीं कर सकता था। सब से पहले मैंने अपने परम बन्धु वृद्ध कप्तान की अभ्यर्चना की जिन्होंने पहले मेरे प्राण बचाये और आख़ीर तक मेरे साथ सद्व्यवहार किया। पहले उनका सत्कार करना चाहिए था। मैंने उनके आगे अपना

सर्वस्व रख कर कहा—"मित्रवर, इन सब घटनाओं का आदि-कारण यद्यपि ईश्वर है तथापि आप ही के आशीर्वाद और कृपा से मुझे इतनी समृद्धि प्राप्त हुई है, इसलिए मैं पहले आपकी पूजा करना आवश्यक समझता हूँ।" यह कह कर मैंने जो उनसे पाँच सौ रुपया लिया था वह लौटा दिया और उनके ज़िम्मे जो कुछ मेरा पावना था सब छोड़ दिया। इसके बाद उनको अपनी ज़मींदारी का मैनेजर और प्रतिनिधि नियुक्त किया।

इस प्रकार उनका प्रत्युपकार करके मैं सोचने लगा कि इतना रुपया लेकर मैं क्या करूँ। जितना धन मुझे दरकार था उससे कहीं अधिक मिला। इसकी रक्षा की चिन्ता ने मेरे चित्त को चञ्चल कर दिया। इस अवस्था की अपेक्षा मेरा एकान्तवास कहीं अच्छा था। वहाँ अपनी आवश्यकता के अनुसार सब चीज़ें थीं। वहाँ जो कुछ था उससे मज़े में काम निकल जाता था। अब आवश्यकता से बढ़ कर जो इतनी चीज़ें मेरे हाथ आई हैं उन्हें लेकर क्या करूँ। इन प्रयोजनाधिक वस्तुओं की रक्षा करना मेरे लिए भारी जंजाल होगया। यहाँ तो अब वैसी गुफा न थी जिसमें इन वस्तुओं को छिपा रक्खूँगा। अब इन्हें कहाँ किसके पास रक्खूँगा? मेरे परम-बन्धु वृद्ध कप्तान बड़े ही सज्जन थे। उन्हीं का एक भरोसा था, पर वे भी तो बहुत वृद्ध हो गये थे। फिर मुझे कभी कभी ब्रेज़िल भी जाना पड़ेगा।

वृद्ध कप्तान के साहाय्य के अनन्तर इँगलैंड-वासिनी कप्तान की पत्नी का स्मरण हो आया। उसीके स्वामी ने पहले पहल मेरी बन्धुहीन जीवनावस्था में मुझे सहायता दी थी। मैंने उस उपकार के बदले उनकी विधवा-पत्नी को डेढ़

हज़ार रुपया भेज दिया और पत्र लिखा कि फिर कुछ सहायतार्थ भेजूँगा। अपनी दोनों बहनों को भी डेढ़ डेढ़ हज़ार रुपया अर्थात् दोनों के बीच तीन हज़ार रुपया भेज दिया। उपकारी, सम्बन्धी तथा अनाथ असहायों को—जो कुछ मुझसे बन पड़ा सब को—मैंने यथायोग्य दिया, किन्तु ऐसी कोई जगह ढूँढ़ने से भी न मिली जहाँ मैं अपने सब रुपयों को निःशङ्क होकर रख सकता। कोई परिचित व्यक्ति ऐसा न मिला जिसके हाथ इन रुपयों को सौंप कर निश्चिन्त हो जाता। वृद्ध पोर्चुगीज़ कप्तान और विधवा कप्तान-पत्नी यही दोनों व्यक्ति मेरे प्रति अत्यन्त दयालु थे और इन पर मेरा पूर्ण विश्वास था। किन्तु वे दोनों बहुत वृद्ध हो गये थे, इसलिए उनके पास जमा करने का साहस न होता था। आख़िर मैंने अपना रुपया-पैसा बाँध कर इँगलैंड जाने ही का निश्चय किया। तत्काल ब्रेज़िल जाने की बात मुलतवी रख कर ब्रेज़िलवासी मित्रों को कुशल-पत्र और उपहार भेज कर सब वस्तुओं के पाने की सूचना दे दी। इधर सुयोग पाकर चीनी और तम्बाकू को बेच डाला।

जीवन-वृत्तान्त के प्रथम अध्याय का उपसंहार

मैं अब किस मार्ग से इँगलैंड जाऊँ, यही सोचने लगा। यद्यपि जल-पथ मेरे भाग्य में वैसा सुखदायी न था फिर भी विशेष रूप से परिचित और सह्य हो गया था। यह सब होने पर भी न मालूम इस दफ़े जल-पथ से जाने को जी क्यों नहीं चाहता था। मैं बार बार जल-थल के सुभीते की बातें सोचने

लगा। पर किसी तरह जल-पथ से जाने को मैं राज़ी न हुआ। अन्तःकरण के इङ्गित को सदा मानना चाहिए। मैंने जिन दो जहाज़ों पर जाने की बात ठीक की थी उनमें एक को तो रास्ते ही में किसी लुटेरे जहाज़ ने गिरफ़ार कर लिया और दूसरा कुछ दूर जाकर टूट गया। यदि मैं इन दोनों में से किसी पर सवार होता तो फिर भारी संकट में पड़ता।

मैंने स्थलमार्ग से ही जाना स्थिर किया। वृद्ध पोर्चुगीज़ कप्तान ने मुझे एक साथी ढूँढ़ दिया। वह लिसबन के एक अँगरेज़ व्यवसायी का बेटा था। वह भी इँगलैंड जायगा। इसके बाद दो अँगरेज़ और दो पोर्चुगीज़ भी आ मिले। अब हम लोग छः यात्री हुए। साथ में पाँच नौकर थे। सब मिला-कर ग्यारह आदमी हुए। हम लोगों ने अस्त्र-शस्त्रों से लैस हो घोड़े पर सवार हो लिसबन से यात्रा की। एक तो मैं सब से उम्र में बड़ा था, दूसरे साथ दो नौकर थे। इसके सिवा मैं ही मूलयात्री था, इससे सभी मुझ को कप्तान और सर्दार कहने लगे।

हम लोगों ने मेड्रिड में कई दिन ठहर कर शहर देखा। परन्तु ग्रीष्म बीतने ही पर था यह जान कर हम लोग झट पट वहाँ से रवाना हुए। अक्तूबर के मध्य ही में कहीं कहीं बर्फ़ पड़ने लगी है, यह सुन कर भय से प्राण सूखने लगे। फ्रांस की सीमा तक आते आते हम लोगों ने देखा कि यथार्थ ही पाला पड़ रहा है। मैं उत्कट गरमी के मुल्क में बहुत दिनों तक रह चुका था इससे अब यह जाड़ा असह्य मालूम होने लगा। उँगलियाँ पाले से ठिठुर कर गलने लगीं। फ्राइडे ने बर्फ़ से ढका पहाड़ और ऐसा उत्कट जाड़ा जन्म भर में

कभी नहीं देखा था। वह भय से काँपने लगा। एक तो मार्ग चलने की थकावट, उस पर जाड़े की शिद्दत! फफोले पर मानो नमक छिड़का गया। रास्ते में अधिक बर्फ़ पड़ने लगी। जो मार्ग पहले दुर्गम्य था वह अब अगम्य हो गया। ठण्ड कम होने की आशा से हम लोग बीस दिन रास्ते में ठहर गये, किन्तु शीत घटने की कोई सम्भावना न देख कर फिर अग्रसर हुए। सभी कहने लगे कि इस मौसम में इतना जाड़ा कभी नहीं होता था। मैंने समझा, यह सब मेरे ही दुर्भाग्य का फल है। रास्ते में एक पथ-प्रदर्शक से हमारी भेंट हुई। उसने हम लोगों को ऐसे मार्ग से ले जाना स्वीकार किया कि जिस रास्ते में बर्फ़ न मिलेगी। यदि मिले भी तो वह जम कर ऐसी कठोर हो गई होगी कि उसके ऊपर घोड़े सुख से चल सकेंगे। किन्तु इस रास्ते में बनैले जन्तुओं का भय अधिक है। मैंने उससे कहा—"चौपाये जन्तुओं का उतना भय नहीं, जितना अधिक दुपाये नृशंस मनुष्यों का होता है।" उसने कहा—"रास्ते में चोर-डाकुओं का भय नहीं है। भय केवल हिंस्र जन्तुओं का है। जहाँ तहाँ रास्ते में भेड़िये ज़रूर हैं। इस समय सारा जङ्गल और मैदान बर्फ़ से ढँक जाने के कारण, खाद्य-वस्तु के अभाव से, वे बड़े ख़ूँख़ार हो रहे हैं।" मैंने कहा,—वे भले ही रास्ते में रहें, हम लोग उनकी परवा नहीं करते। उनको शान्त करने के लिए हम लोगों के पास यथेष्ट अस्त्र-शस्त्र हैं।

१५ वीं नवम्बर को हम लोग उस व्यक्ति के प्रदर्शित पथ से रवाना हुए। रास्ते में बारह मनुष्य और मिले। उनमें कोई फ्रांसीसी था और कोई स्पेनिश। वे अपने नौकरों सहित हम-लोगों के दल में आ मिले। पथ-प्रदर्शक हम लोगों को घुमा

फिरा कर ऐसे मार्ग से ले चला कि पहाड़ की चोटी पर चढ़ने से भी अधिक बर्फ़ न मिली। हम लोग जब पहाड़ की चोटी पर चढ़े तब एक दिन और एक रात बराबर पाला गिरता ही रहा। इससे हम लोग डर गये; किन्तु पथ-प्रदर्शक ने कहा, "डरने की कोई बात नहीं है।" यह सुन कर हम लोगों को कुछ साहस हुआ और तब से बराबर हम लोग पहाड़ के नीचे उतरने लगे। हम लोग उस व्यक्ति के पीछे पीछे उसीके ऊपर भरोसा करके जाने लगे।

एक दिन साँझ होने के कुछ पहले एकाएक तीन बड़े बड़े भेड़िये और उनके पीछे पीछे एक भालू जङ्गल से निकल कर हम लोगों के पीछे पड़ गये। ज़रा सी कसर रह गई थी, नहीं तो वह हिंस्र जन्तु पथ-प्रदर्शक को वहीं खतम कर देता। वह घबरा कर हम लोगों को पुकारने लगा। पिस्तौल निकाल कर उन पर गोली चलाने की भी सुध उसको न रही। पथ-प्रदर्शक के पास ही फ्राइडे था। उसने खूब साहस कर घोड़ा दौड़ा कर भेड़िये को गोली से मार गिराया। भाग्य से ही उस व्यक्ति के समीप फ्राइडे था इसीसे वह बच गया; दूसरा कोई रहता तो इस तरह साहस कर के भेड़िये का मुक़ाबला नहीं कर सकता। दूर से गोली मारने में यह भय था कि क्या जाने भेड़िये को लगे या न लगे। जो पथ-प्रदर्शक को ही गोली लग जाती तो मामला चौपट था।

जो हो, हम लोग भेड़िये को देख कर बहुत ही डरे। फ्राइडे के तमंचे की आवाज़ होते ही जङ्गल के दोनों ओर भेड़ियों का घोर गर्जन और हुंकार होने लगा। वह कठोर शब्द पर्वत की कन्दरा में प्रतिध्वनित हो कर दूना भयङ्कर हो उठा। फ्राइडे की गोली की चोट खा कर एक भेड़िया वहीं ठंडा हो

गया और दो भेड़िये भाग कर जङ्गल में जा घुसे। उन के आक्रमण से घोड़े को तो कुछ नुक़सान न हुआ किन्तु पथ-प्रदर्शक के हाथ और घुटनों में ज़ख़्म होगया। भेड़िये ने उसको नोच लिया था।

भेड़िये को मार कर फ़ाइडे ने भालू पर आक्रमण किया। हम लोग फ़ाइडे का यह दुःसाहस देख कर डर गये किन्तु उसका विचित्र कौतुक देख कर हम लोग बहुत खुश हुए। भालू बहुत स्थूल और भारी होते हैं, इससे वे सहज ही मनुष्य पर हमला करने का साहस नहीं कर सकते। वह बहुत भूखा न हो तो मनुष्य पर हमला नहीं करता। यदि उसके साथ कुछ छेड़-छाड़ न की जाय और उसकी राह न रोकी जाय तो वह बुरे तौर से पेश न आ कर चुपचाप चला जाता है। किन्तु वह ऐसा हठीला होता है कि जङ्गल के महाराज के लिए भी राह छोड़ कर अलग खड़ा नहीं हो सकता। यदि भालू को देख कर डर लगे तो उसकी ओर न देख कर दबे पाँव दूसरी ओर चला जाना अच्छा है। किन्तु एक जगह खड़े हो कर उसकी ओर ताकने से वह अपने मन में शायद यही समझता है कि यह मेरे साथ गुस्ताख़ी की जाती है तब वह अपनी मर्यादा को बचाने के लिए क्रुद्ध हो कर दुश्मन का पीछा करता है। एक बार किसी तरह चिढ़ जाने पर जब तक वह दुश्मन से बदला नहीं ले लेता तब तक दिन-रात उसके पीछे पीछे घूमता रहता है। हम लोग भालू को देख कर भयभीत हुए। इतना बड़ा भालू कभी नहीं देखा था। किन्तु फ़ाइडे भालू से ज़रा भी न डरा। साहस और उत्साह से उसका चेहरा प्रफुल्लित हो उठा। उसने कहा,—"ओ भालू! आओ, आओ, एक बार तुमसे हाथ मिला लूँ।" मैंने उसका यह

कुव्यवहार देख विस्मित हो कर कहा—"अरे गधे! यह क्या कर रहा है? वह तुझे खा डालेगा।" फ़्राइडे ने कहा—"मुझे न खायगा, मैं ही उसे खाऊँगा। आप लोग ठहर कर तमाशा देखें और हँसें।" फ़्राइडे ने ज़मीन में बैठ कर झटपट बूट उतार कर हलका जूता पहना और अपना घोड़ा मेरे दूसरे नौकर को थमा कर वह एक ही दौड़ में भालू के सामने जा खड़ा हुआ। भालू किसी पर कुछ लक्ष्य न कर के झूमता हुआ चला जा रहा था। फ़्राइडे ने उस को पुकार कर कहा—"ओ सज्जन! कुछ सुनते हो?" यह कह कर उसने पत्थर का टुकड़ा उठा कर भालू के सिर में मारा, किन्तु ढेला मारने से जैसे पत्थर को कुछ नहीं होता वैसे ही पत्थर का टुकड़ा लगने से भालू को भी कुछ न हुआ पर इस आघात से क्रुद्ध हो कर उसने फ़्राइडे का पीछा किया। फ़्राइडे भागा। हम लोग भालू को गोली मारने के लिए तैयार हुए। मैं मन ही मन फ़्राइडे पर बहुत कुढ़ने लगा। भालू अपने मन से चला जा रहा था, यह अभागा उसे छेड़ कर यह क्या अनर्थ बुला लाया। मैंने क्रोध कर के फ़्राइडे से कहा—"अरे गधे! यही तेरे हास्य का अभिनय है? तू वहाँ से हट जा, भालू को गोली से मारने दे।" फ़्राइडे ने कहा, "नहीं, नहीं, अभी इस पर गोली मत चलाइए, मैं आप लोगों को ख़ूब हँसाऊँगा।" भालू एक पग आगे बढ़ता तो फ़्राइडे दो डग पीछे हटता। यों ही हटते हटते वह एक पेड़ के पास आ कर बन्दूक़ को नीचे रख कर पेड़ पर चढ़ गया। भालू भी घोड़े की तरह बड़े वेग से दौड़ कर पेड़ के नीचे पहुँच गया। उसने एक बार बन्दूक़ को सूँघ कर देखा। इसके बाद वह उतना मोटा ताज़ा बड़ी आसानी से उछल कर पेड़ पर चढ़ गया। यह देख कर

मैं यह न समझ सका कि फ़ाइडे ने इसमें हँसाने की कौन सी बात सोच रक्खी है, बल्कि यह उसने मूर्खता का काम किया है जो पेड़ पर चढ़ कर अपने भागने का रास्ता भी बन्द कर लिया।

हम लोग घोड़े पर चढ़े हुए पेड़ के नीचे जाकर देखने लगे। फ़ाइडे एक डाल की फुनगी पर जा बैठा और भालू डाल के बीच में पहुँच गया। भालू को धीरे धीरे पतली डाल पर आते देख फ़ाइडे ने कहा—"हाँ, चले आओ, इस बार तुम्हें नाच करना सिखलाता हूँ।" यह कह कर वह खूब ज़ोर से डाल हिलाने लगा। तब भालू भी उसके साथ झूलने लगा और थर थर काँपता हुआ पीछे की ओर भागने का उपाय ढूँढ़ने लगा। यह देख कर हम लोग खूब हँसे। भालू को अब अग्रसर होते न देख फ़ाइडे ने शाखा का झकझोरना बन्द किया। फिर वह भालू से कहने लगा, "आओ, आओ, रुक क्यों रहे ?" इस प्रकार उसे पुकारने लगा, जैसे वह उसकी बात समझता हो। भालू ने उसकी बात सुनी। फ़ाइडे को स्थिर होकर बैठते देख भालू फिर आगे बढ़ चला। तब फ़ाइडे फिर ज़ोर से डाल हिलाने लगा। डाल हिलते ही फिर भालू ठहर गया। पतली डाल पर खड़ा होकर वह काँपने लगा। हम लोग उसकी दशा देख कर हँसने लगे। फ़ाइडे ने कहा, "अच्छा, यदि तुम नहीं आते तो मैं ही आता हूँ।" यह कह कर वह शाखा के अग्र-भाग को नवा कर नीचे कूद पड़ा। अपने शत्रु को जाते देख भालू एक बार पीछे की ओर देखता और एक पग पीछे हटता था। इस प्रकार धीरे धीरे नीचे की ओर हटते हटते वह तने के पास आ पहुँचा। अब वह धरती की ओर देख कर नीचे उतरना ही चाहता था

कि फ्राइडे ने उसे, धरती पर पाँव रखने के पहले ही, बन्दूक की गोली से मार डाला।

साँझ हो आई। हमारा पथ-प्रदर्शक भेड़िये से अभिभूत होने के कारण कुछ घायल हो गया था। अभी तीन मील रास्ता हम लोगों को और जाना होगा। पर अब भी हम लोग जंगल के भीतर ही हैं। भेड़ियों का गरजना अब भी हृदय को कँपा रहा है। एक भयङ्कर स्थान अब भी हम लोगों को पार करना है। इस अँधेरी रात में उस मार्ग से होकर जाना होगा। वह मार्ग वन के भीतर होकर गया है। उस वन में असंख्य भेड़िये हैं। हम लोग उस वन को पार कर एक बस्ती में पहुँचेंगे और वहीं रह कर रात बितावेंगे। हम लोग सूर्यास्त होने के आध घंटा पहले इस जंगल से निकल कर एक मैदान में पहुंचे। किसी वन्य जन्तु ने हम लोगों पर आक्रमण नहीं किया। केवल इतना ही देखा कि बड़े बड़े पाँच भेड़िये छलाँगें मारते हाँफते हुए रास्ते में एक ओर से निकल कर, बाट काट कर, दूसरी ओर चले गये। यह देख कर पथ-प्रदर्शक ने हम लोगों को सावधान होने के लिए कहा। भेड़ियों का झुण्ड आरहा है, ये उन्हीं के अग्र-सूचक हैं। हम लोग अपने अस्त्र-शस्त्रों को ठीक करके चौकन्नी दृष्टि से चारों ओर देखने लगे। कुछ देर तक एक भी जानवर दिखाई न दिया। कुछ और आगे बढ़ कर हम लोगों ने मैदान में जो दृश्य देखा, वह न कभी देखा और न देखेंगे। बारह भेड़िये एक घोड़े को मार कर खा रहे हैं। वे उसके मांस को तो खा चुके हैं, अब हड्डियाँ चाट रहे हैं। हम लोग दूसरी ओर देखते हुए इस तरह जाने लगे मानो उनको देखा ही नहीं। उन्होंने भी हम लोगों पर लक्ष्य न किया। फ्राइडे उनको गोली मारने के लिए उद्यत

हुआ परन्तु मैंने उसे ऐसा करने से रोका। बीच मैदान में जाते न जाते हम लोगों ने भेड़ियों का गर्जना सुना और कुछ ही देर बाद देखा कि डेढ़ सौ भेड़ियों का झुण्ड हम लोगों की ओर आ रहा है। हम लोग इसका क्या प्रतीकार करेंगे,—यह सोच कर भी कुछ ठीक न कर सकते थे। आख़िर हम लोग क़तार बाँध एक दूसरे से सट कर खड़े हो गये। मैंने सबसे कह दिया कि एक साथ सब बन्दूकें न चला कर एक के बाद दूसरी बन्दूक़ चलाई जाय। इससे यह फ़ायदा होगा कि जब तक और लोग गोली चलावेंगे तब तक दूसरों को बन्दूक़ भरने का अवकाश मिलेगा। इससे बन्दूक़ की आवाज़ लगातार जारी रहेगी जिससे संभव है कि भेड़ियों की गति रुक जाय। हम लोगों की पहली बार की बन्दूकें छूटते ही बन्दूकों का शब्द और आग की झलक देख कर सभी भेड़िये डर कर खड़े हो रहे। चार मरे और कई एक घायल होकर भागे। मैंने कभी सुना था कि मनुष्यों की चिल्लाहट सुन कर भेड़िया डरता है। इसलिए मैंने सभी को एक साथ ख़ूब ज़ोर से चिल्लाने का परामर्श दिया। यह उपचार एकदम व्यर्थ न हुआ। हम लोगों के चिल्लाते ही भेड़िये मुँह फेर कर भागने को उद्यत हुए। तब मैंने अपने साथियों को उन पर पीछे से गोली चलाने की आज्ञा दी। पीछे से गोली की चोट खाकर मरते गिरते लड़खड़ाते हुए वे सब जंगल के भीतर जा घुसे। यह अवसर पाकर हम लोग बन्दूकें भर कर बड़ी शीघ्र गति से जाने लगे। किन्तु दो चार डग आगे जाते न जाते हम लोगों ने अपनी बाईं ओर के जंगल में वन्य जन्तुओं का भयङ्कर चीत्कार सुना। किन्तु वह शब्द हम लोगों के सामने की ओर होता था। हमें लोगों को उधर ही से जाना था।

अब दिन नाममात्र को भी न रहा। सूर्यास्त होने पर अन्धकार का साम्राज्य क्रमशः बढ़ चला। यह हम लोगों के पक्ष में कुछ भी सुखकर न था। जितना ही अन्धकार बढ़ने लगा उतना ही अधिक भेड़ियों का कोलाहल होने लगा। इतने में क्या देखता हूँ कि भेड़ियों का एक झुण्ड हम लोगों की बाँई ओर, एक झुण्ड सामने और एक झुण्ड पीछे आकर हम लोगों को घेर कर खड़ा हुआ। किन्तु उन सब को आक्रमण की चेष्टा करते न देख, हम लोगों से जहाँ तक हो सका, हम जल्दी जल्दी आगे बढ़ चले। किन्तु रास्ता नीचा ऊँचा होने के कारण शीघ्रता करने पर भी रास्ता बहुत कम कटता था। इस प्रकार क्रमशः आगे बढ़ते बढ़ते हम लोग एक जंगल के प्रवेश-पथ में पहुँचे। इस वन से पार होने पर हम लोगों का आज का सफ़र पूरा होगा और हम लोग एक निर्दिष्ट स्थान में पहुँच जायँगे। यह देख कर हम लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि वन के भीतर प्रवेश करने के पथ में कितने ही भेड़िये पहले ही से खड़े हो आगन्तुकों की राह देख रहे हैं। वन के अन्य भाग में अकस्मात् बन्दूक़ की आवाज़ हुई। आवाज़ होने के कुछ ही देर पीछे हम लोग देखते हैं कि एक ज़ीन-कसा घोड़ा वायु-वेग से दौड़ा चला आ रहा है और जंगल से बाहर निकल गया। पन्द्रह-सोलह भेड़िये उसका पीछा किये चले आ रहे हैं। घोड़ा यद्यपि भेड़ियों से बहुत आगे था तथापि उन के पंजे से निकल भागना उसके लिए असंभव था। भेड़िये के साथ घोड़ा कब तक दौड़ सकता है। बात की बात में भेड़ियों के झुण्ड ने घोड़े को धर दबाया और उसे मार खाया। हम लोगों ने जंगल के भीतर प्रवेश करके और भी भयङ्कर दृश्य देखा। रास्ते में एक घोड़ा और दो मनुष्य मरे पड़े हैं और

भेड़िये उन्हें फाड़ फाड़ कर खा रहे हैं। एक मनुष्य को सिर से आधे धड़ तक खा चुके हैं। उसके पास एक बन्दूक पड़ी है। कुछ देर पहले शायद इसी शख़्स के बन्दूक़ चलाने की आवाज़ सुन पड़ी थी। यह देख कर भय से हम लोगों के प्राण सूख गये। क्या करना चाहिए, कुछ समझ में न आता था। किन्तु उन हिंस्र-पशुओं ने हम लोगों के कर्तव्य को शीघ्र ही स्थिर कर दिया। उन्होंने शिकार के लोभ से हम लोगों को घेर लिया। उनकी संख्या तीन सौ से कम न होगी। हम लोगों के भाग्य से प्रवेश-मार्ग के पास ही, जंगल के भीतर, एक पेड़ का तना कटा पड़ा था। मैं अपने छोटे से दल को शीघ्र ही उस विशाल पेड़ की आड़ में ले गया। हम लोगों ने घोड़े से उतर कर एक त्रिभुजाकार व्यूह की रचना की और उसके बीच में घोड़ों को कर लिया। भेड़िये गुर्रा गुर्रा कर हम लोगों की ओर दौड़े और जिस पेड़ की आड़ में हम लोग छिपे थे उस पर कूद कूद कर चढ़ने लगे। मैंने अपने साथियों से कह दिया कि पूर्ववत् एक के बाद एक बन्दूक़ छोड़ी जाय। पहली ही बेर हम लोगों ने बहुत भेड़िये मार डाले। किन्तु इतने पर भी वे हम लोगों पर भयङ्कर भाव से आक्रमण कर रहे थे। सामने के झुण्ड को जब तक हम मार भगाते थे तब तक पीछे वाला झुण्ड हम लोगों पर हमला करता था। इसलिए हम को आगे-पीछे दोनों ओर लगातार बन्दूकों की आवाज़ करनी पड़ी। चार-पाँच बेर की आवाज़ में हम लोगों के हाथ से सत्रह अठारह भेड़िये मरे और इससे दुगुने घायल हुए तो भी वे ऐसे निर्भीक थे कि पीछे न हटे। एक एक बार गोली खा कर क्षण भर खड़े रहते और फिर एकाएक आगे आते थे। तब मैंने अपने दूसरे नौकर से कहा, "तुम इस कटे हुए

पेड़ के तने पर बहुत सी बारूद बिछा दो"। वह बारूद बिछाकर ज्यों ही वहाँ से हट आया त्यों ही भेड़ियों का झुंड उस बारूद पर आ गया। जिस काठ पर बारूद रक्खी गई थी उस पर मैंने तुरन्त तमंचे की आवाज़ की। तमंचे की आग का स्पर्श होते ही वह लम्बी बारूद की राशि एक साथ बल उठी। इससे कितने ही भेड़िये झुलस गये, कितने ही भय से उछल कर हम लोगों के व्यूह के भीतर आ पड़े, उन को एक ही पल में हम लोगों ने तितर बितर कर दिया। बाक़ी एकाएक प्रकाश होते देख पीछे की ओर मुड़े। तब मैंने फिर सब को बन्दूक़ मारने का आदेश किया। बन्दूक़ मार कर हम लोग खूब ज़ोर से चीत्कार कर उठे। जितने भेड़िये बच रहे थे सब पूँछ उठा कर भागे। हम लोगों ने साहस करके कुछ दूर तक उनका पीछा किया और कितनों ही को तलवार से दो टुकड़े कर डाला। उन भेड़ियों का आर्तनाद सुन कर और सब अपनी जान ले ले कर भागे।

हम लोगों ने अब की बार कोई पचास साठ भेड़िये मारे। दिन होता तो और मारते। मार्ग निष्कण्टक होते ही हम लोग वहाँ से रवाना हुए। हम लोगों को क़रीब एक मील रास्ता और तय करना था। जाते जाते हम लोगों ने कई बार भेड़ियों का गरजना सुना। रास्ते में कितनी ही विभीषिकायें देखीं। एक घंटे के बाद हम लोग एक शहर में पहुँचे। वहाँ के लोग भी भेड़ियों और भालुओं के भय से त्रस्त होकर अस्त्र-शस्त्र ले दिन-रात चिल्ला चिल्ला कर शहर का पहरा देते थे। वहाँ भी कल्याण नहीं, निश्चिन्त होकर रहने का सुभीता नहीं।

दूसरे दिन सबेरे हम लोगों के पथ-प्रदर्शक को ज़ख्मी हाथ के सूजने से ज्वर हो आया। वह वहाँ से आगे न जा सका। तब हम लोग एक नये पथ-प्रदर्शक को साथ ले टुलुज शहर को गये। मैंने अपने दोनों कान मल कर सौगन्द खाई कि फिर कभी इस रास्ते कहीं न जायँगे। इस मार्ग की अपेक्षा जल-थल में नाव डूब जाने से पानी में डूब जाना कहीं अच्छा है।

टुलुज से पेरिस, वहाँ से कैले, और कैले से १४ वीं जनवरी को हम लोग निर्विघ्न डोवर पहुँचे। मैंने अपनी पूर्व-परिचित कप्तान की विधवा स्त्री के पास अपनी सब धन-सम्पत्ति रख दी। वह विश्वास-पूर्वक मेरे साथ उत्तम व्यवहार करने लगी।

मैंने अपने मित्र वृद्ध कप्तान के ज़रिये ब्रेज़िल की ज़मींदारी बेच कर ढाई लाख रुपये प्राप्त किये। इस प्रकार मेरे अति-विचित्र जटिल जीवन-नाट्य के प्रथम अङ्क का यवनिका-पात हुआ। आरम्भ में तो मैंने बहुत कष्ट उठाये, पर अन्त में मुझे बहुत ही सुख मिला।

उत्तरार्ध

क्रूसो की मानसिक अशान्ति

बहुत लोग यह समझेंगे कि मैं इतना बड़ा धनाढ्य होकर भ्रमण करना छोड़ एक जगह स्थिर होकर बैठ रहा हूँगा। किन्तु मेरे भाग्य में यह लिखा ही न था। घूमने का रोग मेरी नस नस में घुसा हुआ था। उस पर न मेरे बन्धु-बान्धव थे, न स्वजन-परिवार था और न घर-द्वार था, जिनके मोह से मैं देश छोड़ अन्यत्र नहीं जाता। संसार ही मेरा घर था; संसार के मनुष्य ही मेरे आत्मीय बन्धु थे। देश में आते ही फिर मुझे ब्रेज़िल जाने की इच्छा होने लगी। एक बार फिर अपने उस टापू को देखने की इच्छा हुई। उस टापू में आने वाले स्पेनियर्ड लोगों का क्या हुआ, यह जानने के लिए मेरा चित्त बड़ा ही उत्सुक था। मेरे मित्र की पत्नी ने रोक रोक कर मुझे सात वर्ष देश में अटका रक्खा। इस अरसे में मैंने अपने दोनों भतीजों को कुछ लिखा-पढ़ाकर और कुछ रुपया-पैसा देकर मनुष्य बना दिया। उनकी हैसियत ऐसी हो गई जिससे वे अपना जीवन-निर्वाह अच्छी तरह कर सकते थे। मेरा एक भतीजा जहाज़ का कप्तान हुआ। वही छोकरा मुझे इस वृद्धावस्था में फिर विपत्ति के साथ युद्ध करने के लिए घर से खींचकर बाहर ले गया।

जब मैं लौटकर देश गया था तब मैंने ब्याह किया था। दो लड़के और एक लड़की होने के बाद मेरी स्त्री की मृत्यु हुई। उसी अवसर पर, १६९४ ईसवी को, मैं अपने भतीजे के जहाज़ पर सवार हो वाणिज्य करने की इच्छा से अमेरिका को रवाना हुआ।

लोग कहा करते हैं, "जाको है जौन सुभाव, सुनो वह कोटि उपाय किये न हिलै," "न घिसने से स्वभाव जाता है, और न धोने से कलङ्क छूटता है।" यह कहावत मुझपर ख़ूब घटती थी। पैंतीस वर्ष तक दारुण कष्ट भोगने के बाद सात वर्ष शान्ति से सुख भोग कर इस एकसठ साल के बुढ़ापे में देश-भ्रमण की इच्छा जाग उठने का कोई कारण न था; क्योंकि जो लोग देश घूमते हैं वे या तो द्रव्योपार्जन के लिए जाते हैं या देश देखने के लिए। किन्तु मैंने देश घूम कर रुपया भी ख़ूब बटोरा और देश भी अनेक देखे। अतएव देशान्तर जाने की मुझे कोई आवश्यकता न थी। परन्तु यह बात मैं ऊपर कह आया हूँ कि "स्वभावो बलवत्तरः", मेरा सैर करने का स्वभाव मुझको घर से बाहर होने के लिए दिन रात तक़ाज़ा करने लगा। इस विषय में मेरा जी इतना लगा रहता था कि स्वप्न में भी देश-भ्रमण की ही बात देखता और बकता था। मेरे इस विषय की नित्य प्रति की एक ही बात लोगों को कर्णकटु हो उठी थी। यह मैं भली भाँति समझता था, किन्तु भ्रमण का उन्माद मेरे सिर पर सवार था। वह मुझे दूसरी ओर हिलने डुलने न देता था।

पथ-विहरण की लालसा लगी रहे जिय माँहि।
मनो पुकारत सो हमें छिनहू बिसरत नाँहि॥

मैं किसी तरह उसके खिंचाव को रोक नहीं सकता था, किन्तु यह भी न जान सकता था कि मेरा झुकाव उस तरफ़ इतना क्यों है। चाहे जिस कारण से हो, मुझे घूमने का नशा था और उसने मुझको अपने अधीन बना रक्खा था। बुद्धिमान् लोग कहा करते हैं कि असल में भूत-प्रेत कुछ नहीं है, केवल मस्तिष्क की ख़राबी से लोगों के ख़यालात बदल जाते

हैं और उसी से भूत-प्रेत देख पड़ते हैं; वे भूतों के साथ बातें करते हैं और उनकी बातें सुन सकते हैं। यथार्थ में भूत है कि नहीं, यह मैं नहीं जानता। अब तक तो मैंने कभी भूत नहीं देखा, किन्तु दिमाग़ गर्म होने से जो मन में भाँति भाँति की भ्रान्तियाँ उत्पन्न होती हैं इसका मुझे पूर्णपरिचय है। मस्तिष्क उत्तेजित होने से लोगों के मन में विचित्र भावनायें होने लगती हैं। कभी कभी मेरे मन में यह भावना होती थी कि मैं अपने द्वीप में गया हूँ और अपने क़िले के भीतर बैठ कर स्पेनियर्ड, फ्राइडे के बाप तथा विद्रोही नाविकों के साथ बातें कर रहा हूँ; उनका पारस्परिक विवाद मिटा कर कर्तव्य की मीमांसा कर रहा हूँ और अपराधियों के दण्ड की व्यवस्था कर रहा हूँ। इस तरह सोचते-विचारते कई साल गुज़र गये। मेरे पास आराम की सब सामग्री थी, फिर भी मुझे दिन-रात छटपटी लगी रहती थी। न दिन को चैन मिलता था न रात को नींद आती थी। मैं हर घड़ी सोच-सागर में डूबा रहता था। एक दिन मेरी स्त्री ने कहा, "आपके चित्त की अवस्था देख कर यही जान पड़ता है कि ईश्वर किसी महान् उद्देश से आपको इस ओर खींच रहे हैं। इस समय मैं और बाल-बच्चे आपके बाधक हो रहे हैं। मैं आपको छोड़ कर अकेली न रह सकूँगी। मेरी मृत्यु होने ही से आप निर्बन्ध हो सकते हैं। अभी आप अपने को एक प्रकार से बद्ध समझें।" यह कहते कहते उस बेचारी की आँखों से आँसू टपक टपक कर गिरने लगे। इसके बाद फिर उसने कहा, "इस बुढ़ापे में आपका देश-देशान्तर का घूमना अच्छा नहीं। आपकी अब वह उम्र नहीं जो स्वतन्त्रता-पूर्वक देश-भ्रमण करें, यदि आपका जाना ज़रूरी ही होगा तो मैं भी आपके साथ चलूँगी।" स्त्री की

ऐसी स्नेह-भरी मीठी बात सुनकर और मीठे तिरस्कार का इशारा पाकर मुझे कुछ चेत हुआ। तब मैंने समझा कि मैं यथार्थ में पागलपन करने को उद्यत हुआ हूँ। मनही मन अनेक तर्क-वितर्क कर के मैंने अपनी चित्त-वृत्ति को रोका।

मैंने बेडफ़ोर्ड ज़िले में एक छोटा सा गँवई-मकान ख़रीद लिया। वह मकान काम चलाने लायक़ अच्छा था। हाते के भीतर ज़मीन भी बहुत थी। मैंने खेती-बाड़ी में जी लगाया। छः महीने के भीतर मैं पक्का किसान हो गया। अनाज से बुखारी भर गई, गाय-बछड़ों से गोठ भर गया। कई घोड़े भी ख़रीद लिये। नौकर-चाकरों से घर भर गया। कोई घर का काम करता, कोई बाहर का और कोई खेती-बाड़ी की देख भाल करने लगा। मैं गृहस्थी के कामों में लग कर समुद्र-यात्रा की बात एक प्रकार से भूल ही गया। मैं नगर-निवास के समस्त पाप-प्रलोभन से बच कर निश्चिन्तभाव से देहात में रह कर समय बिताने लगा।

किन्तु मेरे इस भरे-पूरे सुख में भगवान् ने मेरे एक-मात्र स्नेहबन्धन को तोड़ दिया; मेरे बने-बनाये घर को बिगाड़ दिया। मेरे दबे हुए भ्रमणात्मक रोग को फिर उभड़ने का अवसर दिया। मेरी स्त्री का देहान्त होगया। मैं यहाँ उसके गुणों का सविस्तर वर्णन करके पृष्ठों की संख्या बढ़ाना नहीं चाहता किन्तु इतना ज़रूरी है कि वह मेरे विश्राम की एक-मात्र आश्रय थी; संसार-बन्धन और समस्त उद्यमों की केन्द्र थी। मेरी माता के गरम आँसू, पिता के उपदेश, मित्रों के परामर्श और मेरा अपना विवेक जिस समुद्रयात्रा से मुझे न रोक सका उसे मेरी पत्नी ने अपने मधुर उपदेश से रोक

दिया था। अब उस स्त्री-रत्न को खोकर मैं एकदम निराश्रय और निरवलम्ब हो गया।

स्त्री के न रहने से मैं फिर अकेले का अकेला रह गया। जब मैं पहले पहल ब्रेज़िल गया था तब जैसे किसी के साथ मेरा परिचय न था वैसे ही अब भी मैं सब के लिए अपरिचित सा हो रहा। द्वीप में जाकर जैसे मैं अकेला रहता था, वैसे ही अब भी रहने लगा। अब मैं क्या करूँगा, यह मेरी समझ में न आता था। मैं अपने भविष्यजीवन को किस तरीक़े पर बिताऊँगा इसका कुछ निर्णय नहीं कर सकता था। मैंने देखा कि मेरे चारों ओर सभी लोग सांसारिक व्यवहार में लगे हुए हैं। उनमें कितने ही ऐसे हैं जो मुट्ठी भर अन्न के लिए जी तोड़ परिश्रम करते हैं। कितने ही दुर्व्यसन में, आनन्द के अध्यासमात्र का अनुभव कर के, उसीके पीछे हैरान रहते हैं; कितने ही लोग पागलपन ही में मिथ्या आनन्द खोजते रहते हैं। निष्कर्ष यह कि सभी लोगों का भला या बुरा अपना एक उद्देश ज़रूर रहता है। सभी लोग जीने के लिए श्रम करते हैं और श्रम करने के लिए जीते हैं। बिना परिश्रम के कोई रोज़ी हासिल नहीं कर सकता। जब तक इस शरीर से जीवन का सम्बन्ध बना रहता है तब तक भोजन का सम्बन्ध भी छूटने वाला नहीं। जीवन-धारण के लिए जैसे भोजन अत्यावश्यक है वैसे ही भोजन प्राप्त करने के लिए शरीर-परिचालन भी नितान्त आवश्यक है। सभी लोग कमाते कमाते मर मिटते हैं पर वास्तविक सुख किसी को नहीं मिलता। इस शरीर-यात्रा के साथ अपनी द्वीपान्तर की शरीर-यात्रा की तुलना करने से वह सुगम जँचती थी। मैं अपने प्रयोजन से अधिक अन्न न उपजाता था। वहाँ सन्दूक़ में

रक्खे हुए रुपये काले पड़ गये थे, पर बीस वर्ष के दरमियान कभी उनको एक बार भी देखने की आवश्यकता न हुई थी। अब मैं कुछ कुछ समझने लग गया था कि मनुष्य-जीवन का उद्देश केवल आहार-निद्रा और विषय-भोग ही नहीं है, प्रत्युत आत्मा की उन्नति ही उसका चरम उद्देश है। उसी के सहायतार्थ देह-रक्षा भी आवश्यक है। अर्थ की अपेक्षा धर्म ही मनुष्य के लिए अमूल्य सम्पत्ति है। किन्तु इस सम्पत्ति की रक्षा अब मुझसे कौन करावेगा? मेरी प्रिय शिष्या और सचिव मुझे अकेला छोड़ चली गई। मैं कर्णधार-विहीन नौका की भाँति धन-दौलतरूपी तूफ़ान में पड़ कर संसार में डूबता-उतराता हूँ।

विदेश-भ्रमण की चिन्ता फिर मेरे शान्त निरापद भाव से— गृह-वास के सुख और खेती-बाड़ी के आनन्द को भुला कर—बड़ी निर्दयता के साथ मुझे बाहर की ओर खींचने लगी। बहरों के लिए संगीत की तरह, बिना जीभ वाले के लिए स्वादिष्ठ खाद्य की तरह मेरे लिए मेरे घर का सुख नितान्त निरर्थक सा जँचने लगा। कई महीने बाद मैं अपना घर-द्वार भाड़े पर दे कर लन्दन गया।

लन्दन में भी मेरा जी न लगा। वहाँ भी चित्त को चैन न मिला। बिना कुछ रोज़गार के जीवन का बोझ लेकर घूमना कैसा कष्ट-दायक है, यह वही समझ सकेंगे जो चिरकाल से कर्मनिष्ठ हैं और जिनका जीवन-समय कभी व्यर्थ नहीं जाता। आलसी होकर एक जगह बैठा रहना जीवन की हेयतम अवस्था है। वह जीवन के लिए एक बड़ी लाञ्छना है। लन्दन में बैठकर आलसी की तरह जीवन बिताने की अपेक्षा निर्जन द्वीप में रह कर जब मैं छब्बीस दिन में एक तख़्ता तैयार करता था तब वह मेरे लिए कहीं बढ़कर सुख का समय था।

दूसरी बार की विदेशयात्रा

१६६३ ईसवी के कुछ दिन पहले ही मेरा जहाज़ी भतीजा जहाज़ का सफ़र तय कर के देश लौट आया। उसके परिचित कुछ सौदागर, अपने साथ लेकर, उसको भारत और चीन में वाणिज्य करने का अनुरोध करने लगे। उसने एक दिन मुझसे कहा,—चाचाजी, यदि आप मेरे साथ चलें तो आपको ब्रेज़िल आदि पूर्व-परिचित देश दिखा लाऊँ।

"जो रोगी को भावे सो वैद बतावे" की कहावत चरितार्थ हुई। मैंने अपने मन में निश्चय किया था कि मैं यहाँ से लिसबन जाऊँगा और वहाँ अपने कप्तान मित्र से सलाह लेकर एक बार अपने द्वीप में जाकर देख आऊँगा कि मेरे उत्तराधिकारी कैसे हैं! इस देश से लोगों को ले जाकर उस द्वीप में बसाने की कल्पना कर के भी मैं मन ही मन सुख का अनुभव कर रहा था। किन्तु अपने मन की ये बातें मैं किसीसे कहता नहीं था। सहसा अपने भतीजे के इस प्रस्ताव से विस्मित होकर मैंने कहा—बेटा! सच कहो, किस शैतान ने तुमको ऐसा अयुक्त प्रलोभन दिखलाने भेजा है? मेरा भतीजा पहले, यह समझ कर कि मैं उसके प्रस्ताव से रुष्ट हो गया हूँ, चुप होकर मेरे मुँह की ओर देखने लगा। परन्तु बार बार मेरे चेहरे की ओर ध्यान से देख कर उसने समझा कि मेरा मन उतना अप्रसन्न नहीं है। तब उस ने ठंढी साँस भर कर और मुसकुरा कर कहा—मैं आशा करता हूँ कि इस बार अयुक्त प्रलोभन न होगा। आप अपने पूर्व-राज्य को देख कर सुखी होंगे।

मैं शीघ्रही उसके प्रस्ताव पर सम्मत हो कर बोला,—"अच्छा तुम ले चलो, पर मैं अपने उसी टापू तक जाऊँगा, उससे आगे न बढ़ूँगा। मुझे बहुत दूर जाने का साहस नहीं होता।" उसने कहा—"क्यों? आप फिर उसी द्वीप में रहना तो नहीं चाहते?" मैंने कहा,—"नहीं, तुम जब उधर से लौटो तब फिर मुझे अपने साथ लेते आना।" उसने कहा,—"उस राह से लौटने में सुभीता न होगा। मान लीजिए, यदि मैं किसी कारण से लौटती बार उस द्वीप में न पहुँच सकूँ तब तो फिर आपका निर्वासन ही होगा।" यह बात मुझे ख़ूब युक्ति-संगत जान पड़ी। किन्तु हम दोनों ने तत्काल एक उपाय सोच लिया। हम लोग एक नाव का फ़्रेम (पार्श्वभाग) जहाज़ पर रख लेंगे और कुछ बढ़ई मिस्त्रियों को भी साथ ले लेंगे। वे द्वीप में पहुँच कर उस फ़्रेम के भीतर तख़्ते जड़ कर ठीक कर देंगे। भतीजा मुझे द्वीप में छोड़ कर चला जायगा; लौटते समय वह मुझको जहाज़ पर चढ़ा लेगा तो अच्छा ही है, नहीं तो मैं उसी नाव पर सवार हो कर ब्रेज़िल जाऊँगा और वहाँ से यात्री-जहाज़ के द्वारा अपने देश को लौट आऊँगा।

मेरी वृद्धा मित्र-पत्नी ने मेरा इस बुढ़ापे में विपत्ति के मुख में घुसना पसन्द न किया। उसने लम्बी समुद्रयात्रा के क्लेश, विपत्ति की सम्भावना, और मेरे बाल-बच्चों की बात याद दिला कर मुझको जाने से रोकने की चेष्टा की। किन्तु जब उसने मुझको जाने के लिए अत्यन्त आतुर देखा तब बाधा देना छोड़ दिया और लाचार होकर स्वयं मेरी यात्रा का सब सामान ठीक कर देने में प्रवृत्त हुई।

मैंने एक वसीयतनामा लिख कर अपनी धन-सम्पत्ति अपने बच्चों के नाम से लिख पढ़ दी। सन्तानों की शिक्षा-

रक्षा का भार वृद्धा विधवा ही को सौंपा। यह भार उपयुक्त व्यक्ति को सौंपा गया था। कारण यह कि कोई माता भी उससे बढ़ कर अपने बच्चों का यत्नपूर्वक लालन-पालन नहीं कर सकती। जब मैं लौट कर देश पहुँचा तब भी वह जीवित थी। मैं उसका काम देख कर बहुत प्रसन्न हुआ था और उसे धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का मुझे अवसर मिला था।

१६९४ ईसवी की ८ वीं जनवरी को हम और फ़ाइडे अपने भतीजे के जहाज़ पर सवार हुए। छप्परदार-नाव के सिवा अपने द्वीप के लिए मैंने अनेक प्रकार की चीज़ें साथ रख लीं। इस बार मैंने कई नौकरों को भी अपने साथ ले लिया। यह इसलिए कि जब तक मैं उस द्वीप में रहूँगा तब तक वे लोग मेरी मातहती में काम करेंगे। इसके बाद जो वहाँ रहना चाहेंगे, रहेंगे और जो देश आना चाहेंगे वे मेरे साथ लौट आवेंगे। मैंने दो बढ़ई, एक कुम्हार, एक पीपे बनाने वाले और एक दर्ज़ी को साथ ले लिया। पीपे बनाने वाला अपनी वृत्ति के सिवा कुम्हार का भी काम करना जानता था और नक़शा खोदने आदि का भी काम जानता था। वह बड़े काम का आदमी था। मैंने और वस्तुओं की अपेक्षा कपड़े बहुतायत से ले लिये थे जिनसे टापू भर के लोगों का काम सात वर्ष तक मज़े में चल सकता। इसके अतिरिक्त दस्ताने, टोपी, जूते, मोज़े, बिछौने, बर्तन, कल आदि गृहस्थी की प्रायः सभी आवश्यक वस्तुएँ जहाज़ पर लाद लीं। युद्ध का भी कुछ सामान साथ रख लिया। सौ बन्दूकें, तलवारें, पिस्तौल, गोली, बारूद, तथा शीशे और पीतल की बनी दो मज़बूत तोपें भी जहाज़ पर रख लीं।

मेरा नसीब जैसा ख़राब था वैसा कोई विशेष संकट इस दफ़े संघटित न हुआ। पर यह बात नहीं कि सङ्कटों ने मेरा पीछा क़तई छोड़ दिया। रवाना होने के साथ ही प्रतिकूल वायु बहना और पानी बरसना शुरू हुआ। मैंने समझा कि मुझको विपत्ति में डालने ही के लिए इस प्रकार प्रकृतिविपर्यय हो रहा है। प्रतिकूल वायु हम लोगों के जहाज़ को उत्तर ओर ठेल कर ले गया। हम लोग आयरलेन्ड के गालवे बन्दर में बाईस दिन तक टिके रहे। यहाँ खाद्य-सामग्री खूब सस्ते दाम पर बिकती थी। हम लोगों ने साथ की रसद ख़र्च न कर के ख़रीद कर खाया और कुछ जहाज़ में रख भी लिया। यहाँ मैंने बहुत से सूअर, गाय, और बछड़े मोल लिये। मैंने उन्हें अपने टापू में ले जाना चाहा था, पर वहाँ तक वे न पहुँच सके।

हम लोग ५वीं फ़रवरी को अनुकूल वायु पा कर आयरलेन्ड से रवाना हुए। २९ वीं फ़रवरी को जहाज़ के मेट ने आ कर कहा—"हमने तोप छुटने की आवाज़ सुनी है और आग की झलक देखी है।" हम लोग दौड़ कर डेक के ऊपर गये। कुछ देर तक तो कुछ सुनाई न दिया पर कुछ ही देर के बाद आग की ज्वाला देखने में आई। कहीं दूर खूब ज़ोर की आग लगी है। उस महासमुद्र में पाँच सौ मील के भीतर कहीं स्थल का नाम-निशान न था, इसलिए सोचा कि ज़रूर किसी जहाज़ में आग लगी है। इसके पहले जो तोप की आवाज़ सुनी गई थी वह इसी विपत्ति की सूचना थी। जब तोप की आवाज़ हुई थी तब वह जहाज़ हमारे जहाज़ से बहुत दूर न था। हम लोग उस प्रकाश की ओर जहाज़ को ले चले। जितना ही आगे जहाज़ जाने लगा उतना ही प्रकाश का आधिक्य दिखाई देने लगा। कुहरा फैला रहने के कारण हम

लोग अग्नि-प्रकाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं देख सकते थे। आध घंटे के बाद हम लोगों ने स्पष्ट देखा कि समुद्र में एक बड़ा सा जहाज़ जल रहा है।

यह देख कर हम लोगों के हृदय में दया उमड़ आई। यद्यपि हम लोग न जानते थे कि यह कहाँ का जहाज़ है और वे लोग किस देश के यात्री हैं, तथापि उन लोगों की वेदना से हम लोग व्याकुल हो उठे। तब मुझे अपनी विपत्तियों से उद्धार पाने की बात स्मरण होने लगी। यदि उन विपद्-ग्रस्त बेचारों के पास और कोई नाव न हो तब उनकी न मालूम क्या दुर्दशा होगी, यह विचार कर मैंने आज्ञा दी कि हमारे जहाज़ से पाँच बार तोप की आवाज़ की जाय। इससे वे लोग समझेंगे कि उनके सहायक निकट-वर्ती हैं और वे नाव पर आरूढ़ हो कर अपनी प्राणरक्षा कर सकेंगे। आग के कारण हम लोग उनके जहाज़ को देख सकते थे, पर वे लोग हमारे जहाज़ को नहीं देख सकते थे। हम लोग प्रातःकाल की प्रतीक्षा करने लगे। इतने में एकाएक वह जलता हुआ जहाज़ आकाश की ओर उड़ गया और देखते ही देखते आग एक दम बुझ गई। समुद्र गाढ़ अन्धकार में डूब गया। ऐसा मालूम हुआ जैसे वह जहाज़ सर्वदा के लिए समुद्र के गर्भ में विलीन हो गया। हम लोग यद्यपि ऐसी ही किसी दुर्घ-टना की आशङ्का कर रहे थे तथापि उसे आँखों के सामने होते देख हम लोगों के मन में बड़ा ही भय हुआ। उस जहाज़ के यात्रियों की दुर्दशा की बात सोच कर जी व्याकुल होने लगा। वे लोग या तो जहाज़ के साथ जल गये होंगे या समुद्र में डूब कर मर गये होंगे अथवा इस अपार महा-सागर में नाव के ऊपर डूबने ही पर होंगे। वे सब के सब

घोर अन्धकार में छिपे हैं। हम लोग कुछ निश्चय न कर सके कि वे अभी किस अवस्था में हैं। उन लोगों को सूचना देने के लिए मैंने अपने जहाज़ के चारों ओर रोशनी कर दी और गोलन्दाज़ से सारी रात तोप की आवाज़ करने को कह दिया।

हम लोगों ने जाग कर रात बिताई। सबेरे आठ बजे हम लोगों ने दूरबीन लगा कर देखा कि दो छप्परदार नावें आरोहियों से भरी हुई घिरनी की तरह बीच समुद्र में नाच रही हैं। हवा हमीं लोगों की ओर से हो कर बहती थी। वे प्रतिकूल वायु में पड़ कर प्राणपण से नाव खे कर हम लोगों की ओर आ रहे थे और हम लोगों की दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए भाँति भाँति की चेष्टायें कर रहे थे। हम लोगों ने झंडी उड़ा कर उन लोगों को संकेत द्वारा जता दिया कि हम लोगों ने तुमको देख लिया। अब हम लोग पाल तान कर बड़ी तेज़ी से उन लोगों की ओर अग्रसर होने लगे। आध घंटे में हम लोग उनके पास पहुँच गये और चौंसठ पुरुष, स्त्री और बालकों को अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

दरियाफ़्त करने से मालूम हुआ कि वह एक फ़्रांसवासी सौदागर का जहाज़ है, कनाडा देश के क्यूबिक शहर से देश को जा रहा था। माँझियों की असावधानी से जहाज़ में आग लग गई और बहुत उपाय करने पर भी बुझ न सकी। तब जहाज़ के सभी यात्री निरुपाय हो कर नाव पर सवार हुए। उन लोगों के भाग्य से खूब बड़ी बड़ी दो नावें साथ में थीं, इससे वे लोग झटपट कुछ खाने-पीने की चीज़ें ले कर उन पर उतर आये। किन्तु नाव पर सवार हो जाने पर भी अपार समुद्र में उन लोगों के प्राण बचने की आशा न थी। केवल दुराशा मात्र थी कि कोई जहाज़ उन लोगों को आश्रय दे

दे तो दे दे । उन लोगों के साथ पतवार, पाल और कम्पास था । उन्हींके सहारे वे अमेरिका लौट जाने का उपक्रम कर रहे थे । ऐसे समय उन लोगों ने विधाता की आश्वासवाणी की तरह एक बार तोप का शब्द सुन पाया और क्रमशः चार बार और भी सुना । वे लोग अमेरिका लौटने की चेष्टा ही करते थे पर लौटने की आशा न थी । मेघ, पानी, हवा और जाड़े की अधिकता से व्यथित हो कर वे लोग रास्ते ही में मर जाते । इसके अतिरिक्त नाव डूबने की आशङ्का भी पग पग पर थी । इस विषम भय में उन लोगों ने उद्धार का आश्वासन पा कर फिर छाती को दृढ़ किया । वे लोग पाल गिरा कर, पतवार खींचना बन्द कर के, प्रभातकाल की प्रतीक्षा करने लगे । कुछ देर बाद वे हम लोगों के जहाज़ की रोशनी देख कर और तोप की आवाज़ सुन कर हम लोगों के जहाज़ की ओर आने के लिए फिर नाव खेने लगे । प्रतिकूल वायु में उन लोगों की नाव अधिक दूर आगे न आ सकी, किन्तु भोर होने पर जब उन्होंने देखा कि हम लोग उनको आते देख रहे हैं तब उनकी जान में जान आई ।

उन लोगों ने रक्षा पाकर जो अनेक भावों से भरी विविध चेष्टाओं से अपना आवेग प्रकट किया था उसे बताने में मैं असमर्थ हूँ । शोक या भय की आत्यन्तिक दशा शायद वर्णन करके कुछ समझा भी सकता हूँ, उस विपदा-वस्था का चित्र खींच सकता हूँ; बारम्बार लम्बी साँस लेना, आँसू बहाना, विलाप करना, हाथ-पैरों को पटकना यही मोटी मोटी दुःख-भय की परिभाषा है; किन्तु अत्यन्त हर्ष की परिभाषायें अनेक प्रकार की होती हैं, उसके वास्तविक स्वरूप का वर्णन सहज में नहीं हो सकता । वे लोग अपना

पुनर्जीवन मान कर मारे खुशी के विदेह बन गये थे। किसी को अपने-पराये की सुध न थी, सभी आनन्द में उन्मत्त थे। कोई रोता था, कोई हँसता था, कोई नाचता था, कोई गाता था, कोई पागल की भाँति अंट संट बकता था, कोई जहाज़ में इधर से उधर दौड़ता था, कोई चित्रवत् खड़ा था, कोई चुपचाप मौन साधे बैठा था, कोई वमन करता था, कोई बेहोश पड़ा था और कोई कृतज्ञता-पूर्वक भगवान् को धन्य-वाद दे रहा था।

मैंने इसके पहले उमङ्ग की ऐसी विचित्र अवस्था कभी न देखी थी। फ़ाइडे ने जब अपने पिता को देखा था तब उसके उस समय के आनन्दोच्छ्वास, और द्वीप में निर्वासित कप्तान तथा उसके दो संगियों को जब मैंने आश्वासन दिया था उस समय के उनके विस्मय और अनिर्वचनीय आनन्द का कुछ कुछ भाव इन लोगों के आनन्दोद्रेक से मिलता था।

इन आगन्तुकों के आनन्दोच्छ्वास के प्रकाश के जितने भाव मैं ऊपर दिखा आया हूँ वे एक एक व्यक्ति को एक ही प्रकार से होकर निवृत्त हो गये हों यह नहीं, बल्कि एक ही व्यक्ति पर्यायक्रम से सभी प्रकारों के उद्धत भाव और आवेग प्रकट कर रहा था। कुछ देर पहले जो चुपचाप मौन साधे थे वे कुछ ही देर बाद पागल की भाँति नाचने, गाने और खूब ज़ोर से चिल्लाने लग जाते थे। तुरन्त ही उनका वह भाव बदल जाता था और वे रोने लग जाते थे। रोना समाप्त होते न होते वे कै करने लग जाते थे। कै करते ही करते उन्हें मूर्च्छा आ जाती थी। यह दशा सब की थी। यदि हम लोग झटपट उनका इलाज न करते तो उनकी मृत्यु होना भी असंभव न

था। हमारे जहाज़ के डाक्टर ने ३०, ३२ व्यक्तियों की नस काट कर रक्त-निकाल दिया जिससे उन लोगों का आवेग शान्त हुआ।

उन लोगों में दो व्यक्ति पादरी थे। एक वृद्ध था और दूसरा युवा। किन्तु आश्चर्य का विषय यह था कि उस वृद्ध की अपेक्षा वह नव-युवक धर्म-विश्वास और इन्द्रिय-निग्रह में बढ़ कर था। वृद्ध ने हमारे जहाज़ पर आकर ज्यों ही देखा कि अब प्राण बच गये त्योंहीं वे धड़ाम से गिर कर एकदम मूर्च्छित हो गये। हमारे डाक्टर ने दवा देकर और रक्त-मोक्षण करके उन्हें सचेत किया। तब वे एक रमणी का इलाज करने गये। थोड़ी देर बाद एक आदमी ने डाक्टर से जाकर कहा कि वह वृद्ध पुरोहित पागल हो गये हैं। तब डाक्टर ने उनको नींद आने की दवा दी। कुछ देर बाद उन्हें अच्छी नींद आ गई। दूसरे दिन सबेरे जब वे जागे तब भले-चंगे देख पड़े।

युवा पुरोहित ने अपने आत्म-संयम और प्रशान्त चित्त का अच्छा परिचय दिया था। उन्होंने हमारे जहाज़ पर पैर रखते ही ईश्वर को साष्टाङ्ग प्रणाम किया। मैंने समझा कि शायद उन्हें मूर्च्छा हो आई है, इसीसे मैं झटपट उन्हें उठाने गया। तब वे सिर उठा कर धीर गम्भीर स्वर से बोले—"मुझे कुछ नहीं हुआ है, मैं परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहा हूँ, इसके बाद आपको भी धन्यवाद दूँगा।" उनको ईश्वरोपासना के समय बाधा देकर मैं सन्तप्त हुआ। कुछ देर बाद वे उठ कर मेरे पास आये और आँसू भरे नयनों से उन्होंने मुझको धन्यवाद दिया। मैंने उनसे कहा—मैंने धन्यवाद पाने का कौन सा काम किया है। मैंने उसी कर्तव्य का पालन किया है जो मनुष्य के प्रति मनुष्य का है।

इसके बाद वह भद्र-पुरुष अपने साथियों को सान्त्वना देकर उनकी सेवा में नियुक्त हुए। क्रम क्रम से उन्होंने सब को शान्त और प्रकृतिस्थ किया।

इन लोगों के अभद्र भावों का आतिशय्य देख कर मैंने समझा कि जीवन के लिए संयम क्या वस्तु है। असंयत आनन्द लोगों को ऐसा अधीर और उन्मत्त बना डालता है तो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि शत्रु—असंयत होने पर—लोगों से कौन सा अनर्थ नहीं करा सकते। मनुष्य-जीवन में संयम (आत्म-निग्रह) ही अमृत है, अमूल्य धन है और वही महत्त्व का परिचायक है।

पहले दिन हम लोग इन अतिथियों को लेकर बड़े ही गोलमाल में पड़े। दूसरे दिन जब वे लोग गाढ़ी नींद के आने के बाद उठे तब मालूम हुआ जैसे ये लोग वे नहीं हैं जो कल थे। सभी हम लोगों से सेवा और साहाय्य पाकर विनयपूर्वक सकृतज्ञ भाव से शिष्टता का परिचय देने लगे। उन के जहाज़ के कप्तान और पुरोहित दूसरे दिन मुझसे और मेरे भतीजे से भेंट करके कहने लगे—आपने हम लोगों के प्राण बचाये हैं, हम लोगों के पास इतनी जमा-जथा नहीं जो आपकी इस दया के बदले देकर कृतज्ञता प्रकट कर सकें। हम लोग जल्दी में, जहाँ तक हो सका, कुछ रुपया और थोड़ा बहुत माल-असबाब आग के मुँह से बचाकर साथ लाये हैं। यदि आप आज्ञा दें तो हम लोग वे सब रुपये आपकी सेवा में समर्पण करें। हम लोगों की केवल यही प्रार्थना है कि आप कृपा कर के हम लोगों को ऐसी जगह उतार दें जहाँ से हम लोग देश लौट जाने का प्रबंन्ध कर सकें।

मैंने अपने भतीजे को, उनसे रुपया ले लेने के लिए ख़ूब उत्सुक देखा। उसका मतलब था कि पहले रुपया ले लें फिर उनकी कोई व्यवस्था कर देंगे। किन्तु उसके इस आशय को मैंने पसन्द न किया। क्योंकि पास में धन न रहने से अपरिचित देश में कितना क्लेश होता है, इसे मैं बख़ूबी जानता था। मैं इन विषयों का पूर्णरूप से भुक्त-भोगी था। यदि वे पोर्तुगीज़ कप्तान आफ्रिका के उपकूल में मुझको बचा-कर मेरा सर्वस्व ले लेते तो मैं ब्रेज़िल में जाकर दासत्व-वृत्ति के सिवा और क्या करता? एक मूर जाति के दासत्व से भाग कर दूसरे के दासत्व में नियुक्त होता।

मैंने कप्तान से कहा,—हम लोगमनुष्य हैं। मनुष्यता दिखलाना हम लोगों का धर्म और कर्तव्य है। इस ख़याल से ही हमने आप को इस जहाज़ पर आश्रय दिया है। यदि आपकी दशा में हम होते और हमारी सी अवस्था आपकी होती तो हम भी आपसे ऐसे ही सहायता चाहते। हमने रक्षा के विचार से ही आप लोगों को जहाज़ पर चढ़ा लिया है न कि लूटने के मतलब से। आप लोगों के पास जो कुछ बच रहा है वह लेकर आप लोगों को अज्ञात देश में और असहाय अवस्था में छोड़ देना क्या अत्यन्त निर्दयता और नीचता का परिचय देना नहीं है? तो क्या मारने ही के लिए आप लोगों की यह रक्षा हुई है? क्या डूबने से बचाकर भूखों मारने की व्यवस्था विधेय है? मैं आप लोगों की एक भी वस्तु किसी को लेने न दूँगा किन्तु आप लोगों को अनुकूल स्थान में उतारना ही एक कठिन समस्या है। हम लोग भारत की ओर जा रहे हैं। यद्यपि हम लोग निर्दिष्ट-मार्ग को छोड़ कर बड़े ही टेढ़े मेढ़े पथ से जा रहे हैं तथापि यह समझ कर सन्तोष

होता है, कि आपही लोगों के उद्धारार्थ ईश्वर की प्रेरणा से हम लोग इधर आ पड़े। अब हम लोग इच्छा रहते भी गन्तव्य पथ को न छोड़ सकेंगे। किन्तु हम लोग इतना कर सकते हैं कि रास्ते में यदि कोई ऐसा जहाज़ मिल जायगा जो देश लौट कर जाता होगा तो उस पर आप लोगों को चढ़ा देंगे।

मेरे प्रस्ताव का प्रथम अंश, अर्थात् उन लोगों से हम कुछ न लेंगे, सुन कर उन्होंने अत्यन्त आह्लादित होकर हम लोगों को धन्यवाद दिया। किन्तु अन्य अंश सुन कर वे बहुत डरे। हम उन लोगों को भारत की ओर ले जायँगे, यह उन लोगों के लिए बड़ी विपत्ति-वार्ता थी। वे हम लोगों से अनुरोध करने लगे कि जब आप लोग इतना पश्चिम आही चुके हैं तो कुछ ही दूर और हट कर जाने से फ़ौन्डलेन्ड देश तक पहुँच जायँगे। वहाँ से हम लोग किसी तरह कनाडा, जहाँसे आये थे, जा सकेंगे।

मैंने इस प्रस्ताव को युक्ति-संगत समझ करके स्वीकार कर लिया। कारण यह कि इतने लोगों को सुदूरवर्ती पश्चिम देश में ले जाना केवल उन लोगों के प्रति अत्याचार ही न होगा बल्कि उनके साथ हम लोगों का सर्वनाश होना भी संभव है। इतने लोगों को आहार पहुँचाने ही में मेरा खाद्य-भण्डार ख़ाली हो जायगा।

हम लोगों ने रास्ते में कई यूरोपगामी जहाज़ देखे। उनमें दो फ़्रांस के थे। किन्तु उन लोगों को प्रतिकूल वायु के कारण रास्ते में बहुत देरी हो गई है। खाद्य-सामग्री घट जाने के भय से वे लोग और यात्रियों को अपने जहाज़ पर चढ़ा लेने को राज़ी न हुए। तब हमने लाचार होकर उन

लोगों को न्यू फौन्डलेन्ड के किनारे उतार दिया। सभी लोग उतर गये। केवल वह युवा पुरोहित हम लोगों के साथ भारत जाने को रह गया और चार व्यक्ति नाविक का काम करने की इच्छा से हमारे जहाज़ पर नियुक्त हुए।

इसके बाद बीस दिन तक हम लोग अमेरिका के द्वीपपुञ्ज के सामने से जाने लगे। एक दिन फिर एक घटना के कारण परोपकार का सुयोग मिल गया। उस दिन मार्च की उन्नीसवीं तारीख़ थी। हम लोगों ने देखा कि एक जहाज़ के सभी मस्तूल टूटे हैं, उसके जहाजियों ने विपत्ति के संकेत-स्वरूप तोप की आवाज़ की। हम लोग उसके पास गये।

वह जहाज़ इँगलेन्ड के ब्रिस्टल शहर को जा रहा था। रास्ते में सख़्त तूफ़ान आने के कारण उसकी ऐसी दुर्दशा हुई थी। जहाज़ इस प्रकार अकार्य-भाजन होकर नौ सप्ताह से समुद्र में इतस्ततः घूम रहा था। उन लोगों के पास खाद्य-सामग्री भी न थी। निराहार रहने के कारण वे मृतप्राय हो रहे थे। एक मात्र जीवन का अवलम्ब यही था कि पानी बिलकुल ख़र्च न हुआ था। आधा पीपा मैदा था और कुछ चीनी थी। उस जहाज़ पर एक युवक यात्री था। उसके साथ उसकी माता और दासी भी थीं। उसके पास खाने को कुछ न था, खाद्य-वस्तु बिलकुल निबट चुकी थी। नाविक गण स्वयं खाद्य के अभाव से कष्ट पा रहे थे इस लिए उन पर दया कर के कोई कुछ खाने को न देता था। इससे उन तीनों की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई थी।

मैंने झट पट पहले उनके खाने की व्यवस्था कर दी। मैंने अपने भतीजे को एकदम दबा रक्खा था। वह मेरी आज्ञा

के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता था, यद्यपि जहाज़ का कप्तान वही था। यदि किसी स्थान में जहाज़ लगा कर खाद्य-सामग्री ख़रीदनी पड़ती तो वह भी मुझे स्वीकार था, पर भूखों को न खिला कर मैं अपना पेट कैसे भरता? हम लोगों के पास यथेष्ट खाद्य-वस्तु थी। मार्ग में कहीं कुछ मोल लेने का अवसर प्राप्त होने की संभावना न थी।

हमने उन लोगों को भोजन दिया। किन्तु वे लोग खाना पाकर भी बड़ी विपदा में पड़े। जो कुछ थोड़ा सा खाने को दिया वही, दीर्घ उपवास के बाद, उन लोगों के पेट में गुरु-पाकी हो गया। यदि वे लोग अपनी अवस्था पर ध्यान न देकर अधिक खा बैठते तो बड़ी कठिनता होती। कितने ही लोग कङ्कालरूप हो गये थे, ठठरी मात्र बच रही थी। मैंने सब को सावधान कर के थोड़ा थोड़ा खाने को कहा। कोई कोई तो दो एक कौर खाते ही वमन करने लगे। तब डाक्टर ने उन लोगों के भोजन में एक प्रकार की दवा मिला दी। इससे उन लोगों को कुछ आराम मिला। कोई खाने की वस्तु को बिना चबाये ही गट गट निगलने लगा। दो मनुष्यों ने इतना खाना खाया था कि अन्त में उनका पेट फटने पर हो गया।

इन लोगों का कष्ट और अवस्था देख कर मेरा हृदय दया से द्रवित हो उठा था। मैं अपने ऊपर की बीती बात सोचने लगा। जब मैं पहले पहल उस जन-शून्य द्वीप में जा पड़ा था तब मेरे पास एक मुट्ठी अन्न का भी कोई उपाय न था। यदि मुझे कुछ खाने को न मिलता तो मेरी भी ऐसी ही भयङ्कर और शोचनीय दशा होती।

जो लोग चलने में एक दम असमर्थ होगये थे उन लोगों के लिए उन्हीं के जहाज़ पर थाल भर पावरोटी और मांस

भेज दिया। डाक्टर ने मांस पकाने की व्यवस्था करके रसोई-घर में इसलिए पहरा बैठा दिया कि कोई कच्चा ही मांस न खा ले। मांस का शोरबा तैयार हो जाने पर हर एक को थोड़ा थोड़ा देने की व्यवस्था कर दी। इस प्रकार सख़्त ताकीद से डाक्टर साहब ने उनमें कई एक व्यक्तियों को मृत्यु के मुख से बचा लिया। नहीं तो चान्द्रायण व्रत के अनन्तर एकाएक अपरिमाण भोजन से विशूचिका का भयङ्कर आक्रमण हुए बिना न रहता।

उन उपेक्षित तथा अनादृत तीनों यात्रियों को मैं स्वयं उनके जहाज़ पर देखने गया था। जहाज़ के कितने ही क्षुधार्त व्यक्ति चूल्हे पर से कच्चा खाद्य लेने के लिए हल्ला मचा रहे थे। रसोईघर के पहरेदार उनको समझा बुझाकर रोकने में असमर्थ होकर बल से काम ले रहे थे। ज़बर्दस्ती हाथ पकड़ पकड़ कर उन्हें हटा रहे थे और बीच बीच में उन्हें थोड़ा सा बिस्कुट देकर शान्त भी किये जा रहे थे। नहीं तो वे लोग खाने के लिए प्राण तक देने को मुस्तैद थे। भूख ऐसी ही अदम्य राक्षसी है!

उनमें तीन मुसाफ़िरों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। उन लोगों के पास खाने की कुछ भी वस्तु न थी और न किसी से उन्हें कुछ सहायता ही मिली। छः सात दिन से वे लोग एकदम निराहार थे। इसके पूर्व भी कई दिनों से उन लोगों ने पेट भर कर न खाया था। माँ स्वयं न खा कर अपना अंश अपने बेटे को खिला दिया करती थी, इससे वह एकदम सेज में सट गई थी। यद्यपि वह अभी तक मरी नहीं है पर उसके मरने में अब कुछ देर नहीं है। मैंने चम्मच से थोड़ा सा झोल उसके मुँह में डाला। इस पर वह कुछ बोल

तो न सकी पर इशारे से उसने जताया, कि मेरे मरने में अब विलम्ब नहीं है, यह सब चेष्टा वृथा होगी। उसने अपने बेटे को देखने की इच्छा प्रकट की। धन्य माता का हृदय! आप मृत्यु के मुख में पड़ी थी तो भी सन्तान की एकमात्र चिन्ता उसके मन में थी। उसी रात को उस स्त्री का देहान्त हो गया। अपनी स्नेहमयी माता के यत्न से युवक उतनी बुरी हालत में न था, उसकी दशा कुछ अच्छी थी फिर भी वह बिछौने पर बेहोश पड़ा था। उसके मुँह में चमड़े के दस्ताने का एक टुकड़ा था, उसीको वह धीरे धीरे चबा रहा था। कई चम्मच झोल पीने पर उसने आँखें खोलीं। माता की अपेक्षा उसकी चेष्टा कुछ अच्छी थी, इसीसे वह बच गया। फिर दो-तीन चम्मच शोरवा पिलाने से उसने तुरन्त कै कर डाली।

तब हम लोगों ने दासी की शुश्रूषा की ओर ध्यान दिया। वह अपनी स्वामिनी के पास पड़ी थी। मृगी का चक्कर आने पर जो हालत शरीर की होती है वही हालत उसके शरीर की थी। एक हाथ से वह कुरसी के पाये को ऐसे ज़ोर से पकड़े थी कि उसे हम लोग सहज ही छुड़ा नहीं सके। उसकी दशा देख कर हम लोगों ने समझा कि वह मृत्यु की यन्त्रणा से व्याकुल हो रही है; फिर भी उसके बचने का कुछ कुछ लक्षण दिखाई देता था। वह बेचारी भूख से तो कष्ट पा ही रही थी, इसके ऊपर मृत्यु के भय से और आँखों के सामने अपनी स्वामिनी को निराहार के कारण मरते देख कर उसके हृदय में शोक का भारी धक्का लगा था। डाक्टर की चिकित्सा से वह बच तो गई, पर उसका स्वभाव उन्मादिनी का सा होगया।

स्थलयात्रा की तरह जलयात्रा नहीं होती कि काम पड़ने से एक जगह दस-बीस दिन ठहर गये और काम हो जाने पर फिर आगे बढ़ने लगे। हम लोग इन सबों की सहायता करते थे परन्तु एक जगह स्थिर होकर रहने का सुभीता न था। बिना मस्तूल के जहाज़ को साथ ले चलने के कारण हम लोग पाल नहीं तान सकते थे। इससे हम लोगों का जहाज़ भी ठिकाने के साथ न चल कर उसी टूटे जहाज़ के साथ लड़खड़ाता हुआ चला। इस अरसे में उन लोगों के जहाज़ के मस्तूलों को काम चलाने योग्य ठीकठाक करके और जितनी हो सकी उतनी खाद्य-वस्तु दे कर उन्हें बिदा कर दिया। केवल वह यात्री युवक और उसकी दासी दोनों अपनी चीज़-वस्तु लेकर हमारे जहाज़ पर चले आये।

युवक की उम्र सत्रह वर्ष से अधिक न थी। वह सुन्दर, शिष्ट, शान्त और बुद्धिमान् था। माता की मृत्यु से वह बेचारा एकदम सूख गया था। इसके कई महीने पूर्व उसके पिता का भी देहान्त हो गया था। वह अपने जहाज़ के लोगों पर बहुत ही रुष्ट था। वह कहा करता था कि उन लोगों ने मेरी माँ को भूखों मार डाला है। उन लोगों ने वास्तव में किया भी ऐसा ही था, पर उसके होश-हवास में नहीं, उसकी निश्चेष्ट अवस्था में यह लीला हुई थी। वे लोग चाहते तो युवक की माँ को यत्किञ्चित् आहार दे कर उसके प्राणों को अब तक बचाये रह सकते थे। किन्तु लोगों के धर्म, ज्ञान और धैर्य को क्षुधा स्थिर रहने नहीं देती। लोगों का मन भूख से अत्यन्त चञ्चल और दुर्दमनीय हो उठता है। उस समय अपना पराया सब भूल जाता है; दया, धर्म, और नीति-अनीति का ज्ञान एकदम लुप्त हो जाता है।

डाक्टर ने युवक को बतला दिया कि हम लोग अमुक देश को जा रहे हैं और यह भी समझा दिया कि हम लोगों के साथ जाने से आप अपने बन्धु-बान्धवों से एक बारगी बहुत दूर जा पड़ेंगे। युवक ने कहा,—यह हमें मंजूर है, परन्तु हम उन राक्षसों के जहाज़ में जा कर अपना प्राण गवाँना नहीं चाहते। उन लोगों से पिण्ड छुटाने ही में हम अपना कल्याण समझते हैं।

हमने युवक और उसकी दासी को अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया। युवक के साथ कई बोरे चीनी थी। हम लोग उस चीनी को अपने जहाज़ पर न ले सके। भग्न-जहाज़ के कप्तान से चीनी की रसीद लेकर कह दिया कि यह माल ब्रिस्टल के रोज़र्स नामक सौदागर से रसीद ले कर उसके हवाले कर देना। किन्तु पीछे देश लौटने पर मालूम हुआ कि वह जहाज़ ब्रिस्टल में पहुँचा ही नहीं। अधिकतर सम्भावना उसके समुद्र में ही डूब जाने की थी।

दासी का चित्त कुछ स्वस्थ होने पर उसके साथ बात-चीत करते करते मैंने पूछा—"बेटी, क्या तुम हमको समझा सकती हो कि अनाहार से कैसे मृत्यु होती है?" उसने कहा—"हाँ, मैं कोशिश करती हूँ, शायद समझा सकूँ। पहले कई दिन तक हम लोगों का बड़े कष्ट से भोजन चला। अल्प आहार से दिन दिन शरीर दुर्बल होने लगा। आख़िर हम लोगों के पास खाने को कुछ न रहा। केवल चीनी का शरबत पीकर हम लोग रहने लगीं। प्रथम उपवास के दिन सन्ध्या समय पेट बिलकुल ख़ाली मालूम होने लगा। शरीर की सारी नसें सिकुड़ने लगीं, बार बार जम्हाई आने और आँखें झपने लगीं। मैं

बिछौने पर जा कर लेट रही, लेटते ही नींद आ गई। तीन घंटे के बाद नींद टूटने पर कुछ आराम मालूम हुआ। फिर सोने की चेष्टा की, पर नींद न आई। पाँच बजे सबेरे तक जागती रही, तब बड़ी कमज़ोरी और क्लान्ति मालूम होने लगी। दूसरे दिन भी पहले तो बड़ी भूख लगी फिर उबकाई आने लगी। रात में सिर्फ़ थोड़ा सा पानी पीकर सो रही। नींद आने पर सपने में देखा कि मैं एक बाज़ार में गई हूँ। बाज़ार के दोनों ओर अनेक प्रकार के पकवानों की दूकानें लगी हैं। मैंने भाँति भाँति की खाने की चीज़ें ख़रीद कर स्वामिनी को दीं और मैंने भी पेट भर खाया। इसके बाद मेरा पेट ख़ूब भरा हुआ सा मालूम होने लगा जैसे दूसरे के घर से भोज खाकर आई हूँ। जागने पर मैंने देखा कि मैं एकदम विह्वल हो गई हूँ। मैंने थोड़ा सा चीनी का शरबत बना कर पिया। रात में कितना ही भला-बुरा सपना देख कर जब सबेरे जाग उठी तब भूख से मेरे पेट में आग सी लग रही थी। राक्षसी क्षुधा ने मुझे बेहाल कर दिया था। मेरी गोद में यदि बच्चा होता तो उस समय उसे कच्चा ही खा डालती, ऐसी दुर्जय दुर्निवार क्षुधा व्याप रही थी। भूख के मारे मैं एकदम उन्मादिनी हो उठी। ऐसी उन्मादिनी कि गारद में रखने योग्य। मैं पागलपन करते करते, खाट के पाये पर गिर पड़ी जिससे नाक में बड़ी चोट लगी, नाक से ख़ून गिरने लगा। कुछ लोहू बाहर निकल जाने से मुझे कुछ चैतन्य हो आया और फिर उबकाई आने लगी पर क़ै न हुई। होती क्या? जब कुछ पेट में रहे तब तो! कुछ देर के बाद मैं मूर्च्छित होकर गिर पड़ी। सभी ने समझा, मैं मर गई। मेरे पेट में एक अनिर्वचनीय यन्त्रणा होने लगी। अँतड़ियाँ ऐंठने लगीं।

भयानक भूख से प्राण आकुल-व्याकुल होने लगे। पुत्र-विच्छेद से स्नेहातुरा माँ जैसी विकल होती है वैसी ही विकल मैं भी हो गई थी। मैंने फिर ज़रा होश कर के चीनी का शरबत पिया। पर वह पचा नहीं, तुरन्त उल्टी हो गई। तब थोड़ा सा पानी पिया, वह पेट में ठहरा। इसके अनन्तर बिछौने पर लेट कर मैं एकाग्र मन से यों ईश्वर की प्रार्थना करने लगी— 'हे ईश्वर, अब मुझे अपनी मृत्यु-तापहारिणी गोद में जगह दीजिए। इस प्रकार मुझे भूखों क्यों मार रहे हैं?' इस प्रकार प्रार्थना करने से चित्त को कुछ शान्ति मिली। मैं मृत्यु की दुराशा को हृदय में रख कर सो गई। कुछ देर के बाद नींद टूट जाने पर सम्पूर्ण संसार शून्य सा दीखने लगा। मैं जीती हूँ या मर गई, इसका भी कुछ ज्ञान न रहा। मैं इस अवस्था को परमशान्तिमय मान कर अपने मन और आत्मा को ईश्वर के चरण-कमलों में समर्पित कर के मौन हो रही। मेरे मन में यह इच्छा होने लगी कि कोई मुझको समुद्र में फेंक कर सलिल-समाधि द्वारा मेरी जठराग्नि की ज्वाला को ठंडा कर दे।

"मेरी इस अवस्था तक मेरी स्वामिनी मेरे ही पास पड़ी थी और धीरे धीरे मृत्यु-मुख की ओर अग्रसर हो रही थी। वह मेरी भाँति उतावली न हुई। वह शान्त भाव से आत्म-त्याग कर के मृत्यु से मिलने के लिए हाथ पसार रही थी। वह अपने मुँह की रोटी अपने बेटे को खिला कर आप निश्चिन्त थी।

"प्रातःकाल ज़रा मेरी आँखें लगीं। जागने पर मैं आपही आप न मालूम क्यों रोने लगी। मैं अपने रोदन को किसी प्रकार रोक नहीं सकती थी। उसके साथ साथ भूख की ज्वाला भी नहीं सही जाती थी। मैं हिंस्र पशु की भाँति

लोलुपदृष्टि से चारों ओर ढूँढ़ने लगी। यदि मेरी स्वामिनी उस समय मर गई होतीं तो मैं उनका मांस नोच कर खाये बिना न रहती। उन पर मेरा असीम अनुराग था, इसीसे मैं रुक रही, नहीं तो उन्हें जीवित अवस्था ही में नोच खाती। दो-एक बार मैंने अपने ही सूखे हाथ का मांस दाँत से नोच कर खाने की चेष्टा की। उसी समय मेरी दृष्टि एकाएक उस लोहू पर जा पड़ी जो कल मेरी नाक से गिर कर जम गया था। मैं उसी घड़ी बड़ी आतुरता के साथ उसे मुँह में डाल कर जल्दी जल्दी निगलने लगी। मुझे इस बात का भय होने लगा कि शायद कोई देख ले तो कहीं छीन कर न ले जाय। उसके खाने से क्षुधा किञ्चित् शान्त हुई। थोड़ा सा पानी पीकर मैं कुछ देर के लिए स्थिर होगई। क्रमशः निराहार अवस्था में तीन दिन बीत गये, चौथा दिन आया, तब भी कुछ खाने को न मिला। रात में फिर वैसी ही भूख लगी; पेट में ज्वाला, वमन, तन्द्रा, हृत्कम्प, उन्माद और बेहोशी मालूम होने लगी। मैं बहुत देर तक रोई। फिर यह सोच कर, कि अब मरने ही में कुशल है, ज्यों त्यों कर पड़ रही।

"सारी रात बेचैनी में कटी। एक बार भी नींद न आई। क्षुधा के मारे पाकस्थली में बड़ी कठिन यन्त्रणा होने लगी। सबेरे मेरे नवयुवक सर्कार ने खूब ज़ोर से मुझे पुकार कर कहा—'सुसान, सुसान! देखो, देखो, मेरी माँ मर रही है।" मैंने ज़रा सिर उठा कर देखा, वह तब तक मरी न थी, पर उसके जीने का भी कोई लक्षण न था।

"मैं उदर की यन्त्रणा से न उठ सकी। इसी समय सब लोग चिल्ला उठे—'जहाज़ जहाज़!' तब सभी लोग मारे खुशी के शोर-गुल मचाते हुए उछलने-कूदने लगे। मैं पड़ी

पड़ी सब सुनने लगी। इसके बाद आप हमारे उद्धार के लिए आ गये।"

मैंने भूख से मर जाने का ऐसा वर्णन आज तक न सुना था और न ऐसा भयङ्कर दृश्य ही इसके पूर्व कभी देखा था। उस युवक ने भी ऐसे ही अपने ऊपर बीती कितनी ही बातें कहीं, किन्तु उसे थोड़ा थोड़ा आहार मिलता गया था, इससे उसका वर्णन वैसा लोमहर्षण न हुआ जैसा उस दासी का था।

द्वीप में पुनरागमन

हम लोग रास्ते में तूफ़ान और बादल के साथ लड़ते-झगड़ते १६६५ ईसवी की १० एप्रिल को अपने पुराने आवास-द्वीप के निकट पहुँचे। ढूँढ़ने पर बड़ी कठिनता से अपने पूर्वपरिचित मित्रों से भेंट हुई। द्वीप के दक्खिन ओर अपने घर के पास ही, खाड़ी के सामने, हमने जहाज़ का लंगर डाला।

मैंने फ़्राइडे से पुकार कर कहा—"तुम बतला सकते हो कि वह कौन सी जगह है?" वह उस ओर देखते ही ताली बजा कर नाच उठा, "हाँ हाँ, यह वही जगह है" यह कह कर वह पागल की भाँति हाथ-मुँह मटकाने लगा। वह जहाज़ से कूद कर, समुद्र तैर कर ही, किनारे जाने को प्रस्तुत हुआ। किन्तु हमने उसे रोक रक्खा।

मैंने फ़्राइडे से पूछा—"अच्छा बतलाओ तो, तुम क्या सोचते हो। यहाँ हम लोग किसीको देख पावेंगे या नहीं? क्या तुम्हारे बाप से भेंट होगी?" वह कुछ देर चित्रवत्-

चुपचाप खड़ा रहा। इसके बाद उसकी आँखों से झर झर आँसू गिरने लगे।

मैंने पूछा—फ़ाइडे, क्या तुम बाप के साथ भेंट होने की बात सुन कर रोने लगे?

फ़ाइडे रुद्ध-कण्ठ से बोला—नहीं नहीं, अब बाप से मेरी भेंट न होगी।

मैं—यह तुमने कैसे जाना?

फ़ाइडे—वह बूढ़ा आदमी कभी का मर गया होगा।

मैं—"पागल कहीं का, मनुष्य के जीवन-मरण का कोई निश्चय नहीं कि कौन कब तक जियेगा और कौन कब मरेगा। मान लो तुम्हारे बाप से यहाँ भेंट न हो तो न सही पर किसी से तो भेंट होगी।" फ़ाइडे ने मेरे क़िले के पास के पहाड़ की ओर दिखा कर कहा—"हाँ, हाँ, वह देखो, लोगों का झुंड है। वे खड़े होकर हम लोगों की ओर देख रहे हैं।" पर मैंने किसी को नहीं देखा। फिर भी उसीकी बात पर विश्वास करके मैंने हुक्म दिया कि झण्डी उड़ा कर तीन बार तोप की आवाज़ की जाय। आध घंटे के बाद मैंने खाड़ी के पास धुवाँ उठते देखा। तब यहाँ की बस्ती के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं रहा। मैंने उसी समय एक नाव जहाज़ से पानी में उतारने को कहा। सोलह हथियारबन्द नाविक, फ्रांस-वासी पुरोहित और फ़ाइडे को साथ ले मैं नाव पर सवार हुआ। हम लोग शत्रु नहीं, बन्धु हैं,—यह जताने के लिए एक सादी पताका उड़ाते चले।

हम लोग ज्वार के समय में रवाना हुए थे। इससे नाव एकदम खाड़ी के भीतर पहुँच गई। मेरी दृष्टि सब के

पहले उस स्पेनियर्ड के ऊपर पड़ी जिसको मैंने आसन्न-मृत्यु से बचाया था। उसको देखते ही मैंने पहचान लिया। मैंने कहा—"नाव से किसी के उतरने की ज़रूरत नहीं, मैं अकेला ही पहले जाऊँगा।" किन्तु फ़ाइडे को रोक रखने की सामर्थ्य किस की थी। वह दूर ही से अपने बाप को देख कर व्यग्र हो उठा था। हम लोग उतनी दूर से कुछ भी न देख सके थे। यदि उसे मैं नाव से उतरने न देता तो वह पानी में ही कूद पड़ता। वह सूखे में पैर रखते ही तीर की तरह सन्न से अपने बाप के पास दौड़ गया। पिता को देख कर पहली बार उसके मन में जो आनन्द का उद्रेक होता था, वह देख कर आँसू रोक सके, ऐसा कठिन मनुष्य संसार में बिरला ही होगा। उसने बड़े ही विनीत-भाव से पिता को प्रणाम किया और बार बार उनके पैरों को चूमा। उसने बड़ी देर तक अपने पिता के मुँह की ओर स्थिर-दृष्टि से देखा। लोग जैसे बारीक नज़र से सुन्दर से सुन्दर चित्र को देखते हैं वैसे ही वह बड़ी स्नेह-दृष्टि से बार बार अपने पिता को देखने लगा मानो उसे अपने पिता को बारंबार देख कर भी तृप्ति न होती थी। इसके बाद उसने फिर पिता के पैर चूमे और उन्हें गले से लगाया। मारे उमङ्ग के वह कभी तो अपने पिता का हाथ पकड़ कर समुद्र के किनारे किनारे घूमता था और जिन नये देशों को देख आया है उन देशों के कितने ही वृत्तान्त सुनाता था; और कभी दौड़ कर नाव से विविध खाद्य लाकर इन्हें खिलाता था। यदि ऐसी अपूर्व सुन्दर पितृभक्ति सभी को होती तो यह संसार स्वर्ग के सदृश पवित्र और अतिरम्य हो जाता।

मैं नाव से उतर कर स्पेनियर्ड के पास गया। वह पहले मुझे पहचान न सका। कारण यह कि स्वप्न में भी उसका यह ख़्याल न था कि मैं फिर यहाँ आऊँगा। मैंने उससे कहा—"महाशय, आपने मुझको पहचाना नहीं?" मेरा कण्ठस्वर पहचान कर वह कुछ न बोला। वह अपने हाथ की बन्दूक़ दूसरे को देकर बाँह पसार कर दौड़ा और स्पेनिश-भाषा में न मालूम क्या कहता हुआ मेरे गले से लिपट गया। फिर उसने कहा—"मैंने आपको पहले न पहचान कर बड़ा अपराध किया है। आप मेरे प्राणदाता मित्र हैं।" इस प्रकार प्रीतिपगी बातें कह कर उसने मुझसे पूछा—"आप एक बार अपने पुराने घर चलेंगे या नहीं?" मैं उसके साथ वहाँ गया। उसने क़िले के रास्ते में ऐसे घने पेड़ों को लगा कर पथ संकीर्ण कर दिया है कि क़िले के भीतर अपरिचित लोगों के जाने की संभावना न थी।

स्पेनियर्ड ने स्वस्थ होकर मेरे अनुपस्थितकाल के दस वर्ष का इतिहास मुझसे कह सुनाया। वह संक्षेप से मैं यहाँ लिखता हूँ—

स्पेनियर्ड कहने लगा—"जब मैंने आकर देखा कि आप चले गये तब मुझे बड़ा ही दुःख हुआ! किन्तु जब मैंने सुना कि आप का उद्धार यहाँ से बड़ी आसानी से होगया है तब मुझे हर्ष भी हुआ। किन्तु आप जिन तीन बदमाशों को यहाँ छोड़ गये हैं वे बड़े ही नृशंस हैं। उन्होंने हम लोगों को मार डालने की चेष्टा की थी। तब हम लोगों ने लाचार हो कर उनसे हथियार ले लिये और उन्हें अपने अधीन कर लिया है। इससे संभव है कि आप हम लोगों पर कुछ अप्रसन्न हों।" मैंने

कहा—नहीं नहीं, मैं न समझता था कि वे लोग ऐसे छटे बद्माश हैं। यदि मेरे रहते आप वहाँ से लौट आते तो भी मैं उन लोगों को आप के अधीन करके ही जाता। आपने जो उन लोगों पर प्रभुत्व स्थापित किया है इससे मैं प्रसन्न हूँ।

मैं उससे इस प्रकार कही रहा था कि और ग्यारह स्पेनियर्ड वहाँ आ गये। किन्तु उनकी तत्कालीन पोशाक देख कर उनकी जाति का निर्णय करना कठिन था। स्पेनियर्ड-कप्तान ने मुझ से उनका और उनसे मेरा परिचय कराया। तब वे लोग बड़े विनीत-भाव से एक एक कर मेरे पास आये और भक्ति-पूर्वक मेरा अभिवादन किया। मानो मैं ही उस द्वीप का सम्राट् था, और वे लोग अन्यदेशीय दूत थे। मैं उन लोगों का शिष्ट व्यवहार देख कर मुग्ध हुआ।

क्रूसो के अनुपस्थित-समय का इतिहास

मैंने उन स्पेनियर्ड लोगों से उनका वृत्तान्त पूछा। स्पेनियर्ड-कप्तान मेरे अनुपस्थित-समय का इतिहास कहने लगा। वह मेरे पास से बिदा हो कर अपने साथियों के पास गया था। उसे देख उसके साथी अत्यन्त विस्मित और आनन्दित हुए। जब उन लोगों ने कप्तान के मुँह से अपने उद्धार की बात सुनी तब उन्हें यह शुभ-संवाद सपने की सम्पत्ति की भाँति अत्यन्त सुखद प्रतीत होने लगा। परन्तु कप्तान के पास अस्त्र-शस्त्र देख कर उन्हें विश्वास हुआ। वे यात्रा की तैयारी करने लगे।

यात्रा के लिए सबसे प्रथम आवश्यक नाव थी। उन लोगों ने अपने आश्रय-दाता असभ्यों से मछली मारने को

जाने का बहाना कर के दो डोंगियाँ माँग लीं। उन्हीं पर सवार हो कर वे लोग यहाँ चले आये।

इन लोगों के साथ वे तीनों अँगरेज़ नाविक पहले अच्छा सलूक करते थे। स्पेनियर्ड लोग ढूँढ़ ढूँढ़ कर खाद्य-सामग्री लाते थे और वे लोग बाबू साहब की भाँति बड़े चैन से खाते और द्वीप में इधर उधर घूम फिर कर सैर करते थे। फिर उन्होंने क्रम क्रम से इन लोगों पर अत्याचार करना आरम्भ किया। कभी इन लोगों का खेत काट कर पशुओं को खिला देते थे, कभी पालतू बकरों को मार डालते थे और कभी गोली भर कर मारने का भय दिखलाते थे। कभी घर में आग लगाने की धमकी देते थे। एक दिन एक स्पेनियर्ड ने उनके इस नीच व्यवहार का प्रतिवाद किया। क्रमशः बात ही बात में झगड़ा बढ़ चला। तब उन्होंने स्पेनियर्डों को पराजित करने का संकल्प किया। इसलिए स्पेनियर्डों ने उनसे हथियार छीन लिये। निरस्त्र होने पर वे दुष्ट क्रोध से एकदम पागल हो उठे और स्पेनियर्डों से सम्पर्क त्याग कर चले गये।

पाँच दिन के बाद तीनों आदमी घूमते-फिरते थके-माँदे भूख से व्याकुल होकर लौट आये और बड़े विनीत भाव से उन लोगों से आश्रय की प्रार्थना की। स्पेनियर्डों ने बड़ी शिष्टता से उन्हें खाने-पीने को दिया और बड़ी मुलायमियत से समझा दिया कि इस सुदूरवर्ती द्वीप में हम लोग इने गिने कई मनुष्य हैं। यदि इन कई व्यक्तियों में परस्पर मेल न रहा, सद्भाव न रहा तो यह बड़ी लज्जा का विषय है। इस प्रकार की शिक्षा और मीठे तिरस्कार से उन लोगों ने अपनी भूल स्वीकार की और अपराध के लिए क्षमा प्रार्थना की। फिर वे इस शर्त पर रख लिये गये कि जिन कामों को वे बिगाड़ गये हैं

उनका फिर से सुधार करें। वे लोग इस शर्त पर राज़ी होकर बड़ी योग्यता से काम करने लगे। उनके अच्छे आचरण से सन्तुष्ट होकर स्पेनियर्डों ने उन्हें फिर अस्त्र दे दिये।

हाथ में अस्त्र आते ही उन अकृतज्ञों ने फिर रङ्ग बदला। एक दिन स्पेनियर्डों के सरदार रात में बिछौने पर पड़े हुए अपने ऊपर बीती बातें सोच रहे थे। बहुत चेष्टा करने पर भी जब उन्हें नींद न आई तब वे बिछौने पर लेटे न रह सके। उठ कर ज्योंही क़िले के बाहर आये त्योंही उन्होंने कुछ दूर पर आग जलती देखी और साथ ही मनुष्यों के बोलने की ध्वनि भी सुनी। वह भी दो चार की नहीं, बहुतों की। उन्होंने झट लौट कर साथियों को जगाया और सब बातें कहीं। यह समाचार सुन कर सभी डर गये। सभी ने बाहर आकर देखा कि बहुत से असभ्य तीन जगह आग जलाये अपनी अपनी गोष्ठी बाँधे बैठे हैं, उनमें कोई कोई घूम भी रहे हैं।

अपने रहने के स्थान को मैं जिस तरह छिपा रखने का यत्न करता था, वैसा ये लोग न करते थे। इससे इन लोगों को यह सोच कर डर लगा कि असभ्य गण मनुष्य की बस्ती का चिह्न देख कर फ़सल और पशुओं को नष्ट कर के कहीं सर्वस्वान्त न कर डालें। उन लोगों ने बहुत सोच-विचार करके फ़्राइडे के पिता को जासूस बना कर खोज-ख़बर लेने के लिए भेजा। फ़्राइडे का बाप एकदम नग्न होकर उन लोगों के दल में जा मिला और दो घंटे के बाद ख़बर लाया कि वे दो जातियों के दो दल हैं। देश में उन लोगों की परस्पर ख़ूब लड़ाई हुई है। बन्दियों को मार कर खाने के लिए दोनों दल इस द्वीप में आये हैं। दैवयोग से दोनों दल एक ही जगह

आ गये हैं इससे दोनों दलों के भोज का आनन्द नष्ट हो गया है। संभव है, सुबह होने पर फिर दोनों दल परस्पर युद्ध करें। किन्तु अभी तक उन लोगों को मनुष्य की बस्ती का कुछ पता नहीं लगा। फ्राइडे के पिता की बात खतम होते न होते देखा कि वे असभ्य लोग बिकट चीत्कार कर के युद्ध-ताण्डव में मत्त हो उठे।

उन का युद्ध देखने के लिए सभी व्यग्र हो उठे। फ्राइडे का पिता सबको समझाने लगा कि "उन लोगों से छिप कर रहने ही में भला है। ज़ाहिर होने में शायद कोई संकट आ पड़े। वे लोग आपस में लड़ झगड़ कर कट मरेंगे। जो बचेंगे वे अपने देश को लौट जायँगे।" पर कौन किसकी सुनता है? विशेष कर अँगरेज़ों को रोक रखना कठिन हुआ। तमाशा देखने की लालसा ने उन लोगों की हित-बुद्धि को मन्द कर डाला। वे लोग छिप कर जंगल के भीतर से युद्ध देखने गये।

सुबह होते होते खूब भयङ्कर युद्ध हुआ। दो घंटे पीछे एक दल युद्ध में हार कर भागने लगा। तब हम लोगों के पक्षवालों को भय होने लगा। भय का कारण यह था कि उन भागने वालों में से यदि कोई मेरे घर के सामने की उपवाटिका में आ छिपेगा तो सहज ही हम लोगों के घर का पता लग जायगा। इसके बाद उसके पीछा करने वालों से भी पता छिपा न रहेगा। इसलिए जितने स्पेनियर्ड थे सभी ने सशस्त्र होकर रहने का विचार किया और यह भी सोचा कि जो इस तरफ़ छिपने आवेंगे उन्हें फ़ौरन मार डालेंगे, जिसमें कोई अपने देश तक ख़बर न पहुँचा सके। परन्तु यह कार्य बन्दूक़ से न किया जाय क्योंकि उसका शब्द और लोग

सुन लेंगे। यह काम बन्दूक के कुन्दे और तलवार से लेना ही ठीक होगा।

जिस बात की आशङ्का थी वही हुई। तीन पराजित असभ्य भाग कर उपवाटिका में आ छिपे। पर उन लोगों को खोजने कोई न आया। यह देख कर स्पेनियर्ड कप्तान ने कहा—"इन्हें मत मारो। ये लोग मरने ही के भय से तो यहाँ भाग कर आ छिपे हैं। गुप्त रीति से तुम लोग इन पर आक्रमण करो और इन्हें गिरफ़ार करके ले आओ।" दयालु कप्तान की आज्ञा के अनुसार ही काम हुआ। अवशिष्ट पराजित असभ्य अपनी डोंगी पर सवार हो कर समुद्र पार चले गये। विजयी दल भी विजय के उल्लास से दो बार खूब ज़ोर से गरजा और दिन को पिछले पहर चला गया। इसके बाद इस द्वीप में स्पेनियर्ड लोगों का ही एकाधिपत्य हुआ। असभ्य लोग कई वर्ष तक इस द्वीप में फिर न आये।

उन असभ्यों के चले जाने पर स्पेनियर्ड लोग क़िले से निकल कर रणभूमि देखने गये। देखा, बत्तीस आदमी युद्ध-क्षेत्र में मरे पड़े हैं। उनमें एक भी व्यक्ति घायल न था। घायलों को वे लोग अपने साथ उठा ले गये थे।

यह मामला देख-सुन कर वे अँगरेज़ कई दिनों तक कुछ शान्तभाव धारण किये रहे। मनुष्य को मनुष्य खालेता है, इस अद्भुत व्यापार ने उनके मन में भय उत्पन्न कर दिया था। पर कुछ ही दिनों में उनका क्रूरस्वभाव फिर प्रबल हो उठा।

वे इन तीनों बन्दियों से नौकर का काम लेने लगे। किन्तु मैंने जिस तरह फ्राइडे को शिक्षा देकर एकदम अपना अङ्ग बना लिया था वैसा वे लोग न कर सके। धर्म-शिक्षा तो दूर

की बात है, साधारण शिक्षा भी उन्होंने उन असभ्यों को न दी। इससे वे मजबूर होकर काम करते थे, पर मन से नहीं करते थे। इस कारण, सेव्य-सेवकों में प्रीति और विश्वास का नितान्त अभाव था।

एक दिन सभी मिल कर खेती का काम कर रहे थे। एक अँगरेज़ ने असभ्य जाति के एक नौकर से कोई काम करने को कहा। वह उस काम को वैसा न कर सका जैसा उसे करने को उस अँगरेज़ ने बताया था। इससे क्रुद्ध हो कर उस बदमिज़ाज अँगरेज़ ने कमरबन्द से ख़ंजर निकाल कर उस बेचारे दास के कन्धे पर एक हाथ जमा दिया। यह देख कर एक स्पेनियर्ड ने झट जा कर उस अँगरेज़ का हाथ पकड़ लिया। इससे वह एकदम क्रोधान्ध हो कर स्पेनियर्ड का ही ख़ून करने पर उद्यत हो गया। इस पर सभी स्पेनियर्ड बिगड़ गये और इसी कारण अँगरेज़ों तथा स्पेनियर्डों में एक छोटी सी लड़ाई हो गई। स्पेनियर्ड दल में अधिक लोग थे इससे अत्याचारी अँगरेज़ शीघ्र ही पराजित हो कर बन्दी हुए। तब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि इन दुर्दान्त पशुबुद्धियों को कौन सी सज़ा दी जाय। ये लोग जैसे उग्र, उद्दण्ड, आलसी और अपकारक हैं इससे इन लोगों को ले कर गृहस्थी का काम करना कठिन है। इन्होंने बार बार जैसा अत्याचार और विद्रोह किया है और कर रहे हैं इससे इनके साथ रहने में प्राणों को हथेली पर रख कर रहना होगा।

स्पेनियर्ड मुखिया ने कहा—यदि ये हमारे स्वदेशी होते तो इन लोगों को फाँसी दे कर कभी के इस झंझट को किनारे कर देते। जो लोग समाज-द्रोही हैं उनके दूर होने ही में समाज का मङ्गल है। किन्तु ये लोग अँगरेज़ हैं।

इधर एक अँगरेज़ की ही दया से हम लोगों के प्राण बचे हैं और वही इन लोगों को यहाँ रख गये हैं। अब इन्हें मार कर हम लोग उनको क्या जवाब देंगे? इसलिए इन लोगों का विचार नितान्त दयालुभाव से करना होगा।

बहुत तर्क-वितर्क के बाद यह तय हुआ कि इन लोगों के हथियार ज़ब्त करके इन्हें अपने दल से निकाल देना चाहिए। अब इन्हें बन्दूक़, गोली-बारूद, तलवार या दूसरा कोई हथियार न देना चाहिए। इन लोगों की जहाँ इच्छा हो वहाँ जा कर रहें। हम लोगों में कोई इनसे वार्तालाप न करे। वे लोग अपनी एक निर्दिष्ट सीमा का अतिक्रम करके स्पेनियर्डों की सीमा के भीतर पैर न रक्खें। इस प्रकार परित्यक्त होने पर भी यदि वे किसी का कुछ अपकार या नुक़सान करेंगे तो उनको मृत्यु निश्चित है, तब उनकी एक भी उज़्र न सुनी जायगी।

स्पेनियर्डों के मुखिया बड़े ही दयालु थे। उन्होंने कहा, एक बात और सोच लेनी चाहिए। ये लोग हमारे समाज से निकाले जाने पर क्या खायँगे? अनाज उपजाने में भी समय लगेगा। इन लोगों को भूखों मार डालना उचित नहीं। इन लोगों के लिए खाने-पीने की कुछ व्यवस्था कर के तब समाज से अलग कर देना ठीक होगा। इन्हें आठ महीने का खाद्य और बीज के उपयुक्त अनाज, छः बकरियाँ, चार बकरे तथा खेती करने का सामान्य उपकरण देकर बिदा कर दो।" यही हुआ। उन लोगों से इस बात का मुचलका ले लिया गया कि अब वे भविष्य में किसी साधारण से भी साधारण व्यक्ति का कुछ अपकार न करेंगे। इसके बाद सर्दार की आज्ञा के अनुसार उन्हें जीवन-यात्रा के लिए वे सब वस्तुएँ दे दी गईं। इन

वस्तुओं को लेकर वे लोग बहुत उलझन में पड़े। न उनसे जाते ही बनता था और न ठहरते ही। आख़िर वे लोग क्या करते। लाचार हो कर वहाँ से बिदा हुए और अपने रहने की जगह ढूँढ़ने लगे।

उन्होंने टापू के दूसरी ओर एक सुभीते की जगह ढूँढ़ ली। तीनों अँगरेज़ वहाँ घर बनाकर एक साथ रहने लगे। मारने लायक़ हथियार के सिवा उन लोगों को और किसी वस्तु की कमी न रही। इस प्रकार स्वतन्त्रता-पूर्वक उन्होंने छः मास बिताये। जब उन लोगों की गृहस्थी का कारबार जम गया तब फिर उनको शैतानी करने की सूझी। उन लोगों को जीवन-निर्वाह का यह श्रमसाध्य ढँग अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचा कि असभ्य देश में जाकर दो-चार असभ्यों को पकड़ लावें और उनसे नौकर का काम लें। इस विचार को चरितार्थ करने के लिए वे लोग व्यग्र हो उठे। एक दिन उन्होंने स्पेनियर्डों की निर्दिष्ट सीमा के पास आकर स्पेनियर्डों को एक बात सुनने के लिए पुकारा। स्पेनियर्ड जब सुनने गये तब उन्होंने अपना मतलब कह सुनाया और स्पेनियर्डों से एक डोंगी तथा आत्मरक्षा के लिए एक बन्दूक़ उधार माँगी।

स्पेनियर्ड तो चाहते ही थे कि किसी तरह इन दुष्टों की संगति से छुट्टी मिले—"बरु भल बास नरक कर ताता, दुष्ट संग जनि देहिं विधाता।" इसलिए अँगरेज़ों के इस प्रस्ताव को उन लोगों ने सहर्ष माना। तथापि उन लोगों ने शिष्टता को जगह देकर अँगरेज़ों को बहुत तरह से समझाया कि तुम्हारा यह संकल्प बहुत ही विपद्-मूलक है। वे उस देश में जाकर या तो भूखों मरेंगे या वहाँ के निवासी नर-पिशाचों के मुँह के आहार होकर प्राण गवाँवेंगे।

किन्तु वे लोग अपने संकल्प पर दृढ़ थे। उन्होंने कहा कि हम लोग यहाँ भी भूखों ही मरेंगे। कारण यह कि हम लोग परिश्रम करके अपनी जीविका नहीं चला सकते। बिना श्रम के रोटी पैदा करना कठिन है। इसलिए जब मरना ही होगा तब एक बार साहस करके विदेश को देख-सुन कर ही मरेंगे। यदि विदेशीय असभ्य हम लोगों को मार डालेंगे तो सब बखेड़ा तय हो जायगा। हम लोगों के न स्त्री हैं न बाल-बच्चे, जो शोकाकुल होकर रोयें-कलपेंगे। आप लोग अस्त्र दें या न दें, हम लोग ज़रूर जायँगे।

तब स्पेनियर्डों ने उन लोगों को अपनी सामान्य पूँजी में से दो बन्दूकें, एक पिस्तौल, एक तलवार और थोड़ी सी गोली-बारूद दी। उन लोगों ने एक महीने के लायक़ भोजन साथ रख लिया। थोड़ा सा मांस, एक जीवित बकरा, एक टोकरी सूखे अंगूर और एक घड़े भर जल लेकर समुद्र-यात्रा की। समुद्र का दूसरा तट कम से कम चालीस मील पर होगा। स्पेनियर्डों ने उन को बिदा करके एक तरह से अपनी बला को टाल दिया। उन अँगरेज़ों से दुबारा भेंट होने की आशा किसी को न थी। उनके जाने से सभी निश्चिन्त हुए।

उन लोगों के चले जाने पर स्पेनियर्ड-लोग आपस में कहने लगे,—"उन पाखण्डियों के चले जाने से हम लोगों का समय अब बड़े आराम और आनन्द से कटेगा। आफ़त टली।" किन्तु वास्तव में उन लोगों की आफ़त टली न थी। बाईस दिन के बाद एक व्यक्ति ने देखा कि तीन आदमी टापू में आये हैं। उनके कन्धे पर बन्दूकें हैं। वह गिरता पड़ता हाँफता हुआ सर्दार के पास दौड़ कर आया और

उनसे कहा कि टापू में कोई बड़ा आदमी आया है। सर्दार ने कहा—"असभ्य लोग आये होंगे।" उसने कहा—"नहीं नहीं, असभ्य नहीं हैं। पोशाक़ पहने हैं, कन्धे पर बन्दूक़ रक्खे हैं।" सर्दार ने कहा—तो फिर डरने की क्या बात है? यदि वे लोग असभ्य नहीं हैं तो वे हमारे मित्र ही होंगे, क्योंकि किसी सभ्य जाति से हम लोगों का मङ्गल के सिवा अमङ्गल होने की आशङ्का नहीं है।

इस तरह बातचीत हो ही रही थी कि इतने में उन तीनों अँगरेज़ों ने क़िले के समीपवर्ती उपवन से निकल कर स्पेनियर्डों को पुकारा। वे अपने परिचित अँगरेज़ों का कण्ठ-स्वर पहचान कर भेद समझ गये। परन्तु वे अँगरेज़ कहाँ से, और किस उद्देश्य से, लौट आये हैं—इसका असली तत्त्व समझने की चिन्ता भी तो कुछ कम न थी।

स्पेनियर्डों ने उन्हें क़िले के भीतर बुला कर उनसे वृत्तान्त पूछा। अँगरेज़ों ने यों कहना प्रारम्भ किया—

"हम लोग दो दिन में समुद्र के उस पार गये, किन्तु वहाँ के निवासी हम लोगों के आगमन से डर कर तीर-धनुष सँभाल कर के हमारी अभ्यर्थना करने लगे। हम लोग सशस्त्र अभ्यर्थना को पसन्द न करके वहाँ उतरने का साहस न कर सके। छः सात घंटे किनारे किनारे नाव ले जाकर हम लोगों ने और भी कई टापू देखे। एक जगह हम लोग अपने भाग्य के भरोसे उतर पड़े। वहाँ के रहनेवालों ने हम लोगों को भ्रातृ-भाव से ग्रहण किया और फल-मूल तथा सूखी मछलियाँ खाने के लिए देकर आतिथ्य-सत्कार किया। क्या स्त्री क्या पुरुष, सभी हम लोगों के अभाव-मोचन के लिए उत्साह-

पूर्वक दूर दूर से अपने सिर पर आवश्यक वस्तुएँ ढो ढो कर लाने लगे। हम लोग यहाँ चार दिन रहे और इशारे से उनसे आसपास के द्वीप-निवासियों के शील-स्वभाव का हाल पूछने लगे। असभ्यों ने संकेत द्वारा कहा—'सभी टापुओं के मनुष्य नर-मांस खाते हैं, केवल हमी लोग ऐसे हैं जो सब मनुष्यों का मांस नहीं खाते। किन्तु हम लोग भी युद्ध में गिरफ़ार हुए नर-नारियों को मार कर विजय के उपलक्ष में भोज ज़रूर करते हैं। अभी हाल ही में हम लोगों ने ऐसा ही नर-मेध किया है। हम लोगों के महाराज ने दो सौ दुश्मनों को बन्दी कर रक्खा है। अभी वे ख़ूब खिला-पिला कर पुष्ट किये जा रहे हैं। इसके बाद एक दिन बहुत बड़ा भोज होगा।' उन सब बन्दियों को देखने के लिए हम लोग अधिक उत्कण्ठित हुए। उन बन्दियों के देखने का बड़ा कुतूहल हुआ। किन्तु उन असभ्यों ने इस कुतूहल को नर-मांस-लोलुपता समझ कर इशारे से कहा—'इसके लिए इतनी आतुरता क्या? कल तुम लोगों को भी कुछ मनुष्य ला देंगे, उन्हें खा लेना।' दूसरे दिन सबेरे ग्यारह पुरुष और पाँच स्त्रियाँ लाकर हम लोगों को उपहार में दीं। मानो इन मनुष्यों का मूल्य भेड़-बकरों से अधिक नहीं है। हम लोग निर्दय और घातक होने पर भी नर-मांस खाने का नाम सुन कर सहम उठे। हम लोगों को उबकाई आने लगी और असभ्यों की इस राक्षसी प्रकृति पर हमें बड़ी घृणा हुई, किन्तु नर-बलि का उपहार लौटाना असभ्यों के आतिथ्य का विषम अपमान है। इसलिए हम लोग बड़े संकट में पड़े। इतने लोगों को लेकर हम क्या करेंगे? तथापि हमें यह उपहार स्वीकार करना ही पड़ा और उपहार के बदले हमने

उन असभ्यों को एक कुल्हाड़ी, एक टूटी कुञ्जी, एक छुरी, और पाँच छः शीशे की गोलियाँ दीं। इन कई साधारण वस्तुओं को पाकर वे असभ्य गण मारे ख़ुशी के उछल उठे। इसके बाद उन असभ्यों ने बन्दियों के हाथ-पैर बाँध कर उन्हें नाव में रख दिया। हम लोगों ने वहाँ विलम्ब करना उचित न समझ शीघ्र यात्रा की। कौन जाने, पीछे ये असभ्य हमें नर-मांस खाने के लिए कहीं निमन्त्रण ही दे बैठें। हम लोगों ने रास्ते में एक द्वीप में आठों बन्दियों को उतार कर छोड़ दिया। हम इतने लोगों को लेकर क्या करते? या उन्हें खाने ही को क्या देते? स्त्रियों को स्वस्थ और सबल देख कर हम लोगों ने अपने लिए रख छोड़ा। बाक़ी बन्दियों के साथ हमने बात-चीत करने की चेष्टा की, पर कुछ फल न हुआ। हम लोग जभी कुछ पूछते थे तभी वे भय से काँपने लगते थे। वे समझते थे कि इसी बार हम लोग उन्हें खा डालेंगे। हम लोगों ने ज्योंही उनका बन्धन खोलना चाहा त्योंही वे आर्त-स्वर से चिल्ला उठे मानो अभी उनके गले पर तेज़ छुरी फेरी जायगी। उनको जब कुछ खाने के लिए दिया जाता तब वे यही समझते कि उनको मोटा-ताज़ा करने का उपाय किया जा रहा है। किसी की ओर देखने से वह सकुच जाता था। वह समझता था कि वह मारे जाने के योग्य हृष्ट-पुष्ट है या नहीं, इसीकी तजवीज़ हो रही है। उन लोगों के साथ विशेष सद्व्यवहार करने पर भी उनके जी में मारे जाने की आशङ्का प्रतिपल बनी ही रहती थी। हम लोग उन्हें इस द्वीप में ले आये हैं और घर के भीतर बन्द कर आये हैं।"

यह अद्भुत वृत्तान्त सुन कर सभी स्पेनियर्ड कुतूहला-क्रान्त होकर उनको देखने चले। उन लोगों ने अँगरेज़ों के

घर जाकर देखा कि सभी के हाथ बँधे हैं। स्त्री-पुरुष दोनों बिलकुल नङ्ग धड़ङ्ग हैं और सब एक ही साथ बैठे हैं। यह दृश्य स्पेनियर्डों की आँखों में बेतरह बुरा मालूम हुआ।

पुरुष अच्छे हट्टे-कट्टे और बलिष्ठ थे। क़द लम्बा सा, शरीर सुगठित, चेहरा देखने में बुरा न था। उम्र तीस से पैंतीस के भीतर थी। स्त्रियाँ भी बदसूरत न थीं। शरीर लावण्य-युक्त था। केवल रङ्ग साँवला था। यदि बदन का रंग गोरा होता तब तो वे ख़ास लन्दन की सुन्दरियों में परिगणित होतीं और आदर पातीं। उनमें दो स्त्रियाँ तीस-चालीस वर्ष की थीं। दो स्त्रियों की उम्र चौबीस-पच्चीस वर्ष की थी। एक नव-यौवना थी। उसकी उम्र सोलह सत्रह वर्ष से अधिक न थी। सब की अपेक्षा यही विशेष रूपवती थी।

फ़्राइडे के पिता ने दुभाषिया बन कर उन असभ्यों को समझा दिया कि 'तुम लोगों को प्राणों का भय न होगा। सभ्यजाति के लोग मनुष्य का मांस नहीं खाते।' यह आश्वासन-वाक्य सुन कर उन लोगों के हर्ष का वारापार न रहा। वे अपने हृदय का उल्लास इस प्रकार प्रकट करने लगे, जिसका वर्णन करना कठिन है।

इसके बाद उन लोगों से यह बात पूछी गई कि तुम हमारे समाज की अधीनता स्वीकार कर काम करने को राज़ी हो या नहीं। यह प्रश्न सुनते ही वे लोग मारे खुशी के नाचने लगे। इसका आशय यही कि हम लोग हृदय से काम करना पसन्द करते हैं।

किन्तु स्पेनियर्डों के सर्दार स्त्रियों के आने से डर गये। अँगरेज़ लोग यों ही आपस में लड़ते-झगड़ते थे। अब इन स्त्रियों के कारण, मालूम होता है भारी फ़साद उठ खड़ा होगा।

उन्होंने अँगरज़ों से पूछा,—तुम लोग इन स्त्रियों को लेकर क्या करोगे ? दासी बना कर रक्खोगे या पत्नी ?

अँगरेज़—हम लोग उनसे दोनों ही काम लेंगे। वे हमारी दासी भी होंगी और पत्नी भी।

स्पेनियर्ड-सरदार—"अच्छी बात है, मैं इस विषय में तुम्हें कोई बाधा न दूँगा। तुम जो अच्छा समझो, करो। किन्तु मुझे यह व्यवस्था कर देनी चाहिए जिसमें तुम लोग आपस में किसी तरह की तकरार न करो। इसलिए तुम लोगों से मेरा एक अनुरोध है कि तुम लोग एक स्त्री से अधिक ग्रहण न करो। दार-परिग्रह के अनन्तर तुम सब आपस में मिल जुल कर रहो। कोई किसी के अधिकार पर हस्तक्षेप न करे। सब अपनी अपनी स्त्री का भरण-पोषण करें।" इन प्रस्तावों पर अँगरेज़ सहज ही में सम्मत हो गये। उन्होंने स्पेनियर्डों से पूछा—"क्या तुम लोगों में कोई ब्याह करना चाहता है?" उन सब ने एक साथ इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर के अपने आत्म-निग्रह और धर्मनिष्ठा का परिचय दिया। उनमें कितने ही यह कह कर, कि देश में हमारी स्त्री और बालबच्चे हैं, पुनर्विवाह करने पर स्वीकृत न हुए। किसी किसी ने असभ्य जाति की स्त्रियों से ब्याह करना पसन्द न किया।

अँगरेज़ों ने विवाहित होकर अपना नया घर बसाया। स्पेनियर्ड लोग और फ़्राइडे का पिता मेरे ही पुराने घर में रहते थे। उन लोगों ने गुफा के भीतरी हिस्से को खोद कर खूब लम्बा-चौड़ा कर लिया था। इसके पूर्व उन लोगों ने असभ्यों के पारस्परिक युद्ध के समय जिन तीन व्यक्तियों को गिरफ़ार किया था, उन पर किसी तरह का अत्याचार न कर के उनसे

नौकर का काम लेने लगे। इस निर्जन द्वीप में यही तीन नौकर उन लोगों के प्रधान आश्रयवर्ती थे। वे सभी लोगों के लिए आहार का संग्रह करते और यथासाध्य हर एक काम में अपने पालकों को मदद देते थे।

विवाह के समय उन लोगों में किसी तरह का कुछ असमञ्जस न हुआ। पहले किसका ब्याह हो? इसका निश्चय इस प्रकार हुआ कि तीनों के नाम काग़ज़ के तीन टुकड़ों पर लिखे गये। तीनों टुकड़े मोड़ कर एक जगह रक्खे गये। एक व्यक्ति ने आँख मूँद कर उनमें से एक टुकड़ा उठा लिया। उस टुकड़े में जिसका नाम निकला उसीका पहले ब्याह हुआ। उसने उन स्त्रियों में जिसे पसन्द किया उसे अपनी अर्धाङ्गिनी बनाया। आश्चर्य का विषय यह है कि जिस व्यक्ति ने पहिले ब्याह किया था उसने उन स्त्रियों में जो सब से पुरानी थी उसीको पसन्द किया। मालूम होता है, उन स्त्रियों में वही प्रधान थी। दूसरी बार जिसका नाम निकला उसने अधेड़ स्त्री को लिया। तीसरे व्यक्ति ने नवयुवती का पाणिग्रहण किया। मेरे जहाज़ के दो अँगरेज़-नाविक और इस द्वीप में रहते थे। उन्होंने अन्य दो स्त्रियों के साथ ब्याह कर लिया।

स्त्रियों ने जब देखा कि एक एक व्यक्ति घर में आता है और क्रमशः एक एक स्त्री को लिये जाता है तब उन्होंने निश्चय किया कि इस बार हमारी जान न बचेगी। तीसरे व्यक्ति ने जब जा कर युवती का हाथ पकड़ा तब सभी औरतें आर्तस्वर से चिल्ला उठीं, और उस युवती के बदन से लिपट गईं। सभी ने उसको गले लगा कर इस करुणभाव से उससे बिदा माँगी, जिसे देख कर मनुष्य की तो कुछ बात ही नहीं

पत्थर का हृदय भी बिना पसीजे न रहता। तब फ़्राइडे के बाप ने उन स्त्रियों को बहुत तरह से समझाया कि वे मारी जाने के लिए नहीं, ब्याह करने के लिए बुलाई जा रही हैं।

इस प्रकार वैवाहिक विधि सम्पन्न होने पर अँगरेज़ों ने गृहस्थी की ओर ध्यान दिया। स्पेनियर्ड उन सभों को यथा-साध्य सहायता देने लगे। अँगरेज़ों में जो सब से बढ़ कर दुश्शील था उसीको सबसे बढ़ कर सुशीला और गुणवती स्त्री मिली। ईश्वर का विधान और उनकी लीला सर्वत्र ऐसी ही विचित्र देखने में आती है। वे सर्वत्र ही कमी-बेशी और भाव-अभाव को मिला कर परस्पर के न्यूनाधिक्य को पूरा कर देते हैं। और स्त्रियाँ भी पहली की तरह सुशीला और विनीत न होने पर भी गुणहीन न थीं। सभी गृहस्थी के काम में प्रवीण और शील-सम्पन्न थीं। अँगरेज़ों ने अपनी अपनी स्त्री की सहायता से भली भाँति घर का प्रबन्ध कर लिया। घर के चारों ओर वृक्ष रोप कर घेरा बना दिया। उन वृक्षों पर अंगूर की लतायें चढ़ा दीं और पहाड़ को खोद कर एक कृत्रिम गुफा बना कर के विपद आ पड़ने पर छिपने की एक जगह बना ली।

वे तीनों उद्धत अँगरेज़ कोमल-स्वभावा रमणियों की संगत से बहुत कुछ सीधे और शान्त हो गये। किन्तु उन लोगों का आलस्य किसी तरह दूर न हुआ। उन लोगों के खेतों के चारों ओर छोटे पौधों का घेरा था, जिसे लाँघ कर जङ्गली बकरे खेत चर जाया करते थे। कहावत है, 'चोर भागने पर बुद्धि बढ़ती है।' धान चर जाने पर सूखी लकड़ियों से वे उस रास्ते को बन्द करते थे जिधर से बकरे खेत में घुस कर फ़सल चर जाते थे। वे लोग दिन-रात इसीके पीछे हैरान रहा करते थे।

किन्तु अन्य दो अँगरेज़-नाविकों का घर- ; र खेती-बाड़ी सभी मानो खिल खिला कर हँस रही थीं। वे सभी काम आलस्य छोड़ कर करते थे, इसीसे उनके एक भी काम में व्यतिक्रम न था। जहाँ श्रम है वहीं लक्ष्मी का वास है। जहाँ तत्परता है वहीं उन्नति है। जहाँ मनोयोग है वहीं सौन्दर्य है। जहाँ आलस्य है वहाँ दरिद्र का निवास है। आलसी मनुष्य के सभी काम बेतरतीब होते हैं। आलसियों के भाग्य में सुख कहाँ? जो श्रम-विमुख हैं उन्हें सभी वस्तुओं का अभाव रहता है। उन्हें अभाव नहीं रहता है केवल दुःख और दारिद्र्य का। परिश्रमी को किसी बात की तकलीफ़ नहीं रहती। उसके चारों ओर आनन्द छाया रहता है। दरिद्रता पास फटकने नहीं पाती। उन तीनों आलसी अँगरेज़ों की स्त्रियाँ बड़ी सुघड़ थीं इसीसे उन लोगों का किसी तरह समय कट जाता था, नहीं तो वे अपनी मक्खियाँ भी न हाँक सकते।

द्वीप में असभ्यों का उपद्रव

सभी लोग सुख-स्वच्छन्द से अपने अपने घर का काम-धन्धा कर रहे थे। एक दिन सबेरे असभ्यों से भरी हुई पाँच छः नावें इस द्वीप में आ पहुँचीं। मालूम होता है, वे लोग नर-मांस खाने ही के लिए आये होंगे। द्वीप-वासी सभी लोग इस बात को अच्छी तरह समझ गये थे कि उन लोगों की दृष्टि से बच कर रहने में विपत्ति की कोई सम्भावना नहीं है। इसलिए सभी लोग छिपे रहे। असभ्य लोग अपना काम निकाल कर चले गये।

उन लोगों के चले जाने पर द्वीप-वासियों ने एक बार वहाँ जाकर देख आना चाहा कि असभ्यगण क्या करने आये थे। सभी लोगों ने वहाँ जाकर देखा, जहाँ वे उतरे थे। तीन असभ्य धरती पर लेटे घोर निद्रा में अचेत पड़े थे। शायद ये लोग बेअन्दाज़ नर-मांस खाकर, अफर कर, सो रहे थे। निद्रित होने के कारण इन्हें मालूम ही नहीं हुआ कि साथी लोग कब चले गये। संभव है, इनकी नींद न टूटी हो और वे लोग बिना जगाये चल दिये हों अथवा ये लोग जंगल में घूमने गये होंगे। जब इन लोगों ने लौट कर देखा होगा कि साथी चले गये तब निश्चिन्त होकर सो रहे होंगे। जो हो, उनको सोते देख सभी भय और आश्चर्य से ठिठक रहे। सभी ने सर्दार से पूछा कि इन लोगों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए। सर्दार की समझ में भी कुछ न आता था जो अपनी राय ज़ाहिर करते। द्वीप-वासियों के पास बहुत से दास थे ही, वे और लेकर करेंगे ही क्या, या उन्हें खाने ही को क्या देंगे? तब इन असभ्यों को मार डालना चाहिए। किन्तु इन लोगों का अपराध ही क्या है? निर्दोष बेचारों को प्राणदण्ड देना भी तो ठीक नहीं। निरपराधियों को मारने में राक्षसों का भी हाथ सहसा नहीं उठता। बड़े बड़े निर्दय और नृशंस भी ऐसे काम में सङ्कुचित हो उठते हैं। वे असभ्य जागने पर चले जाते तब तो सब बखेड़ा ही मिट जाता। किन्तु बिना नाव के वे लोग जायँगे कैसे? जागने पर वे लोग द्वीप-भ्रमण में प्रवृत्त होंगे और द्वीपवासियों का पता पाकर अनर्थ का बीज बोयेंगे। अन्ततोगत्वा यही स्थिर हुआ कि उन लोगों को क़ैद करके रखना चाहिए। वे जगा कर क़ैद कर लिये गये। जब उनके हाथों

में हथकड़ी डाली गई तब वे बहुत भयभीत हुए। उन्होंने समझा कि "अब की बार अपने विजयी के भोज में हमारा कबाब बने बिना न रहेगा।" उनका इस तरह सोचना स्वाभाविक ही था। मनुष्य दूसरे को बहुत करके अपने ही जैसा समझता है। द्वीप-निवासियों ने उन्हें समझा-बुझा कर निर्भय कर दिया।

बन्दियों को वे लोग मेरे कुञ्जभवन में ले गये। उन्होंने उन बन्दियों को क़िले का पता न बता कर अच्छा ही किया था। क्योंकि दो-एक दिन के बाद उनमें से एक आदमी काम करते करते न मालूम किस तरह सब की नज़र बचा कर जङ्गल में भाग गया। बहुत खोजने पर भी वह कहीं न मिला। कई दिन पीछे असभ्यों का एक दल नाव पर चढ़ कर द्वीप में नरमांस खाने आया था। वह उन्हीं लोगों के साथ देश लौट गया होगा। यदि यह बात सच है तब तो सर्वनाश होना ही सम्भव है। असभ्य लोग टापू में मनुष्य की गन्ध पा कर राक्षस की भाँति झुंड के झुंड आकर अनर्थ करेंगे। असंख्य राक्षसों का मुक़ाबला यहाँ के इने गिने साधारण अधिवासी कैसे कर सकेंगे? कुशल इतना ही है कि वे क़िले का हाल नहीं जानते और बन्दूक़ों की गोलियों की मार के सामने वे लोग देर तक ठहर सकेंगे, इसकी भी संभावना नहीं है।

डेढ़-दो महीने बाद एक दिन सूर्योदय के साथ साथ छः नावों पर असभ्य लोग आकर इस द्वीप में उतरे। वे कुल पचास-साठ आदमी होंगे। उन्होंने कुञ्जभवन ही की ओर नावें लगाईं। उस कुञ्जभवन में दो अँगरेज़ रहते थे। असभ्य लोग किनारे से कोई आध मील पर थे तभी अँगरेज़ों ने उनको

आते देख लिया। समुद्र-तट से कुञ्जभवन भी एक मील से कम न था। इसलिए अँगरेज़ों को सावधान होने का थोड़ा सा समय मिल गया। किन्तु द्वीपनिवासी समस्त व्यक्तियों को यह ख़बर देने का उन्हें अवसर न मिला। सारे द्वीप-निवासी एक जगह आ कर खड़े हो जाते तो उतना भय न था। किन्तु पचास-साठ योद्धाओं का सामना करना दो व्यक्तियों के लिए यथार्थ में कठिन काम था।

दोनों अँगरेज़ उन असभ्यों की चाल-ढाल देख कर ही समझ गये कि वे लोग ख़बर पा कर आ रहे हैं। इसलिए उन्होंने फ़रार-असामी के दोनों साथियों को फ़ौरन बाँध लिया और दो विश्वास-पात्र असभ्य-नौकरों के साथ उन को और अपनी स्त्रियों को कृत्रिम गुफा के भीतर भेज दिया। उन्होंने नौकरों और स्त्रियों से घर की आवश्यक चीज़ें उठवा कर प्रस्थान किया। इसके बाद उन्होंने पालतू बकरों को, स्थान का फाटक खोल कर, जङ्गल में इसलिए भगा दिया कि असभ्यगण उन बकरों को जङ्गली समझ कर छोड़ देंगे। इन कामों का झटपट प्रबन्ध कर के उन्होंने एक असभ्य नौकर के द्वारा स्पेनियर्डों तथा उन तीनों अँगरेज़ों को ख़बर भेज दी। फिर आप दोनों आदमी बन्दूक और गोली-बारूद लेकर जङ्गल में जा छिपे, और उन असभ्यों पर तेज़ निगाह डाले रहे।

वे दोनों उस गुप्त स्थान से छिप कर देखने लगे। इधर झुंड बाँध बाँध कर असभ्यगण कुञ्जभवन में आकर एकत्र होने लगे। कुञ्जभवन में आते ही उन लोगों ने घर-द्वार, खेत-खलि-हान में आग लगा दी। सभी एक साथ जल उठे। बड़े कष्ट से बनाये हुए घर-द्वार को अपनी आँखों के सामने जलते देख

कर उन दोनों अँगरेज़ों का हृदय भी जलने लगा। असभ्य-गण धीरे धीरे जङ्गल और झाड़ी में गृहवासियों को खोजने लगे। असभ्यों के झुंड को आगे बढ़ते देख कर अँगरेज़ कुछ और पीछे हट गये। जङ्गल में एक बहुत मोटा पेड़ था जो सूख कर खोखला हो गया था। वे दोनों अँगरेज़ उसीके भीतर छिप कर असभ्यों को देखने लगे। कुछ ही देर बाद उन्होंने देखा कि दो असभ्य उनकी ओर दौड़े आ रहे हैं। उनकी चेष्टा देखने से यही मालूम होता था कि वे गुप्तस्थान का पता पाकर अँगरेज़ों को पकड़ने के लिए आ रहे हैं।

यह सोच कर अँगरेज़ बहुत घबराये। वे भागें या वहीं रहें, इसकी चिन्ता हुई। भागें ही तो कहाँ जायँ? असभ्य लोग चारों ओर जंगल में फैल गये थे। भागने से अधिक संभव था कि उनके सामने जा पड़ते। यह सोच-विचार कर उन्होंने जहाँ थे वहीं स्थिर रहना उचित समझा। यदि किसी तरह की गड़बड़ देखने में आती तो वे पेड़ पर चढ़ जाते।

अग्रवर्ती दोनों असभ्य उनके पास से होकर आगे बढ़ गये। इससे मालूम हो गया कि उन्होंने अँगरेज़ों को नहीं देखा। किन्तु उनके पीछे तीन आदमी और उनके भी पीछे के पाँच आदमी बिलकुल सामने उसी पेड़ की ओर आने लगे। तब अँगरेज़ भरी हुई बन्दूक का लक्ष्य ठीक करके उनको अपने समीपवर्ती होने की अपेक्षा करने लगे। जब वे असभ्य कुछ और अग्रसर हुए तब अँगरेज़ों ने पहचाना कि उनमें एक वही था जो पहले बन्दी हुआ था। उसको देखते ही अँगरेज़ों के हृदय में एकाएक आग बल उठी। उन्होंने निश्चय किया

कि चाहे जो हो, इस साले को यहाँ से जीते जी जाने न देंगे। उसके निकटवर्ती होते ही अँगरेज़ ने उसे गोली मार दी। एक ही आवाज़ में तीन आदमी गिरे। उनमें एक तो उसी घड़ी मर गया और दो घायल हुए। घायलों में पलायित व्यक्ति बहुत ज़ख़्मी हुआ। तीसरे व्यक्ति का सिर्फ़ कन्धा गोली से छिल गया था, पर वह उतने ही में भय से अधमरा सा हो गया और ख़ूब ज़ोर से चिल्ला कर आर्तनाद करने लगा।

इन तीनों के पीछे जो पाँच आदमी थे वे विपत्ति का पूरा हाल न समझ कर केवल शब्द से ही डर कर जहाँ के तहाँ खड़े हो रहे। घने वन में बन्दूक़ का शब्द बड़ा ही गम्भीर और भयोत्पादक हुआ। जंगल के एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त तक शब्द की बार बार भीषण प्रतिध्वनि हुई। अगणित पक्षियों के उड़ने तथा कल कल शब्द से सारा जंगल भर गया। ऐसा अश्रुतपूर्व शब्द सुन कर असभ्य गण जो चकित, भीत और स्तब्ध हों तो आश्चर्य्य ही क्या। थोड़ी ही देर में फिर सर्वत्र सन्नाटा छा गया। असभ्य लोग इस अपूर्व शब्द का कुछ कारण न समझ कर धीरे धीरे उन आहत व्यक्तियों के पास आये। इन अभागों को इस बात की आशङ्का तक न हुई कि हमारे ऊपर भी वही विपत्ति आवेगी जो कि साथियों पर आ पड़ी है। उन लोगों ने वहाँ पर घायलों को घेर कर समाचार पूछा। तीसरे व्यक्ति को बहुत ही हलका ज़ख़्म हुआ था। उसने कहा कि "हम लोगों पर देवता का कोप हुआ है। पहले बिजली की तरह एक चमक पैदा हुई, उसके बाद वज्रपात होने से दो आदमी मर गये हैं और मैं घायल हुआ हूँ।" सांसारिक विषयों में जो अनभिज्ञ है उसका इस प्रकार व्याख्यान देना स्वाभाविक ही है। क्योंकि जहाँ लोगों का नाम

निशान नहीं वहाँ अकस्मात् ऐसी दुर्घटना दैवी नहीं तो क्या है ?

ऐसे मूर्ख—जो विपत्ति के मुख में पहुँच कर भी निरुद्विग्न भाव से खड़े हैं,—इन असभ्यों को मारने में अँगरेज़ों का मन व्यथित होता था, किन्तु आत्म-रक्षा के लिए क्या करते ? उन्होंने फिर गोली चलाई। चार आदमी घायल हो कर गिर पड़े। पाँचवें व्यक्ति को कुछ चोट न लगने पर भी वह केवल डर से ही मृतप्राय हो गिर पड़ा। अँगरेज़ों ने सबको गिरते देख समझा कि सभी मर गये।

सभी मर चुके, इसी विश्वास पर दोनों अँगरेज़ अपनी बन्दूक़ों को बिना भरे ही साहस कर के अपने गुप्त स्थान से निकल कर वहाँ गये। खाली बन्दूक़ लेकर बाहर निकलना भारी मूर्खता हुई थी, क्योंकि जब वे उन असभ्यों के पास पहुँचे तब देखा कि तीन-चार आदमी जीवित हैं। उनमें दो व्यक्तियों को बहुत कम चोट लगी थी और एक तो गोली से बेलाग बचा हुआ था। उसे कुछ भी चोट न लगी थी। यह देख कर अँगरेज़ बन्दूक़ के कुन्दे से काम लेने लगे। पहले उस विश्वासघाती भगोड़े का काम तमाम किया। फिर अन्य दो व्यक्तियों को संसार-यातना से छुड़ा दिया। यह देख कर, जिसे कुछ आघात न लगा था वह उन अँगरेज़ों के सामने हाथ जोड़ घुटने टेक कर दया की प्रार्थना करने लगा। उसने गिड़गिड़ा कर बड़ी दीनता दिखाई, पर उसका एक अक्षर भी उन दोनों की समझ में न आया। तब उन अँगरेज़ों ने उस असभ्य के हाथ-पैर रस्सी से बाँध कर एक पेड़ के नीचे छोड़ दिया। इसके बाद वे अग्रगामी दो असभ्यों की खोज में चले।

यदि वे किसी तरह जङ्गल के भीतर की गुफा का पता पा लें तो एकदम सर्वनाश हो सकता है। इसलिए उनको रोक देना चाहिए। वे दोनों असभ्य बहुत दूर पर दिखाई दिये। पर वे गुफा की तरफ़ नहीं, उसकी प्रतिकूल दिशा में अर्थात् समुद्र की ओर जा रहे थे। यह देख कर अँगरेज़ निश्चिन्त हो उस पेड़ के नीचे लौट आये जहाँ वह बन्दी असभ्य था। वहाँ आकर देखा रस्सी पड़ी है, बन्दी का कहीं पता नहीं। अँगरेजों ने समझा कि उसके साथी बन्धन खोल कर उसे ले गये होंगे।

अब वे दोनों किंकर्तव्य-विमूढ़ हो खड़े रहे। क्या करें, किधर जायँ, कुछ निश्चय न कर सकते थे। आखिर उन्होंने अपनी स्त्रियों के पास गुफा में जाने ही का निश्चय किया। गुफा के भीतर जा करके देखा, सभी सुख-चैन से हैं, केवल स्त्रियाँ बहुत भयभीत हो रही हैं। आक्रमणकारी उनके स्वदेशी हैं फिर भी उनके भय की सीमा नहीं, वे बेहद डर रही हैं। कारण यह कि वे आक्रमणकारियों के स्वभाव से भली भाँति परिचित थीं। असभ्य लोग गुफा के बिलकुल समीप आकर लौट गये हैं। घने पेड़ों की आड़ होने के कारण उन्हें गुफा देख न पड़ी, इसीसे इधर वे लोग न आये। आते तो भारी उपद्रव मचाते।

असभ्यों के आने की ख़बर पा कर सात व्यक्ति स्पेनियर्ड, अँगरेजों की सहायता के लिए, आये। यह देख कर अँगरेजों को धैर्य हुआ और उनका साहस बढ़ गया। अन्य दस व्यक्ति स्पेनियर्ड और फ्राइडे का पिता क़िले के समीपवर्ती खेत-खलिहान की रक्षा के लिए पहरे पर रहे। किन्तु असभ्य उधर भूल कर भी नहीं गये। सात स्पेनियर्डों के साथ अँगरेजों का वह

बन्दी-भृत्य भी आया जो स्पेनियर्डों को ख़बर देने गया था, और वह क़ैदी भी आया है जिसे कुछ देर पहले हाथ-पैर बाँध कर पेड़ के नीचे डाल दिया था। स्पेनियर्डों ने आते समय उसके हाथ-पैरों का बन्धन खोल कर उसे साथ ले लिया था। गुफाके भीतर आने पर बन्दी को फिर बाँध कर दूसरे दो बन्दियों के साथ बैठा दिया।

द्वीपवासियों को ये बन्दी भार-स्वरूप जान पड़े। क्योंकि ये लोग अधीनता में नहीं रहना चाहते थे। उनको घर में ख़ाली बिठा कर खिलाना भी कठिन है; और जो छोड़ दें तो वे देश जाकर अनर्थ खड़ा करेंगे। ऐसी हालत में उनके बध के सिवा और कोई उपाय नहीं। किन्तु सर्दार उन लोगों को मारने की अनुमति नहीं देते। उन्होंने हुक्म दिया कि ये बन्दी अभी मेरी बड़ी गुफा में रहें, दो स्पेनियर्ड उनके पहरे पर रहेंगे, और स्पेनियर्ड लोग उनके खाने-पीने का प्रबन्ध करेंगे।

स्पेनियर्डों के आने से साहस पाकर अँगरेज़ उन असभ्यों की खोज में बाहर निकले और बड़ी सावधानी से कुछ दूर आगे जाकर देखा कि सभी असभ्य जाने के लिए नाव पर सवार हो रहे हैं। उन लोगों के चलते समय बन्दूक़ की गोली से एक बार बिदाई का संभाषण न कर सकने के कारण वे उदास हुए। किन्तु उन को जाते देख कर प्रसन्न भी हुए। अँगरेज़ों का घर-द्वार खेती-बाड़ी सब नष्ट हो गई थी। इस कारण सभी ने मिलकर हाथों-हाथ थोड़े ही दिनों में उनकी गृहस्थी का सब सामान ठीक कर दिया। यहाँ तक कि उन तीन दुःशील अँगरेज़ों ने भी उनकी सहायता से मुँह न मोड़ा।

असभ्यों के चले जाने पर भारी तूफ़ान उठा। दो दिन के बाद द्वीपवासियों ने बड़ी ख़ुशी के साथ देखा कि असभ्यों,

की तीन डोंगियाँ और समुद्र में डूब कर मरे हुए दो असभ्यों की लाशें बही जा रही हैं।

द्वीप में असभ्यों का दुबारा उपद्रव

धीरे धीरे पाँच छः महीने बीत गये। असभ्यों के आने की कहीं कुछ भनक न पाई गई। द्वीपनिवासियों ने समझा कि या तो वे लोग द्वीप के मामले को भूल गये हैं या भय से इस तरफ़ नहीं आते हैं।

एक दिन उन लोगों ने अकस्मात् देखा कि धनुष-बाण, लाठी और लकड़ी की तलवार आदि अनेक अस्त्र-शस्त्र लिये असभ्य लोग एक साथ अट्ठाइस डोंगियों पर सवार हो टापू में उतर आये।

यह देख कर द्वीपवासियों के भय की सीमा न रही। असभ्य लोग सन्ध्या समय टापू में आ पहुँचे इसलिए द्वीप वालों को सारी रात सलाह-विचार करते ही बीती। अन्त में यही तय हुआ कि इतने दिन हम लोग छिप कर ही बेखटके रहे हैं इसलिए अब भी छिपकर रहना ही अच्छा है। यह निश्चय करके सभी ने दोनों अँगरेज़ों के घर को उजाड़ कर उसका चिह्न तक न रहने दिया; और बकरों को गुफा के भीतर छिपा कर बन्द कर रक्खा। असभ्य लोग सिर्फ़ उन्हीं दोनों अँगरेज़ों के निवास-स्थान का पता जानते थे इसलिए वे लोग पहले इसी स्थान पर आक्रमण करेंगे, यह सोच कर हम लोग वहीं एकत्र होकर उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह होते ही कोई डेढ़ सौ असभ्य वहाँ आकर इकट्ठे हुए। हम लोगों के दल में बहुत कम आदमी थे। सत्रह स्पेनियर्ड, पाँच अँगरेज़,

फ़ाइडे का बाप, और छः विश्वासी नौकर। हम लोगों की संख्या अल्प थी सो तो थी ही, उस पर अस्त्रों की कमी और भी असुविधा दे रही थी। हमारे दल में सब के पास यथेष्ट अस्त्र-शस्त्र न थे। भृत्यों को बन्दूकें नहीं दी गई थीं। उन लोगों के हाथ में सिर्फ़ एक एक ख़ंजर था। दो स्त्रियाँ युद्ध-क्षेत्र से किसी तरह विमुख न हुईं। वे धनुष-बाण ले, कमर कस कर, युद्ध करने के लिए तैयार हो गईं। उनकी कमर में एक एक ख़ंजर भी था।

स्पेनियर्डों के सर्दार इन थोड़े से सिपाहियों के सेनापति हुए और अँगरेज़ों में जो सबसे बढ़कर बदमाश था वह सहकारी सेनापति नियत हुआ। उसका नाम विल एटकिंस था। वह अत्यन्त क्रूर और अन्यायी होने पर भी ख़ूब बहादुर था। वह छः मनुष्यों के साथ एक झुरमुट के भीतर छिप रहा। जब असभ्य उस झुरमुट के सामने से होकर निकलेंगे तब वह उन पर आक्रमण करेगा। असभ्य लोग सिंहनाद करते, उछलते-कूदते हुए हम लोगों पर आक्रमण करने के लिए चले आ रहे थे। जब असभ्यों की कुछ संख्या झुरमुट से कुछ आगे निकल आई तब एटकिंस ने अपने दल के तीन व्यक्तियों को उन पर गोली बरसाने का हुक्म दिया। उन्होंने एक एक बन्दूक़ में छः छः सात सात गोलियाँ भर कर चलाईं। असभ्यों के दल में कितने ही हत और कितने ही आहत हुए। वे सब के सब भौंचक से खड़े हो रहे। उनके आश्चर्य और भय की सीमा न रही। एकाएक इस प्रकार भीषण शब्द होने और अकारण अपने साथियों के मारे जाने की बात पर वे लोग आपस में मिलकर कोलाहल कर ही रहे थे कि एटकिंस आदि तीन व्यक्तियों ने फिर गोली मार कर कितनों ही को धराशायी कर दिया। इसी

समय प्रथम तीन व्यक्तियों ने झट बन्दूकें भर लीं और एक ही बार गोली बरसा कर उन असभ्यों को छिन्न भिन्न कर डाला। इस अचानक अभिघात का कुछ कारण न समझ कर अवशिष्ट असभ्य लोग किंकर्तव्य-विमूढ़ हो रहे। बीच में झाड़ी की ओट रहने के कारण असभ्य लोग किसी को न देख कर शायद यह समझ रहे थे कि "देवता का गुप्त वज्रास्त्र हम लोगों का नाश करने के लिए उद्दीप्त हो उठा है।" यदि एटकिंस इस समय चुपचाप वहाँ से हट जाता तो बड़ा अच्छा होता। असभ्य लोग देवकर्तृक भय मान कर भाग जाते; किन्तु एटकिंस ने इस विषय में बार बार चिताये जाने पर भी उसका पालन न किया। वह उजड्ड था न। वहीं रह कर वह फिर बन्दूक भरने लगा। उधर जो असभ्य पीछे से आ रहे थे उन्होंने एटकिंस प्रभृति को देख कर एकाएक उन पर आक्रमण किया। एटकिंस आदि छः व्यक्तियों ने लगातार गोली बरसा कर बीस-पचीस आदमियों को धरती पर लिटा दिया, तो भी असभ्य पीछे न हटे। उन्होंने तीर से एक अँगरेज़ को मार डाला, और एटकिंस को भी घायल किया। फिर एक स्पेनियर्ड और एक असभ्य नौकर को भी मार गिराया। वह असभ्य नौकर बड़ा साहसी वीर था। उसने मरते मरते भी सिर्फ़ लाठी की मार से पाँच दुश्मनों को मार डाला था।

हमारे दल वाले भयंकर रूप से आक्रान्त होने पर दौड़ कर एक टीले पर चढ़ गये। हम लोगों ने भागते भागते भी तीन बार बन्दूकें चलाईं। किन्तु असभ्य लोग ऐसे हठी थे कि पचास-साठ मनुष्यों को हत और इससे भी अधिक व्यक्तियों को घायल होते देख कर भी हम लोगों का पीछा नहीं छोड़ते

थे और बराबर आगे बढ़े ही आते थे। उन्होंने इतने बाण चलाये कि बाणों से आकाश-मण्डल भर गया। उन असभ्यों में जो व्यक्ति घायल हुए थे, पर पूरे तौर से ज़ख्मी नहीं हुए थे, उन लोगों के सिर पर ख़ून सवार होगया था। इसीसे वे लोग पागल की भाँति युद्ध करते थे।

असभ्य लोग अँगरेज़ और स्पेनियर्ड की लाश को देख उस पर हथियार चलाने लगे, मरे को मारने लगे। उन मुर्दों के हाथ-पैर, और गला काट कर मृत-शरीर को खण्ड खण्ड कर के उन्होंने अपनी नीचता का परिचय दिया। हम लोगों को भागते देख कर उन लोगों ने दूर तक पीछा न किया। सभी ने मण्डलाकार खड़े होकर दो बार उच्चस्वर से जयध्वनि की। किन्तु उनके घायल आदमी अधिक लहू बहने के कारण मूर्च्छित तथा प्राण-हीन हो होकर गिरने लगे। यह देख कर वे लोग फिर दुःखी हुए।

एटकिंस की इच्छा थी कि फिर दल-बल के साथ उन पर आक्रमण किया जाय किन्तु सर्दार ने कहा—"नहीं, इसकी अब ज़रूरत नहीं। कल सबेरे फिर देखा जायगा। आज अब शान्त होकर रहना ही ठीक है। असभ्यों के घायलों की भली भाँति सेवा-शुश्रूषा न होने से उनकी हालत बुरी हो जायगी। अधिक रक्त-क्षय होने से वे दुर्बल हो जायँगे और घाव की पीड़ा से चल-फिर न सकेंगे तब हम लोगों के शत्रुओं की संख्या और भी कम होगी।" एटकिंस ने ज़रा हँस कर और ज़ोर देकर कहा—हाँ हाँ, कल मेरी भी तो वैसी ही दशा होगी। इसी कारण तो चटपट आज ही काम चुका लेना चाहता हूँ।

सर्दार—नहीं भाई, आज तुमने बड़ी बहादुरी के साथ लड़ाई की है। यदि कल तुम युद्ध न भी कर सकोगे तो तुम्हारी ओर से खुद मैं युद्ध करूँगा।

चटकीली चाँदनी रात है। हम लोगों ने देखा कि असभ्य-लोग अपने मुर्दों और घायलों को लेकर बड़ी चिन्ता में पड़े हैं। सभी आपस में अपने मन की बातें कर रहे हैं। यह देख कर सर्दार ने उन असभ्यों पर एक बार रात में ही आक्रमण करने का विचार किया। हम लोग जंगल के भीतर ही भीतर छिप कर इधर उधर चक्कर काटते हुए एकदम असभ्यों के समीप जा पहुँचे। हम लोगों ने एक साथ आठ बन्दूकें दाग दीं। आध मिनट के बाद फिर आठ बन्दूकों की आवाज़ हुई। कितने ही मरे, और कितने ही घायल हुए। असभ्य लोग किधर भागें, कुछ निर्णय न कर जहाँ के तहाँ खड़े हो मरने लगे।

हमारे आठ आठ आदमियों की तीन टोलियाँ हो गईं और तीनों तरफ़ से एक साथ सिंहनाद करके उन असभ्यों पर टूट पड़े, और उन सबों को लाठी, बन्दूक़ के कुन्दे, फरसे और कुल्हाड़ी आदि हथियारों से मारने लगे। थोड़ी ही देर में असंख्य असभ्य भूतलशायी हो गये। दो-एक ने तीर मारने की चेष्टा की थी किन्तु उन्हें अवसर न मिला। एक तीर ने फ्राइडे के पिता को किञ्चित् घायल किया था। जो असभ्य बचे वे चिल्लाते हुए जहाँ तहाँ भाग गये। हम लोग उनको मारते मारते थक गये थे इस लिए उनका पीछा न कर सके। कुल १८० असभ्य मारे गये। बचे हुए असभ्य दौड़ कर समुद्रतट में अपनी नाव पर सवार होने गये। किन्तु उन लोगों पर

विपत्ति पर विपत्ति आने लगी। सन्ध्याकाल से ही हवा बहुत तेज़ बह रही थी। इसलिए उन को शीघ्र भागने का भी अवसर न मिला। हवा समुद्र से किनारे की ओर बह रही थी। हवा की झोंक और ज्वार की लहर से नावें एकदम सूखे में आ लगी थीं और हवा लगने से एक की टक्कर दूसरी में लगते लगते टूट फूट गई थीं।

हमारे सैनिक विजय प्राप्त कर के उल्लसित हो उठे, किन्तु उस रात में उन लोगों को विश्राम नसीब न हुआ। वे लोग कुछ देर दम लेकर देखने गये कि असभ्य-लोग क्या करते हैं। युद्ध-स्थल के भीतर होकर जाते समय उन लोगों ने देखा कि तब भी कोई कोई असभ्य ऊपर को दम खींच रहे हैं, पर अधिक देर तक उनके बचने की संभावना न थी। उन की अन्त-कालिक अवस्था देख कर हमारे दल के लोग दुःखी हुए, कारण यह कि युद्ध में शत्रुओं का निपात करते दुःख नहीं होता, किन्तु उनका दुःख देख कर सुखी होना सहृदयता का लक्षण नहीं। जो हो, हम लोगों के असभ्य नौकरों ने कुठार के आघात से, उन आसन्नमृत्यु शत्रु-सैनिकों को सब कष्टों से छुड़ा दिया।

आखिर उन्होंने देखा कि एक जगह लगभग सौ हतावशिष्ट असभ्य ज़मीन में बैठे हैं और घुटनों पर हाथ और हाथ पर सिर रक्खे अपनी दुर्दशा को सोच रहे हैं।

हमारे पक्ष के लोगों ने उन्हें डरवाने के लिए सर्दार की आज्ञा से दो बन्दूकों की खाली आवाज़ की। शब्द सुनते ही वे लोग डर गये और चिल्लाते हुए जङ्गल के भीतर जा छिपे। अब एटकिंस ने उनकी डोंगियों को नष्ट कर डालने की

राय दी। किसी किसी ने उसका प्रतिवाद कर के कहा कि, ऐसा करने से बड़ी ख़राबी होगी। जाने का उपाय न रहने से वे लोग मरने पर कमर कस कर नाना प्रकार के उपद्रव करेंगे। हिंस्र पशुओं की भाँति जङ्गल भर में घूमते फिरेंगे। उन लोगों के भय से हम लोगों को अकेले बाहर निकल कर काम करना कठिन हो जायगा। तब उन्हें वन्य जन्तुओं की तरह ढूँढ़ ढूँढ़ कर मारना होगा, नहीं तो वे लोग अपने पेट की आग बुझाने के लिए हम लोगों के खेत, खलि-हान और पालतू पशुओं को लूट ले जायँगे। एटकिंस ने कहा— यह सही है, सौ मनुष्यों का सामना मैं स्वयं कर सकता हूँ पर सौ जातियों का धक्का कौन सँभालेगा? ये लोग देश को लौट जायँगे तो हम लोगों का प्राण बचना कठिन होगा। असंख्य असभ्य बार बार आकर हम लोगों को सतावेंगे।

उसकी यह बात सभी ने पसन्द की। सभी लोग कुछ सूखी लकड़ियाँ बटोर लाये और आग को अच्छी तरह प्रज्व-लित कर डोंगियों को जलाने लगे। यह हाल देख कर असभ्य लोग दौड़ आये और हाथ जोड़ कर धरती में घुटने टेक कर डोंगियों की भिक्षा माँगने लगे। वे लोग इशारे से जताने लगे कि ऐसा अपकर्म हम फिर कभी न करेंगे। एक बार देश जाने ही से हम लोग फिर कभी इस टापू में न आवेंगे। किन्तु उन लोगों का देश लौटना तो हम लोगों के लिए हित-कर न था। क्योंकि एक व्यक्ति के लौट कर घर जाने और ख़बर देने से इतना अनिष्ट हुआ है, जब ये सब के सब देश में जा कर लोगों से यहाँ की बात कहेंगे तब तो हम लोगों का सर्व-नाश होना ही सम्भव है। हमारे दल के लोगों ने उन की कातर-दृष्टि और गिड़गिड़ाहट पर ध्यान न दे कर उनकी डोंगियों को

नष्ट कर डाला। यह देखकर वे विकट चीत्कार करते हुए पागल की भाँति जङ्गल में इधर उधर दौड़ने लगे। वे लोग खेतों को रौंदने लगे; अधपके अंगूरों को तोड़ तोड़ कर कुछ खाने और कुछ फेंकने लगे। ऐसे ही और भी अनेक उत्पात करने लगे। किन्तु भाग्यवशात् उन लोगों ने हमारे क़िले का और गुफा के भीतर वाले पालतू बकरों का कुछ पता न पाया था, इसी से कितनी ही वस्तुएँ बच गई थीं। तब भी वे गिनती में इतने अधिक और दौड़ने में ऐसे तेज़ थे कि निरस्त्र होने पर भी उन पर एकाएक आक्रमण करने का साहस कोई नहीं करता था। क्रमशः उन लोगों की दशा शोचनीय हो उठी और साथ साथ हमारे पक्ष की भी। हम लोगों की दुरवस्था का कारण खाद्य-सामग्रियों का अभाव न था; कारण था दुर्दम्य हिंस्र मनुष्यों का उत्पात। असभ्य लोग भूख से व्याकुल होकर चारों ओर विभीषिका फैलाते फिरते थे। द्वीप-निवासियों को उनका उपद्रव असह्य हो उठा। आख़िर उन लोगों ने अपने बचाव के लिए असभ्यों का शिकार करना निश्चय किया। यदि उनमें कोई अधीनता स्वीकार कर आज्ञानुसार काम करने को राज़ी होगा तो वे और असभ्य नौकरों की भाँति किसी काम में लगा लिये जायँगे। अब हम लोगों की तरफ़ के आदमी उन असभ्यों को देखते ही बाघ-भालू की तरह मारने लगे। आख़िर वे लोग ऐसे सीधे हो गये कि उनकी ओर बन्दूक़ उठाते ही वे ज़मीन पर गिर पड़ते थे। प्राणों के भय से सभी घने जङ्गल के भीतर छिप कर रहने लगे और भूखों मरने लगे।

यह देख कर सभी का चित्त दया से द्रवित हो उठा, विशेष कर सर्दार का। उन्होंने सबसे कहा कि एक जीवित

असभ्य को पकड़ कर उसे सब बातें भली भाँति समझा कर कह देनी चाहिएँ। इसके बाद उन लोगों से सन्धि स्थापन करानी चाहिए।

बहुत दिनों के अनन्तर एक असभ्य गिरफ़ार किया गया। किन्तु पकड़े जाने से वह बड़ा दुखी हुआ। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। आख़िर जब उसने देखा कि उसके साथ दया का व्यवहार हो रहा है तब वह कुछ शान्त हुआ और उसका चित्त स्थिर हुआ। फ्राइडे के बाप ने उसे समझा दिया कि तुम लोग यदि हमारे साथ अच्छा बर्ताव करोगे तो हम तुम्हें न सतावेंगे, बल्कि तुम लोगों को सब तरह से सहायता देंगे। जो कदाचित् तुम लोग इस प्रस्ताव पर सम्मत न होगे तो तुम लोगों की मृत्यु निश्चित है।

उस व्यक्ति से सन्धि का प्रस्ताव पाकर सभी असभ्य हम लोगों के पास आये। उन्होंने कुछ खाने को माँगा। अब भी उनमें ३७ व्यक्ति जीवित थे। उन लोगों की प्रार्थना पर भात, रोटी और तीन जीवित बकरे उनको दिये गये। भोजन पाकर उन लोगों ने पूर्ण रूप से कृतज्ञता प्रकट की। टापू के दक्षिण भाग में, एक पहाड़ की तराई में, उन लोगों के रहने के लिए जगह दी गई। वे लोग अब भी शान्ति-पूर्वक वहीं रहते हैं। किसी वस्तु की नितान्त आवश्यकता न हो तो वे हम लोगों के अधिकार में किसी प्रकार की दस्तन्दाज़ी नहीं करते। हमारे दलवालों ने उन्हें खेती करना, रोटी बनाना, पशुओं का पालना और दूध दुहना आदि काम सिखलाया है। उनके समाज में सिवा स्त्री के और किसी वस्तु की कमी नहीं है। उन लोगों के अधिकार में डेढ़ मील चौड़ी और चार मील लम्बी भूमि दी गई है जिसमें

वे लोग निर्द्वन्द्व होकर घूमते-फिरते हैं और अपनी खेती-बाड़ी करते हैं। अब वे लोग बड़े सीधे सादे हो गये हैं और हम लोगों की आज्ञा के अनुसार काम करते हैं। वे लोग अब वृथा समय नष्ट न कर भाँति भाँति के टोकरे, डलियाँ, चलनी, कुरसी, टेबल, खाट, आलमारी, बक्स, आदि सुन्दर सुन्दर काम की चीज़ें तैयार करके सबका अभाव दूर करते हैं। वे लोग अब अच्छे शिष्ट और सभ्य बन गये हैं।

उपनिवेश में समाज और धर्म-संस्थापन

इन अनेक घटनाओं के बाद इस टापू में मेरा आकस्मिक आगमन मेरे उपनिवेश-वासियों के लिए ईश्वर-प्रेरित आशीर्वाद ही की तरह सुखद हुआ था। मैंने इस टापू में आकर उन लोगों के सभी प्रकार के अभावों को दूर कर दिया। वे लोग मुझसे छुरी, कैंची, कुदाल, खनती, और कुल्हाड़ी आदि उपयोगी औज़ार पाकर अपने अपने घर बनाने लग गये। विल एटकिंस पहले जैसा आलसी था वैसा ही अब ब्याह करने पर परिश्रमी हुआ। उसने अत्यन्त सुन्दर सुदृढ़ घर बनाया। उसमें चटाइयाँ बुन कर लगाईं। घर के चारों ओर खूब गोल घेरा बना दिया। उसके बीच में उसका घर अष्ट-दल कमल की भाँति शोभायमान हो रहा था। उसके प्रत्येक कोने में उसने खूब मज़बूत खम्भे की टेक लगा रक्खी थी। उसने अपनी ही बुद्धि से काठ की धौंकनी तथा लोहे की हथौड़ी और नेहाई बना कर काम चलाने लायक़ लोहे की कितनी ही चीज़ें तैयार कर ली थीं।

एटकिंस के घर में आँगन, दालान, चबूतरा और बरांडा सभी ऐसे सुन्दर थे और सर्वत्र ऐसी सफ़ाई थी कि जो देखते ही बन आवे। एटकिंस के घर सा सुहावना घर मैंने और कहीं नहीं देखा। इस घर में एटकिंस और उसके दो साथियों के कुटुम्बी लोग रहते थे। जो व्यक्ति असभ्यों के हाथ लड़ाई में मारा गया था उसकी विधवा स्त्री अपने तीन बच्चों को लेकर यहीं रहती थी। और भी सन्तान सहित दो विधवाओं का वह प्रतिपालन करता था।

वे स्त्रियाँ भी गृह-कार्य में बड़ी चतुर थीं। उन्होंने अँगरेज़ पति पाकर अँगरेज़ी बोलना सीख लिया था। उनके लड़के भी अँगरेज़ी बोलते थे। मैंने उन सब बच्चों को जाकर देखा। सब से बड़े बच्चे की उम्र छः वर्ष की थी।

मैंने देखा, इस समय स्पेनियर्डों और अँगरेज़ों के बीच किसी तरह की अनबन न थी। दोनों मिल जुल कर अपना अपना काम करते थे। मैंने एक भोज देकर सबको सम्मानित किया। मेरे जहाज़ के रसोइये ने भोजन बना कर सब को खिलाया-पिलाया। बहुत दिनों बाद स्वादिष्ठ भोजन पा कर सभी लोग अपनी रसना को परितृप्त कर के प्रसन्न हुए।

भोज का जलसा समाप्त होने पर मैंने जहाज़ पर से वे चीज़ें उठवा मँगाईं जो उन लोगों के लिए अपने साथ लाया था। उन लोगों में वे चीज़ें मैंने इस हिसाब से बाँट दीं कि जिसमें उन लोगों में पीछे से आपस में, समान भाग न मिलने के कारण, तकरार न हो। मैंने उन सौगाती चीज़ों को बराबर बराबर बाँट दिया।

मैं उन लोगों का यहाँ तक हितचिन्तक था, यह देखकर उन लोगों का हृदय प्रेम से पसीज उठा और सारा शरीर

पुलकित हो गया। उनकी आँखों से आँसू बह चले। उन लोगों ने एक वाक्य से स्वीकार किया कि वे लोग मुझको अपने पिता के तुल्य समझते हैं; वे लोग आजीवन मेरी अधीनता स्वीकार करके इसी द्वीप में मेरी प्रजा बन कर रहेंगे। बिना मेरी आज्ञा पाये कोई इस टापू का त्याग न करेगा।

वस्तु-वितरण के अनन्तर मैंने दर्ज़ी, लुहार, बढ़ई आदि मिस्त्रियों को उन लोगों के सिपुर्द कर दिया। दर्ज़ी ने हरएक को एक एक कुर्ता सी दिया और स्त्रियों को सिलाई के कामों में खूब निपुण कर दिया। बढ़ई ने हम लोगों की बनाई टेबुल, कुर्सी आदि वस्तुओं को एक ही घड़ी में सुन्दर और सुडौल बना दिया।

इसके बाद मैंने अपनी प्रजा को खेती के उपयुक्त हथियार बाँट दिये। हरएक को एक एक कुदाल, खुरपी और खनती दी। बढ़ई के उपयुक्त हथियार विभक्त न करके एक बढ़ई रख दिया। मैं छुरी, कैंची और लोहे की छड़ें आदि बहुतायत से लाया था। वे वस्तुएँ साधारण भण्डार में रख दी गईं। जिसे जब जिस वस्तु की आवश्यकता होगी, उसे मिलेगी। उन लोगों के लिए मैं लोहा इसलिए बहुत लाया था, कि लुहार उससे उनके प्रयोजन की वस्तु बना देंगे।

इसके बाद मैंने हरएक को एक एक बन्दूक़ और बहुत सी गोली-बारूद दी। उन्हें पाकर वे लोग बहुत ख़ुश हुए। अब वे हज़ारों असभ्यों का मुक़ाबला कर सकेंगे।

जिस युवक को और उसकी दासी को मैंने भूखों मरने से बचाया था, वे मेरे पास आकर कहने लगे कि "हम अब भारतवर्ष क्या करने जायँगे। आपकी आज्ञा हो तो हम इसी

टापू में रह जायँ।" मैंने उनके इस प्रस्ताव को स्वीकार करके उन्हें भी अपनी प्रजा में सम्मिलित कर लिया। एट्किंस के घर के समीप ठीक उसी के घर के नक़्शे का एक घर बनवा कर उस नवयुवक को रहने के लिए दे दिया।

मेरे साथ जो पुरोहित आये थे वे बड़े धार्मिक, शिष्ट और साम्प्रदायिक विषय में ख़ूब पहुँचे हुए थे। उन्होंने एक दिन मुझसे कहा—देखिए साहब, आपकी अँगरेज़ प्रजा असभ्य जाति की स्त्रियों से पति-पत्नी का सम्बन्ध जोड़कर निवास कर रही है। परन्तु इन लोगों ने सामाजिक प्रथा या क़ानून के अनुसार ब्याह नहीं किया है। ऐसी अवस्था में संभव है कि जब ये लोग चाहेंगे तब इन निराश्रया रमणियों को छोड़ देंगे। इसलिए, इस दोषोद्धार के हेतु, उनका उन स्त्रियों से विधि-पूर्वक ब्याह करा देना चाहिए। विवाह-बन्धन कुछ साधारण सम्पर्क नहीं है कि जब चाहें उससे अलग हो जायँ। जब आप उन लोगों के नेता हैं तब उन लोगों के सम्पत्ति-सम्बन्धी शुभाशुभ के आप जैसे भागी हैं वैसे ही उनके नैतिक शुभाशुभ के भी। आपको उचित है कि उनको यथाविधि ब्याह दें।

मैंने उनकी धर्मनिष्ठा देख प्रसन्न होकर कहा—मुझे इतना समय कहाँ? मैं दूसरे के जहाज़ का एक यात्री मात्र हूँ। यहाँ रहने के लिए मैंने बारह दिन की छुट्टी ली है। इसके बाद जितने दिन विलम्ब करूँगा उतने दिनों के लिए पचास रुपये रोज़ के हिसाब से हर्जाना देना होगा। यहाँ मुझको आज तेरह दिन हो गये। अधिक विलम्ब करने से मुझे भी इसी टापू में रहना होगा। इस बुढ़ापे में फिर निर्वासन का दुःख भोगने की इच्छा नहीं होती।

पुरोहित ने कहा—तो मुझे आप यहाँ छोड़ते जायँ। मैं इन लोगों को धार्मिक शिक्षा दूँगा और इन लोगों के हृदय में ईश्वर की भक्ति स्थापित करने की चेष्टा करके अपने को धन्य मानूँगा।

उनके मुख की उज्वल शोभा और उत्साह देखकर मैं दङ्ग हो रहा। आखिर मैंने पूछा—"क्या आपने इस बात को भली भाँति सोच लिया है कि इस निर्जन टापू में रहना कितना कष्टकर है? और यहाँ से इस जीवन में देश लौट जाने की संभावना भी नहीं है। हो सकता है, इसी टापू में जीवन-लीला समाप्त हो।" ये बातें जानकर भी वे इस टापू में रहने को राज़ी हुए। उन्होंने कहा—इन धर्महीन नर-नारियों के मन में परमेश्वर की महिमा और दयाभाव का ज्ञान उपजाकर यदि इन्हें सत्पथ पर ला सकूँगा तो मैं अपने जीवन को सफल समझूँगा। तब मेरा यह द्वीपान्तर-वास भी परमसुख का कारण होगा। हाँ, यदि आप कृपा करके अपने सेवक फ़ाइडे को यहाँ छोड़ जायँ तो मेरा विशेष उपकार हो। यह मेरा दुभाषिया बनकर मुझे इस काम में यथेष्ट सहायता देगा।

फ़ाइडे को मैं अपने पास से जुदा नहीं कर सकता था। उससे बिलग होने की बात सुनकर मैं अधीर हो उठा। ऐसे आज्ञाकारी निष्कपट भृत्य को प्राण रहते क्या कोई अपनी आँखों के सामने से हटा सकता है? मैंने पुरोहित से कहा—"फ़ाइडे को छोड़ना मेरे लिए नितान्त कष्टकर है। किन्तु आप जिस काम में अपने जीवन का उत्सर्ग कर रहे हैं उस काम की सहायता के लिए मुझे भृत्य-विच्छेद का कष्ट स्वीकार करना

लाज़िमी है। परन्तु बात यह है कि मैं किसी तरह फ़ाइडे को छोड़ भी दूँ तो वह मुझे न छोड़ेगा।

यह सुन कर पुरोहित चिन्तित हुए। वे बेचारे फ़्रांसीसी थे। वे किसीकी भाषा नहीं समझते थे और न कोई दूसरा ही उनकी बोली समझ सकता था। तब उपाय क्या? तो क्या भगवान् की महिमा के प्रचार का कोई उपाय न होगा? मैंने उनसे कहा—फ़ाइडे के पिता ने स्पेनिश भाषा सीखी है और आप भी कुछ कुछ स्पेनिश भाषा जानते हैं, इसलिए उसी के द्वारा आपका काम निकल जायगा।

यह बातचीत होने के पीछे मैंने अँगरेज़ों को बुला कर उनसे विधिपूर्वक ब्याह करने की बात कही। वे सभी इस प्रस्ताव पर सम्मत हुए। एटकिन्स ने अगुआ होकर कहा कि "हम लोग अपने पुत्र-कलत्र को इतना प्यार करते हैं कि उन्हें छोड़ हम लोग राजपद पाना भी सुखकर नहीं समझते।" स्त्रियों को विवाह का अर्थ अच्छी तरह समझा देने पर वे भी सन्तुष्ट हुईं।

दूसरे दिन ब्याह की तैयारी हुई। किन्तु पुरोहित ने एक उज्र पेश किया कि स्त्रियों को धर्म-दीक्षित किये बिना ब्याह कैसे होगा? मैंने उन सब को पुरोहित के उज्र की बात समझा दी। सभी ने स्वीकार किया कि उन लोगों ने अपनी स्त्रियों को कभी कुछ धर्मशिक्षा नहीं दी है। वे लोग स्वयं धर्मज्ञान से वञ्चित थे तो दूसरे को क्या उपदेश देते? कभी कभी ईश्वर के नाम से जो उन लोगों को सौगन्द खाने की बुरी आदत थी, इसीसे वे लोग इतना जानते थे कि ईश्वर कोई होगा। किन्तु उनका नाम केवल शपथ के लिए ही वे

उपयुक्त समझ बैठे थे। परन्तु वास्तव में ईश्वर किसे कहते हैं यह समझ उन लोगों को न थी। ईश्वर की अलौकिक शक्ति और विचित्र लीला की ओर उन का ध्यान कभी नहीं जाता था। तब हमने उन लोगों से कहा,—"तुम लोग पहले ईश्वर की महिमा भली भाँति जान लो फिर स्त्रियों को ईश्वर पर विश्वास उत्पन्न करा कर उन्हें दीक्षित करो।" एटकिंस ने लम्बी साँस लेकर कहा—"हा भगवन्! मैं तो अत्यन्त दुराचारी और पापिष्ठ हूँ। मैं ईश्वर की महिमा के प्रचार करने का उपयुक्त पात्र नहीं।" मैंने कहा—"सबकी अपेक्षा तुम्हीं विशेष उपयुक्त हो। दुष्कर्म्मी और पापियों को ईश्वर अनुताप के द्वारा पवित्र कर के उनपर अपनी दया और महत्व का प्रकाश करते हैं।" एटकिन्स ने गम्भीरतापूर्वक मेरी बात सुनी और वहाँ से उठ कर वह धीरे धीरे स्त्री के पास गया।

हम लोगों ने बड़ी देर तक उसके लौट आने की प्रतीक्षा की। इसके बाद उसे पुकारने जाकर देखा कि वे स्त्री-पुरुष एकत्र हो ईश्वर की उपासना कर रहे हैं। यह देख कर हम लोगों का हृदय हर्ष से उच्छ्वसित हो उठा। पुरोहित तो यह दृश्य देख कर अपनी आँखों के आनन्दाश्रु को न रोक सके। वे रोने लगे। उपासकों को उसी अवस्था में छोड़ कर हम चले आये। हमने जो उनको उपासना करते देखा था वह बात गुप्त ही रही। किसीसे हम लोगों ने कही नहीं।

कुछ देर बाद एटकिंस के लौट आने पर मैंने उससे बात ही बात में पूछा—एटकिंस, तुमने कहाँ तक लिखना-पढ़ना सीखा था? तुम्हारे पिता कौन थे?

एटकिंस—मेरे पिता पादरी थे।

मैं—उन्होंने तुमको क्या शिक्षा दी थी ?

एटकिंस—उन्होंने मुझको शिक्षा देने में कोई त्रुटि नहीं की किन्तु मैंने उनका एक भी उपदेश ग्रहण नहीं किया। मैं बड़ा पापिष्ठ था। मैंही अपने पिता की मृत्यु का कारण हुआ।

मैं—तो क्या तुमने अपने बाप को मार डाला ?

एटकिंस—मैंने अपने हाथ से उनका गला नहीं काटा, किन्तु अपने विरुद्धाचरण से उनके हृदय को सन्तप्त कर के मैं ही उनकी असमय-मृत्यु का कारण हुआ था।

मैं—अच्छा एटकिंस, इन बातों को जाने दो। बीती हुई बातों की आलोचना से क्या फल ? इस बात की चर्चा से तुम्हें कष्ट तो नहीं हो रहा है ?

एटकिंस—क्या कष्ट कुछ ऐसा वैसा है ? वह मैं आपसे क्या कहूँ !

मैं—कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारे कष्ट का अनुभव स्वयं मेरे मन में हो रहा है। इस टापू के प्रत्येक वृक्ष, लता, गुफा और पहाड़ मेरी अकृतज्ञता के साक्षी हैं। मैं भी अपने बुरे आचरण के द्वारा अपने पिता की मृत्यु का कारण हुआ था। तुममें और मुझमें भेद इतना ही है कि तुम मेरी अपेक्षा अधिक अनुतप्त हुए हो। पर यह तो बतलाओ कि ऐसा भाव तुम्हारे मन में क्योंकर उत्पन्न हुआ ?

एटकिंस—मैं अभी पहले पहल अपनी स्त्री को ईश्वर विषयक ज्ञान सिखलाने की चेष्टा कर रहा था। पर मैं उसे क्या सिखलाऊँगा; मैं ही उसके पास से धर्मतत्त्व की शिक्षा प्राप्त कर आया हूँ।

मैं—अच्छा एटकिंस, यह तो कहो कि तुमने स्त्री को क्या समझाया ?

एटकिंस अपने और अपनी स्त्री के कथोपकथन का वर्णन करने लगा।

एटकिंस ने पहले स्त्री को यह समझा दिया कि ब्याह क्या है। इसके बाद उसने क्रम क्रम से ईश्वर का महत्व और उनकी अतुल दया की बात समझाई। वह इतना बड़ा पापिष्ठ था तब भी भगवान् ने उसके अनेकानेक अपराधों को भुला कर उसे स्वास्थ्य, आनन्द, भोजन, पान और प्रणय का सुख प्रदान कर उसे सुरक्षित कर रक्खा है। इसके लिए उन्हें एक बार भी अब तक इस मुँह से धन्यवाद तक नहीं मिला। वे अपनी मूर्ख सन्तान को सत्यधर्म के पथ पर लाने की चेष्टा करते हैं। जो उस पथ पर आता है उसे वे असीम आनन्द देते हैं और उनकी कृपा से वह कृतकृत्य होता है। यह सुन कर उसकी स्त्री ने कहा—यदि ईश्वर सत्य और न्याय-परायण हैं, यदि वे सर्वशक्तिमान् और सृष्टि के विधायक हैं, यदि वे धर्म के बन्धु और पाप के शत्रु हैं तो मैं कभी उनकी आज्ञा के प्रतिकूल काम न करूँगी और न तुम्हींको बुरा काम करने दूँगी। वे दिन दिन हम लोगों के भले की कामना करते हैं। हम लोग अपनी चित्तवृत्ति के वशीभूत हो कर अपने आप अशुभ मार्ग पर जाकर धर्मभ्रष्ट होती हैं। हम अब बुरे मार्ग से बच कर चलेंगी। वही दीनबन्धु परमेश्वर हम लोगों को अशुभ प्रवृत्ति के साथ युद्ध करने का सामर्थ्य देंगे और उन्हीं की कृपा से हम लोग उस पर विजय प्राप्त कर के सुखी होंगी। मैं तुम्हारे साथ नित्य शाम-सबेरे उनका गुण

गाऊँगी और उनसे अपने अपराध की क्षमा माँगूँगी। वह संसार के परिचालक एक अद्वितीय हैं।

स्त्री की यह बात सुन कर एटकिंस स्थिर नहीं रह सका। वह अपनी स्त्री को साथ ले कर ईश्वर की उपासना करने लगा। इसी अवस्था में हम लोगों ने उनको देखा था।

मेरे टापू में धर्म की स्थापना हुई। किन्तु वह धर्म, हृदय के आग्रह से, आप ही उत्तेजित हुआ था। इससे सम्प्रदाय की संकीर्णता इस धर्म में न थी। किसी तरह की खुशामद या आडम्बर की आवश्यकता न थी।

धार्मिक दीक्षा के बाद उन लोगों का फिर से विधिवत् ब्याह हुआ। उस दिन के ऐसा आनन्द और उत्सव मैंने अपनी ज़िन्दगी में प्रायः कभी न मनाया था।

उन स्त्री-पुरुषों को धर्म-दीक्षित कर के ही पुरोहित सन्तुष्ट न हुए, प्रत्युत टापू में जो ३७ असभ्य थे उनको धर्म-शिक्षा देने के लिए वे व्यग्र हो उठे।

मैं इस प्रकार टापू में सामाजिक और धार्मिक शिक्षा का सूत्रपात करके जब जहाज़ पर सवार होने की तैयारी कर रहा था तब उस नव-युवक ने, जिसे निराहार के कष्ट से मैंने बचाया था, आकर मुझसे कहा—महाशय, आपने सबका ब्याह तो विधिपूर्वक करा दिया, एक और ब्याह करा कर तब आप जायँ।

उसकी बात सुन कर मैं दङ्ग हो गया। क्या यह छोकरा इस अधेड़ दासी के साथ ब्याह करना चाहता है? मैं उसे समझा कर कहने लगा—"देखो भैया, कोई काम एकाएक कर डालना

ठीक नहीं। तुम अच्छे घराने के मालूम होते हो। तुम्हारा शील-स्वभाव भी अच्छा है। देश में तुम्हारे स्वजनवर्ग भी हैं। ऐसी अवस्था में एक दासी के साथ ब्याह करना क्या तुम्हें अच्छा जान पड़ता है? फिर वह दासी भी तो तुम्हारे योग्य पात्री नहीं है। एक तो वह तुम्हारी टहलनी है, दूसरे तुमसे वह नौ दस वर्ष उम्र में बड़ी है। तुम अधिक से अधिक सत्रह-अठारह वर्ष के होगे और दासी की उम्र २६-२७ साल से कम न होगी। मैं तुमको इस द्वीप से तुम्हारे देश पहुँचा दूँगा। तब तुम ज़रूर इस हठकारिता के लिए अनुतप्त होगे और तुम दोनों का जीवन शोचनीय हो उठेगा।" मैं असम ब्याह के अनेक दोषों के सम्बन्ध में एक लम्बी वक्तृता देने चला था, किन्तु उसने मुसकुरा कर बड़ी नम्रता से मेरे व्याख्यान में बाधा डाल कर कहा—महाशय, आपने मेरी बात समझी नहीं। मेरा वह मतलब नहीं जो आपने समझा है। मैं दासी के साथ ब्याह करना नहीं चाहता। आपके लाये हुए मिस्त्री के साथ वह ब्याह करना चाहती है।

यह सुन कर मैं प्रसन्न हुआ। वह दासी जैसी शान्त-स्वभावा, शिष्ट और सुशीला थी वैसा ही उसने अपने लिए वर भी चुना था। मैंने उसी दिन उस दासी का ब्याह कर दिया। उन वधू-वरों को मैंने यौतुक-स्वरूप कुछ ज़मीन दी और उस नव-युवक को भी थोड़ी सी ज़मीन दी। पीछे ये लोग आपस में जगह-ज़मीन के लिए लड़ाई-झगड़ा न करें, इसलिए सबके रहन-सहन, खेत-खलिहान आदि के योग्य ज़मीन के चारों ओर की सीमा निर्दिष्ट कर के पट्टा लिख दिया और उन लोगों से क़बूलियत लिखा ली। पट्टे पर मैंने अपनी मुहर कर दी और क़बूलियत पर उन लोगों का हस्ताक्षर करा कर गवाहों से भी

दस्तखत करा लिये। मैंने पट्टे में यह शर्त लिख दी कि इस ज़मीन की पैदावार पुश्त दरपुश्त तुम सुख से उपभोग कर सकोगे और यह ज़मीन बराबर तुम्हारे क़ब्ज़े में रहेगी। इसमें कभी किसीको किसी प्रकार का उज्र न होगा। यदि कोई किसीकी सम्पत्ति पर दावा करेगा तो वह दावा अनुचित समझा जायगा।

यदि आपस में किसी तरह का कोई झगड़ा छिड़ जाय तो वे लोग आपस में ही पञ्चों के द्वारा तसफ़िया कर लें। उन लोगों का समाज साधारण-तन्त्र-प्रणाली के अन्तर्गत रहे। कोई किसी के ऊपर हुकूमत न कर सकेगा और न कोई प्रधान बन कर ही कोई काम कर सकेगा। सब लोग आपस में मिल जुल कर काम करेंगे। ३७ असभ्यों को भी इस समाज के अन्तर्गत कर लेना होगा। वे लोग मज़दूरी कर के अपना गुज़ारा करेंगे। किन्तु वे लोग एक दम ख़रीदे हुए दास न समझे जायँ। उन लोगों को इतनी स्वाधीनता अवश्य रहेगी कि वे जहाँ चाहें कमा खायँ। किसी का उनपर ज़ोर नहीं रहेगा। मैंने इस प्रकार की व्यवस्था कर दी जिससे कोई किसीके साथ मेरे परोक्ष में विवाद न करे। असभ्यों में प्रायः सभी ने मज़दूरी करना स्वीकार किया; उनमें सिर्फ़ चार-पाँच व्यक्तियों ने ख़ुद खेती करके जीवन निर्वाह करने की इच्छा प्रकट की। उन्हें भी मैंने थोड़ी थोड़ी ज़मीन खेती के लिए दी। वे असभ्य लोग अब सभ्यमण्डली में आने से शिक्षा-दीक्षा के उपयुक्त-पात्र समझे गये।

दासी सचमुच ही बड़ी धर्म-शीला थी। उसने सब स्त्रियों को धर्मोपदेश देकर सबके हृदय में धर्म-निष्ठा जागृत

कर दी। विल एटकिंस पुरुषों में धर्म का प्रचार करने लगा। अहा! ईश्वर की बड़ी विचित्र महिमा है। जो व्यक्ति दो दिन पहले उनका नाम न लेता था वही आज उनकी महिमा का सर्वश्रेष्ठ प्रचारक बन बैठा। मैंने इन लोगों को अपनी बाइबिल दी। एटकिंस ने उस ग्रन्थ को देख कर बड़े आग्रह से दोनों हाथों से उठा लिया और मारे ख़ुशी के उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसने अपनी स्त्री को पुकार कर कहा—देखो, देखो, जिस ग्रन्थ के लिए मैं भगवान् से प्रार्थना कर रहा था वह ग्रन्थ आज अनायास मुझे मिल गया। यह ग्रन्थ हम लोगों की अज्ञता का निवारक, धर्म-पथ का शिक्षक, विपद् में सहायक और शोक के समय धैर्यदायक होगा।

एटकिंस की स्त्री ने समझा कि स्वयं ईश्वर ने हम लोगों के उपकारार्थ यह ग्रन्थ भेज दिया है। मैंने उन लोगों को समझा दिया कि ईश्वर अप्रत्यक्ष-कारण होने पर भी वे मन-वाणी के अगोचर हैं। वे जो कुछ करते हैं अप्रकट रूप से ही करते हैं। उनका अलौकिक कार्य ही उनके कारण होने का पूरा प्रमाण है। धूर्त पुरोहितगण इसी विषय को लेकर अनेक सम्प्रदाय कल्पित करके उन्हें विविध-भ्रान्त-धारणाओं में उलझा रखते हैं। किन्तु मेरी इच्छा थी कि मेरे टापू में बुद्धिविचार से ही धर्म की प्रतिष्ठा हो।

मैं इन लोगों के लिए जलक्रीड़ा करने के उपयुक्त नाव और तोप लाया था। वे दोनों चीज़ें मैंने इन लोगों को न दीं। कारण यह कि ये लोग जो इतने दिनों से आपस में लड़ते झगड़ते आये हैं, सो कौन जाने मेरे परोक्ष में ये लोग फिर वैसे ही झगड़ने लग जायँ तब तो सर्वनाश ही होगा।

मैं इन लोगों से बिदा हो।छठी मई को जहाज़ पर सवार हुआ। आज कल करते करते टापू में पच्चीस दिन बीत गये। इँगलैन्ड से मैं जो पशु लाया था वे रास्ते ही में मर गये थे। इसलिए द्वीप-निवासियों से मैंने चलते समय कहा कि हो सकेगा तो ब्रेज़िल से कुछ पशु भेज दूँगा। दूसरे दिन पाँच बार तोप की आवाज़ के द्वारा रवानगी का संकेत कर के मैं जहाज़ पर चढ़ा।

फ्राइडे की मृत्यु

मैं अपने टापू का सुप्रबन्ध कर के विदा हुआ। तीन दिन समुद्रयात्रा करने के पीछे नाविकों ने खूब ज़ोर से चिल्ला कर कहा "पूरब ओर स्थल दिखाई दे रहा है।" साँझ होने के पहले ही स्थल-भाग का किनारा देखते ही देखते घोर कृष्णवर्ण हो उठा। किन्तु ऐसा क्यों हुआ, इसका कुछ कारण हम लोग समझ न सके। जहाज़ का मेट मस्तूल के ऊपर चढ़कर दूरबीन से देखकर चिल्ला उठा "सैन्य-दल, सैन्य-दल।" मैं उसके कथन का अविश्वास कर उसकी बात काटने लगा। तब वह बोला—आप मेरी बात का विश्वास कीजिए। डोंगियों पर क़रीब एक हज़ार सैनिक-सवार हो हमारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं।

यह सुन कर मैं और जहाज़ का कप्तान मेरा भतीजा बड़े ही अचम्भे में पड़ गया। वह बेचारा कभी इतनी दूर न आया था। उस पर मेरे टापू में जाकर असभ्यों की भयङ्कर वृत्ति की कहानी सुन कर उसे अत्यन्त भय हुआ था। उसने दो तीन बार मुझसे कहा—"अब की बार वे लोग आकर हम लोगों को ज़रूर मार कर खा डालेंगे।" मेरा भी

मन स्थिर न था। कारण यह कि हवा रुक गई थी और समुद्र की तीक्ष्ण तरङ्ग हम लोगों को हठात् किनारे ही की ओर खींचे लिये जा रही थी। तथापि मैं सबको साहस देने लगा। ज्योंही असभ्य हमारे समीप पहुँचे त्योंही मैंने लंगर डालने का हुक्म दिया।

वे लोग बात की बात में हमारे जहाज़ के पास आ गये। मैंने जहाज़ के पालों को उतारने और लंगर डालने की आज्ञा दी। जहाज़ के सामने और पीछे एक एक नाव उतार कर उन पर कतिपय सशस्त्र नाविकों को इसलिए सवार किया कि यदि असभ्य लोग जहाज़ में आग लगाने की चेष्टा करेंगे तो नाविक लोग बालटी के द्वारा समुद्र का जल सींच कर आग बुझा देंगे।

किन्तु असभ्य लोग हम लोगों के समीप आकर और एक बड़ा सा जहाज़ देख कर एकदम भौंचक्का हो रहे। ऐसा प्रकाण्ड जहाज़ तो उन लोगों ने अपने बाप की ज़िन्दगी में आज तक कभी न देखा था। हम लोगों के साथ वे कैसा व्यवहार करें, यह उन लोगों की समझ में न आता था। तथापि वे लोग जान पर खेल कर एक बार जहाज़ के बिलकुल पास आये और हमारे जहाज़ को चारों ओर घूम कर देखना चाहा।

मैंने नाविकों से कहा—"ख़बरदार! उन लोगों को हमारे जहाज़ से भिड़ने मत देना।" यह हुक्म पाकर नाविकों ने उन असभ्यों को हाथ का इशारा देकर दूर रहने को कहा। उस इशारे का मतलब समझ कर वे लोग अपनी डोंगियों को हटा ले गये। फिर हमारे जहाज़ियों को लक्ष्य करके उन लोगों ने एक

साथ पचास तीर छोड़े। इससे हमारे जहाज़ का एक नाविक पूरे तौर से घायल हुआ। मैंने कई एक काठ के तख़्ते नावों पर उतरवा दिये। नाविकगण तख़्ते खड़े करके उनकी आड़ में छिप रहे। अब मैंने उन्हें बन्दूक़ चलाने की मनाही कर दी।

आध घंटे तक इतस्ततः करने के बाद वे लोग झुण्ड बाँधकर जहाज़ के पश्चाद्भाग के ख़ूब नज़दीक आ गये। तब हम लोगों ने उन्हें स्पष्टरूप से देखा। उनमें कितने ही मेरे पुराने परिचित थे। द्वीप-निवास के समय कई बार उन लोगों के साथ मेरा मुक़ाबला हो चुका था। मैंने अपनी तोपों को ठीक करके फ़्राइडे को डेक के ऊपर इसलिए भेज दिया कि वह अपनी देशभाषा में अपने देशवासियों से उनके आगमन का कारण पूछे। फ़्राइडे ने ख़ूब उच्चस्वर से पूछा, किन्तु असभ्यों ने फ़्राइडे की बात का कुछ जवाब न देकर हम लोगों की ओर पीठ करके और सामने की ओर झुककर हम लोगों को पश्चाद्भाग दिखलाया। ऐसा बीभत्स व्यवहार हम लोगों के प्रति अपमान या युद्ध के लिए सन्नद्ध होने का संकेत है, यह मैं न समझ सका। किन्तु उन लोगों को इस तरह करते देख फ़्राइडे ने चिल्लाकर कहा,—"देखो देखो ये लोग अभी बाण बरसावेंगे।" उसकी बात पूरी होते न होते टिड्डीदल की तरह सैकड़ों बाण एक साथ उड़कर जहाज़ पर आ गिरे और कई बाण मुझे अत्यन्त दुख देकर फ़्राइडे के शरीर में चुभ गये। तीन बाणों की सख़्त चोट लगने से फ़्राइडे मर गया। उसके पार्श्ववर्ती और भी तीन व्यक्ति मरे। वे असभ्य होकर भी ऐसे अचूक तीरन्दाज़ थे।

मैंने अपने पुराने भृत्य की मृत्यु से अत्यन्त क्रुद्ध हो कर एक साथ नौ तोपें सीधी कर असभ्यों पर गोले बरसाने की आज्ञा

तीन बाणों की सख्त चोट लगने से फ्राइडे मर गया।—पृ० ३२०

दी। एक साथ नौ तोपों का भयङ्कर शब्द उन लोगों के पुरुषों ने भी आज तक कभी न सुना था। उनकी तीन चार नावें एक दम भर में उलट गईं। फ्राइडे मेरा मित्र, नौकर, मन्त्री, साथी और पुत्र सब कुछ था। उस की मृत्यु से मैं ऐसा क्रुद्ध हुआ कि वे असभ्य सब के सब मारे जाकर उनकी सब नावें नष्ट-भ्रष्ट हो जलमग्न हो जातीं तो कदाचित् मेरे हृदय का ताप कुछ शान्त होता।

एक ही साथ उतनी तोपों की आवाज़ होने से असभ्य-दल में बड़ी खलबली मच गई। नावों में परस्पर टक्कर लगने से तेरह-चौदह नावें टुकड़े टुकड़े हो गईं और उन के सवार समुद्र में गिरकर तैरने लगे। और लोग अपनी अपनी नाव खेकर बड़े वेग से भाग चले। उन लोगों ने कुछ भी ख़बर नहीं ली कि हमारे नौकाहीन साथियों की क्या दशा हुई। जलमग्न लोगों में प्रायः सभी मर मिटे, केवल एक व्यक्ति को हमारे जहाज़ वालों ने जहाज़ पर खींच कर बचा लिया था। उस दिन सन्ध्या समय ख़ूब तेज़ हवा बहने लगी। तब हम लोग पाल तान कर ब्रेज़िल की तरफ़ रवाना हुए। वह बन्दी असभ्य ऐसा दुखी था कि न कुछ खाता था और न कुछ बोलता था। मैंने देखा कि वह उपवास करते ही करते मर जायगा। तब मैंने उसे जहाज़ की डोंगी में उतार कर इशारे से कहा—"कुछ कहो तो कहो, नहीं तो तुझे अभी समुद्र में फेंक दूँगा।" तब भी वह कुछ न बोला। उसकी यह असभ्यता देख नाविकों ने धर पकड़ कर उसे पानी में गिरा दिया। अब वह जल पर तृण की भाँति तैरता हुआ जहाज़ के पीछे पीछे आने लगा और अपनी मातृभाषा में हम लोगों से न मालूम क्या कहने लगा। इसके बाद वह फिर जहाज़ पर

चढ़ा लिया गया। अब से वह कुछ कुछ हम लोगों की बात मानने लगा।

जहाज़ मज़े में जा रहा है। किन्तु प्रिय सेवक फ्राइडे के वियोग से मेरे चित्त में चैन नहीं। मैंने बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ समुद्र में उसको प्रवाह किया। उसके मृत-शरीर को भली भाँति कपड़े से ढँक कर और उसे एक बक्स में बन्द कर समुद्र में डाल दिया। उसके सम्मानार्थ ग्यारह बार तोप दागी गई। इसके बाद सभी चुप हो रहे। मेरे परम विश्वासी, प्रीति-भाजन, स्वामिभक्त, कर्तव्यनिष्ठ, निश्छल, सत्यशील और सहृदय भृत्य की जीवन-लीला समाप्त हुई। ऐसा सत्सेवक सौभाग्य से ही किसीको मिलता है। आज बार बार मैं अपने मन में यों कहने लगा—

बहुत दिनों में भ्रमण कर लौटे हम निज गेह।
हाय हमारा भृत्य वह चला गया तज देह॥

क्रूसो का फिर ब्रेज़िल में आना

बारह दिन समुद्रयात्रा करने के बाद हम लोगों ने अमेरिका का उपकूल देखा। इसके चार दिन बाद हम लोगों ने ब्रेज़िल पहुँच कर लंगर डाला। यह वही जगह थी जहाँ से मेरे सौभाग्य और अभाग्य की सूचना आरम्भ हुई थी।

हम लोग ब्रेज़िल में आये तो सही किन्तु हम लोगों को स्थल में उतरने की आज्ञा नहीं मिली। मेरे पुराने हिस्सेदार अब भी जीवित थे। मेरे और उनके बीच जो शर्तनामा लिखा गया था वह भी इस समय हम लोगों का कोई उपकार न कर सका। सौदागरों ने हम लोगों के लिए बहुत कुछ सिफ़ा-

रिश की किन्तु उससे भी कुछ फल न हुआ। मेरे द्वीप के अद्भुत कार्यकलाप की ख्याति भी हम लोगों को इस अनुग्रह का पात्र नहीं बना सकती थी। तब मेरे हिस्सेदार को स्मरण हुआ, कि मैंने वहीं को धर्मशाला के फ़ण्ड और दरिद्रों के भरण-पोषण के लिए यत्किञ्चित् दान दिया था। इससे उन्होंने धर्मशाला में जाकर महन्त को मेरी उदारता का स्मरण दिलाया और उन्हें नगराधीश के निकट, हम लोगों के लिए जहाज़ से उतरने की, अनुमति लाने को भेजा। बड़ी बड़ी मुश्किल से मैं, मेरा भतीजा (कप्तान), और छः व्यक्ति, कुल आठ आदमियों को जहाज़ से उतरने की आज्ञा मिली। किन्तु यह भी इस शर्त पर कि हम लोग जहाज़ से कोई माल न उतारेंगे और बिना सरकार की आज्ञा के किसी व्यक्ति को वहाँ से अपने साथ न ले जा सकेंगे। इस शर्त का पालन इतनी कड़ाई से हुआ कि अपने हिस्सेदार को उपहार देने की सामग्री भी मैं बड़ी कठिनाई से जहाज़ पर से उतारने पाया।

मेरे हिस्सेदार बड़े सज्जन थे। वे भी मेरी ही भाँति बिना कुछ पूँजी के व्यापार शुरू कर के अब अच्छे धनी हो गये थे। जितने दिन तक हम लोग जहाज़ से न उतर सके उतने दिन तक उन्होंने तरह तरह की खाने-पीने की स्वादिष्ठ वस्तुएँ भेज कर हम लोगों का सत्कार किया था। मैंने जहाज़ से उतर कर उनको प्रतिदान-स्वरूप विविध उपहार दिये।

मैं इँगलैन्ड से जो एक छप्परवाली नाव का फ्रेम लाया था उसमें इन्हींकी सहायता से तख़्ते जड़वा लिये। उन्होंने मिस्त्री के द्वारा उसे भली भाँति ठीक ठाक करा दिया। मैंने वह नाव एक व्यक्ति को सौंप कर उसकी मारफ़त भाँति भाँति

की चीज़ें अपने टापू में भेज दीं। हमारे साथ का एक नाविक टापू में जाकर रहने की इच्छा करने लगा। मैंने उसे भी जाने की आज्ञा दी। असभ्य बन्दी को उसीके हवाले किया। वह नाविक का भृत्य होकर रहेगा। स्पेनियर्ड सरदार को मैंने एक चिट्ठी लिख दी कि इस नाविक को खेती के लिए ज़मीन, खेती-बारी के उपयुक्त हथियार और अन्यान्य आवश्यक वस्तुएँ दे देना।

नाव रवाना होने के पहिले मेरे कारबार के साझेदार ने मुझसे कहा कि—हमारा परिचित एक सज्जन यहाँ के पुरोहित-सम्प्रदाय की आँखों का काँटा हो रहा है। उस पर उनकी बुरी दृष्टि है। वह अपनी स्त्री और दो लड़कियों को लेकर यहाँ से भागने का उपाय खोज रहा है। यदि आप उसको अपने टापू में भेज कर खेती के लिए ज़मीन दें और सब बातों का प्रबन्ध कर दें तो उस भले मानस का बड़ा उपकार हो। वह पुरोहितों के हाथ में कहीं पड़ गया तो वे उसे जीते ही जला डालेंगे।

इस बात को मैंने तुरन्त स्वीकार कर लिया। उन लोगों को अपने जहाज़ में लाकर छिपा रक्खा। जब नाव रवाना होने लगी तब उन्हें उस पर सवार करा कर बिदा कर दिया।

ये महाशय यहाँ के एक प्रसिद्ध काश्तकार थे। जाते समय ये अपने साथ कुछ ऊख की जड़ें इसलिए लेते गये कि वहाँ जाकर ऊख की खेती करेंगे।

मैंने अपने द्वीप की प्रजा के लिए निम्न लिखित वस्तुएँ भेज दीं—तीन दुधार गायें, पाँच भेड़ें, बाइस सुअर, दो घोड़ियाँ और एक घोड़ा; तथा स्पेनियर्डों के विवाहार्थ तीन

पोर्तुगीज़ रमणियाँ भी। ब्याहने योग्य और कन्याएँ भी मैं भेज सकता था किन्तु स्पेनियर्डों में पाँच ही व्यक्ति अविवाहित थे और सभी विवाहित थे। देश में उनके स्त्री-पुत्र घर-द्वार सब कुछ थे। पाँच व्यक्तियों के विवाहार्थ मैंने तीन कन्यायें भेजीं और दो कुमारिकायें उस भगोड़े भलेमानस के साथ गई थीं।

मेरी भेजी हुई वस्तुएँ टापू में सुरक्षित पहुँच गई थीं और वहाँ के निवासियों के परम आनन्द का कारण हुई थीं। इँगलैन्ड पहुँचने पर जब मुझे उनकी चिट्ठी मिली तब मालूम हुआ कि उस समय ७० आदमी द्वीप में थे। उनमें बालकों की गिनती न थी।

द्वीप के साथ मेरा यही अन्तिम सम्पर्क था। द्वीप की बात ख़तम हुई। अब वहाँ का वृत्तान्त कहने का मुझे अवसर न मिलेगा। इसके अतिरिक्त पाठकगण केवल एक वृद्ध की निर्बुद्धिता का इतिहास पढ़ सकेंगे। वह वृद्ध कैसा कि एकदम नासमझ, विपत्ति की बार बार ठोकरें खाकर और दूसरे की अवस्था देख कर भी उसमें कुछ समझ न आई। चालीस वर्ष का असाधारण कष्ट या आशातीत ऐश्वर्य भी उसे किसी प्रकार शान्त न कर सका।

किसी स्वाधीन सज्जन को जेलख़ाने में क़ैद होकर रहने की जैसे कोई आवश्यकता नहीं वैसे ही मुझे भी भारतवर्ष में जाने की कोई आवश्यकता न थी। यदि मैं इँगलैंड से एक छोटे से जहाज़ पर आवश्यक वस्तुओं को अपने टापू में ले जाता और इँगलैंड के राजा से अनुमतिपत्र ग्रहण कर इँगलैंड के नाम से द्वीप को अपने अधिकार में करके उसकी रक्षा

करता तो मेरी अक्ल की तारीफ़ की जा सकती। यदि मैं वहीं रह कर द्वीप से देशान्तर को चावल भेजता और द्वीपनिवासियों के लिए आवश्यक वस्तुएँ देश से मँगा कर बनजब्यापार करता तो मैं अपनी बुद्धि का कुछ न कुछ परिचय देता। किन्तु मुझे तो भ्रमण का रोग दबाये बैठा था। मेरे सुख के पीछे शनिग्रह लगा फिरता था। द्वीपनिवासियों का अध्यक्ष होकर ही मैं अपने को धन्य मान बैठा था। अहङ्कार में फूल कर उन लोगों पर हुकूमत करता था। किन्तु उन लोगों को किसी राजा के नाम से आबद्ध करने की बात कभी जी में न आती थी। यहाँ तक कि मैंने उस द्वीप का अब तक कुछ नाम भी न रक्खा था। वे लोग मुझको अपना सर्दार मानते थे और मेरी आज्ञा के अनुसार चलते थे किन्तु वह भी उनकी इच्छा पर निर्भर था। उन पर ज़ोर करने योग्य मेरी क्षमता ही क्या थी? कुछ दिन के बाद मुझे ख़बर मिली कि विल एटकिंस मर गया; पाँच स्पेनियर्ड रुष्ट होकर देश चले गये हैं और सभी लोग देश लौट जाने के हेतु व्यग्र हो रहे हैं। मैं कोरे का कोरा ही रह गया। भर पेट खाना और नींद भर सोना ही मेरा कर्तव्य रह गया। इससे संसार में किसका क्या उपकार हुआ? यह न समझिए कि मेरी मूर्खता का अन्त यहीं होगया; इसके अतिरिक्त मैं अपनी अज्ञता का अभी बहुत कुछ परिचय दूँगा। ईश्वर मेरी प्रार्थना को पूरी कर के दिखला देते थे कि तुम जो चाहते हो वह तुम्हारी भूल है, उससे तुम्हारा कोई कल्याण न होगा। मैं प्रार्थित फल पाकर भी पीछे से हाय हाय कर के मरता था। जिसे मैं सुख का कारण समझ कर चाहता था भगवान् वही मेरे हाथ दे कर दिखला देते थे कि 'तेरे ज्ञान की दौड़ कहाँ तक है'।

और जिसको हम लोग सुख का कारण समझते थे, वह न मालूम कहाँ तक दुःखदायक था। इसी कारण उपनिषद् के परमज्ञाता ऋषियों ने ईश्वर से प्रार्थना करके कहा है—हे जगत्पिता, हमें आप वही दें जिससे हम लोगों का परममङ्गल हो, हम लोग जो चाहें वही न दे दें।

मदागास्कर टापू में हत्याकाण्ड

ब्रेज़िल से बिदा हो हम लोग अटलांटिक महासागर पार करके गुडहोप अन्तरीप में पहुँचे। रास्ते में कोई विघ्न नहीं हुआ। यहाँ से समुद्र-पथ हम लोगों के लिए अनुकूल हुआ। स्थल-मार्ग ही विघ्नों का घर हो उठा। अब से जो कुछ विपत्ति आई वह स्थलमार्ग में ही, समुद्र-पथ में नहीं।

गुडहोप अन्तरीप में पानी लेने के लिए जितनी देर तक रहना दरकार था उतनी देर जहाज़ रोक रक्खा गया। वहाँ से रवाना होकर जहाज मदागास्कर टापू में जा लगा। वहाँ के निवासी अत्यन्त नृशंस थे। वे बाणविद्या और शक्तिप्रक्षेप में सुपटु थे, फिर भी उन लोगों ने हमारे साथ अच्छा बर्ताव किया। हम लोगों ने उन्हें छुरी, कैंची आदि सामान्य वस्तुएँ उपहार में दीं। इसीमें सन्तुष्ट हो कर उन लोगों ने हमको ग्यारह हृष्ट-पुष्ट बछड़े ला दिये।

देश देखने का उन्माद विशेष कर मुझी को था। ज़रा सा सुयोग पाते ही मैं स्थल में उतर जाता था और समुद्र-तटवर्ती लोग चारों ओर इकट्ठे हो चुपचाप खड़े होकर देखते थे। उन लोगों में सन्धि-स्थापन की प्रणाली बड़ी विचित्र थी।

एक तरह के वृक्ष की तीन डालें काट कर एक जगह गाड़ देते थे। यदि अपर पक्ष के लोग इस सन्धि से सम्मत होते थे तो वे भी उनके सामने इसी तरह तीन वृक्ष-शाखाएँ गाड़ देते थे। दोनों दलों के सन्धिस्थापन के बीच की जगह वाणिज्य-व्यवहार और बात-चीत के लिए निर्दिष्ट होती थी। उस मध्यवर्ती स्थान में यदि कोई जाना चाहता था तो उसे निरस्त्र होकर जाना पड़ता था।

एक दिन सन्ध्या-समय हम लोग स्थल में उतर पड़े। वहाँ के रहने वालों ने चारों ओर से आकर हम लोगों को घेर लिया। किन्तु उन लोगों ने कोई प्रतिकूल आचरण न कर बड़े शान्त भाव से हम लोगों के साथ सन्धि का बर्ताव किया। हम लोगों ने भी सन्धि-शाखा गाड़ कर के वहीं रात बिताने की इच्छा से कई तम्बू खड़े किये।

सभी लोग निश्चिन्त हो कर सो रहे। किन्तु न मालूम मुझे नींद क्यों न आई। तब मैं नाव पर गया और नाव के ऊपर पेड़ के डाल-पत्तों का एक छप्पर छा दिया। उसके नीचे पाल बिछा कर मैं सो रहा। नाव की रक्षा के लिए दो आदमी और भी नाव पर थे। मैंने नाव को किनारे से ज़रा हटा कर लंगर डाल दिया।

दो बजे रात को हम लोगों के साथी खूब ज़ोर से चिल्ला कर नाव को किनारे लगाने के लिए हम लोगों के नाम ले ले कर पुकारने लगे। इसके साथ साथ पाँच बार बन्दूक़ की आवाज़ सुनाई दी। कुछ कारण न समझने पर भी हम लोगों ने झट पट नाव को किनारे लगा दिया और तीन बन्दूकें लेकर हम लोग उनकी सहायता के लिए प्रस्तुत हुए।

किन्तु नाव किनारे भिड़ते न भिड़ते हमारे साथी लोग नाव पर चढ़ने के लिए पानी में धँस पड़े। उनके पीछे पीछे तीन चार सौ आदमी दौड़े चले आ रहे थे। हम लोगों के आदमी गिनती में कुल नौ थे, जिनके साथ सिर्फ़ पाँच बन्दूकें थीं।

हम लोग बड़े कष्ट से सात मनुष्यों को नाव पर चढ़ा सके। उनमें तीन व्यक्ति बहुत घायल थे। किन्तु नाव पर आजाने पर भी छुटकारा नहीं हुआ। वहाँ के निवासी लोग अँधाधुन्ध बाण बरसा रहे थे। दैवयोग से नाव में कई तख्ते और बेञ्चें थीं। उन्हीं को खड़ा कर कर के हम लोग उनकी आड़ में छिप रहे। द्वीप-निवासियों का जैसा अचूक बाण चलता था उससे यदि दिन का समय होता तो हम लोगों के शरीर का कोई अंश सामने पड़ जाने पर फिर उनके हाथ से बचना मुश्किल था। हम लोगों के भाग्य से उस समय रात थी। चाँदनी रात में तख्तों के छिद्र से देखा कि वे लोग किनारे खड़े होकर हम लोगों पर बाण बरसा रहे हैं। हम लोगों ने बन्दूकें भर कर एक साथ गोली चलाई। उन लोगों की चिल्लाहट से मालूम हुआ कि कई आदमी घायल हुए हैं। किन्तु वे लोग बन्दूक की विशेष परवा न करके सबके सब पाँत बाँध कर प्रभात की अपेक्षा से खड़े रहे। कारण यह कि दिन के उजेले में वे लोग अच्छी तरह लक्ष्य करके हम लोगों पर बाण चलावेंगे।

हम लोग उनके डर से बड़े दुखी हुए। न हम लोग लङ्गर उठा सकते थे, न पाल तान सकते थे और न लग्गे से नाव ही खे सकते थे। ये सब काम करने के लिए खड़ा होना पड़ेगा, और वे लोग जिसे खड़ा देखेंगे उसे बाण से मार गिरावेंगे। अब हम लोगों ने अपने जहाज़ वाले साथियों को विपत्ति

का संकेत किया। जहाज़ यद्यपि किनारे से क़रीब एक मील पर था तथापि जहाज़ के कप्तान मेरे भतीजे ने हम लोगों की बन्दूक़ की आवाज़ सुनी और दूरबीन से देख कर उसने अच्छी तरह जान लिया कि हम लोग कैसी अवस्था में हैं। उसने तुरन्त लङ्गर उठा कर यथासंभव जहाज़ को किनारे की ओर हटा लिया और एक नाव पर दस आदमियों को सवार करा के मेरी सहायता के लिए भेजा। इस नाव के आरोहियों को हम लोगों ने ख़ूब ज़ोर से चिल्ला कर अपनी नाव के निकट आने से रोका। तब उस नाव में से एक आदमी ख़ूब मोटा रस्सा लेकर पानी में उतरा और नाव की ओट ही ओट से तैर कर हमारी नाव के पास आ गया और नाव को उस रस्से से ख़ूब कस कर के बाँध दिया। तदान्तर दूसरी नाव के माँझी उस रस्से को खींच कर हमारी नाव को वहाँ से हटा कर दूर ले गये। अब हम लोग उन द्वीप-निवासियों के बाण के लक्ष्य से बाहर निकल गये।

हम लोगों की नाव, जहाज़ और किनारे के बीच से, दूर हटते ही जहाज़ की तोपों से गोले बरसने लगे। जो द्वीपवासी किनारे खड़े थे वे सबके सब उन गोलों की मार से एक ही बार जल भुन कर ख़ाक़ हो गये। हम लोग जहाज़ पर बेखटके सवार हो गये। तब मैंने द्वीपवासियों के अकस्मात् आक्रमण का कारण अनुसन्धान कर के मालूम किया कि हम लोगों के एक नाविक ने उनकी एक स्त्री का अपमान किया था; इसीसे उन लोगों ने सन्धि को तोड़ कर रमणी के अपमान का बदला लेने के लिए एकत्र होकर हम लोगों के नाविकों पर आक्रमण किया था। जो नाविक इस अनर्थ की जड़ था वह हम लोगों के साथ लौट कर न आ सका। हम लोगों ने उसके

प्रत्यागमन की आशा से दो दिन जहाज़ को रोक रक्खा और उसको लौट आने के लिए अनेक प्रकार के संकेत किये। किन्तु संकेत का कोई उत्तर न पाकर हम लोगों ने उसकी आशा छोड़ दी।

किन्तु उसकी कोई ख़बर न पाकर मैं स्थिर न रह सका। इस घटना के तीन दिन बाद मैं अँधेरे में अपने बदन को भली भाँति ढक कर किनारे पर उतरा और उन असभ्य लोगों की खोज में चला। मेरे साथ कुछ नाविक भी चले। मैं अच्छा काम करने जाकर फिर एक भारी अनर्थ कर बैठा।

मेरे साथ क़रीब २०, २२ आदमी बड़े बलिष्ठ थे। दस बजे रात को हम लोग चुपचाप स्थल में उतरे और साथ के लोगों को दो भागों में बाँटकर एक के परिचालन का भार मैंने लिया तथा दूसरे भाग का भार जहाज़ के माँझी ने लिया। हम लोगों ने चन्द्रमा के प्रकाश में देखा कि कुल बत्तीस आदमी हम लोगों की गोली से मर कर समुद्र के किनारे पड़े थे। घायलों को शायद द्वीप-निवासी उठाकर ले गये थे।

मैंने यहीं से जहाज़ में लौट चलने का प्रस्ताव किया किन्तु माँझी को यह प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ। उसने कहा कि "मैं एक बार इन नारकी कुत्तों (इसी तरह अवज्ञा के साथ वह बोला) के शहर में जाऊँगा और वहाँ जाकर उन का धन लूट लाऊँगा। वहाँ जाने से कदाचित् खोये हुए नाविक टाम जेफ़्री का भी कुछ पता लग जाय।" उसने मुझसे भी चलने के लिए अनुरोध किया। किन्तु मैं उसके इस अति साहसिक काम का अनुमोदन न कर सका। मैं उसी घड़ी जहाज़ में लौट आया। मेरे दल के लोग जाने के लिए

मुझसे बार बार आग्रह करने लगे। मैं उन लोगों को रोकने की चेष्टा करने लगा। किन्तु इससे असन्तुष्ट हो वे सबके सब मुझसे बिगड़ गये, और कहने लगे, "तुम हमारे रोकने वाले कौन?" यह कह कर एक एक कर सभी चले गये। मेरे बहुत कहने-सुनने पर एक नाविक और एक लड़का मेरे साथ नाव पर रहा।

जब वे नाविक मेरे आदेश की उपेक्षा कर जाने लगे तब उन्हें मैंने कितना ही समझाया कि तुम्हीं लोगों के जीवन और शुभाशुभ पर जहाज़ का शुभाशुभ अवलम्बित है। तुम लोगों को इस उजड्डपन के लिए यहाँ और परलोक की अदालत में धर्मराज के सामने जवाबदेही करनी होगी। किन्तु कौन किसकी सुनता है? वे लोग शहर में जाने के लिए क्रुद्ध हो उठे थे। मेरा कहना अरण्य-रोदन के समान हुआ। वे इतना कह गये कि "आप रुष्ट न हों, हम लोग अभी एक आध घंटे में लौट आते हैं।" मैंने बड़ी स्पष्टता के साथ उनसे कह दिया, "जाते हो तो जाओ। किन्तु मेरी बात को अच्छी तरह याद रखना, तुम लोगों में कितनों ही की दशा टाम जेफ़्री की भाँति होगी।" जो लोग किसी तरह बच आवेंगे उनकी प्रतीक्षा करके हम लोग बैठ रहे।

वे सबके सब चले गये। यद्यपि यह विषम साहसिक कर्म पागलपन के सिवा और क्या कहा जा सकता है तथापि वे लोग बड़ी सावधानी के साथ जाने लगे। ऐसे साहसी और हथियारबन्द लोग प्रायः बहुत कम ऐसे बुरे काम में प्रवृत्त होते हैं। उन लोगों के साथ बन्दूक़, बर्छा, तलवार, कुल्हाड़ी और बम आदि सभी कुछ यथेष्ट परिमाण में थे।

उन लोगों का प्रधान उद्देश्य था लूटना। उन लोगों ने समझा था कि लूट में बहुत सोना और जवाहरात मिलेंगे। वे लोग घटनाक्रम से एक दम शैतानी से मत्त हो उठे। कुछ आगे बढ़कर उन्होंने देखा कि सिर्फ़ बारह तेरह घर की एक बस्ती है। क्या इस देश का यही शहर है? हा, सभी के मुँह फीके पड़ गये। तथापि एकदम हताश न होकर उन लोगों ने स्थिर किया कि एक बार खोजकर देखना चाहिए कि शहर कहाँ है। किन्तु शहर किस तरफ़ है, इसका पता कैसे लगेगा? यह बात किसीसे पूछने का भी साहस नहीं होता था; क्योंकि बस्ती वाले सो रहे थे। इस सोच विचार में इधर-उधर घूमते फिरते उन लोगों ने एक पेड़ के नीचे एक पशु बँधा हुआ देखा। इसी पशु को उन लोगों ने पथ-प्रदर्शक बनाने का निश्चय किया। "पशु छोड़ देने पर यदि वह छोटी बस्ती की ओर जायगा तब तो शहर का पता लगाना कठिन होगा किन्तु यदि वह शहर का होगा तो शहर ही की ओर जायगा। तब उसके पीछे पीछे हम लोग शहर में सहज ही पहुँच जायँगे। पीछे जो होगा देखा जायगा"। यह सोचकर उन लोगों ने पशु का बन्धन काट दिया। बन्धन कटते ही पशु शहर की ओर चला। ये लोग भी उसके पीछे पीछे चले। थोड़ी देर में वे लोग उसके साथ साथ शहर में पहुँच गये। उन्होंने शहर में घूमकर देखा, प्रायः दो सौ घर की आबादी थी। किसी घर में परिवार की संख्या कुछ अधिक थी। घर सभी फूस के थे।

शहर वाले सभी सो रहे थे। सर्वत्र निद्रादेवी की शान्त निःस्तब्धता विराजमान थी। शहर के निवासी बेचारे स्वप्न में भी न जानते थे कि सभ्यताभिमानी दुरन्त नीचाशय मनुष्यों

का एक दल हमारा सर्वनाश करने के लिए आया है। नाविकों ने आपस में सलाह की कि हम लोग तीन भागों में विभक्त होकर तीन ओर से शहर में आग लगा दें और जो भयार्त नर-नारियाँ घर से बाहर निकलें उन्हें गिरफ़ार करलें। जो कोई इस निष्ठुर कार्य में बाधा डालने आवेगा उसकी क्या दशा होगी, यह कहने की आवश्यकता नहीं। इसके बाद वे लोग बेरोक लूटपाट मचावेंगे।

इस इरादे से कुछ आगे बढ़ कर उन लोगों ने देखा कि एक पेड़ में उन के लापता संगी टाम जेफ्री का धड़ टँगा है। उसका गला कटा है। बदन पर एक भी कपड़ा नहीं है। एक हाथ रस्सी से बँधा है जिसके सहारे वह झूल रहा है। उसके समीप ही एक मकान में समाज के कुछ प्रधान व्यक्ति एकत्र हो आपस में गपशप कर रहे थे। शायद टाम जेफ्री के सन्धिभङ्ग की बात हो रही थी। यह देखकर नाविकों के सिर पर ख़ून सवार हो गया। उन्होंने अपने साथी की मृत्यु का भरपूर बदला लेने की प्रतिज्ञा की और संकल्प किया कि स्त्री-पुरुष बाल-वृद्ध, कोई हो, किसी पर दया न की जाय।

इसके बाद उन लोगों ने घर घर में आग लगा दी। सबसे पहले वही घर जलाया गया जिसमें शहर के मुखिया लोग गप-शप कर रहे थे। फूस का छप्पर था। आग लगते ही ले उड़ा। घर घर आग नाचने लगी। सभी लोग बड़े आराम से पहली नींद सो रहे थे। गृहदाह की बात सुनते ही सब लोग हड़बड़ा उठे। क्या स्त्री क्या पुरुष, डर कर, सभी घर के भीतर से दौड़ कर बाहर हुए। बाहर आते ही वे लोग, अँगरेज़ नर-पिशाचों के हाथ से अशेष यन्त्रणा भोग कर

फिर जलते हुए घर के भीतर ही घुसने लगे। वे लोग उन नर-पिशाचों के तेज़ बरछे की चोट की अपेक्षा धधकती हुई आग का आलिङ्गन अच्छा समझते थे। जहाज़ के माँझी लोग घर के द्वार पर खड़े हो, प्राणभय से भीत, नर-नारियों को बरछे की नोक से बींध कर जलते हुए घर के भीतर लौटा देते थे। जो नहीं लौटते थे उन्हें तलवार से टुकड़े टुकड़े कर के आग में फेंक देते थे। किसीके अङ्ग-प्रत्यङ्ग में बरछी भोंक कर बड़ी निर्दयता के साथ मारते थे। जहाँ बहुत लोगों को एक स्थान में जमा देखते थे वहाँ बम का गोला फेंक कर सभीको चौपट कर अपनी शैतानी का अन्त कर दिखलाते थे।

माँझियों ने अब तक एक भी बन्दूक़ की आवाज़ न की थी, कारण यह कि बन्दूक़ का शब्द सुन कर बहुत लोग जाग उठते। किन्तु थोड़ी ही देर में चारों ओर आग फैल गई। तब सभी जाग गये। फूस का घर झटपट जल कर भस्म होने लगा। आग के दाह से नाविकों को मार्ग में खड़ा होना कठिन हो गया। तब वे भी आग के साथ साथ आगे बढ़ने लगे। वे नाविक रास्ते में जिसको पाते उसीको आग में ढकेल देते थे या उसे तलवार से टुकड़े टुकड़े कर डालते थे। अब वे लोग धड़ाधड़ बन्दूक़ें भी चलाने लगे।

मैं नाव पर से यह भीषण अग्नि-प्रसार देख कर डर गया। जहाज़ का कप्तान सो गया था। माँझियों ने जाकर उसे जगाया। वह आँखें मलता हुआ उठा और उठते ही एकाएक इतनी बड़ी अग्निज्वाला देख कर और बन्दूकों की आवाज़ सुन कर मेरे लिए उद्विग्न हो उठा। यद्यपि उसके पास थोड़े से नाविक रह गये थे तथापि वह तेरह

नाविकों को साथ ले एक नाव पर सवार हो स्वयं किनारे आ पहुँचा ।

मेरा भतीजा (कप्तान) किनारे आकर और दूसरी नाव पर मुझे देख कर बहुत खुश हुआ, किन्तु और लोगों के लिए उसको कम उत्कण्ठा न हुई । तब भी आग वैसे ही धधक रही थी और शोर-गुल भी उसी तरह हो रहा था । ऐसी अवस्था में कुतूहलाक्रान्त चित्त को रोक चुप साध कर बैठ रहना एक प्रकार से असंभव था । भतीजे ने कहा— "जो भाग्य में बदा होगा सो होगा, एक बार वहाँ जाकर देखूँ तो क्या हाल है" । मैं उसे समझाने लगा कि "ऐसा मत करो, क्योंकि जहाज़ का भला-बुरा तुम्हारे ही ऊपर निर्भर है । इसलिए उस भयङ्कर स्थान में तुम्हारा जाना उचित नहीं; बल्कि कहो तो दो आदमी साथ लेकर मैं जाता हूँ और देख आता हूँ कि क्या मामला है ।" मेरा सब समझाना वृथा हुआ । कितना ही मना किया पर उसने न माना । वह चला ही गया । मैं करता ही क्या ? मैं अब हाथ पाँव मोड़ कर चुपचाप बैठा न रह सका । मैं भी उसके साथ साथ चला । जहाज़ के पैंसठ नाविकों में दो व्यक्ति मारे गये, और कुछ पहले ही शहर देखने जा चुके थे, कुछ मेरे साथ चले । सिर्फ़ सोलह आदमी जहाज़ पर रह गये ।

हम लोग इतनी तेज़ी से दौड़ चले कि धरती पर प्रायः पैर न लगते थे । आग को लक्ष्य कर हम लोग उसी तरफ़ दौड़ चले । उस समय रास्ते का ख़याल किसीको थोड़े ही था । समीप जाकर कातर नर-नारियों का आर्तनाद सुन कर हम लोगों का हृदय काँप उठा । इतिहास में कितने ही नगरों

के विध्वंस की बात पढ़ी है, एक ही दिन में सहस्र सहस्र नर-नारी और बाल-वृद्धों के विनाश का वृत्तान्त सुना है किन्तु मेरी धारणा में न था कि वह व्यापार इतना घृणोत्पादक और बीभत्स होता है।

हम लोग शहर में जा पहुँचे। किन्तु आग को चीर कर किसका सामर्थ्य था जो रास्ते पर चलता? कितने ही घर जल कर खाक़ हो गये थे। उस भस्म-राशि में और उसके पास कितने ही जले और अस्त्र-हत लोग इधर उधर मरे पड़े थे। चारों ओर हाहाकार मच रहा था। हम लोगों के साथ के आदमी इतने बड़े शैतान और राक्षस होंगे, यह विश्वास के बाहर की बात थी। जो लोग ऐसा अमानुषी काम कर सकते हैं उनका उचित दण्ड घोर यन्त्रणामय मृत्यु के सिवा और हो ही क्या सकता है?

हम लोग धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे। जहाँ आग खूब तेज़ी पर थी वहाँ जाकर देखा कि तीन स्त्रियाँ बिलकुल नङ्ग-धड़ङ्ग इस प्रकार दौड़ी हुई आ रही थीं जैसे उड़ती आती हों और उनके पीछे वहीं के सोलह सत्रह पुरुष उसी तरह भय से व्याकुल होकर बेतहाशा दौड़े आ रहे थे। तीन नृशंस अँगरेज़ उनका पीछा कर रहे थे। जब वे उन भगोड़े स्त्री-पुरुषों को न पकड़ सके तब उन पर गोली चलाई। हम लोगों की आँखों के सामने ही एक आदमी गोली की चोट खा कर गिर पड़ा। बचे हुए स्त्री-पुरुषों ने दौड़ कर आते आते सामने हम लोगों को देखा। वे लोग हम लोगों को भी हत्याकारी शत्रु समझ कर चिल्ला उठे। पीछे शत्रु, आगे शत्रु; वे लोग भागें तो किधर? स्त्रियाँ ऐसी भयभीत हुईं कि उनमें दो मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं।

यह घोर अत्याचार देखकर मेरा सर्वाङ्ग शून्य सा हो गया। मेरा अन्तःकरण विकल हो उठा। उन नगर-निवासियों को खदेड़ते हुए वे दुष्ट नाविक यदि मेरे पास आते तो आश्चर्य नहीं कि मैं उनको गोली मार देता। हम लोगों ने उन भयार्त नर-नारियों को अभय दिया। तब वे हम लोगों के सामने घुटने टेक कर बैठे और अत्यन्त कातर हो रो रोकर प्राण की भिक्षा चाहने लगे। हम लोगों ने उन्हें पूर्णरूप से आश्वासन दिया। तब वे इकट्ठे होकर हमारा आश्रय ग्रहण कर हमारे पीछे पीछे चले। मैंने अपने साथवाले नाविकों से कहा—"तुम लोग उन आततायी नाविकों में से किसी के साथ जा मिलो। किन्तु खबरदार! किसीको व्यर्थ न सताना। उन उद्दण्ड माँझियों को समझा दो कि रात में ही यहाँ से भाग चलें नहीं तो सवेरे लाखों आदमी इस पैशाचिक कर्म का बदला लेने आवेंगे।" इसके बाद हमने दो आदमियों को साथ ले उन भयभीत नर-नारियों के समीप जाकर बड़ा ही भयानक दृश्य देखा। हाय! हाय! कोई कोई भयानक रूप से आग में पड़कर झुलस गये हैं। एक स्त्री दौड़ने के समय अग्निकुण्ड में जा गिरी थी, उसका सारा अङ्ग जल गया था। दो एक व्यक्तियों की पीठ और पसुली में माँझियों ने तलवार मार दी थी। एक आदमी को किसीने गोली मार दी थी। वह मेरी आँखों के सामने ही मर गया।

इस राक्षसी व्यवहार का कारण जानने के लिए मेरे मन में बड़ी ही व्यग्रता हो रही थी। किन्तु जानता कैसे? द्वीप-निवासियों ने इशारे से जताया कि इस आकस्मिक आक्रमण का कारण हम कुछ भी नहीं जानते। मुझसे अब रहा न गया। मैं शहर के भीतर जाने और जिस तरह हो इस घोर

हत्याकाण्ड को रोकने के लिए चञ्चल हो उठा। मैं अपने साथियों को पुकार कर चलना ही चाहता था कि इतने में जहाज़ का माँझी और चार नाविक हताहत स्त्री-पुरुषों के शरीर को पैरों से कुचलते, उछलते-कूदते मेरे पास आये।

उनका शरीर लहू से लथपथ था तो भी उन लोगों की रक्तपिपासा अब तक मिटी न थी। भूखे बाघ की भाँति वे लोग तब भी अनावश्यक नरहत्या के लिए लोलुप बने फिरते थे। हमारे साथियों ने उन्हें पुकार कर बुलाना चाहा, पर वह पुकार क्या उनके कानों में प्रवेश करती थी? बड़ी बड़ी मुश्किल से एक ने हम लोगों की पुकार पर ध्यान दिया। पीछे सभी मेरे पास आ गये।

माँझी हम लोगों को देखते ही मारे उल्लास के सिंहनाद कर उठा। उसने समझा कि उनके इस पैशाचिक कर्म्म के पृष्ठ-पोषक और भी कई व्यक्ति आये हैं। वह मेरी बात सुनने की कुछ अपेक्षा न करके उच्चस्वर से बोला—"कप्तान, कप्तान! आप आये हैं, अच्छा हुआ। हम लोगों को अब भी आधा काम करना है। टाम जेफ्री के सिर में जितने बाल हैं उतने मनुष्यों का जब तक बलिदान न करेंगे तब तक हम लोग दम न लेंगे। इन दोज़खी कुत्तों का इस दुनिया से नाम-निशान मिटाकर ही यहाँ से हम लोग जायँगे। अभी क्या हुआ है?" यह कहकर उन लोगों ने दौड़ लगाई। मेरी एक भी बात सुनने की अपेक्षा न की।

उनको रोकने के लिए मैंने चिल्लाकर कहा—"अरे नीच, पिशाच! तुझे क्या सूझा है? ख़बरदार! अब एक आदमी को भी तू न मार सकेगा। किसी पर हाथ चलाया कि समझ एक

तू अपनी जान से हाथ धो बैठेगा।" माँझी इस बात से ज़रा ठिठक कर बोला—"क्यों महाशय! क्या आप नहीं जानते कि इन सालों ने कैसा अनर्थ किया है? यदि नहीं जानते तो इस तरफ़ आकर देखिए।" उसने मुझे अपने साथ ले जाकर टाम जेफ़्री की टँगी हुई लाश दिखला दी।

यह देखकर मेरा भी चित्त उत्तेजित हो उठा। किन्तु मैंने अपने हृदय के आवेग को रोक कर विचार किया कि इस हत्या का बदला बहुत अधिक लिया जा चुका है। इससे मैं चुप हो रहा। किन्तु मेरे साथी लोग चिढ़ गये, यहाँ तक कि मेरा भतीजा कप्तान पर्यन्त बिगड़ उठा। अपने पोताध्यक्ष को अपने दल में सम्मिलित देखकर नाविकगण उद्दण्ड होकर हत्या में प्रवृत्त हुए। मैं उन लोगों को रोकने में अक्षम हो चिन्ताकुल चित्त से लौट चला। हाय! ऐसा निर्दय हत्याकाण्ड क्या देखने की वस्तु है! इन आक्रान्त घायल नर-नारियों का आर्तनाद क्या सुना जाता था!

मैं किसी को नहीं लौटा सका। केवल तीन आदमी मेरे साथ लौट चले। किन्तु इस घोर अत्याचार के समय ऐसे बलहीन होकर लौट जाना हमारे लिए नितान्त असम साहस का काम हुआ। सुबह की सफ़ेदी आसमान में छाती जा रही थी। उधर हम लोगों के अत्याचार की ख़बर गाँव गाँव में फैलती जा रही थी। एक गाँव में चालीस आदमी धनुष, बाण, और भाले आदि अनेक अस्त्र लिये खड़े थे। दैवयोग से हम लोग उस रास्ते से न जाकर दूसरी राह से एकदम समुद्र के किनारे जा पहुँचे। उस रास्ते से जाते तो अनर्थ होता। हम लोग जब समुद्र-तट पर पहुँचे तब प्रातःकाल की

प्रभा स्पष्ट हो चुकी थी। मैं नाव के सहारे जहाज़ में जा बैठा और नाव को वापस कर दिया। यदि कोई वहाँ से लौट आवे तो उसे चढ़ाकर ले आवेगी।

धीरे धीरे आग बुझ गई। हल्ला भी कम हुआ। इससे जान पड़ा कि वे अत्याचारी अब लौटे आ रहे हैं। कुछ देर के बाद एक साथ कई बन्दूकों की आवाज़ सुन पड़ी। रास्ते में ग्रामवासियों के सोलह मनुष्यों को मारकर और कितने ही घरों को जलाकर कीर्तिमान् लोग लौट आये। वे दल बाँध कर नहीं आते थे। सभी अलग अलग घूमते फिरते आ रहे थे। यदि कोई साहस करके उन पर आक्रमण करता था तो उसका प्राण बचना कठिन हो जाता था। समूचे देश में बड़ी सनसनी फैल गई। पाँच नाविकों को देखकर सौ द्वीपनिवासी जान लेकर भागते थे। अँधेरे में एकाएक आक्रान्त होने के कारण उनकी अक्ल यहाँ तक मारी गई थी कि उनमें किसी को हिम्मत न पड़ती थी कि कोई उन दुराचारियों के दुष्कर्म में बाधा डाले। इससे हमारे नृशंस नाविकों को ज़रा भी चोट न आई; सिर्फ़ एक आदमी का पैर मोच खा गया था, और एक आदमी का हाथ जल गया था।

मैं सभी के ऊपर अत्यन्त रुष्ट था, विशेष कर अपने भतीजे के ऊपर। वह कैसा निर्बुद्धि था, वह जहाज़ का कप्तान होकर ऐसे बुरे कामों में धँस पड़ा! जहाज़ का भला-बुरा सब उसी के ऊपर निर्भर था। उसने अपने अधीन कर्मचारियों को विपत्तिजनक नीचकर्म से निवृत्त न करके उन्हें और उत्तेजित किया। मेरी झिड़कियाँ खाकर मेरे भतीजे ने बड़ी मुलायमियत के साथ मुझे उत्तर दिया—"हाँ, अन्याय मुझ से बेशक हुआ

है। पर क्या किया जाय? मैं भी मनुष्य ही हूँ। अपने नाविक की ऐसी निर्दय हत्या देखकर मैं स्थिर न रह सका।" नाविकगण जानते थे कि वे मेरे अधीन नहीं हैं। इसलिए मेरे तिरस्कार की उन्होंने कुछ परवा न की।

तथापि मैंने उन लोगों का तिरस्कार करना न छोड़ा। जभी मौक़ा मिल जाता उन लोगों का तिरस्कार किये बिना न रहता था। माँझी अपने पक्ष के समर्थन की चेष्टा करते थे। मैं उन लोगों को ख़ूनी कहता था और जब तब उन लोगों से कह दिया करता था कि तुम लोग भगवान् के रोषानल में अवश्य पड़ोगे। तुम्हारी वाणिज्ययात्रा कभी शुभप्रद न होगी।

भारत में क्रूसो का निर्वासन

हम लोगों ने मदागास्कर से चल करके भारत की ओर जाने के रास्ते में फ़ारस की खाड़ी में प्रवेश कर के अरब के उपकूल में जहाज़ लगाया। हमारे पाँच नाविक साहस कर के किनारे उतरे; किन्तु फिर उन का पता न मिला कि वे लोग कहाँ गये, क्या हुए। या तो अरब के लोगों ने उन्हें मार डाला होगा या वे लोग उन्हें नौकर बनाने के हेतु पकड़ ले गये होंगे। मैंने अन्यान्य नाविकों से तिरस्कार-पूर्वक कहा—"यह भगवान् का ही दण्ड है।" इसपर माँझी रुष्ट होकर बोला—"इन पाँचों में एक व्यक्ति भी मदागास्कर के हत्याकाण्ड में लिप्त न था, तब उनके ऊपर भगवान् का यह दण्ड क्यों हुआ?" मैंने कहा—सङ्ग-दोष से।

मैं जो नाविकों का उनकी अन्याय-परता और नृशंसता के लिए जब तब तिरस्कार किया करता था उसका फल

उलटा ही हुआ। "उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्॥" जो माँझी उस अत्याचार का अगुआ था वह एक दिन बड़े निर्भीक भाव से मेरे पास आकर मेरी ओर लक्ष्य कर के बोला—तुम कौन होते हो जो रात-दिन इस बात को लेकर उपदेश की झड़ी लगाये रहते हो, और हम लोगों को झिड़कियाँ बताते हो? तुम तो इस जहाज़ के मामूली यात्री हो। हम लोगों पर तुम इतनी हुकूमत क्यों करते हो? मैं देखता हूँ, तुम हम लोगों को फँसाने की चेष्टा कर रहे हो। इँगलैंड जाकर हम लोगों को तुम क़ानून के जुर्म में फँसा कर, मालूम होता है, भारी फ़साद उठाओगे। इसलिए अभी कहे देता हूँ कि यदि तुम मौन साध कर भले आदमी की तरह न रहोगे तो तुम्हारे हक़ में अच्छा न होगा।

मैंने धीरता-पूर्वक उसकी सब बातें चुपचाप सुन लीं। इसके बाद मैंने गम्भीरता-पूर्वक कहा—"तुम लोगों के व्यवहार से मेरे चित्त को सन्तोष नहीं होता। इसीसे मैं बराबर तुम्हारे इस काम में बाधा डालता आता हूँ। इतना कहने का अधिकार प्रायः सब को है। इसे तुम प्रभुता समझो या जो तुम्हारे जी में आवे सो समझो।" यह कहते कहते ज़रा मैं भी क्रुद्ध हो उठा।

माँझी इस पर कुछ न बोला। मैंने समझा, विवाद यहीं तक रहा। इतने में हम लोग कारोमण्डल उपकूल से हो कर भारत में पहुँच गये। वह देश देखने के लिए मैं किनारे उतर पड़ा। सन्ध्या समय जहाज़ पर लौट जाने का उद्योग कर रहा था कि जहाज़ से एक आदमी ने आकर मुझसे कहा, "आप नाव पर चढ़ने का कष्ट न उठावें। आपको जहाज़

पर जाने की मनाही है।" इस अतर्कित संवाद से जो मेरे मन में क्षोभ और आश्चर्य हुआ, वह कहने का नहीं। मैंने पूछा—"तुमसे यह किसने कहा है" ? उस नाविक ने कहा—माँझी ने।

मैंने उससे और कुछ न पूछ कर जहाज़ के भण्डारी को जहाज़ पर भेज कर अपने भतीजे को यह ख़बर दी। किन्तु यह ख़बर न देने से भी काम चल जाता। मेरे भतीजे को यह हाल पहले ही मालूम हो चुका था। जहाज़ से उतर कर मैं ज्योंही स्थल में आया त्योंही माँझी प्रभृति प्रधान नाविकों ने कप्तान के पास जाकर मेरे ऊपर नालिश की और कहा, हम लोग उस आदमी के साथ कभी एक जहाज़ पर न रहेंगे। अच्छा हुआ कि वह इस जहाज़ पर से आप ही उतर गया, नहीं तो हम लोग उसे ज़बर्दस्ती इस जहाज़ पर से उतार देते। यदि आप उसका पक्ष ले कर हम लोगों की प्रार्थना पर ध्यान न देंगे तो हम लोग सबके सब जहाज़ छोड़ कर चले जायँगे। माँझी का इशारा पा कर सभी नाविक एक स्वर से बोल उठे—हाँ, माँझी का कहना सही है।

जहाज़ का कप्तान (मेरा भतीजा) बड़ा ही समझदार और दीर्घदर्शी था। उसने इस उत्कट प्रस्ताव से क्षुब्ध होने पर भी गम्भीर-भाव धारण कर के उन लोगों से कहा "इसका जवाब मैं सोच कर दूँगा। जब तक उनसे इस विषय में सलाह न कर लूँगा तब तक तुम लोगों से कुछ न कह सकूँगा।" उसने उन लोगों के इस प्रस्ताव की अयुक्तता दिखलाने की कुछ चेष्टा की किन्तु नाविकों ने कप्तान के मुँह के सामने ही प्रतिज्ञा कर के स्पष्ट रूप से कह दिया कि

यदि कप्तान हम लोगों की बात न मानेंगे तो हम लोग जहाज़ से उतर कर चले जायँगे।

मेरा भतीजा बड़े संकट में पड़ा। नाविकों की बात मानता तो मुझसे उसे नाता तोड़ना पड़ता है और यदि मेरा पक्ष लेता है तो वे लोग बिगड़ कर चले जायँगे। नाविक न रहने से जहाज़ कैसे चलेगा? किन्तु उन लोगों के कारण वह मुझको कैसे छोड़ दे, इस चिन्ता ने उसके चित्त को मथ डाला। तब उसने कुछ बात बनाकर उन लोगों से कहा—"मेरे चचा साहब इस जहाज़ के हिस्सेदार हैं, इसलिए उनको अपनी निज की सम्पत्ति से दूर करने वाला मैं कौन हूँ? तुम लोग रहना न चाहो तो जहाज़ छोड़ कर चले जाओ। किन्तु इस बात को भली भाँति याद रक्खो कि देश लौटने पर तुम लोग सहज ही न छुट सकोगे। बेहतर होगा कि माँझी मेरे साथ चले। इस विषय में सब आदमी मिल कर जो राय तय करेंगे वही होगा।" माँझी ने कहा—"उसके साथ हम लोगों का कोई सम्पर्क नहीं है। वह यदि जहाज़ पर आवेगा तो हम लोग उतर जायँगे।" तब कप्तान ने उन सबों से कहा—अच्छा, तो मैं ही जा कर उनको ख़बर देता हूँ।

जब मैंने भण्डारी को उसके पास भेजा उसके कुछ ही देर बाद मेरा भतीजा मेरे पास आ पहुँचा। उसे देख कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे इस बात का भय था कि शायद नाविकगण उसे मुझसे भेंट न करने दें। इस दूर देश में मुझे स्वजन-हीन निःसहाय अवस्था में छोड़ जाने से मैं निःसन्देह बड़ी विपत्ति में पड़ जाता। मैं उस निर्जन द्वीप में जैसा पहले पहल जा पड़ा था, उसकी अपेक्षा भी यहाँ की अवस्था शोच-

नीय हो उठती। भतीजे ने मुझसे नाविकों के असहनीय संकल्प की बात कही। मैंने उससे कहा कि इसके लिए चिन्ता करने से कोई फल न होगा। मेरा माल-असबाब और कुछ रुपया मुझको देते जाओ, तो मैं किसी तरह देश लौट जाऊँगा।

इस बात से मेरा भतीजा अत्यन्त दुखी हुआ किन्तु इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के सिवा और उपाय ही क्या था? उसने जहाज़ पर लौट कर नाविकों से कहा कि मेरे चचा अब इस जहाज़ पर न जायँगे तब सभी नाविक अपने अपने काम पर गये। मेरे भतीजे ने मेरी सब चीज़ें जहाज़ पर से उतार दीं। मैं अपने देश से बहुत दूर अपरिचित देश में निर्वासित हुआ।

मैं छाती को पत्थर सी किये खड़ा खड़ा देखता रहा। सचमुच ही जहाज़ मुझको छोड़ पाल तान कर चल दिया। मेरा भतीजा मेरे आश्वासन के लिए एक किरानी और अपने एक नौकर को मेरे पास छोड़ गया। मैंने एक अँगरेज़ रमणी के घर में डेरा किया। वहाँ कई एक फ्रांसदेशी, यहूदी, और एक व्यवसायी अँगरेज़ भी पहले ही से ठहरा था। यहाँ सुख स्वच्छन्द से मैंने नौ दस महीने बिताये। मेरे पास काफ़ी रुपये थे और कुछ वाणिज्य की वस्तुएँ भी थीं। उन वस्तुओं को बेच कर मैंने अच्छे हीरे मोल लिये। अब मैं बेख़ौफ़ अपने सर्वस्व को साथ ले कर देश लौट जा सकूँगा।

क्रूसो का वाणिज्य

मेरा बहुत समय भारतवर्ष के पूर्वी भाग बङ्गाल में ही बीत गया। देश-लौटने के जितने उपाय मुझे बतलाये जाते थे

उन में एक भी मेरे पसन्द न आता था। आख़िर एक दिन अँगरेज़ वणिक् ने मुझसे कहा—आप मेरे स्वदेशी हैं। आपसे मुझे एक प्रस्ताव करना है। मैं आशा करता हूँ कि आप उससे असन्तुष्ट न होंगे। हम लोग देश से बहुत दूर आ पड़े हैं—आप दैवयोग से और मैं अपनी इच्छा से। किन्तु परिणाम में दोनों की अवस्था अभी बराबर है। जो हो, परन्तु यह देश ऐसा है कि यहाँ वाणिज्य करने से अपने देश की एक मुट्ठी धूल के बदले मुट्ठी भर सोना मिल सकता है। आइए, दस हज़ार रुपया आप दीजिए और दस हज़ार मैं देता हूँ। हम लोगों की पसन्द लायक़ यदि कोई जहाज़ मिल जाय तो भाड़े पर लेकर हम लोग चीन वालों के साथ उस मूलधन से व्यवसाय करने जायँगे। आप होंगे जहाज़ के अध्यक्ष और मैं बनूँगा व्यापारी। आलसी होकर समय बिताना ठीक नहीं। संसार में कोई निर्व्यवसायी नहीं है। सभी अपनी अपनी उन्नति में लगे रहते हैं। सभी कर्म-शील हैं। ग्रह-नक्षत्र भी एक जगह बैठे नहीं रहते। सभी जीव जब अपने अपने काम पर तत्पर रहा करते हैं तब हमी लोग मौन साध कर क्यों बैठे रहें?

यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा। यद्यपि वाणिज्य मेरे स्वभाव के अनुकूल नहीं तथापि भ्रमण ही सही। जिस देश को मैंने पहले कभी नहीं देखा है उसके देखने की लालसा मेरे मन में जागती ही रहती थी। वहाँ जाने की संभावना मेरे लिए कभी अप्रीतिकारक नहीं हो सकती थी।

मनोनुकूल जहाज़ मिलने में बहुत दिन लगे। जहाज़ मिला भी तो अँगरेज़ नाविक नहीं मिलते थे। बड़े बड़े कष्ट से भेंट, एक माँझी और एक गोलन्दाज़ का प्रबन्ध किया।

एक मिस्त्री और तीन नाविक भी मिल गये। बाक़ी भारतीय नाविक नियुक्त कर लिये गये।

हम लोग सुमात्रा टापू की सरहद से होते हुए स्याम देश में पहुँचे। वहाँ हम लोगों ने वस्तुएँ बेच कर अफ़ीम और कुछ अर्क़ ख़रीदे। उस समय चीन देश में अफ़ीम की बड़ी खपत थी। आठ महीने वाणिज्य करने के बाद हम फिर भारत को लौट आये। इन देशों में तिजारत कर के द्रव्योपार्जन की सुविधा और विलक्षण लाभ देख कर मेरा जी बहुत ख़ुश हुआ। मेरी उम्र यदि एक चौथाई अर्थात् १५, २० वर्ष और कम होती तो मैं इस देश को छोड़ कर द्रव्य खोजने के लिए अन्यत्र कहीं न जाता। किन्तु मेरे ऐसे साठ वर्ष के वुड्ढे और प्रचुर धन-शाली व्यक्ति को केवल लाभ के सम्बन्ध से इन देशों पर विशेष मोह न था। क्योंकि मैं तो रुपया कमाने के लिए आया नहीं था। देश देखने ही के लिए मेरा आना हुआ था। सो इन नये देशों के दर्शन हो गये। अब देश लौटने के लिए जी अकुलाने लगा। देश में रहने से बाहर जाने के लिए चित्त व्यग्र होता था और बाहर आने पर देश जाने के लिए जी में छटपटी लगी रहती थी। मेरे साथी अँगरेज़ पूरे व्यवसायी थे। ये अपने व्यवसाय के पीछे दिन-रात हैरान और परेशान रहते थे। जिधर कुछ अधिक लाभ देखते उधर ही दौड़ पड़ते थे। मेरा ख़याल केवल घूमने-फिरने की ओर था। एक स्थान को दोबारा देखना मेरी आँखों में खटकता था। मेरे साझी ने मुझसे यह प्रस्ताव किया कि अब की बार मसाला टापू में जाकर एक जहाज़ भर लौंग लाकर व्यवसाय किया जाय। यद्यपि वाणिज्य-व्यवसाय में मेरा पूर्ण उत्साह नहीं था तथापि "बैठे से बेगार भली" की कहावत चरितार्थ करना उचित

जान मैं लवङ्ग खरीदने चला। मैं बोर्नियो प्रभृति टापुओं में घूमता-फिरता पाँच महीने में फिर अपने अड्डे पर आ पहुँचा और फ़ारस के सौदागरों के हाथ लवङ्ग और जायफल बेच कर एक के पाँच वसूल कर मैंने बहुत धन कमाया।

हम लोगों ने लाभ का रुपया आपस में बाँट लिया। मेरे साझीदार अँगरेज़ ने मुझ पर ज़रा आक्षेप करके कहा—"कहिए साहब! आलसी होकर बैठ रहने की अपेक्षा इधर उधर घूमना-फिरना अच्छा है या नहीं?" मैंने कहा— हाँ, अच्छा तो है, किन्तु आप मेरे स्वभाव को भली भाँति नहीं जानते। जब भ्रमण का उन्माद मेरे सिर पर सवार होगा तब आपको दम लेने की भी फ़ुरसत न दूँगा। आपकी नाक में रस्सी डाल कर अपने साथ साथ लिये फिरूँगा।

चोरी के जहाज़ पर क्रूसो

इसके कुछ दिन बाद बाताविया से एक पोर्तगाल का जहाज़ आया। जहाज़ के मालिक ने उस जहाज़ के बेचने का विज्ञापन दिया। मैंने जहाज़ मोल लेने का निश्चय करके अपने साझी से कहा। वे भी राज़ी हुए। हमने मूल्य देकर जहाज़ ले लिया। हमने जहाज़ के नाविकों को नौकर रखने की इच्छा से उनको खोजने जाकर देखा कि जहाज़ पर एक भी प्राणी नहीं है। सभी न मालूम कहाँ चम्पत हुए। ख़बर मिली कि वे लोग यहाँ से मुग़लों की राजधानी आगरा जायँगे। वहाँ से सूरत, और सूरत से फ़ारस की खाड़ी होते हुए अपने देश को लौट जायँगे।

देश लौटने के लिए ऐसे संगी और सुयोग को हाथ से जाते देख मेरे मन में कई दिनों तक शान्ति न रही। नाविकों के रहने से तिजारत करने जाकर एक के दो करता। नये नये देश देखने में आते और जब चाहता घर को लौट चलता। किन्तु कुछ दिन के बाद मालूम हुआ कि वे लोग (अर्थात् जहाज़ के विक्रेता और उनके साथी) सत्यवादी नहीं, बड़े धूर्त थे। यह जहाज़ मलयदेश में वाणिज्य करने गया था। जहाज़ के कप्तान और कई नाविकों को मलयवासियों ने मार कर समुद्र में डाल दिया। इस दुर्वृत्तियोग से नाविक जहाज़ लेकर यहाँ भाग आये और दूसरे का जहाज़ अपने नाम से बेच कर चम्पत हुए।

हम लोगों ने इस बात को सुन कर भी इस पर विशेष ध्यान न दिया। उन लोगों ने चोरी की तो की, उससे हम लोगों का क्या? हम लोगों ने तो वाजिब दाम दे कर ख़रीदा है। चोरी का माल समझ कर तो लिया ही नहीं। हम लोगों ने कई अँगरेज़ और देशी नाविकों को नौकर रख करके फ़िलिपाइन और मलका आदि टापुओं से लवङ्ग और इलायची प्रभृति सौदा लाने के हेतु जाने की तैयारी की।

रवाना होने पर कई दिन तक हम लोग प्रतिकूल वायु के कारण मलके की खाड़ी में अटक रहे। हवा का ज़ोर कुछ कम पड़ने पर जहाज़ का लंगर उठा लिया गया। समुद्र में प्रवेश करने पर देखा कि जहाज़ के भीतर पानी आता है। हम लोग बहुत चेष्टा करने पर भी निश्चय न कर सके कि छिद्र कहाँ है, किधर से पानी आ रहा है। तब हम लोगों ने किसी बन्दर में आश्रय लेने के लिए कम्बोडिया नदी के मुहाने में प्रवेश किया।

कम्बोडिया नदी के किनारे जहाज़ लगा कर उसकी मरम्मत की तैयारी की जा रही थी। इसी अवसर पर एक दिन एक अँगरेज़ ने आकर मुझसे कहा—"महाशय! आप मेरे अपरिचित हैं तथापि मैं आपसे एक ऐसी बात कहना चाहता हूँ जिससे आपका विशेष उपकार होगा।" मैं उसका इङ्गित, आकार और चेष्टा देख कर विस्मित हो उसके मुँह की ओर चुपचाप देखता रहा। सचमुच ही मैंने उसको कभी कहीं नहीं देखा था। वह मुझसे क्या कहेगा? मैंने पूछा "एकाएक आपको परोपकार की इच्छा इतनी प्रबल क्यों हो उठी?" उसने कहा—"मैं देखता हूँ कि आप बड़ी विपत्ति में फँसे हैं पर आपको कुछ मालूम नहीं कि क्या हो रहा है।" मैंने कहा—विपत्ति की बात तो मैं भी प्रत्यक्ष देख रहा हूँ कि मेरे जहाज़ में पानी आ रहा है। इसके पेंदे में कहाँ छेद है, यह खोजने से भी नहीं मिलता। इससे कल जहाज़ को किनारे लगा कर देखूँगा कि इसमें कहाँ छेद है।

उसने कहा—"छेद हो या न हो,-खोजने से वह मिले चाहे न मिले,—जहाज़ को कल किनारे लगाना बुद्धिमानी का काम न होगा। क्या आप नहीं जानते कि दो बड़े अँगरेज़ी जहाज़ और तीन पोर्चगीज़ जहाज़ यहाँ से बहुत क़रीब ही आ लगे हैं?" मैंने कहा—"लगे रहें, इससे मुझे क्या?" उस व्यक्ति ने कहा—"जो लोग आपकी भाँति मतलबी काम में लगे रहते हैं वे आसपास की कोई खोज-ख़बर न रखकर निश्चिन्त रहें, यह बड़े आश्चर्य की बात है। क्या आप अपने मन में यह समझते हैं कि आप लोग उनका मुक़ाबला कर सकेंगे?" उसकी ऐसी भेद-भाव से भरी ऊटपटाँग बातें सुन कर मुझे बड़ा कुतूहल हुआ। मैंने कहा—"भाई, साफ़ साफ़

क्यों नहीं कह डालते कि क्या मामला है? हम लोग न चोर हैं न डाकू हैं, तब हम लोगों को किसीसे डरने की क्या वजह हो सकती है?" उसने कहा—"मैं देखता हूँ कि आप फ़ायदे की बात न सुनेंगे, परामर्श की बात पर ध्यान न देंगे। यदि मैं दूसरे किसीका इतना बड़ा उपकार करता तो वह आपकी अपेक्षा मेरे साथ अवश्य ही अच्छा व्यवहार करता। ठहरिए, यदि आप इसी घड़ी जहाज़ को यहाँ से अन्यत्र न ले जायँगे तो आप ही इसका मज़ा चखेंगे। जब वे लोग आपको लुटेरा समझ कर फाँसी देंगे तब आपको मेरी कृतज्ञता की बात सूझेगी।" मैंने कहा—"जो व्यक्ति मेरे उपकार की चेष्टा कर रहे हैं उनके निकट मैं कभी अकृतज्ञ नहीं हो सकता। जब आप कह रहे हैं कि मेरी विपत्ति आसन्न है तब मैं अभी यहाँ से भागता हूँ। किन्तु भाई साहब, क्या आप भय का कारण कुछ खुलासा करके नहीं बतला सकते?" उसने कहा—"मुख़्तसर बात इतनी ही है कि तुम यह जहाज़ लेकर सुमात्रा टापू गये थे। तुम्हारे कप्तान और कई एक नाविक वहाँ मारे गये। इसके बाद तुम जहाज़ लेकर वहाँ से चम्पत हुए। इस समय तुम लोग उद्दण्ड होकर समुद्र में जहाज़ पकड़ते फिरते हो। यह ख़बर तुम्हारे निकट नई नहीं है। यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, किन्तु अब किसी बड़े जहाज़ के हाथ पड़ जाओगे तो तुम्हारा उद्धार होना कठिन है।" मैंने आगे-पीछे की बातें सोचकर कहा—"भाई, इतनी देर बाद तुमने सब बातें सीधे तौर से कह सुनाईं। यद्यपि हम लोगों ने यह जहाज़ जैसा आप समझते हैं उस तरह नहीं लिया है तो भी आपके कथनानुसार हम लोग अभी यहाँ से भागते हैं। किन्तु मेरे

मित्र! मैं तुम्हारे इस उपकार का बदला कैसे चुकाऊँगा?" उसने कहा—मैं नाविक हूँ और एक पोर्चुगीज़ मेरा सङ्गी है। हमारा आठ नौ महीने का वेतन बाक़ी है। यदि आप वह दे दें तो हम आप ही के यहाँ रह जायँ। इसके बाद जो आपके धर्म में आवे, हमें दीजिएगा।

मैं इस शर्त पर राज़ी होकर उन्हें साथ ले जहाज़ पर सवार हुआ। जहाज़ पर पाँव रखते ही मेरा साथी अँगरेज़ ख़ुशी से चिल्ला कर बोला—वाह, वाह, छेद तो बन्द हो गया। बिलकुल बन्द हो गया।

मैं—सच कहो, धन्य परमेश्वर! तो अब देर करने की क्या ज़रूरत? अभी लंगर उठाओ।

शरीक—लंगर उठावें! यह क्यों?

मैं—इस प्रश्न का उत्तर पीछे दूँगा। अभी एक मिनट भी विलम्ब करने का समय नहीं है। सभी लोग मिल कर जहाज़ को शीघ्र यहाँ से ले चलो।

सभी लोगों ने बड़े अचम्भे में आकर तुरन्त जहाज़ खोल दिया। मैं अपने साथी अँगरेज़ को कमरे में बुला कर यह सब वृत्तान्त कही रहा था कि इतने में एक नाविक ने आकर ख़बर दी—हम लोगों को पकड़ने के लिए पाँच जहाज़ बड़ी तेज़ी से दौड़े आ रहे हैं।

मैंने सब नाविकों से कह दिया कि वे लोग हमें लुटेरे (जलदस्यु) समझ कर पकड़ने आ रहे हैं। यदि तुम लोग हमारी सहायता करने को प्रस्तुत हो तो मैं उन लोगों से एक बार भिड़ जाऊँ। मेरी राय मान कर सभी ने मेरी आज्ञा का पालन करना स्वीकार किया।

जहाज़ के गोलन्दाज़ ने टूटे फूटे लोहे के काँटों और छड़ों से और जो कुछ कठिन पदार्थ हाथ में आ गये उनसे दो तोपें भर रक्खीं। हमारा जहाज़ अनुकूल वायु पाकर सुदूर समुद्र में ठिकाने के साथ चला जा रहा था। किन्तु कई नावें पाल तान कर तीर की तरह तीव्रगति से पीछे आ रही थीं। दो नावें बड़े वेग से हमारी ओर आरही थीं। वे दोनों कुछ देर में ज़रूर ही हमारे जहाज़ के पास पहुँच जायँगी—यह जान कर हम लोगों ने तोप की एक खाली आवाज़ की। किन्तु वे इसको कुछ परवा न कर के अग्रसर होने लगीं। तब हम लोगों ने श्वेत-पताका उड़ा कर सन्धि का संकेत किया। पर वे उसे भी अग्राह्य कर के समीप आ गईं। तब हम लोगों ने सफ़ेद झण्डी हटा कर विरोध-सूचक लाल-पताका उड़ाई और भेरी बजा कर उन्हें दूर रहने को कहा। किन्तु इस पर भी उन्होंने कुछ ध्यान न दिया। वे लोग और भी तेज़ी से आगे की ओर बढ़ने लगे। तब जहाज़ को उनके सामने तिर्यक् खड़ा कर के एक ही बार पाँच तोपें छोड़ीं। गोले की चोट से एक नाव का पिछला हिस्सा एकदम उड़ गया। नाव के सवार झटपट पाल गिरा कर नाव के पिछले भाग की ओर इसलिए एकत्र हो गये कि नाव कहीं डूब न जाय। अब हम लोग उस नाव के आक्रमण से निश्चिन्त हुए। पीछे की नाव अग्रसर होकर टूटी हुई नाव के सवारों को लेने लगी और पहली नाव एकाएक हमारे जहाज़ के पास आ पहुँची। हम लोगों ने उन्हें फिर समझाने की चेष्टा की। पर वे लोग हमारी बात को अनसुनी कर के हमारे जहाज़ पर चढ़ने की चेष्टा करने लगे।

तब गोलन्दाज़ ने फिर तोप छोड़ी। किन्तु गोला लक्ष्यभ्रष्ट होने से नाव के लोग मारे ख़ुशी के उल्लसित होकर अग्रसर होने लगे। किन्तु गोलन्दाज़ ने तुरन्त ही फिर तोप दाग कर नाव को खण्ड खण्ड कर डाला। नाव के सवार पानी में गिर कर तैरने लगे। हम लोगों ने डूबते हुए तीन व्यक्तियों को जहाज़ पर ले लिया। इसके बाद पाल तान कर हम लोग भाग चले। पीछे वाली तीन नावें पानी में गिरे हुए लोगों के उद्धार करने में व्यस्त हो रहीं, हम लोगों का पीछा न कर सकीं।

क्रूसो का भागना

इस अकारण-विपत्ति से बच कर हम लोगों ने निश्चय किया कि अब यूरोपीय जहाज़ों के सामने न जायँगे। उन लोगों ने जब हमें सामुद्रिक लुटेरा मान लिया है तब उनके सामने पड़ कर उनसे सहज ही छुटकारा न पा सकेंगे। जो नालिश करे वही यदि विचारक हो तो सुविचार की संभावना बहुत कम रहती है। अतएव वाणिज्य अभी हम लोगों के माथे ही पर रहे; यही विचार निष्पन्न हुआ। जंगल का भूला-भटका साँझ को अपने अड्डे पर पहुँच जाय तो इसे कुशल ही मानना चाहिए। अभी हम लोग बंगाले को लौट जायँ तो वहाँ पर कुछ सही-सबूत दे भी सकेंगे। स्थल-भाग के विचारक पहले फाँसी देकर पीछे विचार न भी करें।

इधर हम लोगों की सुख्याति का प्रचार चारों ओर अच्छी तरह हो चुका है। अभी लौट जाने से पोर्चुगीज़ या अँगरेज़ जहाज़ की शुभ दृष्टि से बचना कठिन होगा। इसलिए हम लोगों ने अभी चीन के किसी बन्दर में जाने का

निश्चय किया। वहाँ जैसे होगा, जहाज़ बेच डालेंगे। इस पाप से किसी तरह पिण्ड छुड़ा कर हम लोग किसी दूसरे जहाज़ पर सवार होकर घर को लौट जायँगे।

हम लोग चीन ही की ओर चले किन्तु सीधे मार्ग से नहीं। रास्ते से हट कर चलना ही उचित समझा। कौन जाने, यदि किसी जहाज़ के सामने पड़ जायँ, जो हमारे हालात से वाक़िफ़ हो तो फिर विपत्ति में फँसना होगा।

इस समय की अवस्था मुझे बहुत बुरी लगती थी। इतने दिनों तक अनेक प्रकार की विपत्तियों में पड़ चुका हूँ परन्तु ऐसी आफ़त में कभी न पड़ा था। क्या इस बुढ़ापे में विधाता ने चोरी-डकैती का अपवाद भी मेरे कपार में लिखा था? यदि इस जीवन में कभी किसी का कुछ अनिष्ट भी किया होगा तो वह अपना ही। मैं आप ही अपना शत्रु हूँ। इसके अतिरिक्त आज तक मैंने कभी किसी के साथ कोई ठगाई का काम नहीं किया है। मैं ऐसी अवस्था में पड़ गया हूँ कि अपनी निर्दोषता को सप्रमाण सिद्ध करना कठिन हो पड़ा है। मेरे पास प्रमाण ही क्या है? बिना कुछ सबूत दिखलाये मेरी बात का विश्वास ही कौन करेगा? इसलिए प्रतिपक्षियों से छिप कर भागने के लिए मेरा मन व्याकुल हो उठा था। किन्तु किस तरफ़ भागने से बच सकूँगा इसका कुछ निश्चय नहीं कर सकता था। अन्त में चीन के टंकुइन-उपसागर (खाड़ी) के मैकाओ बन्दर में जहाज़ ले जाने की बात तय हुई।

समुद्र के मध्यवर्ती होकर जाने में खटका था इस लिए हम लोग जहाज़ को एक नदी के मुहाने में ले गये। भाग्य से

ही यह बात सूझी थी। हम लोगों के टंकुइन-उपसागर में प्रवेश करने के बाद तुरन्त दो ओलन्दाज़ (पोर्चुगीज़) जहाज़ वहाँ आ पहुँचे।

जहाँ मैं रहूँ वहाँ शान्ति की संभावना कहाँ? हम लोगों के पीछे तो शत्रु थे ही, पर भाग्यदोष से हम लोगों के सम्मुख भी मित्र न मिले। चीनवाले हम लोगों को देख कर जो भाव प्रकाश करने लगे उससे किसी को सन्देह न रहा कि ये लोग हम लोगों के साथ अच्छा बर्ताव करेंगे।

हमारे जहाज़ को किनारे पर देख झुंड के झुंड चीनी लोग टिड्डीदल की भाँति नदी के किनारे एकत्र होने लगे। हम लोगों ने जब जहाज़ को किनारे लगा कर उस पर से चीज़-वस्तुओं को उतार कर जहाज़ को मरम्मत के लिए उलट दिया तब चीनी लोगों ने समझा कि इन का जहाज़ किनारे लग कर उलट गया है। इससे वे लोग हम सबको दासरूप में बन्दी करने और हम लोगों का माल-असबाब लूटने के लिए आतुर हो उठे। हमारे नाविक जब जहाज़ की मरम्मत कर रहे थे तब चीनी लोग नाव पर सवार हो हम लोगों को घेरने लगे। उन का दुराशय समझ कर हम अपनी तरफ़ के लोगों को जहाज़ से बन्दूक़ और गोली-बारूद देने लगे। चीनियों ने समझा कि हम लोग टूटे जहाज़ पर से माल उतार रहे हैं। वे लोग निःशङ्क भाव से झट आकर हमारे नाविकों को पकड़ने की चेष्टा करने लगे। हम लोगों का जहाज़ एक तरफ़ किनारे लगा था। सभी लोग एक तरह से असावधान थे। यह समय युद्ध करने के लिए उपयुक्त न था। हम लोगों ने झटपट माल-असबाब को सहेज कर अपने जहाज को किनारे से हटा कर पानी में ले जाना चाहा। चीनी

लोग हमारी नाव पर चढ़ कर एक नाविक को ज्योंही पकड़ने गये त्योंही उसने हाथ की बन्दूक नीचे रख दी और भले आदमी की तरह अपने को पकड़ाने के लिए खड़ा हो गया। उसकी यह दशा देख मैं तलुवे से चोटी तक मारे क्रोध के जल उठा। किन्तु उस नाविक को मैंने जैसा मूर्ख समझ रक्खा था वास्तव में वह वैसा न था। चीनी ने हाथ बढ़ा कर ज्योंही उसे पकड़ना चाहा त्यों ही उसने चीनी का हाथ पकड़ कर ऐसा झटका दिया कि वह जहाज़ के भीतर धड़ाम से जा गिरा और उस चीनी के मस्तक को ऐसे ज़ोर से ठोंका कि उसीसे उसके प्राण निकल गये। दूसरे नाविक को पकड़ने गये तो उसने बन्दूक के कुन्दे से उनका अच्छा सत्कार किया। उससे पाँच आदमी ज़ख़्मी हुए। किन्तु इससे भी चीनी लोग शान्त न हुए। वे चालीस आदमी थे। हमारे नाविक गिनती में केवल पाँच थे और नाव पर बैठ कर जहाज़ की मरम्मत कर रहे थे। जहाज़ का छेद बन्द करने के लिए अलकतरा, मोम, चर्बी और तेल आदि मसाले गरम हो रहे थे। तेल ख़ूब खौल रहा था। नाविकों ने वही गरम तेल और अलकतरा उन चीनियों पर छिड़क दिया। खौलता हुआ तेल पड़ने से वे छटपटाते हुए पानी में जा गिरे। यह देख कर मिस्त्री ने चिल्ला कर कहा—"वाह, वाह! बड़ा अच्छा हुआ। सालों पर दो चार कलछी और डाल कर पूरे तौर से आतिथ्य कर दो। ये साले हमारे मेहमान हैं। इनकी ख़ूब गरम गरम अभ्यर्थना करो।" यह कहते कहते वह ख़ुद आगे बढ़ कर बड़ी फ़ुरती से उन चीनियों पर गरम गरम तेल और अलकतरा छिड़कने लगा। चीनी लोग अजब तरह से चिल्लाते हुए वहाँ से भाग गये।

यह विचित्र लीला देख कर हँसते हँसते मेरा दम फूलने लगा। ऐसा कुतूहल-पूर्ण विजय मैंने और कभी न देखा था। पहले ही जो एक चीनी मर चुका था उसे छोड़ और कोई मरा नहीं। जीत हमारी हुई। प्राण क्या ऐसी उपेक्षा की वस्तु है? मेरा सिद्धान्त तो यही है कि अपनी कुछ हानि भी हो तो भी किसीका प्राण लेना ठीक नहीं। इसीसे यह बिना खून-खराबी का विजय मेरे विशेष आनन्द का कारण हुआ।

इतने में हम लोगों ने जहाज़ को एक तरह से दुरुस्त कर लिया। अब यहाँ रहना निरापद नहीं हो सकता। चीनी लोग अब ऐसा दल बाँध कर आवेंगे कि अलकतरे से काम न चलेगा। दूसरे दिन खूब तड़के हम लोग पाल तान कर रवाना हो गये। जहाज़ के भीतर पानी आना बन्द हो गया। हम लोगों ने टङ्कुइन-उपसागर में जाकर देखा कि वहाँ और भी कितने ही जहाज़ हैं। इसलिए हम लोग फ़ौरन वहाँ से फ़ारमोसा टापू की ओर चले गये। वहाँ जहाज़ लगा कर हम लोगों ने खाने-पीने की वस्तुओं का संग्रह कर लिया। वहाँ के लोगों ने अपनी शिष्टता दिखला कर हम लोगों को तृप्त किया। हम लोग क्रमशः उत्तर ही की ओर इस मतलब से जाने लगे, कि अँगरेज़ों के जहाज़ जहाँ तक जाते हैं उस सीमा से बाहर हो जाने से हम लोग निश्चिन्त हो सकेंगे।

क्रूसो का छुटकारा

हम लोग जब किनारे पर जहाज़ लगाने के लिए बन्दर खोज रहे थे तब एक दिन एक नाव हमारे जहाज़ के पास आ लगी। उसमें बैठ कर एक वृद्ध पोर्चुगीज़ हम लोगों को

बन्दर में पहुँचा देने के लिए आया था। हम लोगों ने उस को अपने जहाज़ पर बिठा लिया। नाव वहाँ से चली गई।

मैंने समझा कि इस वृद्ध को हम लोग जहाँ जहाज़ ले चलने को कहेंगे वहाँ वह बेउज्र ले चलेगा। हम लोगों को अपना आशय प्रकट करना ही पड़ा। मैंने वृद्ध से जहाज़ को नानकुइन-उपसागर में ले चलने के लिए कहा—वह चीन का नितान्त उत्तरीय उपकूल था। बूढ़े ने ज़रा व्यंग की हँसी हँस कर कहा—"मैं नानकुइन-उपसागर को भली भाँति जानता हूँ। किन्तु एकदम उत्तर ओर जाने का अभिप्राय क्या है?" उसकी यह व्यङ्ग की हँसी और दूसरे का अभिप्राय जानने की धृष्टता देख कर मेरा जी जल उठा। मैंने कहा—"हम लोग अपने जहाज़ की विक्रेय वस्तुएँ बेच कर चीनी वर्तन, छींट, रेशम, चाय और कपड़े आदि देसावरी चीज़ें ख़रीदेंगे।" वृद्ध ने कहा—"यह काम तो मैकिंग बन्दर में भी बड़े सुभीते के साथ हो जाता। इतना घूम कर उत्तर ओर जाने की क्या ज़रूरत है?" एक बार तो मेरे मन में आया कि बूढ़े से कह दूँ कि "मेरी खुशी। मैंने खूब अच्छा किया कि टेढ़ी राह से आया हूँ और टेढ़ी राह से ही जाऊँगा इसमें तुम्हारा क्या? तुम विदेशी हो, जहाज़ों को बन्दर में पहुँचा देना ही तुम्हारा पेशा है। तुम वही करो जो मैं कहता हूँ। हल्दी बेचने वालों के लिए जवाहिर का भाव ताव करना वृथा है।" किन्तु बूढ़े को नाराज़ कर देना अभी अच्छा न समझ कर मैंने बड़ी मुलायमियत से कहा—"हम लोग निरे व्यवसायी ही नहीं हैं। हम लोग रईस हैं। देश देखने की भी हमारी इच्छा है। हम लोग एक बार, पेकिन शहर में जाकर चीन के सम्राट् का दरबार देखना चाहते हैं।" इस पर भी वृद्ध चुप

न हो कर तुरन्त बोल उठा—"तब तो आप लोगों का निम्पो से होकर नदी के रास्ते जाना ही ठीक होगा।" मैंने क्रुद्ध हो कर कहा—"हम लोग अभी पेकिन न जायँगे। हम पहले नानकुइन जायँगे, तब वहाँ से पेकिन। साफ़ साफ़ कहो, हम लोगों को तुम नानकुइन ले जा सकते हो या नहीं।" उसने कहा—"क्यों न ले जा सकूँगा। यही तो कुछ देर पहले एक बहुत बड़ा पोर्चुगीज़ जहाज़ उस ओर गया है।" पोर्चुगीज़ जहाज़ का नाम सुनते ही हृदय काँप उठा। बूढ़े ने पोर्चुगीज़ जहाज़ के नाम से मुझको चौंकते देख कर कहा—पोर्चुगीज़ जहाज़ से अभी आपको डरने का कोई कारण नहीं। उन लोगों के साथ आपके देशवासियों की तो अभी कोई दुश्मनी नहीं है?

मैंने कहा—"सच है, दुश्मनी तो नहीं है, किन्तु मनुष्य किसको किस नज़र से देखते हैं यह बात पहले नहीं जानी जा सकती। इसी से अपरिचित लोगों से दबना पड़ता है।" बूढ़े ने कहा—"आप सीधे सादे व्यवसायी हैं, इसमें डरने की क्या बात है? आप लोग लुटेरे तो हैं नहीं।" लुटेरे का नाम सुनते ही मेरा मुँह लज्जा से लाल हो उठा। वृद्ध ने मेरे चेहरे पर लक्ष्य देकर कहा—"महाशय, मैं देख रहा हूँ कि आपके मन में कुछ गोलमाल है। ख़ैर, आपका जहाँ जी चाहे जहाज़ ले चलें। मैं यथासाध्य आपका उपकार करूँगा।" मैंने बात टालने के इरादे से कहा—"महाशय! आपका अनुमान बहुत ठीक है, मैं इस बात का अभी तक कोई निश्चय नहीं कर सका कि इस जहाज़ को कहाँ ले जाऊँ। आपके मुँह से लुटेरे का नाम सुन कर मुझे और भी डर लग रहा है।" वृद्ध ने कहा—आप क्यों डरते हैं? इस तरफ़ समुद्र में लुटेरे नहीं रहते। क़रीब एक महीना हुआ, स्याम की खाड़ी में

सुमात्रा द्वीप के निकट एक दुर्घटना हो गई है। जहाज़ का कप्तान जब मलय देशवासियों के हाथ से मारा गया तब जहाज़ के नाविकगण जहाज़ चुरा कर ले गये। फिर उन नाविकों ने लुटेरों के हाथ वह जहाज़ बेच डाला। वह लुटेरा जहाज़ स्याम-उपसागर में पोर्चुगीज़ (ओलन्दाज़) और अँगरेज़ी जहाज़ के हाथ पकड़ा ही जाने को था पर ज़रा सा अवकाश मिल जाने से वह भाग गया। उस लुटेरे जहाज़ की बात सभी जहाज़ी सुन चुके हैं। देखते ही उसे पहचान लेंगे। अब जहाँ उसे एक बार पकड़ पावेंगे तहाँ फिर उसे कुछ कहने का भी मौक़ा न देंगे। गिरफ़्तार होते ही उन नाविकों को मस्तूल की रस्सी से लटका देंगे।

हाय हाय! हे भगवान्! यह हमारी ही कीर्ति-कहानी है और प्राण जुड़ाने वाले भविष्य चित्र का निदर्शन है। वह बूढ़ा पथ-प्रदर्शक इस समय सम्पूर्ण रूप से हमारी आज्ञा के अधीन है। इसका उतना भय नहीं। यह सोच कर मैंने उससे खुलासा कहा—"महाशय, इसी कारण हम लोग उद्विग्न होकर उत्तर ओर दौड़े जा रहे हैं। वे भागने वाले हमी लोग हैं। लुटेरे न होने पर भी हम उस कलङ्क से कलङ्कित हैं।" इसके बाद मैंने अपने जहाज़ का समस्त इतिहास उससे कह सुनाया। सुन कर वृद्ध बेचारा अवाक् हो रहा। उसने हम लोगों से कहा—आप लोगों ने बहुत दूर उत्तर ओर आकर सचमुच ही बहुत बुद्धिमानी का काम किया है। मैं आपके इस जहाज़ को बेच कर एक दूसरा जहाज़ ख़रीद दूँगा। उससे आप लोग निर्विघ्न बंगाल को लौट जा सकेंगे।

मैंने कहा—महाशय! जहाज़ तो आप बेच देंगे, किन्तु जो भलेमानस इस जहाज़ को ख़रीदेंगे उनके साथ तो यह

आफ़त लगी ही रहेगी। क्योंकि सभी इस जहाज़ पर नाराज़ हैं। वह मनुष्य भीतर से कितना ही निर्दोषी और सज्जन क्यों न होगा पर पोर्चुगीज़ों और अँगरेज़ों के जहाज़ से उसकी रक्षा न होगी।

वृद्ध ने कहा—मैं उसका भी प्रबन्ध कर दूँगा। बहुत कप्तानों के साथ मेरा परिचय है। वे लोग जब इस रास्ते से जायँगे तब मैं उन सबों से भेट करके सब वृत्तान्त समझा कर कह दूँगा।

हम लोगों ने नानकुईन-उपसागर के प्रान्तीय क्युंक्याँग बन्दर में जाकर जहाज़ लगाया। आफ़त की जड़ जहाज़ से उतर कर धरती में पाँव रखते ही हम लोगों की जान में जान आई। यदि जहाज़ मिट्टी मोल भी बिक जायगा तो हम लोग एक बार सिर न हिलावेंगे। रात-दिन भयभीत बना रहना कैसी विडम्बना है! आँखों में नींद नहीं, चित्त में चैन नहीं, खाने-पीने की इच्छा नहीं। केवल मृत्यु और कलङ्क की विभीषिका को सामने रख कर समय बिताना बड़ा कष्टकर है। मैं इस बुढ़ापे में चोरी की इल्लत में पकड़ा जाकर विदेश में फाँसी से प्राण गवाँने बैठा था। किन्तु मैं किसी भाँति यह अपमानजनक मृत्यु सहा नहीं कर सकता। मैं शत्रुओं के साथ प्राणपण से युद्ध करता। यदि युद्ध में जीत न सकता तो जहाज़ को बारूद से उड़ा देता। किसीको विजय-जनित अहङ्कार करने का अवकाश न देता। जब मैं इन बातों को सोचता था तब मेरा दिमाग़ गरम हो उठता था। एक दिन ऊँघते ऊँघते मैंने जहाज़ के तख़्ते पर ऐसे ज़ोर से घूँसा मारा कि हाथ में चोट लगने से लहू बह निकला।

समुद्र में रहने से जितना ही प्राण व्याकुल था उतना ही स्थल में आने से आराम मालूम होने लगा। किनारे उतर कर वृद्ध महाशय ने हम लोगों के रहने के लिए एक स्थान ठीक कर दिया। हम लोग उसी स्थान में अपना माल उतार कर ले गये और वहीं रहे। घर बेत के बने थे। घर के चारों ओर मोटे मोटे बेतों का घेरा था। इस देश में चोरों का बड़ा भय था। वहाँ मैजिस्ट्रेट ने हम लोगों के माल की निगरानी के लिए कई पहरेदार तैनात कर दिये थे। उन लोगों के खाने के लिए चार मुट्ठी चावल और चार आना पैसे रोज़ देकर उन्हें क़ाबू में कर लिया था। वे लोग फरसे को कन्धे पर रख कर बड़ी सावधानी के साथ पहरा देने लगे।

चोरी के जहाज़ की सद्गति

यहाँ इन दिनों एक मेला हुआ करता था। मेला ख़तम हो चुका था, तब भी कई जापानी सौदागर वहाँ थे। हमारे वृद्ध विदेशी महाशय एक जापानी सौदागर को अपने साथ ले आये। उस सौदागर ने हम लोगों की कुल अफ़ीम खूब चढ़े बढ़े दर से तौला ली और उसके बदले सोना तौल दिया। तब हम लोगों ने उससे जहाज़ मोल लेने का प्रस्ताव किया। वह सिर हिलाकर चला गया।

कई दिन पीछे उसने फिर आकर कहा—जहाज़ ख़रीदने का इरादा पहले न था इसीसे सौदा ख़रीदने ही में मैंने सब रुपये ख़र्च कर डाले। अब हाथ में इतना रुपया नहीं कि जहाज़ मोल ले सकूं। इसलिए यदि आप जहाज़ भाड़े पर दे सकें तो मैं ले सकता हूँ।

अच्छा यही सही, मैं देशभ्रमण कर पाऊँ तो फिर मुझे क्या चाहिए। एक बार जापान देश भी तो देख आऊँ। किन्तु मेरे साझेदार मुझसे अधिक बुद्धिमान् थे। वे मुझको इस बद्कार जहाज़ पर किसी तरह भी जाने देना नहीं चाहते थे। मैं सोच ही रहा था, कि अब क्या करना चाहिए इतने में वही नवयुवक मुंशी, जिसे मेरा भतीजा मेरे पास छोड़ गया था, मेरे पास आकर कहने लगा,—महाशय, यदि आप मुझ पर विश्वास करके यह जहाज़ मेरे ज़िम्मे कर दें तो मैं एक बार वाणिज्य करके देखूँ। यदि मैं जीते जी इँगलैण्ड लौटूँगा तो आपका जो कुछ मेरे ज़िम्मे पावना निकलेगा वह आपको देकर हिसाब समझा दूँगा।

मैंने अपने साझी अँगरेज़ से इस विषय में परामर्श किया। उन्होंने कहा—जहाज़ बड़ा अभागा है। उस पर अब हमें और आपको पैर रखना लाज़िम नहीं। आपका मुंशी यदि इस जहाज़ को लेकर कुछ व्यवसाय करना चाहता है तो भले ही करे। उसमें हम लोगों की हानि ही क्या है? हम लोग जब राम राम करके कुशलपूर्वक इँगलैंड पहुँच जायँगे और वह भी यदि नफ़ा उठा कर वहाँ लौट आवेगा तब उस लाभ का आधा उसका होगा और आधा हमारा और आपका।

इस शर्त पर उसके साथ लिखा-पढ़ी हो गई। वह जहाज़ लेकर जापान गया। जापानी सौदागर ने उसे भाड़ा चुकाकर फ़िलिपाइन और मैनिला आदि टापुओं में बनज करने भेजा। वह जापान का माल टापुओं में ले जाकर बेचता और टापुओं से मसाला लाकर जापान में बेचता था। इस प्रकार ख़रीद-फ़रोख़्त करके मैनिला से उसने

अच्छा लाभ उठाया और उस जहाज़ को तिजारती जहाज़ क़ायम कर सनद लिखा ली। मैनिला सरकार की ओर से वह जहाज़ भाड़े पर मैक्सिको भेजा गया। मेरे मुंशी ने मैक्सिको जाकर उस को बेच डाला। कोई आठ वर्ष के बाद वह मुंशी प्रचुर धन उपार्जन करके इँगलैंएड लौट आया।

चीन में क्रूसो

अभी मैं चीन में हूँ। देश से कितनी दूर आ गया हूँ! मेरा देश पृथिवी के एक प्रान्त में है, और आया हूँ दूसरे प्रान्त में। अपने देश लौट जाने का कोई सुयोग या संभावना अभी देखने में नहीं आती। चार महीने बाद यहाँ एक और मेला होगा। तब एक नाव मिल जायगी तो ख़रीद लूँगा और भारत को लौट जाऊँगा। इसके पहले लौटने का कोई सुयोग देखने में न आया। उस मेले के अवसर पर यदि कोई यूरोपीय जहाज़ भाग्य से मिल जाय तब तो सब भाँति अच्छा ही होगा। अब बदकार जहाज़ चला गया, किसी का कुछ भय नहीं रहा। इसी आशा से हम लोग वहाँ ठहर गये।

यहाँ ठहरने से धीरे धीरे कई एक यूरोपीय पादरियों से परिचय हो गया। हम लोग उनके साथ चीन देश देखने के लिए घूमने लगे। इस देश में अब भी कुछ विशेष उन्नति नहीं हुई। प्रायः सभी लोग जाहिल हैं। ग्रहण होने से वे लोग समझते हैं कि राहु नामक एक दैत्य सूर्य को निगल जाता है, इसलिए दैत्य को भय दिखाकर भगाने के लिए सभी लोग मिलकर घड़ी-घंटा बजाते और ख़ूब शोर-गुल मचाते हैं।

शासन-प्रणाली अपूर्ण, सैन्य अशिक्षित और वैज्ञानिक विषय की अनभिज्ञता अधिकतर देखने में आई। हम लोग चीन की राजधानी पेकिन देखने चले। उसी समय एक प्रादेशिक शासनकर्ता पेकिन जारहे थे। हम उन्हींके साथ हो लिये।

चीन के सभी स्थान मनुष्यों से भरे थे किन्तु अधिकांश लोग दरिद्र और मूर्ख थे। तथापि इस अवस्था पर भी लोगों के अहङ्कार का अन्त नहीं। चीन के हाकिम राजधानी को जारहे हैं। रास्ते के लोग उनके लिए रसद जमा करते हैं। वे अपने ख़र्च से फ़ाज़िल चीज़ें हम लोगों के हाथ बेच कर मज़े में चार पैसे पैदा कर रहे हैं। उस पर भी ये राजप्रतिनिधि हैं।

रास्ते में कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक दिन एक छोटी सी नदी पार होने के समय मेरा घोड़ा, पाँव पिछलने से, गिर पड़ा और बेवक़्त मुझे स्नान करा दिया।

पचीस दिन रास्ता चल कर हम लोग पेकिन पहुँचे। हम पाँच आदमी थे। मैं, मेरे भतीजे का दिया हुआ नौकर, मेरा साझेदार अँगरेज़, उनका नौकर और वृद्ध महाशय। ये भी पेकिन देखने हमारे साथ आये थे।

एक दिन वृद्ध ने मेरे पास आकर हँसते हँसते कहा— "एक बहुत अच्छी ख़बर है, सुनने से आप लोग ख़ुश होंगे।" वह सुसंवाद सुनने के लिए हम लोगों ने उत्सुक होकर पूछा। उन्होंने कहा—व्यापारियों का एक दल स्थल-मार्ग से साइबीरिया होकर यूरोप जा रहा है। हम लोग चाहें तो उनके साथ यूरोप लौट जा सकते हैं।

सचमुच में ख़बर बहुत अच्छी थी। हम लोग जाने को राज़ी हुए। हम लोग राह-ख़र्च देकर वृद्ध को उनके देश पहुँचा देंगे, इस शर्त पर उन्हें भी साथ ले लिया।

क्रूसो का स्थलमार्ग से स्वदेश को लौटना

हम लोग फ़रवरी महीने के पहले ही पेकिन से रवाना हुए। हमारे साथ अठारह ऊँट और आठ घोड़े थे। रेशमी कपड़े, छींट, लवङ्ग, जायफल, ज़रीदार वस्त्र और चाय आदि अनेक प्रकार की सामग्री ऊँटों और घोड़ों पर लाद ली थी।

हम लोगों का दल एक छोटी मोटी फ़ौज के बराबर था। सब मिलाकर एक सौ बीस आदमी थे। तीन चार सौ घोड़े थे। और भी कुछ चौपाये थे, जिन पर चीज़ें लदी थीं और आदमी भी सवार थे। सभी लोग अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। कोई भी हथियार से ख़ाली न था। रास्ते में तातारी डाकुओं का बेहद भय था।

इस दल में सभी जातियों के मनुष्य थे। यूरोप के कई देशों के यहूदी, चीनी तथा और भी कितनी ही जातियों के लोग थे।

हम लोगों के साथ पाँच पथ-प्रदर्शक थे। सभी लोगों ने चन्दा कर के उनको कुछ रुपया दे दिया था। उसी रुपये से रास्ते में साईसों के लिये खाना और पशुओं के लिए दाना-घास ख़रीदी जाती थी। दल में एक व्यक्ति इसलिए प्रधान मुक़र्रर किया गया था कि मार्ग में उसी की आज्ञा के अनुसार सबको चलना होगा।

रास्ते में दोनों तरफ़ कुम्हारों की बस्ती थी। वे लोग चीनी मिट्टी के बर्तन बनाते थे। रास्ते में एक मकान देखा। उसकी दीवार और छत आदि सभी चीनी मिट्टी की थी।

प्रभातकालिक सूर्य की प्रभा में वह स्वच्छ तुषार की भाँति झकाझक कर रहा था। उस मकान की सफ़ेद दीवारों पर नीले रङ्ग की भाँति भाँति की तसवीरें अङ्कित थीं। इससे उसकी उग्र स्वच्छता कुछ कोमल हो गई थी। इस मकान की शोभा बड़ी विलक्षण थी। दल के मनुष्य रुके नहीं, नहीं तो मैं यहाँ कुछ दिन रह कर इस मकान को जी भर कर देख लेता। बाग़ के भीतर चीनी मिट्टी ही की मूर्त्तियाँ बनी थीं। तालाब का घाट चीनी मिट्टी का बँधा था। चीनी मिट्टी का सफ़ेद हौज़ बना था। उसमें लाल रङ्ग की मछलियाँ थीं। सभी सुन्दर और सभी दर्शनीय थे।

इस मनोरम दृश्य को देखते देखते मैं दल से पीछे रह गया। दो घंटे बाद क़ाफ़िले में आ मिला। इस भूल के कारण मुझे जुर्माना देना पड़ा और दलपति से क्षमा माँगनी पड़ी। यह भी अङ्गीकार करना पड़ा कि अब ऐसी भूल न करूँगा और सँभल कर रहूँगा।

दो दिन के बाद हम लोग चीन की प्रसिद्ध दीवार के पार हुए। तातार-देशीय डाकुओं के आक्रमण से देश को बचाने के लिए यह दीर्घ-दीवार बनाई गई थी। हमारे दल के लोग जितनी देर तक दीवार पार करते रहे उतनी देर तक मैं एक तरफ़ खड़ा होकर दीवार के चारों ओर जहाँ तक देख सका देखता रहा।

दीवार पार होते ही बीच बीच में अश्वारोही तातार डाकुओं के साथ भेंट होने लगी। वे लोग निरे डाकू थे। मुसाफ़िरों का माल लूटना ही उनका काम था। उन लोगों के पास न कोई अच्छा अस्त्र-शस्त्र था, न वे लोग आक्रमण करने

का ढङ्ग जानते थे। उन लोगों की पूँजी तीर-धनुष और टट्टू थे। वे लोग बीच बीच में हम लोगों पर आक्रमण करने लगे। किन्तु हम लोगों की बन्दूक के आगे उनकी एक न चली। वे भी तीर चलाने में बड़े दक्ष थे। उनके तीर का लक्ष्य प्रायः व्यर्थ न जाता था। भाग्यवश हम लोग किसी ख़तरे में न पड़े।

हम लोग नगरों से निकल कर मैदान में आ गये। जिधर दृष्टि जाती थी उधर मैदान ही मैदान देख पड़ता था। देखते ही जी घबरा उठता था। भय से हृदय काँप उठता था। हम लोग एक महीने तक इसी भाँति मैदान का सफ़र करते रहे। कभी कभी रास्ते में तातारों के छोटे छोटे दलों के साथ भेंट हो जाती थी, पर कोई कुछ बोलता न था। हम लोग भी उनकी ओर दृक्पात न कर के चुपचाप चले जाते थे।

मैदान पार कर के हम लोग एक गाँव में पहुँचे। वहाँ ऊँट और घोड़े बिकते थे। मुझे एक ऊँट मोल लेने का शौक़ हुआ। मैंने एक आदमी से एक ऊँट लाने को कहा। वह ले आता, किन्तु मेरे सभी कामों में उलझन लगी रहती थी, इससे मैं स्वयं गया। गाँव से दो मील पर मैदान के बीच ऊँटों और घोड़ों का बाज़ार था। मैं पगडंडी की राह से चला। साथ में वही वृद्ध पथ-दर्शक और एक चीनी मनुष्य था।

हम लोग एक ऊँट ख़रीद कर लौटे आ रहे थे। इसी समय पाँच तातारी घुड़सवार दौड़ कर आये। उनमें दो आदमी तो ऊँट छीन कर ले गये और तीन आदमियों ने आगे से आकर हम लोगों को घेर लिया। मेरे साथ सिर्फ़ एक तलवार

थी और कोई अस्त्र न था। हम तीनों पैदल आदमी उन घुड़सवारों का कर ही क्या सकते थे? तथापि मुझको तलवार निकालते देख पहला तातारी ठिठक कर खड़ा हो रहा। वे लोग ऐसे भीरु थे। किन्तु दूसरे ने पीछे से आकर मेरे सिर पर लाठी मारी। मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। दैवयोग से वृद्ध के पाकेट में एक पिस्तौल थी। उन्होंने झट पिस्तौल निकाल गोली भर कर उस तातार डाकू को मार डाला, और जिस तातारी ने हम लोगों पर पहले आक्रमण किया था उस पर तलवार चलाई। तलवार उस तातारी को न लग कर घोड़े के कान को काटती हुई उसकी गर्दन में धँस गई। इससे वह ज़ख़्मी होकर डर से हाँफता हुआ सवार को लेकर बड़े वेग से भाग चला। बहुत दूर जाकर उसने पिछली टाँगों के बल खड़े होकर सवार को गिरा दिया और आप भी उस पर गिर पड़ा। तीसरा तातारी डाकू अपने को असहाय देख वहाँ से भाग निकला।

इतनी देर बाद मुझे कुछ होश हुआ। जान पड़ा, जैसे गाढ़ी नींद से सोकर उठा हूँ। फिर सिर में वेदना मालूम होने पर मैंने हाथ से टटोल कर देखा तो हाथ में लोहू लग गया। तब मुझे सब बात याद हो आई। मैं झट उछल कर खड़ा हुआ और तलवार की मूठ पकड़ी, परन्तु तब वहाँ कोई शत्रु न था। मुझको खड़े होते देख वृद्ध पोर्चुगीज़ ने दौड़ कर मुझे छाती से लगा लिया। फिर वह देखने लगा कि मेरे सिर में कैसी चोट लगी है। चोट गहरी न थी। दो ही तीन दिन में ज़ख़्म भर आया। ऊँट के बदले मुझे तातार का घोड़ा मिला। ख़ैर, यही सही।

धीरे धीरे हम लोग एक शहर में पहुँचे। वहाँ ख़बर मिली कि दस हज़ार तातारी लुटेरे चले आ रहे हैं। इसकी सूचना सभी बटोहियों को दी जा रही है। अब क्या उपाय किया जाय? शहर के अध्यक्ष ने हम लोगों के साथ पाँच सौ चीनी सैनिक कर दिये। वे हम लोगों को कुछ दूर तक पहुँचा कर लौट आवेंगे।

तीन सौ सैनिक आगे और दो सौ पीछे चले। हम लोग दोनों पार्श्वों में होकर, माल लदे हुए घोड़ों और ऊँटों को बीच में करके, रवाना हुए। अब हम लोग पन्द्रह-सोलह मील लम्बी चौड़ी मरुभूमि में आ गये। जिधर देखो उधर बालू का मैदान नज़र आता था। दूर तक धूल उड़ते देख कर हम लोगों ने ताड़ लिया कि शत्रु-दल समीप आ गया। चीनी सैनिक जो पहले अपनी बातूनी वीरता की झड़ी बाँध उछल-कूद कर रहे थे वे शत्रु-दल को सामने आते देख बार बार पीछे की ओर घूम कर देखने लगे। सैनिकों के लिए यह अच्छा लक्षण नहीं है। यह पीठ दिखलाने का पूर्वरूप है। मैंने उनका लक्षण ठीक न देख कर अपने यूथनायक से जाकर कहा। तब हमीं लोग पचास पचास मनुष्यों की टोली बाँध कर उन सैनिकों के दहने-बाँएँ जाकर उन्हें साहस देने लगे।

देखते देखते तातारी डाकू आँखों के सामने आ गये। वे लोग गिनती में दस हज़ार से कम न रहे होंगे। उनको निकट आते देख हम लोगों ने बन्दूकों से उनकी अभ्यर्थना की। वे लोग इसका कुछ उत्तर न देकर एक तरफ़ से रास्ता काट कर निकल गये। हम लोगों के साथ कुछ छेड़-छाड़ नहीं की। यह देख कर हम लोगों ने आराम से साँस ली। इतने लोगों के साथ युद्ध करने से निःसन्देह सर्वनाश होता।

देखते देखते तातारी डाकू आँखों के सामने आगये।......उनको निकट आते देख हम लोगों ने बन्दूकों से उनकी अभ्यर्थना की।—पृ० ३७२

हम लोगों ने आपस में चन्दा करके चीनी सैन्य को पुरस्कार देकर बिदा कर दिया। रास्ते में कई एक बड़ी बड़ी नदियाँ और बड़े बड़े बालू के मैदान पार करने पड़े। १३ वीं अपरैल को हम लोग रूस के राज्य में पहुँचे।

संसार में इतना बड़ा राज्य दूसरा नहीं है। इसके पूरब चीन सागर, उत्तर में ध्रुव महासागर, दक्षिण में भारत समुद्र और पश्चिम में बाल्टिक समुद्र है।

इस देश के लोग बड़े असभ्य होते हैं। एक जगह देखा कि गाँव के लोग बड़े समारोह से भगवान् की पूजा कर रहे हैं। भगवान् एक पेड़ का तना काट कर बनाये गये थे। उस काष्ठनिर्मित मूर्ति को ही वे लोग भगवान् मान कर आराधना करते थे। मूर्ति भी सुन्दर नहीं, साक्षात् यमदूत सी भयङ्कर और भूत सी देखने में कुरूप थी। विचित्र आकार का मस्तक था। उसके दोनों तरफ़ भेड़े के सींग की तरह दो बड़े बड़े कान थे। करताल की तरह आँखें, खाँड़े के सदृश नाक और चौकोन मुँह के भीतर सुग्गे की चोंच की तरह टेढ़े दाँतों की पंक्ति थी। ऐसी शकल की मूर्ति देख कर किसे श्रद्धा उत्पन्न होगी? उस पर भी उसके हाथ पैर नहीं। सिर पर चमड़े की टोपी थी। उसमें दो सींग जड़े थे। सम्पूर्ण कलेवर चमड़े से ढका था। यही उनके आराध्यदेव थे। इसीका वे पूजोत्सव मना रहे थे।

यह जूजू नामक देवता गाँव के बाहर प्रतिष्ठित था। मैं इसे देखने गया। सोलह सत्रह स्त्री-पुरुष उस मूर्ति के सन्मुख धरती में पड़े थे। मुझको आते देख वे लोग कुत्ते की तरह भौं भौं करके मेरी ओर दौड़े। तीन पुरोहित कसाई की

तरह हाथ में खड्ग लिये खड़े थे। कई एक बकरे और अन्य चौपाये पड़े थे जिनका सिर काट लिया गया था। बेचारे निर्दोष पशुओं को पकड़ पकड़ कर जूजू देवता के आगे बलिदान दिया गया है।

ईश्वर की सृष्टि में जितने प्राणी हैं उन सबमें श्रेष्ठ मनुष्य ही है। ईश्वर ने उसको ज्ञान दिया है। उस ज्ञान का ऐसा कुव्यवहार देख कर मुझे अत्यन्त खेद हुआ। अपने हाथ के बनाये एक अद्भुत आकार के पदार्थ को देवता समझ कर पूजना कैसी मूर्खता है? इस बात को सोचते सोचते मुझे अत्यन्त क्रोध हुआ। मैंने तलवार से उस मूर्ति के सिर पर की टोपी काट डाली, और मेरे साथी ने उसके बदन पर से चमड़े की ओढ़नी खींचली। जिन लोगों का वह देवता था वे लोग शोरो-गुल मचा कर रोने लगे। बड़ा हल्ला हुआ। देखते ही देखते तीन चार सौ आदमी धनुष-बाण लेकर वहाँ आ गये। लक्षण ठीक न देख कर हम लोग वहाँ से खिसक गये।

इस गाँव से चार मील पर हम लोगों के साथी वणिक् डेरा डाले थे। तीन दिन वहाँ रह कर हम लोगों को कुछ घोड़े खरीदने थे। क्योंकि हम लोगों के अनेक घोड़े मार्गश्रम से बेकाम हो गये थे। समय का यह सुयोग पाकर हम तीनों ने सलाह की कि इस विचित्र देवता को किसी तरह ध्वंस करना चाहिए। एक काठ के कुन्दे को परमेश्वर मान कर पूजा करना परमेश्वर का अपमान करना है।

हम लोग तातारी का छद्मवेष धारण कर रात होने पर चुपचाप मूर्तिविध्वंस करने चले। ग्यारह बजे रात को

हम लोग मूर्ति के पास पहुँचे। उसके समीप एक घर के भीतर वही तीनों पुजारी पाँच छः व्यक्तियों के साथ गप शप कर रहे थे। बाहर अँधेरा था। घर में एक चिराग़ टिमटिमा रहा था।

हमने निश्चय किया कि पहले इन लोगों को गिरफ़ार कर के तब काठ के कुन्दे में आग लगा कर उसे जला देंगे इसलिए हम ने किवाड़ में जाकर धक्का मारा। तब एक शख़्स किवाड़ खोल कर बाहर आया। उसको पकड़ कर हम लोगों ने झट उसके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और हाथ-पाँव बाँध एक तरफ़ डाल दिया। दूसरे व्यक्ति के निकलने की अपेक्षा से हम लोग देर तक बैठे रहे, पर कोई न निकला। यह देख कर हमने फिर किवाड़ों में धक्का दिया। दूसरे व्यक्ति के घर से बाहर होते ही वही व्यवहार किया गया जो पहले के साथ किया गया था। ऐसे ही हमने कई व्यक्तियों को बाँध लिया। बाक़ी कई व्यक्ति कुछ भेद न समझ कर भय से ऐसे निस्तेज हो गये थे कि उन्होंने बिना कुछ कहे-सुने बन्धन स्वीकार कर लिया। हम लोग उन्हें उसी अवस्था में, उनके मुँह बन्द किये, उनके देवता के समीप ले आये और उनकी आँखों के सामने उस भयानक मूर्ति को अलकतरा, तेल और बारूद से पोत कर के उसमें आग लगा दी।

इस काम को इस तरह पूरा करके हम लोग रातोंरात अपने दल में आ मिले और यात्रा का सामान दुरुस्त करने लगे जैसे हम लोग बड़ी शान्त-प्रकृति के मनुष्य हों, कुछ जानते ही नहीं। हम लोगों पर किसी ने कुछ सन्देह भी नहीं किया।

किन्तु यह मामला थोड़े ही में न निबटा। दूसरे दिन ग्रामनिवासियों ने मिल कर रूस के हाकिम के पास जाकर नालिश की। ये लोग नाममात्र के लिए रूस के अधीन थे। ये बात की बात में बिगड़ बैठते थे। रूस के हाकिम ने पहले इन लोगों को मीठी मीठी बातों में भुलाने की चेष्टा की और दोषी को पकड़ कर पूरे तौर से दण्ड देने की बात कह कर उन्हें धैर्य दिया। ग्रामवासी लोग सूर्यमण्डलवर्ती चामचोथौङ्ग देवता के शोक में आर्तनाद करने लगे।

रूस के शासक ने हमारे दल में चुपचाप यह ख़बर भेज दी कि "तुम्हारे दल में यदि किसी ने यह अपकर्म किया हो तो वह शीघ्र यहाँ से भाग जाय"। हमारे दल में किसने यह काम किया है? यह मुँह देख कर परखना कुछ काम रखता था। जो हो, हम लोग दिन रात अविश्रान्त रूप से भाग चले। दो दिन के बाद देखा कि पीछे की ओर बेतरह धूल उड़ रही है। मालूम हुआ कि वे लोग हम सबों को पकड़ने आ रहे हैं। भाग्य से हम लोगों को सामने एक झील मिल गई। उसके चारों ओर परिक्रमा करके हम लोग उसके दक्खिन तरफ़ चले गये और हमारा पीछा करने वाले शत्रुगण झील के चारों ओर घूमघाम कर उत्तर ओर चले गये। हम लोग बेलाग बच गये।

तीसरे दिन वे लोग अपनी भूल समझ कर दक्खिन ओर लौट चले। उसी दिन सन्ध्या-समय वे हम लोगों के समीप आ गये; किन्तु हम पर कोई अत्याचार न कर के उन्होंने दूत भेज कर चामचोथौङ्ग देवता के अपमानकर्ता को पकड़ कर भेज देने का अनुरोध किया। उन्होंने कहलाया, यदि अपमान-

कारी को पकड़ कर भेज दिया तब तो अच्छा ही है, नहीं तो सबके सब मारे जाओगे। यह ख़बर सुन कर हम लोगों के दल में खलबली मच गई। सभी लोग परस्पर एक दूसरे का मुँह देखने लगे। दल में किसने ऐसा काम किया है? किसके चेहरे पर अपराध का चिह्न झलकता है? यह कौन जान सकता है?

हम लोगों के सर्दार ने कहला भेजा कि हमारे दल में किसीने ऐसा काम नहीं किया। इस बात से वे लोग सन्तुष्ट न होकर आक्रमण का उद्योग करने लगे।

हमारे दल का एक आदमी, रूस के शासनकर्ता के दूत का स्वाँग धारण कर, क्रुद्ध ग्रामवासियों के पास जाकर बोला—असली अपराधी का पता लग गया। वह पीछे की ओर भाग गया है।

उसकी बात पर विश्वास करके ग्रामवासी पीछे की ओर दौड़ पड़े। हम लोग झगड़े से बच कर आगे बढ़ चले।

रास्ते में एक लम्बा चौड़ा बालू का मैदान मिला। उसके पार होने में पूरे तेईस दिन लगे। इस मरुभूमि में पेड़-पौधे, और पानी कहीं कुछ नहीं था। गाड़ी पर पानी लाद लिया गया था। इसीसे लोगों के प्राण बचे।

हम लोग क्रमशः यूरोप के निकटवर्ती होने लगे। इन देशों में भी कितने ही लोग देखने में आये। पर सभ्यता उन लोगों में भी न थी। वे लोग भी मूर्तिपूजक थे, चमड़े की पोशाक पहनते थे। पोशाक देखकर कोई नहीं समझ सकता था कि उनमें कौन पुरुष है और कौन स्त्री। स्त्रियों के चेहरे पर ज़रा भी लावण्य या कोमलता नहीं झलकती थी। देश जब बर्फ़ से ढक जाता था तब ये लोग मिट्टी के नीचे गुफा बनाकर रहते थे।

तातार देश के प्रायः हरेक गाँव में चामचीथाँगु देवता ही प्रधान है। यहाँ रहने वालों के घर घर में मूर्ति-पूजा होती है। इसके सिवा वे लोग सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, जल, वायु और बर्फ़ आदि समस्त प्राकृतिक पदार्थों को पूजते थे मानों प्रकृति ही उनकी देवी-देवता है। सम्पूर्ण प्रकृतिमयी सृष्टि में एक ईश्वर ही की शक्ति का विकाश है, इसका ज्ञान उन लोगों को कुछ भी नहीं है। वे लोग अविद्या के गाढ़ अन्धकार में पड़कर सभी को भिन्न भिन्न मानकर पूजते हैं।

"सब आया इस एक में झाड़-पात फल-फूल।
कबिरा पाछे क्या रहा गहि पकड़ा जिन मूल॥

क्रमशः हम लोग टोबालस्क नगर में उपस्थित हुए। हम लोग सात महीने से बराबर रास्ता चल रहे थे। अब पाला पड़ने लगा। जाड़े की मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। हम लोग चिन्तित हो उठे। किन्तु रूसी लोग उत्साह देकर कहने लगे कि चलने का मज़ा तो शीतकाल ही में है। सफ़र शीतकाल ही का अच्छा। जब जल, थल, पहाड़ और मैदान सभी स्थान कठिन बर्फ़ से ढँककर एक से चिकने हो जाते हैं तब उनके ऊपर बल्गा हरिण की बेपहिये की गाड़ी में बैठ कर दिन-रात चलने में बड़ा आनन्द और आराम मिलता है।

तुम लोगों का आनन्द और आराम तुम्हें मुबारिक हो। बर्फ़ से आच्छादित देश में मुझे तो विशेष सुख का अनुभव न होता था। हाय! इस समय मुझे वह अपना टापू स्मरण हो आया। वहाँ बराबर वसन्त ही बना रहता था। देह पर कपड़ा डालने की भी प्रायः आवश्यकता न पड़ती थी; और यहाँ यह दुरन्त दारुण शीतकाल की कठिन विभीषिका! कितना ही बदन में कपड़ा लपेटो तो भी बदन गरम न हो।

इसी शीतप्रधान दारुण देश में रूस के क़ैदी निर्वासित किये जाते हैं। यहाँ रूसी सरकार के रोष से दण्डित तथा निर्वासित कितने ही भद्र नर-नारियों को हम लोगों ने देखा। बहुतों के साथ बात चीत की। उनमें प्रायः सभी बड़े शिक्षित और धार्मिक थे। वे लोग और कुछ अपराध तो नहीं, केवल सच्ची भक्ति और श्रद्धा से देशसेवा करते हैं। ऐसा करना राजाज्ञा के विरुद्ध आचरण हुआ। इसी कारण वे लोग दण्डित हुए हैं। एक युवक ने अपने धर्मज्ञान के द्वारा मुझे खूब ही मुग्ध किया था। उनका सिद्धान्त यही था कि "अपने आत्मा को जीतना ही वास्तविक महत्व है। राजप्रासाद की अपेक्षा यह निर्वासन मेरे लिए कहीं बढ़कर सुखद है। इन्द्रिय और चित्तवृत्ति को रोक कर सब अवस्थाओं में प्रसन्न रहना ही मनुष्यज्ञान की चरम सार्थकता है। बाहरी यन्त्रणाओं को सह करके मन की शान्ति और सन्तोष को अव्याहत रखना ही धीरता है।" जब वे पहले निर्वासित हुए थे तब निष्फल क्रोध और अकारण क्षोभ से अपने हाथ से अपने सिर के बाल नोचते थे। किन्तु कुछ ही दिन के सोच-विचार और तत्व-चिन्ता से वे समझ गये कि संसार में सुख-दुःख केवल मन की अवस्था है। "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध-मोक्षयोः।" चित्त की गति स्थिर हो तो सभी अवस्थाओं में सुख है। चित्तवृत्ति के निरोध ही का नाम योग है। यथार्थ में दुःख कुछ हई नहीं। संसार में यदि दुःख कुछ है तो अज्ञानता मात्र; जिसमें जितना ही अज्ञानता का भाग अधिक है वह उतना ही अधिक दुखी रहता है। ज्ञान का उदय होते ही दुःख का फिर कहीं नाम-निशान नहीं रहता। अहङ्कार, लोभ और इन्द्रियवशता त्याग देने

पर धन, सम्पत्ति, सम्मान, और यश आदि सभी सुखोत्पादक विषय तुच्छ जान पड़ते हैं। सूर्य-चन्द्र का प्रकाश, वायु, मीठा जल और एक मुट्ठी अन्न तथा शारीरिक स्वास्थ्य ही प्राणियों के परममित्र हैं। इतनी वस्तुएँ मिल जायँ तो शरीर-यात्रा के लिए और कुछ दरकार नहीं। धर्म ही मनुष्य को सभी यन्त्रणाएँ सहने, प्रकृत महत्त्व प्राप्त करने, दुःख में सुख पाने और सांसारिक वासनाओं को जीतने की शिक्षा देता है। जो सर्वश्रेष्ठ सुखों के निधान आनन्द स्वरूप हैं उनका साक्षात् परिचय होने से तुच्छ वस्तुओं की ममता नहीं रहने पाती। परम आनन्द पाकर दुःख के समीप कौन जाना चाहेगा?

उनका यह आध्यात्मिक भाषण सुन कर मैंने निश्चय किया कि इस तरह की मानसिक अवस्था ही प्रकृत राजत्व है। जिसका मन ऐसा है वही सम्राट् है। वही महाराजों का महाराज है।

चाह घटी चिन्ता गई मनुआँ वे परवाह।
जाको कछू न चाह है सो शाहनपति शाह॥

इन धार्मिक नर-नारियों की सङ्गति में हम लोगों के आठ महीने बड़े सुख से कटे। जाड़ा भी बीत चला। अब ज़रा ज़रा दिन का प्रकाश भी दिखाई देने लगा। मैं मई महीने में यात्रा का ठीकठाक करने लगा। मैंने उन ज्ञानोपदेशक महाशय से कहा, "यदि आप चाहें तो मैं आपको छिपाकर किसी अच्छी जगह पहुँचा सकता हूँ।" उन्होंने इसके लिए मुझको धन्यवाद देकर कहा—महाशय, अब आप मुझको ऐसा प्रलोभन न दें। मन बड़ा ही दुर्बल होता है। इतने दिनों की साधना एक ही घड़ी में खो बैठूँगा। मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगा।

एक जगह स्थिर होकर रहने ही में सुख है। हाँ, यदि आप अनुग्रह करना चाहते हैं तो मेरे पुत्र को इस देश से मुक्त कर दें। यह मुझ पर ही एहसान होगा। इससे मैं विशेष उपकृत हूँगा।

जून का आरम्भ होते ही मैं रवाना हुआ। मेरे साथ कुल ब तीस ऊँट-घोड़े थे। और सब साथी, जो जहाँ के थे, क्रम क्रम से चले गये। उतने बड़े दल में एक मैं ही यात्री बच रहा था। छद्मवेशी रूसी सज्जन और उनका नौकर हमारे नये साथी हुए। हम लोग रेगिस्तान पार हुए। तदनन्तर हम प्रधान-पथ छोड़ कर टेढ़े मेढ़े रास्ते से चलने लगे। किसी शहर में जाते भी न थे। क्या जाने, मेरे साथी छद्मवेशी भद्र महाशय की कोई पहचान ले।

क्रमानुगत हम लोगों ने यूरोप देश में प्रवेश किया। एक जंगल के भीतर होकर जाते समय हम लोगों का जीवन-धन सब लुटेरों के हाथ जाते जाते बचा। ये लोग भी तातारी घुड़सवार लुटेरे थे। गिनती में पच्चीस से कम न थे। वे हम लोगों पर आक्रमण करने की घात में लगे। किन्तु वे लोग जिस तरफ़ जाते थे उसी तरफ़ हम लोग भी जाते थे। इस तरह हम लोगों ने बड़ी देर तक उन्हें घुमा-फिरा कर हैरान किया। रात होने पर वे लोग चले गये। हम लोगों ने भी एक झाड़ी की आड़ में जाकर आश्रय लिया।

कुछ ही देर बाद हम ने देखा कि क़रीब अस्सी डाकू हम लोगों का माल-असबाब लूटने के लिए चले आ रहे हैं। निकट आते ही उनको हम लोगों ने गोली मारी। उससे बहुत लोग मरे और घायल हुए। और लोग डर कर वहाँ से दूर भाग गये। हम लोग उनके कई घोड़े पकड़ लाये।

सारी रात जागते रह कर हम लोग प्रातःकाल की प्रतीक्षा करते रहे। सुबह होते होते देखा कि शत्रुओं की संख्या बहुत बढ़ गई है। किनारे आकर जहाज़ उलटना चाहता है! सब जगह से बच कर अन्त में यह क्या आफ़त आई!

हम लोग दिन भर चुपचाप बैठे रहे। डाकुओं ने हमारे साथ कोई छेड़-छाड़ न की। हम लोगों ने भी उनसे कुछ न कहा। साँझ होने पर हम लोगों ने भागने का विचार करके उन्हें धोखा देने के लिए ख़ूब आग प्रज्वलित की और ऐसा प्रबन्ध किया जिसमें सारी रात आग धधकती रहे। इसके बाद हम लोग अँधेरी रात में घोड़ों और ऊँटों को साथ ले जंगल के भीतर ही भीतर चुपचाप भाग चले। आग को धधकते देख लुटेरे निश्चिन्त बैठे थे। उन्हें यह धारणा थी कि हम लोग वहीं उनके हाथ से मरने के लिए बैठे हैं।

हम लोग एक वर्ष पाँच महीने चल कर अन्त में, सब विघ्न-बाधाओं से बचकर, समुद्र के तट पर पहुँच गये। रूसी सज्जन, जो मेरे साथ आये थे वे, यहाँ से जर्मनी चले गये।

१७०५ ईसवी के जनवरी महीने की १० वीं तारीख़ को लगभग ३५ हज़ार रुपया ले कर दस वर्ष नौ महीने के अनन्तर मैं अपने देश इँगलैन्ड को लौट आया। मैं अब बहत्तर साल का हुआ। इतने बड़े जीवन में देशाटन के अनेक उपद्रवों को झेल कर अब मैं परलोक की दीर्घयात्रा के लिए शान्तिमय के पथ का पथिक होने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

ईश्वर ने जल-थल में जैसे राबिन्सन क्रूसो की रक्षा की वैसे ही सबकी रक्षा करें।

शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!